लेखक की ओर से

मेरी और प्रकाशक का यह हार्दिक अभिलाषा थी कि यह पुस्तक मेरठ-अधिवेशन से पहले तैयार हो जाय। पर प्रकाशक और प्रेस के अपार परिश्रम के बाद भी हम उसमें सफल न हो पाए। देहली में यकायक साम्प्रदायिक तनातनी बढ़ने व दगे के फैलने आदि के कारणो से तथा दूसरी कठिनाइयो के कारण प्रेस अपनी शक्तिभर काम न कर सका और पुस्तक ठीक समय पर तैयार न हो सकी। आशा है इस बेबसी के लिए पाठक क्षमा करेगे।

अन्त में मै श्री शोभालालजी गुप्त (सहायक सम्पादक 'हिन्दुस्तान') और श्री कृष्णचन्द्र (गीता प्रेस) को धन्यवाद दिये बिना नही रह सकता। श्री शोभालालजी ने जिस कार्य-क्षमता तथा लगन से इसकी भाषा इत्यादि को ठीक करने में मेरी मदद दी उसके लिए मै उनका हृदय से आभारी हू।

गोविन्दसहाय

कौसिल हाउस,
लखनऊ।

प्रकाशक की ओर से

इस पुस्तक में टाइप की खराबी के कारण कई स्थानो पर बहुत-सी भूलें प्रतीत होगी। खासकर ए. ई ऊ. और अनुस्वार तथा कई अन्य मात्राए छपते समय टूट गई है, इसके कारण पाठको को होने वाली असुविधा के लिए हम क्षमा-प्रार्थी है।

भूमिका

सन् बयालीस की क्रांति इस देश के इतिहास में इस समय तक वही स्थान रखती है जो फ्रास या रूस की क्रातियों का अपने-अपने देश मे है। जिस पैमाने पर ४२ की क्राति हुई थी वह इतिहास में अपना सानी नही रखता। इतने बडे जन-समुदाय ने दूसरी किसी क्राति मे भाग नही लिया था। लेकिन केवल विस्तार और विशालता ही इस, क्राति की विशेषताएँ न थी। सन् ४२ ने देश की काया-पलट कर दी, एक नए भारत का निर्माण किया, उसकी राज-नीति को एक नई दिशा प्रदान की। स्वतत्रता की लडाई ने पहले वैयक्तिक हिंसा का पथ ग्रहण किया, फिर असहयोग का। बयालीस मे लड़ाई ने जन-क्राति का रूप लिया। असहयोग के अमोघ अस्त्र के लिए पर्याप्त नैतिक बल की कमी देखकर आजादी के सिपाही जब हतोत्साह हो रहे थे तो '४२ ने अकस्मात् उनके लिए एक नई राह प्रशस्त कर दी। अब तक हम ,जेलो को भरा करते थे। अब देखा गया कि नेतृत्व-हीन, शस्त्र-हीन जनता ने विद्युत् गति से जगह-जगह पर विदेशी राज के अड्डो का नाश कर उन पर सहज ही अपना प्रभुत्व कायम कर लिया। अंग्रेजी राज का किला, जो अब तक इतना सुदृढ और दुर्भेद्य दीख रहा था, अकस्मात् टूटने लगा। कही दीवार टूटी तो कही कगूरा, कही कुछ पाये तो कही मेहराब। जनता ने समझ लिया कि यह बालू की भीतो का बना हुआ किला है, और उसने सीख लिया उन भीतों का ढाह देनें का एक नया तरीका। अब भारत में कभी भी क्राति होगी, जनता की राह यही होने वाली है, चाहे थोड़े से चुनें हुए देवत्व के साधक कोई और ही राह पकड़ें। सन् बयालीस मेरे लिए तो यही अर्थ रखता है।

लेखक ने अपने "विषय-प्रवेश" में लिखा है कि "मै मानता हू कि हर लेखक का अपना एक दृष्टि-कोण और ध्येय होता है।" उनका भी अपना एक दृष्टिकोण है, और वह एक खास नुक्ते से विस्फोट को निहारते है। उनके दृष्टि-कोंण से मैं हर जगह सहमत तो नही हूं, लेकिन मुझे यह कहते हुए खुशी होती है कि उन्होने अपने इस मुश्किल काम मे मानसिक सच्चाई बरती है जो एक क्राति का इतिहास लिखने से अधिक मुश्किल है।

विषय-सूची

सन् बयालीस

का

विद्रोह

: १ :

विषय-प्रवेश

'हवा का झोंका जो चलना होता है, चलता ही है, घटनाएं जो होनी होती है, होकर ही रहती है । पर हम केवल उनके कारणों का विवेचन मात्र करते हैं।'

—विक्टर ह्यूगो

हो सकता है मेरा यह प्रयास भी ऐसा ही हो । पर इच्छा हुई कि क्यों न इस महान् आन्दोलन पर, जिसके वेग में लाखों नर और नारी, बूढे और जवान आशा, जोश एव तडप से यकायक उठे, आगे बढे और अन्त में कुछ पीछे हटते से भी दीख पडे, कुछ लिखूं; क्यो न इस अखिल भारतवर्षीय क्रांति के, जिसके उन्माद में होनी वाली अनेक मुख्य घटनाओं की खबर हर प्रकार से दुनिया से छिपाई गई और जिसके नेताओ को तथा उनके उद्देश्य एवं ध्येय को हर तरह के बुरे व भद्दे अर्थ पहनाकर दुनिया की आंखो में धूल झोंकने के यहां, और बाहर, अनेक असफल प्रयत्न किये गये, ध्येय, नीति, उत्पत्ति-काल, विकास, गतिविधि, व्यूह-रचना नारो आदि के सम्बन्ध मे निष्पक्ष दृष्टि से और वैज्ञानिक ढंग पर प्रकाश डालने का प्रयत्न करूं ?

मेरा विश्वास है कि दुनिया के इतिहास में दबे-पिसे व पद-दलित लोगो के अनेक सफल व असफल प्रयत्न हुए हैं; पर सन् १९४२ का 'खुला विद्रोह' पुराने सब प्रयत्नो से ध्येय, नीति-निपुणता, सगठन, बलिदान, विस्तार और जनोत्साह आदि सभी बातो मे कही बढा-चढ़ा है। सन् १८५७ का गदर-फ्रांसीसी राज्यक्रांति, सन् १९१७ की रूसी लाल क्रांति सभी कितनी ही बातो में उसके सामने फीके जान पडते है। यह वह महान् प्रयत्न था जिसमे प्रायः सभी भारतीय नवयुवकों ने, जिनके हृदय में जरा भी आजादी की कसक व तड़प बाकी थी, किसी-न-किसी रूप में हिस्सा लिया। यह वह सामूहिक प्रयत्न था, जिसकी चिनगारी गाव-गाव मे फैल गई। ऐसा लगता था कि सारा राष्ट्र गहरी नीदसे

जागकर यकायक उठ रहा है। भारत में अंग्रजो के दिन इने-गिने दिखाई देते थे।

वास्तव मे यह काल इतिहास का एक रोचक काल बन गया है। एक निहत्थे राष्ट्र ने यकायक जागृत होकर अपने पैदाइशी हक के लिए प्राणों की बाजी लगा दी, जिससे मालूम पड़ता था कि स्व० लोकमान्य तिलक का मंत्र 'स्वराज्य हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है' हरेक के कानो में गूंज गया है और उस पर सेवाग्राम के सन्त की मुहर लग गई, जो उन्हें 'करो या मरो' का आदेश दे रहा था। इस प्रकार क्रान्ति के अन्य सभी कारणो की मौजूदगी और गान्धीजी के नेतृत्व ने मिलकर देश मे एक अजीब बेचैनी पैदा कर दी थी, जिससे जनता मे कुछ करने की तीव्र इच्छा पैदा हो गई थी। ये सब बातें इतनी तेजी से हो रही थी कि आश्चर्य होता था कौन जादू क्रान्ति की यह सब सामग्री जुटा रहा है। आदमी, औरतें, मर्द, बूढे, जवान सब अनुभव करते थे कि उन्हे आग के साथ खेलना होगा; वे अनुभव करते थे कि क्रान्ति का कोई प्रयत्न करना एक चट्टान से सर तोड़ने के समान होगा। वे यह भी जानते थे कि उन्हे उस ब्रिटिश-राज्य से लडाई लडनी होगी, जिसके पास आज तबाही व बरबादी मचाने के सभी वैज्ञानिक साधन मौजूद है। उन्हे इस बात का भी ज्ञान था कि साम्राज्यशाही एक हृदयहीन शासन-व्यवस्था है जिसमें न न्याय होता है, और न नियम। जनता तथा गान्धीजी यह भी अच्छी तरह जानते थे कि वे अंग्रेजी साम्राज्य से उस समय लडने की घोषणा कर रहे है जब कि अंग्रेजो में यूरोप तथा दूर पूर्व की निरन्तर हारो के कारण एक तीव्र झुझलाहट पैदा हो गई है और ऐसी स्थिति में, जब कि उनका विरोधी स्वयं कठिनाइयो व परेशानियो में है, किसा प्रकार का आन्दोलन करना जलते हुए घावों पर नमक छिडकना और उसके गुस्से को और भी अधिक भड़काना होगा। पर यह सब जानते हुए भी भारतवर्ष के हर मर्द-औरत ने अपने कर्तव्य को सर्वोपरि समझा। उनके हृदय में यह प्रश्न उठा कि जब दुनिया भर के लोग अपनी-अपनी आजादी के लिए जीवन-मरण का खेल खेल रहे है, आहुतिया दे रहे है, बलिदान कर रहे हैं और तरह-तरह के कष्ट और यातनायें सह रहे हैं तो क्या हम अपने देश की आजादी के लिए केवल हाथ पर हाथ धरे बैठे रहे? जनता की इस मनोवृत्ति का पता गान्धीजी के अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के अधिवेशन में दिए गए ८ अगस्त सन् १९४२ वाले भाषण से चलता है। उन्होने कहा—"ईश्वर मुझसे पूछेगा कि जब दुनिया में चारो ओर अग्नि धधक रही थी, क्रान्ति की लपटें प्रचण्ड होकर उठ रही थी, हिंसा का साम्राज्य था, तो क्यों न तूने मेरे उस महामन्त्र अर्थात् शान्ति के पाठ को

दुनिया के सामने रखा, क्यो न अधेरे में उजाले का सन्देश दिया, असत्य के वातावरण में सत्य का नाम लिया ?" यही कारण है कि यद्यपि उपरोक्त लड़ाई प्रारम्भ करने का श्रेय ब्रिटिश नौकरशाही को है जिसने यकायक बिजली की भाति भारतीय आशाओ व आकांक्षाओ पर ६ अगस्त के सवेरे से एक भयकर प्रहार किया, पर उसका नतीजा यह निकला कि भारतवर्ष की दबी हुई आकाक्षाओ का विस्फोट सारे देश मे हुआ और उसने अपनी लपटे कोने-कोने मे फैला दी। जनता की आशा, उत्साह, तडप और कसक के साथ उठी। ब्रिटिश नौकरशाही के आक्रमणो से ऐसा प्रतीत हुआ मानो वह सब मोर्चों पर होने वाली अपनी हारों की पूर्ति निहत्थी भारतीय जनता की आकांक्षाओ को कुचलकर करना चाहती है और इस प्रकार खोएहुएसम्मान को पुन. प्राप्त करना चाहते है।

आन्दोलन के पश्चात् आन्दोलन के विकास, गतिविधि तथा साधनों के बारे में तरह-तरह की चेमेगोइया हुई। कुछ लोगो ने अन्दाज लगाए कि यदि काग्रेसा नेता गिरफ्तार न किए जाते तो क्या होता ? कोई कहता था कि गान्धीजी वायसराय से प्रार्थना करते। दूसरो का कहना था कि तब इन बातो का समय निकल चुका था, केवल शिष्टाचार के नाते गान्धीजी ऐसा प्रयत्न करते। पर इस विषय पर बहस करना केवल दिमागी कसरत ही है। वास्तविक बात तो यह है कि देश में क्रान्ति के सारे कारण अपनी परिपक्व स्थिति को पहुँच चुके थे। एक दूरदर्शी नेता की भाति गान्धीजी ने उपयुक्त मनो वैज्ञानिक वातावरण तैयार कर दिया था। वह सगठन को सुदृढ बनाने की बाते सोच रहे थे। जनता को 'करो या मरो' का नारा दे चुके थे। 'खुले विद्रोह' की बाते भी जनता के कानों में गूंज रही थी। इस प्रकार देश में ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध एक मनोवैज्ञानिक मोर्चा बन चुका था। जनता को विश्वास हो चला था कि वह अपनी शान्ति व रक्षा के लिए अग्रेजो के हथियारो पर निर्भर नही रह सकती। जनता यह भी जानती थी कि बावजूद अनेक सुनहरी बातो के ब्रिटिश साम्राज्यशाही भारत को अपने आधीन रखने की कल्पना कर रही है। इस प्रकार हर हिन्दुस्तानी के हृदय मे घाव था, असन्तोष था। ऐसा मालूम पड़ता था मानो हर हिन्दुस्तानी एक जिन्दा बम (live bomb) बन गया है जिसमे केवल चिनगारी लगने की देर है। ठीक उसी समय जब उसके नेता उससे छीन लिए गए तो उसके लिए युद्ध प्रारम्भ हो गया और यह युद्ध पीड़ित और अत्याचारी, शासक और शासित, लुटेरे और लुटे हुए के बीच प्रारम्भ हुआ।

सच तो यह है कि यह जनता का सचा युद्ध था। यद्यपि हमने अपने

सैकड़ों साथियो को सदा के लिए खोया, हमारी माताओं और बहनो का अपमानित व लज्जित किया गया, उन्हे मारा-पीटा गया और कही-कही तो उन्हें सैनिको तथा नौकरशाही के कल-पुर्जो की पाशविक वृत्ति का शिकार भी होना पड़ा, गाँव के गाँव लुटे, वीरान हुए, आग की प्रचंड लपटो से करोड़ो रुपये की क्षति हुई, पर यह सब वलिदान उस ध्येय के सामने क्या है जिसे हम प्राप्त करना चाहते थे।

हम जानते है कि ब्रिटिश नौकरशाही ने करोड़ों रुपया खर्च किया और झूठी आज़ादी का दिखावा खड़ा करके हमारी न्यायोचित व सच्ची आवाज का गला घोटना चाहा और दूसरे देशो मे हम पर तरह-तरह के झूठे आरोप लगाए गए। हम विश्वासघाती कहे गए। हमें धुरी-राष्ट्रो का मित्र बताया गया। पाचवें दस्ते का खिताब दिया गया। पीछे से वार करने वाले देशद्रोही बताने के भी प्रयत्न किये गये। पर अन्त में दुनिया ने देखा कि सत्य की जीत हुई। प्रारम्भ में मित्र राष्ट्रो के जनमत ने हमारे इस कदम पर रोष प्रकट किया। पर ज्यो-ज्यो उसे हमारी सच्चाई का पता चलता गया, वैसे ही वैसे जनमत हमारी ओर बदलने लगा और उसी का आज यह नतीजा है कि कितने ही पीड़ित, दबे व शोषित देश भारत के नेतृत्व से प्रोत्साहन लेकर अपना मार्ग निश्चित कर रहे हैं। इस आन्दोलन से हमको अनेक प्रकार के लाभ हुए जिन्हें विस्तार से दूसरी जगह बताऊँगा। यहा तो केवल सकेत रूप में यह बताने की चेष्टा कर रहा हू कि इस आन्दोलन ने हमें अग्रेज़ी साम्राज्यशाही के गिरते, लड़खडाते व बिखरते ढाँचे का वास्तविक रूप दिखाया है और यह भी दिखाया है कि किस प्रकार हम संगठित हिंसा के विरुद्ध सगठित अहिंसा से सफल हो सकते हैं, अधेरे मे उजाले की टिमटिमाती हुई रोशनी लेकर आगे बढ सकते हें। इस प्रकार कितने ही लोगो का अहिंसा की शिक्षा, शक्ति व साधनो पर पहले से कही अधिक विश्वास बढ़ गया है। आज अहिंसा बहुतो के लिए जीवन का एक तत्त्वज्ञान बन गया है। हिन्दू, मुस्लिम, सिख, पारसी सभी ने यह अनुभव किया है कि उनके दुख मिटने का एक ही मार्ग है और वह यह कि ब्रिटिश शासन यहा से उठ जाय। यही कारण है कि इस आन्दोलन मे सैकडो मुसलमानो ने, वावजूद जिन्ना साहब के, अपने अन्य भाइयो के साथ भाग लिया।

मै भी उन करोड़ो आदमियो मे से एक हू जिन्होने किसी-न-किसी रूप मे इस आन्दोलन में क्रियात्मक भाग लिया है। बचपन से ही मुझे इन सब बातो के जानने की उत्सुकता रही है और सन् १९३०से तो मैंने अपने को आज़ादी की लडाई के सैनिको की टुकडी में शामिल कर दिया है। पर इन १२ सालो में मुझमे कभी इतना उत्साह, इतनी शक्ति व स्फूर्ति न थी जितनी सन् १९४२

के इन दिनों मे रही।

मैंने सन् १९४२ के अगस्त मास के इन दिनो में जनता में जो स्फूर्ति, उत्साह, जोश, क्रोध, झुंझलाहट देखी उतनी पहले कभी नही देखी। मालूम पडता था कि सारा राष्ट्र गोली से घायल तथा क्रोध से पागल होकर किसी चीज़ को मिटाने के लिए उठ रहा है; जिसने निरन्तर उसे पीसा है अब वह उसका अन्त करना चाहता है। उस समय युक्त प्रान्त के पूर्वी जिले तथा बिहार की कुछ जगहो के जोश तथा तडप से उभरी हुई जनता को देखने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ। उन दिनों के अभूतपूर्व हृदय-विदारक तथा उत्साह पैदा करने वाले दृश्यो ने मेरे हृदय मे एक तड़प पैदा कर दी थी कि मैं इस महान् आन्दोलन पर अवश्य कुछ लिखूं। मैंने अनुभव किया कि यद्यपि हिन्दुस्तान मे कई सामूहिक व व्यक्तिगत आन्दोलन हुए, है, पर उन सब पर सूबेवार व जिलेवार आबद्ध रूप में बहुत कम साहित्य लिखा गया है। अखिल भारतीय पैमाने पर तो कोई भी ऐसा प्रयत्न नही दीख पड़ा। मेरी तीव्र इच्छा हुई कि क्यो न विशाल जन-समूह के इस महान प्रयत्न पर एक वैज्ञानिक दृष्टि से चर्चा की जाय और सारे प्रान्तो तथा रियासतो मे होने वाले इस व्यापक तथा सामूहिक प्रयत्न पर प्रकाश डाला जाय। मैंने सोचा कि घटनाओं के मुख्य-मुख्य स्थानो में जाकर लोगों से मिला जाय और उनके प्रयत्नो की जानकारी प्राप्त की जाय। किन्तु मै बीच मे ही जेल में बन्द कर दिया गया। पर इस काल मे भी मैंने अपनी इस तीव्र इच्छा को बनाए रखा और जेल से छूटने के एक दो माह पश्चात् ही हिन्दुस्तान के सारे सूबों का दौरा किया और यथासम्भव आन्दोलन सम्बन्धी आकड़े प्राप्त करने का प्रयत्न किया। निस्सन्देह मुझे इस कार्य मे बहुत सी दिक्कतो का सामना करना पड़ा। एक ओर सेंसर की कठोरता, दमन की उग्रता तथा लोगों का इस ओर अधिक ध्यान न होने के कारण तथा दूसरी ओर भ्रमण की असुविधा, प्रमुख कार्यकर्त्ताओ की अनुपस्थिति, कांग्रेस के ग़ैर-कानूनी होने आदि के कारण मेरे लिए यह कहना ठीक न होगा कि मैंने इस आन्दोलन सम्बन्धी सभी प्रकार के आकडे इकट्ठे कर लिए है। पर मैंने इस दिशा में प्रयत्न अवश्य किया और उस प्रयत्न के पीछे एक लगन थी जिसने निरन्तर दिक्कतो के बावजूद भी मुझे इसमें जुटाए रखा।

मै मानता हूं कि हर लेखक का अपना एक दृष्टिकोण और ध्येय होता है और उसी से प्रोत्साहित होकर वह पुरानी घटनाओ को अपने तरीके से रखने का सफल अथवा असफल प्रयत्न करता है। कोई इस बात को स्वीकार करे या न करे, पर यह एक नग्न सत्य है। मेरा भी इस पुस्तक के लिखने का अपना

एक ध्येय और दृष्टिकाण है और उसी ने मुझे इस कार्य को करने के लिए प्रेरित किया है। फिर भी मैंने इस बात की पूरी कोशिश की है कि अपने निजी विचारो, रुझान व लगाव को घटनाओ के आंकने तथा उनकी तह में उतरने के काम पर हावी न होने दूं। मैंने इस आन्दोलन की सारी घटनाओ को पक्षपात रहित होकर आकने और उन पर प्रकाश डालने का यथाशक्ति प्रयत्न किया है।

जैसा ऊपर कहा जा चुका है, मैंने इस काल अर्थात् १९४२–४४ में होने वाला घटनाओ के सम्बन्ध में स्वय जानकारी प्राप्त करने का प्रयत्न किया है और कितनी जगह अपने कुछ साथियो को भेजा है । स्वयं जाकर लोगों से बातचीत की है । सरकार ने घटनाओ के सम्बन्ध में जो वक्तव्य प्रकाशित किए है उन्हे पढ़ा है और अखबारो के पन्नो को भी पलटा है। फिर भी मेरा विश्वास है कि जो आंकड़े घटनाओं के वर्णन में दिये गये है वे वास्तविकता से कुछ कम ही है। मुझे यह जानकर कुछ संतोष होता है कि मैंने इस काम को ऐसे समय में किया है जब कि हमारे पास उन विभिन्न आन्दोलनो के बारे मे बहुत कम साहित्य है जो भारत में समय-समय पर हुए है । मै अपने परिश्रम को सफल समझूंगा यदि पाठकगण इस पुस्तक से स्वतंत्रता के इस महान् आन्दोलन के बारे में संगठित रूप में सूबे, जिले तथा मुख्य रियासतवार कुछ जानकारी प्राप्त कर सकें और उन्हे यह तसल्ली हो जाए कि वास्तव मे इस दिशा में किया गया प्रयत्न एक आवश्यक प्रयत्न था और इस प्रकार सग्रहीत आंकड़े तथा घटनाओ के वर्णन इस आन्दोलन के समझने में मददगार साबित होगे। हो सकता है यह पुस्तक पाठको के हृदय मे अनेक प्रकार की अच्छी कल्पनाएँ तथा अपनी मातृभूमि के प्रति सर्वस्व बलिदान करने के भावो को जागृत कर सके। अन्त में मै उन सब साथियो को, जिन्होने मुझे इस कार्य में अनेक प्रकार से मदद दी है, धन्यवाद दिए बिना नही रह सकता और साथ ही उन साथियो को भी, जिन्होंने इस आन्दोलन में अपने बलिदान देकर तथा अनेक प्रकार के कष्ट सहकर मेरे हृदय मे हमेशा स्फूर्ति को बनाए रखा है और उस ज्योति को जलाए रखा है जिसके कारण मैंने अनेक कठिनाइयो के होते हुए भी अपने इस प्रयत्न को जारी रखा। साथ ही काग्रेस के उन नेताओं तथा काग्रेस-कार्य-समिति के उन सदस्यो के प्रति भी मै कृतज्ञता प्रकट करता हूँ जिनके निरंतर कारावास ने सारे देश मे आन्दोलन की अग्नि को एक कसक व तड़प के रूप में मेरे तथा अनेक देशवासियो के हृदयों मे प्रज्वलित रखा है।

अन्त में मैं अपने मित्र मिस्टर एन० ए० भडारी को, जिन्होने मुझे इस किताब को पूरा करने में काफी मदद दी है, धन्यवाद देता हूँ।

: २ :

वैज्ञानिक विश्लेषण

क्रान्ति-विज्ञान

विद्रोह यकायक फूट नही पडते । क्रान्ति फौरन बिजली की तरह साफ व नीले आसमान से टूट नही पडती । न कोई आन्दोलन जादू की लकड़ी द्वारा खड़ा ही किया जा सकता है और न किसी आन्दोलन को स्थायी रूप से दमन द्वारा दबाया ही जा सकता है । वास्तव मे आन्दोलन, क्रान्ति, विद्रोह रौंदी हुई जनता की दबी आकाक्षाओ के बाह्य रूप होते है ।

जिन कारणों से क्रान्ति अथवा आन्दोलन का जन्म होता है, उनमे से कुछ मुख्य कारण इस प्रकार है .—

१. जनता मे बढा हुआ आर्थिक व राजनैतिक असतोष ।

२. राजनैतिक आकाक्षाओ और अभिलाषाओ की वृद्धि, राष्ट्रीय सम्मान के भावो की प्रगति तथा मान-अपमान की तडप ।

३. सरकार की सत्ता व शक्ति से विश्वास का हटना ।

४ जनता मे परिवर्तन की तीव्र इच्छा और भविष्य में सघर्ष करने की उत्कठा ।

५. देश के विभिन्न वर्गो, पार्टियो व दलों मे सरकार की उपेक्षापूर्ण नीति के प्रति बढता हुआ असन्तोष और उनमे किसी एक माग पर मिलकर जोर लगाने की इच्छा ।

६. हाकिमों की उपेक्षापूर्ण, हृदयहीन और दमनकारी नीति तथा जनता की उचित न्यायपूर्ण मागो के प्रति सख्त, क्रूर व अन्यायकारी रुख इत्यादि ।

ये सब ऐसे कारण होते है जो प्राय. सतह के नीचे अन्दर-ही-अन्दर विरोधाग्नि सुलगाते रहते है और समय पाकर जनता मे स्फुरित हो उठते हैं । मनोवैज्ञानिक दृष्टि से वातावरण सघर्षमय बनता रहता है । ठीक ऐसी ही

स्थिति में नेता जनता को उठाता है, कारणों को ठीक रूप से तरतीब देता है और बेचैनी को आशा में, परेशानी को हरकत मे बदलकर सघर्ष के लिए वातावरण पैदा कर देता है। क्षणिक कारण नीचे बिछी हुई बारूद मे सुलगती हुई चिनगारी की तरह प्रचण्ड रूप धारण कर आन्दोलन,क्रान्ति अथवा विद्रोह को उग्र रूप दे देते है। आन्दोलन, संगठित भी हो सकता है और असगठित भी, हिंसात्मक और अहिंसात्मक भी, सफल और असफल भी। ये सब बाते देश की स्थिति, सस्कार, नेता के विचार व सगठन-शक्ति, सस्था के प्रभाव व सगठन, नारे की उपयोगिता तथा शक्ति इत्यादि अनेक बातो पर निर्भर होती है। फिर भी जनता की ओर से उठा हुआ कोई भी आन्दोलन अपने प्रभाव व ध्येय में सर्वथा विफल नही होता। हरेक आन्दोलन से दबी हुई जनता कुछ-न-कुछ सीखती ही है। हरेक आन्दोलन जोश, आशा, विश्वास, साहस, सगठन, सघर्ष करने की प्रवृत्ति आदि अनेक बहुमुखी शक्तियो की वृद्धि करता हुआ सघर्ष करने तथा सामूहिक रूप से सोचने के लिए बल प्रदान करता है। इस प्रकार एक आन्दोलन की विफलता ही आगामी आन्दोलन की सफलता की सीढी बन जाती है।

संघर्ष, जद्दोजहद व खीचातानी के वातावरण मे किसी एक पक्ष का दूसरे पर प्रहार कर देना तथा यकायक किसी भयकर घटना का हो जाना, जैसे सरकार का अकारण जनता पर प्रहार कर देना, दोनो पक्षो मे से किसी एक का धैर्य खो बैठना और उतावले होकर कोई कार्य कर बैठना, दोनों पक्षो का निरन्तर कठोर रवैया रखना और इस प्रकार झूठी शान की भावना पैदा कर लेना इत्यादि ऐसी अनेक बाते हो सकती है, जो चारो तरफ फैली हुई बारूद मे चिनगारी बनकर भयकर विस्फोट का कारण बन जाती है। ऐसे वातावरण में कोई छोटी-सी घटना भी कभी उग्र रूप धारण कर लेती है और विद्रोह, क्रान्ति अथवा बगावत के रूप मे बदल जाती है। पर यह सब कुछ तभी होता है जब क्रान्ति के स्थायी कारण अपनी परिपक्व स्थिति को पहुँच चुकते है। हर आन्दोलन की सफलता के लिए यह जरूरी है वह परिपक्व होने के पश्चात् उठा हो और उसके वेग में उठने वाले लोगो का ध्येय उचित व न्यायसंगत हो अर्थात् उनकी मागो के पीछे नैतिक बल हो। यदि किसी आन्दोलन का आधार न्यायसगत व नैतिक न होगा तो तेजी से उठने पर भी वह अपने ध्येय में सफल नही हो सकता। अत. हर आन्दोलन के लिए यह आवश्यक है कि जहा ध्येय अच्छा हो वहा साधन भी अच्छे हो। उदाहरण के तौर पर हमारे देश में सन् १८५७ का गदर हुआ, पर साधन ठीक न होने के कारण

हमारी हार हुई और लगभग ७० वर्ष तक भारतीय जनता सिर न उठा सकी। किन्तु कौन जानता है कि युक्तप्रान्त के पूर्वी जिले, विहार प्रान्त तथा सतारा जिला वही इलाके है, जो सन् १८५७ में अन्त समय तक लड़ते रहे और सन् ४२ मे भी आन्दोलन के मुख्य तूफानी केन्द्र रहे। सन् १८५७ में इन इलाको की भूमि खून से रगी जा चुकी थी और इस कारण इनमे विद्रोह की अग्नि कभी-न-कभी अवश्य सुलगनी थी।

सन् १९४२ से पहले

सन् १९१९ व २१ के असहयोग आन्दोलन से पहले इसी प्रकार स्थायी कारण परिपक्व हो चुके थे। रौलेट कानून, जलियानवाला बाग हत्या-कांड तथा खिलाफत के मसले ने इस आन्दोलन की विरोधाग्नि को प्रज्वलित किया। सन् १९३० व ३२ के नमक-सत्याग्रह व लगानबन्दी के आन्दोलनो से पहले भी घटनाओ के जमघट ने एक प्रौढ़ आन्दोलन के लिए आवश्यक भूमिका तैयार कर दी थी। गान्धी जी की 'डाँडी यात्रा' और देश भर मे होने वाली गिरफ्तारियो के ताते ने इसे आन्दोलन का रूप दिया। सन् ३२ मे सीमा प्रांत व युक्तप्रान्त मे लगानबन्दी और सरकारी दमन आन्दोलन के तात्कालिक कारण बने। ठीक इसी प्रकार सन् १९४२ के 'खुले विद्रोह' से पहले देश मे स्थायी कारण अपनी परिपक्व अवस्था को पहुच चुके थे। जनता की बेचैनी, परेशानी और असन्तोष ने उग्र रूप धारण कर लिया था। लड़ाई के नारो के साथ-साथ भारतीय आकाक्षायें व आशाएं भी उभर चुकी थी। उनके साथ अब शाब्दिक मखौल नही किया जा सकता था। आर्थिक कठिनाइयाँ बढती जा रही थी। खाद्य पदार्थ बाजार से लोप हो रहे थे। चान्दी का सिक्का गायब हो रहा था। नोटो की भरमार थी। हागकाग से ब्रह्मा तक जापानी जीत ने अंग्रेजो के प्रति जनता में अविश्वास पैदा कर दिया था और उसे विश्वास हो चला था कि अब अपनी रक्षा के लिए अंग्रेजी सैनिक शक्ति पर निर्भर नही रहा जा सकता। ब्रह्मा से भागे हुए लोगों की करुण कहानी व जातीय विद्वेष की अनेक बातो ने अंग्रेजो के प्रति भयकर घृणा के भाव पैदा कर दिये थे। अंग्रेज सैनिकों द्वारा रगून मे किए गए अग्निकाड व सम्पत्ति की लूट ने जनता को सचेत कर दिया था और उसका अंग्रेजी न्याय व सत्ता पर से बिलकुल विश्वास उठ गया था। पूर्वी बगाल व आसाम मे हवाई अड्डो तथा अन्य फौजी कामो के लिए जमीनो की जब्ती ने घृणा व द्वेष को और भी भड़का दिया था। आतक व भय से भरी जनता अपने नेताओं की ओर देख रही थी। उधर 'क्रिप्स मिशन' की विफ-

लता ने देश के सभी वर्गों में ब्रिटिश नीति के विरुद्ध अविश्वास पैदा कर दिया था। लोगों में आम चर्चा थी, "यदि अग्रेज अपनी हार के समय ही हमे कुछ नही दे सकते, तो जब ये जीत जायंगे तब तो कुछ भी न देगे।" इस प्रकार देश में निराशा, घृणा, बेचैनी, क्षोभ, अविश्वास व असन्तोष बराबर दिनो-दिन बढ रहे थे। भारतीय नौकरशाही उपेक्षा और दमन नीति पर आरूढ थी। उसे अपनी सैनिक शक्ति पर भरोसा था। उसने अमेरिकन, आस्ट्रेलियन तथा ब्रिटिश सैनिको को काफी मात्रा मे हिन्दुस्तान बुला लिया था। शायद ब्रिटिश हाई कमांड दूसरे मोर्चो पर होने वाली हारो की क्षति-पूर्ति हिंदुस्तान के राष्ट्रीय आन्दोलन को कुचल कर करना चाहती थी।

क्रिप्स-मिशन

सन् १९४२ में जब कि एक ओर जापानी भारत के दरवाज़े खटखटा रहे थे और दूसरी ओर मुल्क मे चारो ओर बेचैनी थी, अव्यवस्था का साम्राज्य था, अग्रेजी सरकार की ओर से सर स्टेफर्ड क्रिप्स एक मसविदा लेकर भारतीय आकाक्षाओ की पूर्ति के लिए हिन्दुस्तान आये थे। यह वह समय था जब कि जापानी फ़ौजें बिजली की तरह आगे बढ रही थी और ब्रिटिश सरकार को इस बात का ज्ञान हो गया था कि वह अपने साम्राज्य को सुरक्षित नही रख सकेगी। उसकी समुद्री शक्ति क्षीण हो चुकी थी और उसके सैनिको का नैतिक बल भी डावांडोल हो रहा था। पश्चिमी मोर्चे पर भी उसे निरन्तर पीछे हटना पड रहा था और रोम की फौजें सिकन्दरिया के दरवाज़े पर आ खड़ी हुई थी। उधर स्टेलिनग्राड की बस्तियां भी आए दिन जर्मन रूसियो के हाथ से छीन रहे थे और स्टालिन-ग्राड का पतन सन्निकट था। ऐसे भीषण समय में भी ब्रिटिश सरकार ने भार-तीय आकाक्षाओं के साथ मखौल करना ही उपयुक्त समझा। सर स्टेफर्ड क्रिप्स से, जिन पर भारतीयो का गहरा विश्वास था; कभी भी ऐसी आशा न थी कि वह कोई ऐसा मसविदा पेश करेंगे जिसमें केवल कोरे वायदे हो और वास्तविक रूप मे भारतीय हाथोंमे राजसत्ता सौंपने के कोई ठोस प्रस्ताव न हो। सर स्टेफर्ड क्रिप्स की योजना मिस्टर चर्चिल, एमरी तथा सर क्रिप्स की मिली हुई भाव-नाओ का सार था। जिसमें एक ओर पूर्ण स्वतत्रता देने का वचन था तो दूसरी ओर उस वचन को निष्क्रिय तथा निकम्मा बनाने के सारे उलझाव व प्रतिबन्ध मौजूद थे। इस प्रकार क्रिप्स-प्रस्ताव ने भारतीय आकाक्षाओ को गहरी चोट पहुंचाई और उसकी विफलता ने जनता में और भी अधिक क्षोभ, बेचैनी, झुझला-हट और रोष पैदा कर दिया। लोगो को यह विश्वास हो चला था कि अग्रेज

भारत का तब तक न छोडेंगे जब तक कि उनसे अधिक शक्तिशाली ताकत उनको मारकर निकाल न दे। इस प्रकार के विचारों ने देश में अंग्रेजों के प्रति गहरा अविश्वास, घृणा व द्वेष पैदा कर दिया था जो अप्रत्यक्ष तरीके से धुरी राष्ट्रों के प्रति सहानुभूति के रूप में बदलने लगा था।

ठीक ऐसे ही समय कई प्रमुख ज्योतिषियों ने भविष्यवाणी की कि अगस्त मास में १३ से २३ तारीख तक भयंकर परिवर्त्तन होगे। इसका भी लोगो पर जादू जैसा असर पडा। जनता ने कहा, 'अग्रेज हारे' और गाधीजी ने कहा, 'अंग्रेजो भारत छोड़ो'। दोनों बातों ने गहरा मेल खाया। यह था वातावरण अगस्त-विद्रोह से पहले, जब कि सड़कों पर, दूकानो पर, रेलों पर, चौराहों पर, चारो तरफ लोगों मे इसी तरह की बातें चल रही थी। ९ अगस्त की नेताओं की गिरफ्तारी ने देश में बिछी हुई बारूद में चिनगारी लगा दी। जनता पागल हो उठी। उसने कांग्रेस व कांग्रेस नेताओं पर हुए प्रहार को अपनी आशाओं, अभिलाषाओं और आकांक्षाओं पर प्रहार समझा।

नौ अगस्त सन् १९४२

भारतीय इतिहास में नौ अगस्त एक महत्वपूर्ण दिन रहेगा। अगस्त के अन्य दिनो की तरह इस रोज़ भी बम्बई मे एक भंयकर तूफान की आशा की जा रही थी। चारों तरफ बादल घिरे हुए थे। तूफान अवश्य आया पर था वह राजनैतिक। इस तूफान ने भारतीय राजनीति के सारे रूप को ही बदल दिया। ब्रिटिश नौकरशाही का अपनी पूर्व सगठित योजनानुसार काग्रेस पर विद्युत् आक्रमण प्रारम्भ हुआ। यह जापानियों के पर्ल हारबर पर किये गये कमीने हमले से भी कहीं बढा-चढा था। काग्रेस महासमिति का अधिवेशन ८ तारीख के रात के १० वजे समाप्त हुआ। 'अग्रेजो भारत छोडो' का प्रस्ताव पास हुआ। गांधी जी ने वायसराय को पत्र लिखने का सकेत किया। उधर ब्रिटिश नौकर शाही ने ९ अगस्त को सारे देश में अपना हमला बोल दिया। कई दिन पहले से नेताओं की गिरफ्तारी के वारन्ट हर ज़िले में भेजे जा चुके थे। पकिल सरकुलर द्वारा केन्द्रीय सरकार ने प्रान्तीय सरकारो को कुछ हिदायते दे दी थी कि किस प्रकार उन्हे काग्रेस तथा उसकी मांग के विरुद्ध यहा तथा वाहरी देशो मे जनमत तैयार करना चाहिए। यह सब बातें इस बात का सबूत देती है कि ब्रिटिश नौकरशाही ने अपने को पहले ही से एक निश्चित व पूर्ण सगठित आक्रमण के लिए तैयार कर रखा था। प्रस्ताव के पास होते ही हुकूमत की

सारी नागरिक और सैनिक मशीनरी हरकत में आगई। कार्य-समिति के सदस्य तथा हर सूबे, जिले, शहर और गांव के कांग्रेसी नेता पकड़ लिए गये। अखबारो के गले घोट दिए गये। आर्डिनेंसों और 'भारत रक्षा कानून' का राज्य स्थापित हुआ। इन आर्डिनेंसो का एक ही अभिप्राय था कि जनता मे नेताओं की गिरफ्तारी के विरुद्ध कोई प्रदर्शन न हो। कांग्रेस-संगठन गैर कानूनी करार दे दिया गया। कांग्रेस-दफ्तरों पर ताले पड़ गये व उनकी सम्पत्ति को जब्त कर लिया गया। इस प्रकार सारे देश में अर्द्ध-फौजी क़ानून स्थापित किया गया। सारा ही देश एक बड़ा जेलखाना बन गया और कांग्रेस तथा जनता पर जबरदस्ती संघर्ष लादा गया। स्वभावतः इसकी प्रतिक्रिया हुई। जोश व रोष से परिपूर्ण जनता ने विरोध प्रदर्शन किये, सभाये की, हड़ताले की, दफा १४४ को तोड़ा और 'अंग्रेजो भारत छोड़ो' के नारे से प्रभावित तथा खुले विद्रोह की प्रवृत्ति से प्रोत्साहित जनता विभिन्न कार्य-क्रमों की तलाश में भटकने लगी।

कांग्रेस का नेतृत्व

प्रत्येक आन्दोलन में एक नेता की आवश्यकता होती है, जो उसके रूप एवं उसकी गति-विधि को निर्धारित करता है तथा परिस्थितियों के कारण इधर-उधर बिखरी हुई जनता की शक्ति को एक निश्चित लक्ष्य की ओर प्रेरित करता है। वह आक्रमण करने तथा आक्रमण से बचने के ऐसे ढंग निकालता है जिनसे लक्ष्य की प्राप्ति हो सके। भारत की राष्ट्रीय कांग्रेस ब्रिटिश साम्राज्यशाही के चंगुल से छुटकारा पाने के प्रयत्न में जनता को सदा ही ऐसा नेतृत्व प्रदान करती आई है और सन् १९४२ के खुले विद्रोह में भी वह अपने इस कर्त्तव्य को पूरा करने में तनिक भी पीछे नही रही। सन् १९१४ के बाद प्रथम महायुद्ध की घटनाओ के कारण जो एक जागृति का काल आया, उसमे कांग्रेस ने बड़ी शक्ति हासिल की और वह एक सुसंगठित संस्था बन गई। देश के सुख-दुःख में तथा उसकी आर्थिक, सामाजिक एवं राजनैतिक प्रगति में पूरा सहयोग देने के कारण उसने जनता का हृदय जीत लिया है और उसका प्रभाव देश के एक कोने से दूसरे कोने तक छा गया है। उसने अपने अनुभव एवं दूरदर्शिता के आधार पर साम्राज्यशाही के जुए को उतार फेंकने के लिए अहिंसा, असहयोग एवं सत्याग्रह की एक नूतन कला की सृष्टि की है, नवीन टैकनीक ईजाद की है। महात्मा गांधी ने इसे एक ऐसा सुदृढ़ नेतृत्व प्रदान किया है, जो सन् १९२०-२१, १९३०-३१ १९४० व ४६ के

विपत्तिपूर्ण एवं नाजुक समय में भी खरा उतरा। इन आन्दोलनों तथा इनसे प्राप्त होने वाले फायदो के कारण भारतवासी आशावादी हो गये और उनका अपने नेताओ तथा अपने लक्ष्य की सफलता में पूरा विश्वास जम गया।

सन् १९४२ का विपत्तिकाल कांग्रेस नेतृत्व की परीक्षा का समय था, जिसमें वह पूरी तरह सफल सिद्ध हुआ है। इतिहास में शायद ही कोई ऐसा उदाहरण मिले जब कि किसी नेतृत्व को ऐसे विचित्र एव नाजुक समय का सामना करना पडा हो। कांग्रेस नेतृत्व को जिस विपत्ति का सामना करना पड़ा, वह स्थानीय या राष्ट्रीय नही थी, वह तो सच्चे अर्थ में विश्व-व्यापी थी। साथ ही विपक्षियो के साधन इतने अधिक थे कि उनकी शक्ति का निर्धारण करना आसान न था। छिपाव एवं दगाबाज़ी की कूटनीति चरम सीमा पर पहुंच चुकी थी। युद्ध इतना भयकर रूप धारण कर चुका था कि साधारण आदमी के लिए यह अनुमान लगाना कठिन हो गया था कि दूसरे ही क्षण क्या होने वाला है। समस्त ससार छिन्न-भिन्न हो रहा था। बड़े-बडे राष्ट्र विजेता के चरणों में नतमस्तक हो रहे थे। हरेक वस्तु पतन के कगारों पर खडी थी और समस्त संसार एक तूफानी समुद्र के रूप में बदल गया था।

ऐसे घोर विपत्तिकाल मे कांग्रेस को भारत जैसे महान् देश के ४० करोड़ नर-नारियों का नेतृत्व करना था और वह भी इस ढंग से कि मुसीबत न उठानी पड़े और सफलता भी मिल जाय। एक छोटी सी गलती के कारण देश को एक ऐसे खतरे के गड्ढे में जा गिरने का डर था जहां से वह पीढ़ियों तक वापिस न निकल पाता। अतएव जब हम इन परिस्थितयों के साथ सन् १९४२-४६ की भयानक घटनाओं की जांच करते है तो हमे महात्मा गाधी की दूरदर्शिता, बुद्धिमानी एवं अनुभव का पता चल जाता है। वास्तव में महात्मा गाधी ने बहुत सी विपत्तियों से हमारी रक्षा की है। जिस राजनैतिक स्थिति को लोग पराजय की दृष्टि से देखते थे वही आज गौरवपूर्ण जीत दिखाई दे रही है।

प्रत्येक नेतृत्व में सावधानी, दृढता एवं जोश इन तीन बातो की बड़ी आवश्यकता होती है। एक बढती हुई विपत्ति की भिन्न-भिन्न अवस्थाओं में कभी सावधानी, कभी दृढता और कभी जोश से काम लेना पड़ता है। सर्व प्रथम सावधानी की जरूरत है। एक योग्य नेता के लिए अपनी तथा विपक्षी की शक्तियों का तुलनात्मक अध्ययन अनिवार्य होता है। उसे अपने द्वारा तथा विपक्षी द्वारा अपनाए जाने वाले सभी सम्भव साधनो को पहले से ही सोच कर इन्तज़ाम कर लेना पडता है और साथ ही इन सब के परिणामो पर विशेष

ध्यान रखना पड़ता है। इसके अतिरिक्त तेजी से फैलते हुए युद्ध के प्रारम्भ काल में ही जनता को किसी बड़े आन्दोलन के लिए खड़ा कर देना अदूरदर्शिता-पूर्ण एव असामयिक होता है। यही कारण है कि कांग्रेस नेतृत्व उस विषम परिस्थिति में इन सब बातों को सोच समझ कर बडी सावधानी तथा दृढता के साथ अपने कदम रख रहा था। पर लोग इस बात को उस समय समझ न पाये थे। अतः कुछ लोग उस पर अस्थिरता का और कुछ डरपोकपन का दोषारोपण करने लगे। कुछ इससे और आगे बढे और उन्होने उस पर सम्भाव्य क्रान्ति के मौके पर दगाबाजी करने का लाछन लगाया। किन्तु बाद की घटनाओ ने उनके इन आरोपो को बिल्कुल गलत साबित कर दिया तथा यह बात भी साफ तौर से प्रकट कर दी कि कांग्रेस ने युद्ध के प्रारम्भ काल में जिस नीति को अपनाया था वह सोलह आने विवेक-पूर्ण थी।

ज्यो ही परिस्थिति कुछ गम्भीर हुई और आने वाली घटनाओं का चित्र सामने आया त्यो ही कांग्रेस-नेतृत्व को एक ऐसी सुदृढ तजवीज तैयार करने का मौका मिला जिसे वह सकट-काल के अन्त तक अपनाता। मलाया, बर्मा आदि में स्थान-स्थान पर हार होने के कारण लोगों का विश्वास अंग्रेजों की शक्ति पर से हटता जा रहा था। अंग्रेजों की थल, जल एव हवाई शक्ति को बुरी तरह हानि पहुँच चुकी थी। या यों कहिए कि अंग्रेज काफी हद तक परास्त हो चुके थे। अत स्वाभाविक रूप से ही अंग्रेजों का प्रभाव उठ गया था तथा नैतिक दृष्टि से भी उनमें शक्ति-क्षीणता, कमीनापन एव पतन के चिन्ह प्रत्यक्ष रूप से दिखाई पडने लग गये थे। इसलिए कांग्रेस-नेतृत्व के लिए विरोध करने तथा अपनी माग दृढतापूर्वक रखने का यह अच्छा मौका था। उसने इस बात को समझा और अपनी मांगें तैयार की तथा देश का समर्थन प्राप्त करने के लिए प्रयत्न प्रारम्भ कर दिया। ज्यों-ज्यों समय के साथ युद्ध भारत की सीमा पर पहुँचता गया त्यो-त्यों कांग्रेस की आवाज तीव्र होती गई और उसके नेता अपने संगठन को दृढ करने तथा युद्ध के आधार पर जनता को तैयार करने का अथक प्रयत्न करते गये।

इस प्रकार सन् १९४२ का नाजुक समय आ पहुंचा और जापान हांग-कांग से इम्फाल तक आश्चर्यजनक गति से बढ आया, जिससे इन प्रदेशों में ब्रिटिश शासन-सत्ता बिल्कुल नष्ट होगई। अतएव यह वह मौका था जब कि एक ऐसा कदम उठाया जा सकता था जो निहत्थे लोगों को अपने पैरो पर खडे होने की इच्छा एव सामर्थ्य प्रदान करता और उनको तेजी से छिन्न-भिन्न होते हुए सामाजिक ढाचे के स्थान पर एक उन्नत समाज का निर्माण करने के लिए

जी-जान से प्रयत्न करने को प्रेरित करता। सचमुच यह वह अवसर था जिसकी भारतवासी सदियों से प्रतीक्षा कर रहे थे; क्योंकि निर्दयी एव अत्याचारी ब्रिटिश साम्राज्यवाद द्वारा जबरन लादी हुई समाज-व्यवस्था ने उनको पीस दिया था और उनका आर्थिक, सामाजिक तथा नैतिक पतन ही चला था। अतएव वे एक ऐसे मौके की बाट में थे जब कि वे अपने बन्धनों को तोड फेकें और एक बिलकुल नवीन, उदार एवं उन्नत व्यवस्था की स्थापना कर सकें।

सन् १९४२ का सुनहला प्रभात आया। समय के साथ सदा की भाति ग्रीष्म एव पतझड ऋतुये बारी-बारी से आईं और हमें बसन्त ऋतु प्रदान करके चली गईं। पर इस बार वे देश को बसन्त के साथ एक उपहार और दे गयी। वह उपहार था आजादी एव उन्नति हासिल करने के लिए क्रान्ति का सन्देश। ऐसा प्रतीत होता था मानो प्रकृति के अकाट्य नियमो के अनुसार गुलामी की जजीरों की कडिया स्वत: ही छिन्न-भिन्न होना चाहती हैं। अतएव भारतवासियो के सामने यह प्रश्न था कि वे इस सुअवसर का लाभ उठा कर कुछ करेंगे या हाथ पर हाथ धरे समय निकाल देंगे। जनता मे क्राति की एक तीव्र लालसा दिखाई पड रही थी और लोग बडी आतुरता से काग्रेस के नेतृप्व की ओर देख रहे थे। वे सोच रहे थे कि काग्रेस ऐसे मौके पर उनका नेतृत्व करेगी या कर्त्तव्य पूरा न कर सकने के कारण अपना प्रभाव खो बैठेगी। भला काग्रेस ऐसे अवसर पर कब चूकने लगी? उसने लोगो को सचेत किया, "सगठित एव नियन्त्रित रूप में आगे बढो और गुलामी की जजीरो को तोडकर फेक दो। अपने-आपको पूर्ण स्वतत्र समझो और उसी रूप में काम करो। जो भूमि अपने हिस्से की है उसे अपने अधिकार में कर लो और यदि कोई शक्ति, चाहे वह जर्मन हो, चाहे जापान, चाहे अग्रेज हो, चाहे और कोई, तुमसे उसको छीनना चाहे तो उसका पूर्ण दृढता से मुकाबला करो।"

वास्तव में जब कोई सेना अपनी इच्छित भूमि को हथियाने के लिए बढ़ती है तो उसे अपनी रक्षा करने के लिए किसी साधन की आवश्यकता होती है। क्या काग्रेस-नेतृत्व ने आन्दोलन के लिए तैयार जनता को ऐसा कोई साधन दिया जिससे वह शत्रु के प्रतिघात को नाकामयाब बनाने में सफल हो सके? क्या उसने जनता को पीछे हटने का कोई साधन दिया? हमें इसी प्रकार के नाजुक प्रश्नों के आधार पर कांग्रेस की जाँच करनी चाहिए; क्योंकि इससे ही हम उसकी बुद्धिमानी, निपुणता, सावधानी, आदर्शवादिता, विपत्तियो का सामना करने की दृढता आदि गुणो को जान सकते हैं।

आन्दोलन की लपटों में

इस प्रकार देश एक भीषण आन्दोलन की लपटो से घिर गया और जैसी कि आशा की जाती थी, नेता लोग जेल के सीखचो में वन्द कर दिए गए। अत: जब नेता लोग नही रहे तो हर एक स्त्री-पुरुष पर अपने नेतृत्व की जिम्मेवारी आगई और जनता ने अपने विश्वस्त नेताओ के अभाव मे अपने उद्देश्य को प्राप्त करने का सब उत्तरदायित्व अपने ऊपर ले लिया। मदान्ध साम्राज्यवाद के निर्दयतापूर्ण दमन ने लोगों के हृदय में तीव्र लगन एव दृढता उत्पन्न कर दी थी कि शारीरिक यातनायें सहन करके भी उन्हे अंग्रेजी शासन का मुकाबला करना चाहिए तथा उसे पर विजय प्राप्त करनी चाहिए। अतएव जनता ने विपक्षी पर आक्रमण करने के नए साहसपूर्ण तरीके ईजाद किये और उनके आधार पर आन्दोलन को चलाया। इस बीच आजादी के कुछ नए एव पुराने सैनिक आगे आए और शत्रु पर आक्रमण करने के लिए जनता का पथ-प्रदर्शन करने लगे। उन्होंने जनता के हृदय में अधिकार प्राप्त करने की इच्छा जाग्रत कर दी और उसे कार्य रूप मे लाने का मार्ग भी बता दिया। अतएव स्वाभाविक रूप से ही इन नेताओ को कल्पनातीत ख्याति प्राप्त हुई। वास्तव में युद्धकाल से ही दूसरे देशो की परिस्थितियो के कारण राष्ट्रीय कांग्रेस में एक क्रांतिकारी दल तैयार हो रहा था जो राष्ट्रीय युद्ध-नीति को क्रान्तिकारी रूप देना चाहता था। श्री सुभाषबाबू इस प्रकार की विचार-धारा के प्रतीक थे। जब तक वह भारत में रहे, निरन्तर इस नीति को प्रोत्साहन देने एव कार्य रूप में परिणत करने की कोशिश में लगे रहे। और जब वे देश से बाहर चले गये तो वहाँ पर उन्होंने अपने इस प्रयत्न को अन्त तक जारी रखा। सिंगापुर में प्रसिद्ध आजाद हिन्द फौज का निर्माण कर तथा बर्मा एव भारत की सीमा पर आज़ाद हिन्द फौज की अंग्रेजो के साथ लड़ाइयाँ लडवाकर श्री सुभाषबाबू ने अपनी इसी भावना का परिचय दिया।

इधर भारत में भी उस समय बहुत से व्यक्ति सुभाषबाबू की इस नीति को आगे बढाने के लिए किसी उपयुक्त अवसर की बाट देख रहे थे। सौभाग्य से १९४२-४३ मे भारतीय जनता ने जो क्रांतिकारी प्रयत्न किए उनके कारण इन लोगो को अपनी इस नीति का प्रयोग करने का अच्छा अवसर मिल गया। इस प्रकार पिछले वर्षों की अपेक्षा अब हम अधिक अनुभवशील है। जब वातावरण शान्त हो जाय तो हमे इन विभिन्न प्रकार की घटनाओ एव प्रगतियो की वैज्ञानिक ढग पर निष्पक्ष जाँच करनी चाहिए,

ताकि राष्ट्रीय ज्ञान-कोष समृद्धिशाली बने और हमारे भावी आन्दोलन अधिक सफल हो सकें।

युद्धकालीन नेता एवं राष्ट्र के कर्णधार

यह एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण प्रश्न है जिसकी हम अवहेलना नही कर सकते। एक राष्ट्रीय युद्ध मे अनेक नायक उत्पन्न हो जाते है और खूब ख्याति प्राप्त करते है। हाल ही में समाप्त होने वाले महायुद्ध में रोमेल, मोन्टगुमरी, मैकआर्थर, टिमोशेन्को आदि अनेक जनरलो ने महत्त्वपूर्ण काम किये और ख्याति के शिखर पर पहुँचे। परन्तु युद्ध के समाप्त होने और सामाजिक अवस्था के स्वभाविक स्थिति मे आने पर हमें प्रत्येक व्यक्ति को सामाजिक, राजनैतिक एवं आर्थिक परिस्थिति के अनुरूप ही स्थान देना चाहिए। शान्ति-काल में किसी युद्धनायक के हाथो मे राष्ट्र की बागडोर सौंप देना बहुत ही घातक होगा, क्योंकि इससे सम्पूर्ण सामाजिक ढाँचा अस्त-व्यस्त हो सकता है।

सैनिक दृष्टि से भी किसी खास मोर्चे पर समय एव परिस्थिति के अनुरूप काम में लाई जाने वाली अस्थायी नीति का एकागी महत्त्व ही होता है, उसकी सम्पूर्ण युद्ध-नीति के साथ समता नही की जा सकती; क्योकि सम्पूर्ण युद्ध-नीति मे युद्ध की तैयारी, शान्ति-काल की कूटनीति, प्रचार, आक्रमण करना, विपक्षी के आक्रमण का मुकाबला करना, समय पडने पर पीछे हटना रसद इकट्ठी करना तथा उसे विभिन्न मोर्चो पर भेजना, सैनिक भर्ती, सन्धि करना आदि अनेक जटिल समस्याये शामिल है। इस प्रकार इग्लैंड, रूस, अमेरिका आदि देशो मे उन जनरलो को, जिन्होंने कठिन मोर्चों पर विजय प्राप्त की है तथा आक्रमण करने एव विपक्षी के आक्रमण से बचने के अनेक लाभप्रद एव सफल तरीके निकाले है, अनावश्यक महत्त्व देना हानिप्रद सिद्ध होगा।

सच्चे एवं स्थायी हित की दृष्टि से देश की बागडोर उन्ही नेताओ के हाथ मे सौपनी चाहिए जिनका अनुभव परिपक्व हो, जिनको बहुत पुराना तजुर्बा हो, जिन्होने अपनी ईमानदारी, लगन एव त्याग के द्वारा जनता के नेतृत्व का अधिकार प्राप्त किया हो तथा जो अपने आदर्शों के आधार पर एक बड़े और उन्नत राष्ट्र के गौरव के अनुरूप सामाजिक सगठन निर्माण करने की क्षमता रखते हों।

कार्यक्रम

क्रोध एव रोष से उन्मत्त और जोश से भरी हुई जनता कुछ करना चाहती

थी। उसमें साहस था, जोश था और थी अपने-आपको स्वतंत्र करने की तीव्र इच्छा। बढ़ते हुए दमन चक्र तथा दिल दहलाने वाली घटनाओं के रूप में लोग ब्रिटिश साम्राज्यशाही का नंगा नाच देख चुके थे और उधर जेल के सींखचों में से उन्हें अपने प्रिय नेता महात्मा गान्धी का 'करो या मरो' का गगन-भेदी स्वर सुनाई पड़ रहा था।

आन्दोलन को चलाने के लिए उन्हें एक निश्चित कार्यक्रम कौन देगा? क्या नेताओं ने अपने पीछे कोई निश्चित कार्यक्रम छोड़ा है? यदि नहीं तो क्यों? कोई कार्यक्रम न पाने की सूरत में उन्हें क्या करना है? इस प्रकार के कितने ही प्रश्न थे जिन पर जनता के लिए ठंडे दिल से विचार करना आवश्यक था। परन्तु जब जनता आन्दोलन प्रारम्भ कर देती है तो वह किसी प्रकार का अवरोध सहन नहीं कर सकती और उसके सामने जो भी हथियार आता है, चाहे वह कितना ही खराब क्यों न हो. उसे अपने क्रान्तिकारी उपयोग में ले आती है। यह एक नियम है। यही बात नेताओं की गिरफ्तारी के बाद यहां हुई। उस समय देश में यह बात जोरों से फैल चुकी थी कि ब्रिटिश साम्राज्य-वाद के शासन-सूत्र को पंगु बना देना अत्यन्त आवश्यक है। इतने ही में भारत-मंत्री श्री एल० एस० एमरी ने कांग्रेस को बदनाम करने एवं उस पर दोषा-रोपण करने की नीयत से तोड़-फोड़ का एक कार्यक्रम ब्राडकास्ट किया जिसमें ११ बातें थीं। जनता ने इस ब्राडकास्ट को अपनी उत्तेजित भावना से देखा और उसके सामने जो भी ब्रिटिश शासन का चिन्ह आया उसे वह नष्ट करने पर तुल गई। परिणाम-स्वरूप पुलिस थाने जला दिये गए या तहस नहस कर दिये गये, डाकखाने लूट लिए गए, मीलों तक रेलवे लाइनें उखाड़ डाली गईं, सरकारी रिकार्ड फूंक दिये गये और इसी प्रकार अनेक तरीकों से सरकारी शासन पर प्रहार किया गया और उसे काफी क्षति पहुंचाई गई।

कार्यक्रम किसने दिया?

यह कार्यक्रम किसने दिया. यह एक बहुत ही विवादास्पद प्रश्न बन गया है। कुछ लोग इसे एमरी के दिमाग की उपज बताते हैं। कुछ कहते हैं धुरी रेडियो एवं श्री सुभाष बाबू के ब्राडकास्ट द्वारा जनता ने इसे प्राप्त किया और कुछ लोग इससे भी आगे बढ़ते हैं और वे इसकी जिम्मेदारी कांग्रेस के उन नेताओं पर डालते हैं जो प्रथम दौर में गिरफ्तार न किये जा सके और जो इस प्रकार कार्य-क्रम बनाने तथा उसका प्रचार करने को स्वतन्त्र थे। हमारी समझ में ये सब बातें व्यर्थ की हैं। यह बात सभी जानते हैं कि जब प्रधान नेता गिरफ्तार कर

लिये गये तो उनके पीछे देश मे एक अत्यन्त क्रान्तिकारी भाव उबाल खा रहे थे। बम्बई में लोगो ने 'कौंसिल आफ एक्शन' यानी 'संघर्ष समिति' की स्थापना करके अपने हृदय के इन भावो को दुनिया के सामने व्यक्त कर दिया। यह पहली सगठित क्रान्तिकारी सस्था थी और इसमे कॉग्रेस के उन नेताओ ने भी, जो गिरफ्तार नही किये जा सके थे, भाग लिया था। इस सस्था के कार्यकर्ताओ ने अपना एक स्वतत्र प्रेस तथा ब्राडकास्ट स्टेशन बना लिया था, जिनके द्वारा ये अपने इधर-उधर बिखरे हुए साथियों एव जनसाधारण को आन्दोलन चालू रखने के सम्बन्ध में हिदायतें देते थे। ये लोग तीन बातो पर खास जोर देते थे—१. यातायात के साधन नष्ट करना। २ गावो मे सरकारी सिक्के का बहिष्कार कर उसके स्थान पर वस्तु के बदले वस्तु देने की प्रथा की स्थापना तथा ३ पुलिस एवं फौज का विरोध। वैसे लोगो को सरकारी सस्थाओ, जैसे पुलिस थानो, रेल्वे स्टेशनो, डाकघरों, माल गोदामो, अदालतो आदि पर कब्जा करने तथा मिलो, फैक्टरियो, स्कूल-कालेजो आदि मे हडताल कराने के लिए भी उत्साहित किया जाता था।

कोई कार्यक्रम क्यों नहीं दिया गया ?

नेताओ ने जनता को कोई निश्चित कार्यक्रम नही दिया ? इस सम्बन्ध में दो बाते विचार करने की है। क्या नेता लोग बिना किसी पूर्व चेतावना के गिरफ्तार लिये गये ? या क्या कोई निश्चित कार्यक्रम देने के प्रश्न को उन्होंने उस समय जान बूझ कर टाल दिया था ?

जो महात्मा गाधी की प्रकृति को जानते है उनके लिए इस प्रश्न का उत्तर स्पष्ट है। यह सभी जानते है कि कोई कार्यक्रम तभी दिया जा सकता है जब कि उसे पूरा करने की मशीनरी तैयार हो और उसमे एक निर्दयी विपक्षी के प्रहार को सहने की क्षमता हो। उस समय जो परिस्थिति थी उससे यह स्पष्ट दिखाई पडता था कि ज्यो ही आन्दोलन प्रारम्भ हुआ कि नेता लोग जनता से छीन कर जेल के सींखचो मे बन्द कर दिये जायगे और इस प्रकार लोगो को अपना नेतृत्व स्वय करना पड़ेगा। ऐसी हालत में यह बिलकुल अनुचित था कि बिना किसी नेतृत्व के लोगो को तोड़-फोड़ का क्रान्तिकारी कार्यक्रम दे दिया जाता। गान्धीजी को यदि यह विश्वास होता कि वह अपने कार्यक्रम को अन्त तक कार्यान्वित कर सकेंगे तथा एक अहिंसक आन्दोलन मे लोगो का नेतृत्व करने के लिए खुले छोड दिये जायगे तो वे एक निश्चित कार्यक्रम अवश्य देते, क्योंकि वे स्वय ऐसा करना चाहते थे। किन्तु अचानक वह कैद कर लिये गये

और उनकी नीति एवं व्यवहार-कुशलता ने उन्हे इस बात के लिए प्रेरित किया कि वह लोगो को अपनी प्रकृति तथा सामर्थ्य के अनुरूप स्वयं ही अपना कार्य-क्रम तैयार करने के लिए स्वतत्र छोड दे । फौजी दृष्टि से भी उनके लिए किसी कार्यक्रम के लिए हुक्म देना बिलकुल अनुचित एव हानिकर था । हुक्म वे ही अफसर दे सकते है जो स्वय घटनास्थल पर सिपाहियो के साथ ऊची-नीची स्थिति का सामना करते है एव उसका निरतर अध्ययन करते है । जब इस बात की निश्चितता न हो तो नेता के लिए यही बात शेष रह जाती है कि वह जनता को आन्दोलन के विषय में साधारण बाते बता दे अर्थात् नारा, चेतावनी आदि दे दे । काँग्रेस-नेतृत्व ने अपने इस कर्तव्य को पूरा किया और ज्यो-ज्यो आदोलन शुरू होने का समय आता गया, नेताओ ने बार-बार अपने भाषणो द्वारा लोगों को इन बातो का ज्ञान कराया तथा अखिल भारतवर्षीय काग्रेस कमेटी के सामने भाषण देते हुए ८ अगस्त को तो महात्मा गाधी ने बिलकुल खुले शब्दों में इन बातो का निर्देश कर दिया ।

कोई निश्चित कार्यक्रम न देने का एक और भी मुख्य कारण है । कोई भी नेता आन्दोलन के बीच मे उत्पन्न होने वाली तमाम सम्भाव्य परिस्थितियो का पहले से ही अनुमान नही लगा सकता । अत जब नेता को स्पष्ट दिखाई पड़ता है कि परिस्थिति के अनुसार वह अपने हुक्म को बदल सकने के लिए स्वतत्र न होगा तो ऐसी अवस्था मे पहले से ही अपनी सेना को एक निश्चित हुक्म दे देना कितना घातक हो सकता है यह सभी जानते है । ऐसी अवस्था मे युद्ध-स्थल पर उचित नेतृत्व न कर सकने के कारण नेता पर एक बहुत बड़ी नैतिक जिम्मेदारी आ जाती है । उस दशा मे सैनिक एक अजीब परिस्थिति में पड जाते है और पीछे हटना, बगल से आक्रमण करना आदि असम्भव हो जाता है । इस प्रकार सैनिको का जीवन अपने नेता के हाथो में चला जाता है जो स्वय अपने निर्दयी चालाक विपक्षी की दया पर ही जीवित रह सकता है। इन बातो को सोचते हुए यह स्पष्ट हो जाता है कि उस समय की अजीब परिस्थिति मे यदि कोई कार्यक्रम तैयार किया जाता तो वह हमारे लिए बहुत घातक सिद्ध होने के अलावा विपक्षी के लिए भी बहुत लाभप्रद सिद्ध होता और इस प्रकार हम दोहरी मार खाते और पिस जाते ।

आंदोलन के तूफानी केन्द्र

प्रारम्भ में सारे देश में हडताले, विरोध प्रदर्शन, जुलूस व सभाए हुई । पर साथ ही साथ जहाँ-जहाँ भी मिस्टर एमरी की काग्रेस-प्रोग्राम सम्बन्धी

घोषणा, सुभाष बाबू के नाम पर धुरी रेडियो द्वारा ब्राडकास्ट किया जाने वाला प्रोग्राम तथा अखिल भारतीय काग्रेस के नाम से बाँटे गये पर्चे पहुँचते गए वहाँ-वहाँ पर सरकारी इमारतो, सस्थाओं तथा सरकारी सत्ता के चिन्हो, जैसे कचहरियो, थानो, डाकखानों इत्यादि पर जनता के सामूहिक प्रयत्न प्रारम्भ हुए। पर यह प्रोग्राम केवल उन्ही इलाको मे अधिक फला-फूला और स्वभावत. अपनाया गया जहाँ पर या तो युद्ध के विविध दबावो के कारण जनता तग आ चुकी थी या आर्थिक परेशानी बढ़ चुकी थी या काग्रेस नेतृत्व का जनता पर गहरा प्रभाव था या क्राति के लिए अन्य उपयुक्त कारण अपनी परिपक्व अवस्था को पहुँच चुके थे। उन इलाको मे यह प्रोग्राम तेजी से चला। इसीलिए आन्दोलन के तूफानी केन्द्र आसाम घाटी के जिले, बंगाल के पश्चिमी जिले, मिदनापुर, बिहार के उत्तरी, पूर्वी व पश्चिमी इलाके, युक्तप्रात के पूर्वी जिले, उड़ीसा मे बालासोर जिला, महाराष्ट्र में सतारा, पूर्वी खानदेश, पश्चिमी खानदेश विशेष रूप से रहे। यह प्रश्न किया जा सकता है कि आखिर इन्ही इलाको में आन्दोलन का तूफान अधिक क्यों उठा? उत्तर बड़ा सरल है। वहाँ पर शिक्षा का अधिक प्रचार है, गाँव-गाँव मे पढे-लिखे लोगो की काफी सख्या है, फौजी भर्ती के ये केन्द्र है और सन् १८५७ के गदर के समय भी ये सब जिले अन्त समय तक अपनी आजादी के लिए लड़ते रहे थे। यहाँ पर बहादुर लोग रहते हैं। भौगोलिक दृष्टि से यहाँ के लोग लुक-छिप कर लम्बी लड़ाई लड़ने के लिए अधिक समर्थ हैं। यहाँ इस लडाई मे जनता पर हर प्रकार के बोझ पड़ चुके थे। अपने युद्ध-प्रयत्नो को सफल बनाने के लिए ब्रिटिश नौकरशाही ने तरह-तरह के प्रतिबन्ध लगा रखे थे। चूकि इन इलाको से काफी अधिक सख्या मे लोग फौज में भर्ती हो चुके थे, इसलिए उनके भाई व रिश्तेदार जो इन इलाको मे बसते थे, कुछ ऐसा सोचने लगे थे कि अब अपने फौजी भाइयो से मिलने का केवल एक ही उपाय है कि हिन्दुस्तान मुक्त हो जाय। इन बातों के अलावा ये वे इलाके हैं जहाँ पर काग्रेस नेतृत्व का जनता पर गहरा प्रभाव था।

इस आंदोलन की दूसरी विशेषता यह रही कि इसके तूफानी केन्द्र मुख्यत. उन इलाको में रहे जो जापानी बमबाजी के नज़दीक पडते थे। वहां की जनता को विश्वास हो चला था कि जापानियो के जुल्म भी उन्ही को सहने पड़ेगे, इसलिए उन्होने सोचा कि जब मरना ही है तो अपनी आजादी के लिए ही क्यो न मरे। यही कारण है कि पुरी, पूर्वी गोदावरी, गन्टूर, कोयम्बटूर, बगाल में कन्टाई इत्यादि जितने भी पूर्वी तट के इलाके है उन सब मे

भयंकर विस्फोट हुआ। हमारा तात्पर्य यहा पर उन कारणो को बताने का नहीं है जिनकी वजह से यह सब इलाके आन्दोलन के मुख्य केन्द्र बने। केवल संकेत रूप से यह बताना है कि क्यो इन खास इलाको मे आंदोलन तेज़ी से रहा और क्यो एक विशेष प्रकार का आन्दोलन इन्ही इलाको में हुआ। उपरोक्त कारणो के अतिरिक्त और भी ऐसे ही कारण थे जो इन इलाकों के आदोलन मे सहायक हुए थे।

तूफ़ान उठा, वेग से बढ़ा और अन्त मे यहाँ तक दीख पड़ा कि करोड़ो ने किसी-न-किसी रूप मे इसमे सहयोग दिया। पाँच-छः माह बाद आन्दोलन का सामूहिक रूप खत्म हुआ। देश मे सैनिक शक्ति स्थापित हुई। सरकार की ओर से कुछ आकड़े छपे हैं, उनके अनुसारः—

पुलिस तथा फौज की गोलियो से मरे व्यक्तियो की सख्या	९४०
पुलिस तथा फौज की गोलियो से घायल व्यक्तियो की सख्या	१,६३०
कितनी बार गोलिया चलाई गयी	५३८
गिरफ्तार हुए व्यक्तियो की सख्या	६०,२२९
नज़रबन्द किए गए व्यक्तियो की सख्या	१८,०००
उन स्थानो की सख्या जहा फौज बुलाई गयी	६०
उन स्थानो की सख्या जहा हवाई जहाज़ो से बम गिराए गए (पटना, भागलपुर, नदिया, मुगेर, तलकेरा और तमलक)	६
स्टेशनो की सख्या जो दिसबर मास तक बरबाद किए गए	३१८
गिराई गयी गाड़ियो की सख्या	५९
तोड़-फोड़ द्वारा रेलवे विभाग की क्षति	रु० १८,००,०००
मोटर लारियो की क्षति	रु० ९,००,०००
स्टेशन की इमारतो की क्षति	रु० ८,५०,०००
स्टेशनो की अन्य सामग्री की क्षति	रु० ६,५०,०००
पोस्ट आफिसो की सख्या जिन पर हमले किये गये।	९५४

नोट–इनमें से ६० पूर्णरूपेण बरबाद किए गए, २५२ बुरी तरह से बरबाद किए गए और बहुत से गोलीबार द्वारा बरबाद किए गए।

नकद तथा दूसरी तरह से की गयी क्षति	रु० २,००,०००
कितनी जगह टेलीफोन व टेलीग्राफ के तार काटे गये	१२,०००

उपरोक्त हर्जाने के अलावा डाकखानो तथा तारघरो के आफ़िसों में १,००,००० रुपए से अधिक का फरनीचर बरबाद कर दिया गया। सैकड़ों स्कूली

इमारतों को बरबाद करने से जो क्षति हुई है, उसकी सख्या भी हज़ारो और लाखों के करीब है।

सरकार का यह भी कहना है कि ६० स्थानो पर सेना को बुलाना पड़ा और लगभग ५३८ बार पुलिस को भीड़ को छिन्न-भिन्न करने के लिए ६ मरतबा हवाई जहाजो से भी गोलिया चलानी पड़ी। सरकार द्वारा यह भी बताया गया है कि जनता ने थानो, डाकखानों, स्टेशनो, सरकारी इमारतों आदि पर सामूहिक प्रहार किये तथा उनको जलाया।

उपरोक्त आकड़ो के बावजूद सरकार का कहना है कि आन्दोलन के कारण उसकी काई खास क्षति नही हुई, किन्तु आन्दोलन काल में उसी के सप्लाई डिपार्ट-मेंट की ओर से एक विज्ञप्ति निकली थी जिसका सार हम नीचे देते है। इसको पढ़कर पाठक अनुमान लगा लेंगे कि सरकारी युद्ध-प्रयत्नो पर आन्दोलन का कितना अधिक प्रभाव पड़ा था। विज्ञप्ति मे कहा गया है—

"कांग्रेस आन्दोलन का प्रभाव कपड़ा मिलो पर बहुत पड़ा है। अहमदाबाद के करीब ९० प्रतिशत सूत कातने वालो न काम छोड़ दिया। मद्रास प्रान्त मे बकिंघम मिल और करनाटक की कुछ मिलें २५ अगस्त तक बन्द रही। इससे एक करोड़ की जगह केवल ५ लाख गज कपड़ा तैयार हो सका। बड़ौदा, इन्दौर, नागपुर तथा देहली की मिलो मे भी विभिन्न समय तक हड़तालें चलती रही। इस प्रकार आन्दोलन के प्रथम महीने मे कुल मिलाकर करीब ढाई करोड गज कपड़े का नुकसान हुआ। ऊनी कपड़े मे भी लगभग इतनी ही हानि हुई। कैलिको मिल तथा मेसर्स हत्थीसिंह एण्ड कम्पनी के बन्द हो जाने से सिलाई के काम में आने वाला धागा न मिल सका और इस प्रकार सिलाई के काम को काफी धक्का पहुचा। लाहौर आदि कई स्थानों मे तो बिलकुल भी काम न हो सका, क्योकि वहा पर धागे का स्टाक नही था।

तम्बाकू के काम मे भी काफी हानि हुई और इम्पीरियल तम्बाकू कम्पनी की कलकत्ता, बम्बई, बगलोर एव सहारनपुर की फैक्टरिया निश्चित समय पर अपना माल तैयार करके न दे सकी। इतना ही नही, मुगेर की फैक्टरी मे काफी तोड़-फोड़ किया गया जिससे न तो सिगरेट बनाने का कागज ही मिल सका और न छपाई आदि का काम ही हो सका।

कानपुर आदि के चमड़े के कारखानो मे आन्दोलन के कारण ५० प्रतिशत काम कम हुआ। बीजापुर मे करीब एक लाख रेलवे स्लीपर तथा एक लाख २० हजार बास जलाकर भस्म कर दिये गये। आन्दोलन का वेग इतना भयकर था कि जगल का काम बन्द करना पड़ा।

गहूं तथा गेहू की बनी चीजें भी आन्दोलन के प्रभाव से न बचसकी। सबसे अधिक नुकसान देहली की गणेश-फ्लोर मिल्स को उठाना पड़ा। आन्दोलनकारी इसकी वर्कशाप के तमाम औजार आदि उठाकर ले गये। उन्होने अन्न के स्टाक को भी हानि पहुचाई तथा करीब १५० टन अन्न लूट लिया। मशीनों आदि को क्षति पहुचने के कारण लगभग ४००० टन माल कम तैयार हुआ।"

जनता के अपने आकड़े भी है, किन्तु नेताओ के पकडे जाने के बाद सारे देश के अखबार बन्द होगये और जो अखबार निकलते थे उन्हे आन्दोलन सम्बन्धी खबरें छापने का अधिकार न था।

महत्वपूर्ण बातें

इस आन्दोलन की तीन महत्त्वपूर्ण बाते है।

१.आन्दोलन की ज्वाला देशी रियासतो मे फैली।

२ विद्यार्थियो का अभूत-पूर्व कार्य, जिन्होने काग्रेस नेताओ के पश्चात् आदोलन का नेतृत्व किया।

३.किसी जगह हिन्दू-मुस्लिम उत्पात का न होना अथवा दूसरे शब्दो मे मुस्लिम जनता का मिस्टर जिन्ना की अनेक धमकियो के होते हुए भी आन्दोलन के प्रति हमदर्दी प्रकट करना।

सन १९४२ में राष्ट्रीय आन्दोलन का सर्व प्रथम देशी रियासतो की प्रजा के आन्दालन के साथ गठबन्धन हुआ। क्राति की ज्वाला सब बाह्य नुमायशी बन्धनो को तोड़ती हुई रियासतो मे धधकी और आन्दोलन की गतिविधि वहां पर भी ऐसी ही रही जैसी कि ब्रिटिश भारत मे। मध्य भारत की रियासतो में आन्दोलन बड़ी तीव्र गति से फैला और भरतपुर, कोटा, इन्दौर, ग्वालियर, रतलाम और बड़ौदा आदि में हड़तालें हुई, विरोध-प्रदर्शन हुए, सरकारी सत्ता पर आक्रमण हुए। दक्षिण भारत की रियासतो में भी इसकी लपटें फैली और विशेषकर मैसूर में तो उसकी गति-विधि बहुत ही बढ़ी-चढी रही। यहा पर जनता ने सरकारी राज-सत्ता पर प्रहार कर कब्जा करने के सफल व असफल प्रयत्न किये। उधर उड़ीसा और महाराष्ट्र की देशी रियासतो मे शोले उठे। निस्सन्देह देशी रियासतो मे जो आन्दोलन हुआ, उसका श्रेय वहा के प्रजामण्डलो को है, जिन्होने राज्य मे जागृति व बेचैनी पैदा कर दी थी और इस कारण इस आन्दोलन की बाह्य गति के समाप्त होते ही सारी रियासतो मे प्रजामण्डलो

का संगठन और सम्मान बढ़ा और प्राय. राजाओ ने अपने प्रजामण्डलो से किसी-न-किसी प्रकार समझौता करने की चेष्टा की।

२.जहाँ तक विद्यार्थियो का सम्बन्ध है इसमें कोई शक नही कि विद्यार्थियों की.एक शक्ति भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन की एक सञ्चित शक्ति थी। आन्दोलन से पहले विद्यार्थियो पर मुख्यत कम्युनिस्टो का प्रभाव था, पर ९ अगस्त को देश में आग लगते ही विद्यार्थियो ने जिस अपूर्व उत्साह, हिम्मत और बलिदान का परिचय दिया उससे विद्यार्थी-जगत् के प्रति एक महान् सहानुभूति व सम्मान पैदा होगया है। हज़ारो ने कालेज व स्कूल छोड़ दिये और अपनी समझ के अनुसार आदोलन का नेतृत्व करने का प्रयत्न किया। इन नवसिखिये व उत्साही युवको से कांग्रेस की अहिंसा नीति का अक्षरशः पालन करने की आशा नही की जा सकती थी, क्योकि न इन्हे कोई ट्रेनिंग थी और न किसी आन्दोलन की गतिविधि के साथ इनका कोई गहरा सम्बन्ध ही रहा था। बम्बई के विद्यार्थी आन्दोलन मे सबसे आगे थे और उन्होने साम्राज्यशाही के बिजली जैसे तेज आक्रमण का मुकाबला गोलियाँ और लाठिया खाकर किया। अहमदाबाद, शोलापुर व अन्य शहरो मे भी विद्यार्थियो ने आंदोलन मे हिस्सा लिया। विद्यार्थियो मे लगी हुई यह आग चारो ओर फैली और युक्तप्रात, मध्यप्रात, आसाम आदि सब जगह के विद्यार्थियो ने इस आदोलन मे सैकडो की तादाद मे हिस्सा लिया। धूलिया जिले के नन्दाबाज़ार और खैर जिले के विद्यार्थियो के ऊपर जो अमानुषिक अत्याचार हुए उसकी अपनी एक हृदय-विदारक कहानी है। युक्तप्रात मे केवल बनारस डिवीजन मे ३२ हज़ार विद्यार्थियो ने सारे पूर्वी जिलो मे एक नवजीवन व स्फूर्ति पैदा कर दी थी। वे सब इन जिलो में फैल गये और वहाँ के आन्दोलन का नेतृत्व ग्रहण किया।

३. यद्यपि एक प्रकार से उस समय हिन्दुस्तान मे आग्ल-मुस्लिम गुट्ट बन गया था और ऐसा मालूम पड़ता था कि मिस्टर जिन्ना ने कांग्रेस आदोलन को कुचलने के लिए ब्रिटिश नौकरशाही के साथ कोई षड्यत्र कर रखा है, क्योकि कुछ दिन पहले उन्होने इस बात की घोषणा की थी कि यदि कांग्रेस ने कोई आन्दोलन शुरू किया तो देश भर मे गृहयुद्ध हो जायगा, आपसी झगड़े व उत्पात होगे। ९ अगस्त को जब देश भर मे दबी-पिसी जनता ने अंग्रेजी नौकरशाही व साम्राज्यवाद के विरुद्ध खुली बग़ावत की तो उस काल मे एक भी जगह साम्प्रदायिक झगड़ा न हुआ। बल्कि इसके विपरीत

हज़ारो मुसलमानो ने खुले रूप से इस आदोलन मे यत्र-तत्र हिस्सा लिया। सयुक्त प्रान्त के पूर्वी जिलो में, बिहार मे विशेषत. पूर्णिया जिले मे, बगाल के चटगाव आदि जिलों मे मुसलमानो ने इस विद्रोह मे हाथ बटाया और इस प्रकार दुनिया ने देखा कि भारत की मुस्लिम जनता भी साम्राज्यशाही के उतनी ही विरुद्ध है जितनी कि हिन्दू। यह दुर्भाग्य की बात थी कि मुस्लिम-नेता जनता की सरकार विरोधी भावना को ठीक तरीके से जाग्रत व संगठित नहीं करना चाहते थे।

व्यर्थ की बहस

ब्रिटिश प्रचार विभाग ने दुनिया के सामने इस बात का भरपूर प्रचार किया कि काग्रेसी नेताओ की इस आन्दोलन को चलाने की एक सगठित योजना थी और उसमे हिंसा व तोड़फोड़ भी शामिल है। इसलिए देश मे जो उत्पात हुए, सम्पत्ति का विनाश हुआ, हिंसात्मक काण्ड हुए, उनका उत्तरदायित्व काग्रेस पर है। दुर्भाग्य से कुछ थके, पस्त काग्रेसी भी इस प्रचार के शिकार बन गए और उन्होने जनता के इस सामूहिक आन्दोलन को काग्रेसी आन्दोलन न कहकर कुछ दिलचले, बहके नौजवानो का ऊटपटाग प्रयत्न बताने की चेष्टा की और जनता की ओर से जो हिंसात्मक कार्य हुए थे उनकी निन्दा करनी शुरू कर दी। वास्तव मे यह घातक दृष्टिकोण है, हालाकि हमारा विश्वास है कि हिंसा तथा गुप्त कार्य, चाहे वे किसी भी रूप मे किये जाय, एक सामूहिक आन्दोलन व प्रयत्न की प्रगति के लिए घातक होते है। यदि वे न होते तो आन्दोलन को और भी शक्ति मिलती। किन्तु यह नही कहा जा सकता कि जो जनता सैकडो की तादाद में उठी, उसने आम हिंसात्मक प्रयत्न किये। वास्तव मे जनता के प्रयत्न काग्रेस की पुरानी शिक्षा के अनुसार ही थे। यह दूसरी बात है कि यत्र-तत्र गोलियो की बौछारो व लाठियो के प्रहारो से पीडित जनता ने ढेले आदि फेके हो और किसी जगह आवेश मे आकर क्रोधित जनसमूह हिंसात्मक कार्य करने के लिए तैयार हो गया हो, असगठित हिंसा-कर बैठा हो। पर जहा तक आन्दोलन के रूप का ताल्लुक है, हम ऐसे इक्के-दुक्के काडो से उसे हिंसात्मक रूप नही दे सकते। जनता की ओर से जितने सामूहिक प्रयत्न हुए उनको जानने से पता चलता है कि हर जगह लोग काग्रेसी नेताओ के नारे व जय बोलकर आगे बढ़ते थे और अधिकाश जगहो पर उनकी माग यही थी कि अब से सरकारी कर्मचारी काग्रेसी हुकूमत को माने। उनके हृदय में प्रारम्भ मे हिंसात्मक भावना नही थी।

हमे इसी काल मे शुद्ध अहिंसात्मक प्रयत्नो के अनेक ऐसे गौरवपूर्ण उदाहरण मिलते है जिनमें लोगो ने सामूहिक रूप से अहिंसात्मक रहने का परिचय दिया है। यहाँ तक कि आवेशपूर्ण व बहुसख्यक जनता ने भी सरकारी कर्मचारियो पर हाथ नही उठाया। आसाम घाटी मे जहा पर २० लाख से अधिक लोगो ने सरकारी कानूनो को खुले रूप से तोडा तथा अदालतो थानो व डाकखानो आदि पर सामूहिक प्रहार किये, बलिदान, त्याग और अहिंसा के ऐसे अनेक उदाहरण मिलते है। बिहार और युक्त-प्रान्त के पूर्वी जिलो में ऐसी अनेक घटनाये हुई है। कर्नाटक में जहा पर आन्दोलन अत्यन्त ही सगठित रूप में चल रहा था, हजारो सुसगठित नवयुवको ने हिस्सा लिया और एक भी सरकारी नौकर नही मारा गया।

अवश्य ही जनता की ओर से कितनी ही जगह हिंसात्मक काण्ड भी हुए है, पर उनकी सख्या उन घटनाओं के सामने फीकी पड जाती है जो कि देश भर में अहिंसात्मक प्रयत्नों की साक्षी है। सैकड़ो जगह जन समूह पर दस-दस मिनट के बाद गोलिया चलाई गईं। इन गोलियो के प्रहार से जनता पीछे हटी, अपने मरे व जख्मी लोगो को उठाकर ले गई और थोडे समय बाद वह गोलियो का मुकाबला करने के लिए फिर आगे बढती देखी गई। इन घटनाओं से पता चलता है कि आन्दोलन का वास्तविक रूप अहिंसात्मक था और जनता के अन्दर पिछले आन्दोलनो द्वारा प्राप्त अनुभव और सगठन काम कर रहा था। यद्यपि जनता के संगठित रूप से हिंसा करने के सारे कारण मौजूद थे और उसकी तादाद सरकारी कर्मचारियों के मुकाबिले में कई गुना अधिक थी, फिर भी जितनी हिंसा हुई वह बहुत कम थी। जनता को जिस परिस्थिति का सामना करना पड़ रहा था, उसे देखते हुए तो कही अधिक हिंसा की आशा की जाती थी। जनता में जोश था, तडप थी और कुछ करने की महान् अभिलाषा थी। उसके नेता छिन चुके थे। उस पर एक वज्र प्रहार करने का प्रयत्न किया जा रहा था। चारो ओर से उसे घोडो की टापो, गोलियो की बौछारो और लाठियो के प्रहारो से दबाने के सगठित प्रयत्न किये जारहे थे।

लाखों इस तूफान के वेग में उठे, आगे बढे और जीवन-मरण के खेल खेले। इतना विशाल सामूहिक विद्रोह होते हुए भी सुना जाता है कुछ थोड़े इने गिने सरकारी अफसर मरे और घायल हुए। केवल यही इस बात का सबूत है कि आन्दोलन का रूप वास्तविक रूप में अहिंसात्मक था और यह कांग्रेस के पिछले आन्दोलनो द्वारा दी गई ट्रेनिंग व शिक्षा का ही फल था।

निस्सन्देह सरकारी दमन का चक्र जब जनता को रौंदता ही गया ता आन्दोलन का रूप सतह से हटकर सतह से नीचे चला गया और पश्चिमी क्रान्तियो के नियमो से प्रभावित सैकडो कार्यकर्ताओ ने समझा कि सम्पत्ति को क्षति पहुँचाना हिंसा नही है, वह अहिंसा की परिभाषा मे आ सकता है । इस तरह से गुप्त आन्दोलन, गुरिला-युद्ध व तोड-फोड़ इत्यादि विचारो का जन्म हुआ । कुछ दिलचले नौ जवान सशस्त्र क्रान्ति की बात सोचने लगे । किन्तु यह सब आन्दोलन का बहुत छोटा-सा रूप था और सरकारी प्रचार विभाग ने इसे केवल इसलिए बढ़ा-चढा कर दिखाया कि वह निहत्थी जनता पर अपने द्वारा की गई हिंसा के लिए कोई बहाना ढू ढ सके । जहाँ तक इन इक्के-दुक्के असगठित हिंसात्मक कार्यों की जिम्मेदारी का ताल्लुक है, ब्रिटिश सरकार एक भी ऐसी बात पेश नही कर पाई जिसके द्वारा कांग्रेसी नेताओं पर अभियोग लगाया जा सके । सच तो यह है कि उस ज़माने में कौन था जो कांग्रेस के पक्ष को रखता और सरकारी अभियोगो का उत्तर देता ।

अहिंसात्मक शिक्षा

जनता को केवल तीन ही प्रकार से किसी सरकार के विरुद्ध संगठित किया जा सकता है ।

१ संगठित सामूहिक अहिंसा ।

२ संगठित हिंसा ।

३. असगठित हिंसा ।

देश के सांस्कृतिक विचार अन्दरूनी हालात, जनता की मनोवृत्ति तथा अन्य कई कारणो से हमारे देश मे गाधी जी के नेतृत्व ने जनता को सगठित सामूहिक अहिंसा की कला को सिखाया और गांधी जी ने कई आन्दोलनो द्वारा जनता को अहिंसात्मक युद्ध को शिक्षा दी । इस प्रकार राजनीति मे एक नये शस्त्र का प्रयोग हुआ, जिसके द्वारा निहत्थी तथा निस्सहाय जनता सगठित हिंसा का विरोध कर सकती थी । इन आन्दोलनो ने भारत की पिटी, पिसी, बिखरी, असगठित जनता मे आशा, उत्साह, बलिदान और सगठन इत्यादि अनेक बातें पैदा की । साथ ही यह भी दिखाया कि सामूहिक अहिंसा द्वारा कभी जनता की हार नही हो सकती । इन आन्दोलनो के विभिन्न रूप रहे । कभी कुछ चुने हुए कानून तोड़े गये तो कभी व्यक्तिगत सत्याग्रह किया गया । पर हर आन्दोलन के पश्चात् कांग्रेस अधिक बलशाली तथा संगठित निकली ! खुला विद्रोह इस सगठित अहिंसात्मक आन्दोलन का एक स्वाभाविक

नतीजा था। जो शिक्षा सन् १९२० में दी गई थी, जिस बीज को सन् १९२० में बोया गया था उसका स्वाभाविक नतीजा यह होना था एक रोज खुले रूप से संगठित अहिंसा के शस्त्र द्वारा जनता ब्रिटिश साम्राज्यशाही के विरुद्ध विद्रोह करे। पर यह बात सर्वथा गलत और अमाननीय है कि गांधीजी तथा कांग्रेस का नेतृत्व सगठित हिंसात्मक आंदोलन चाहता था। हां, यह बात ठीक हो सकती है कि वह जनता का खुला विद्रोह चाहता था। यह दूसरी बात है कि वह इसका नेतृत्व न कर सका और उसे अपने ढग पर न चला सका। जहाँ तक सगठित हिंसा का ताल्लुक है उसके लिए न तो हमारे देश में सब साधन ही मौजूद है और न व्यावहारिक दृष्टि से हम उस पर अमल ही कर सकते हैं। आज सगठित हिंसा के रूप में जब कि सरकार के पास लडाई के सारे साधन रेल, तार कलें तथा हथियार बनाने के कल-कारखाने इत्यादि मौजूद है, हिंसा की बातें करना कोरी कपोल कल्पना ही होगी। इसलिए गांधीजी ने शस्त्रों द्वारा संगठित प्रयत्न करने की बात कभी भी नही सोची। उन्होंने सदैव ही गुप्त संगठन तथा गुप्त कार्य करने का विरोध किया। अतः आज यह कहना कि गांधीजी तथा कांग्रेस का नेतृत्व संगठित हिंसा चाहता था, उन्हे बदनाम करने का अच्छा साधन हो सकता है, पर जिस आदमी को जरा भी अक्ल है वह स्वयं सोच सकता है कि जब गांधीजी तथा कांग्रेस के दूसरे नेताओं ने सदैव अहिंसा द्वारा हर प्रकार से जीत ही पाई है तो वह किस आवेश व तजुर्बे की बिना पर हिंसात्मक साधन के लिए लोगो को प्रोत्साहित करते और जब कि वे स्वयं देख रहे थे कि समस्त छोटे-छोटे राष्ट्र हिंसात्मक साधनों की कमी के कारण अपने बडे व अधिक सुसगठित प्रतिद्वन्दी के विरुद्ध हारते ही जा रहे हैं। सच तो यह है कि हमारे पास हिंसा के कुछ भी साधन न थे और इसलिए हम उनसे काम लेने की कल्पना भी न कर सकते थे।

जहाँ तक असगठित हिंसा का ताल्लुक है, कोई भी नेता उसका समर्थन नही कर सकता। यह दूसरी बात है कि कहीं-कहीं आवेश तथा जोश के वशीभूत होकर जनता इधर-उधर असगठित हिंसा कर बैठी हो। पर कोई भी नेता उसे अच्छा नही कह सकता। फिर उसकी जिम्मेदारी अधिकतर उन लोगों पर है जिन्होने जनता पर प्रहार किये, उसके भावो को रौंदा और उसके प्यारे ध्येय व आदर्श को सदैव के लिए मिटाना चाहा।

खुला विद्रोह

हमारा विश्वास है कि सन १९४२ का खुला विद्रोह पिछले सभी आंदो-

लनो से ध्येय, युद्धनीति, सगठन, आकार, विस्तार इत्यादि की दृष्टि से भिन्न था। इसे अहिंसात्मक सत्याग्रह का एक अन्तिम रूप ही समझना चाहिए।

ध्येय:—इसका ध्येय एक ओर ता पूर्ण स्वतन्त्रता प्राप्त करना था और दूसरी ओर अपने देश को जापानी आक्रमण से बचाना था, साथ ही इस युद्ध को जनता जहा तक हो जनता के वास्तविक युद्ध में बदलना था।

युद्धनीति:—इसकी युद्ध नीति यह थी कि यदि सम्भव हो तो बिना जनता को युद्ध की आग में ढकेले हुए ब्रिटिश सरकार से भारत की पूर्ण स्वतन्त्रता स्वीकार करा ली जाय और युद्धकाल में एक राष्ट्रीय सरकार की स्थापना हो जाय। दूसरी ओर सारे मित्र राष्ट्रों में विशेषकर अमरीका में भारतीय आजादी व आकाक्षाओ के प्रति एक प्रबल जनमत तैयार किया जाय और भारतीय प्रश्न को अन्तर्राष्ट्रीय प्रश्न बनाने की चेष्टा की जाय। साथ ही सारी दुनिया के दबे, पिसे तथा गुलाम लोगों का साम्राज्यशाही के विरुद्ध मोरचा तैयार किया जाय यदि इस महान् उद्देश्य के लिए एक सामूहिक संगठित प्रयत्न तथा आन्दोलन की आवश्यकता हो तो उसके लिए जनता को मनो वैज्ञानिक तथा संगठित दृष्टि तैयार किया जाय और देश में इस प्रकार का वातावरण पैदा किया जाय।

नारा:—इस आन्दोलन का नारा था 'अग्रजो भारत छोडो' जो स्वाभाविक दृष्टि से उस समय जनता के हृदय की पुकार थी। स्वयं जनता ऐसा कह रही थी और जमाना भी चाहता था। इस नारे ने जनता में एक विशेष प्रकार की स्फूर्ति व जीवन पैदा कर दिया और भारतीय प्रश्न को एक नया रूप, जीवन व धारणा प्रदान की।

तत्वज्ञान:—इस आन्दोलन का मन्तव्य था कि प्रत्येक सरकार जनता से सत्ता प्राप्त करती है। जो सरकार अपने इस नैतिक आधार को खो बैठती है और केवल पशुबल द्वारा जनना पर हुकूमत करती है उस सरकार के प्रति विद्रोह करना जनता का एक स्वाभाविक हक है। ब्रिटिश सरकार ने अपनी कारंवाइयों द्वारा जनता पर से अपना नैतिक प्रभाव खो दिया था। उसनें बिना जनता की इच्छा के देश को लडाई में झोंक दिया था और वह अपनें युद्ध-प्रयास को सफल बनाने के लिए मनमाने तरीकों से काम ले रही थी। इस प्रकार उसने भारत पर जापानी आक्रमण की दावत दी थी। अतः आन्दोलन की धारणा थी कि ऐसी सरकार के विरुद्ध बगावत करना और उसकी सत्ता पर अधिकार करना जनता का कर्तव्य है। 'खुली बगावत' का अर्थ है जनता का सरकार पर चौतरफा प्रहार करना, अपने को आजाद समझना तथा उसके किसी भी कानून

को अपने पर बन्धन न मानना।

अब तक जो आन्दोलन कांग्रेस ने किये थे उसमे कुछ चुने हुए कानूनों को तोड़ा जाता था, क्योकि जनता में 'खुले विद्रोह' की मनोवृत्ति पैदा करने का ध्येय न था। इसलिए इस आन्दोलन का रूप पिछले सभी आन्दोलन से भिन्न था। यद्यपि इसका मन्तव्य बड़ा सीधा और सरल था, पर इसका रूप बड़ा ही उग्र और व्यापक था।

अहिंसा की शक्ति

सन् १९४२ के 'खुले विद्रोह' से हमने बहुत से मधुर व कटु अनुभव प्राप्त किये। उसने एक ओर सिद्ध किया कि सरकार की संगठित हिंसा का इक्के-दुक्के छिपे गुरिला प्रयत्नों से मुकाबला नही किया जा सकता। जिस समय कांग्रेस ने भारत में 'खुले विद्रोह' की दुन्दुभी बजाई, दुनिया के हालात ही निराले थे। अंग्रेज साम्राज्यशाही पहले कभी भी सैनिक दृष्टि से इतनी सगठित नही थी। रोजाना हिंसा के नय-नये हथियारों की ईजादें हो रही थी। यूरोप के कितने ही राष्ट्र जर्मनी की संगठित हिंसा का शिकार बन चुके थे और उन्हें अपनी मुक्ति की किसी प्रकार भी आशा न थी। जर्मनी और जापान के आगे बिना शर्त आत्म-समर्पण करना होगा, अतः मित्र-राष्ट्र धुरी राष्ट्रों के मुकाबिले में संगठित हिंसा के शस्त्रों को दिनों-दिन बढ़ा रहे थे। ठीक उन्ही घटनाओं के साये में ८ अगस्त को एक पतले दुबले निहत्थे सरदार ने निहत्थे हिन्दुस्तानियों को 'खुले विद्रोह' का पाठ पढाया और इस आशा से पढ़ाया कि चारों तरफ फैली हुई सगठित हिंसा के बीच केवल उसका अहिंसा-शस्त्र ही सफल हो सकता है। यद्यपि जनता ने अपने नेता की बातों पर पूर्णतया अमल नही किया, पर यह केवल अहिंसात्मक साधनों का ही फूल है कि उस अग्नि-परीक्षा में कांग्रेस पहले से कही अधिक शक्तिशाली, प्रभावशाली व सम्मानित होकर निकली और अंग्रेज साम्राज्यशाही के प्रबल आक्रमण की शक्ति शीघ्र ही नष्ट हो गई। कांग्रेस ने आत्म-समर्पण नही किया। अपने प्रस्ताव को आज तक वापस नही लिया, पर ब्रिटिश साम्राज्यशाही को कांग्रेस नेताओं को छोड़ना पड़ा, कांग्रेस से समझौता करना पड़ा अथवा दूसरे शब्दों में बिना शर्त हिन्दुस्तान में आत्म-समर्पण किया और हिंसात्मक लड़ाई के दूसरे मोर्चों पर अपने प्रतिद्वन्द्वी से आत्म-समर्पण कराया। इससे केवल हम यही नतीजा निकाल सकते हैं कि अहिंसा की अपनी महान् शक्ति है जिसमें हार के लिए कोई गुंजाइश नही और जिसमें लड़ाई अपने प्रतिद्वन्द्वी के हथियारों के विरुद्ध

आत्मिक बल से मन, हृदय व मस्तिष्क के जरिए होती है। इस प्रकार की लड़ाई का फैसला हथियारो के वार, तेजी व तबाही से नही किया जा सकता, बल्कि अपने ध्येय एवं कार्य की उच्चता, महानता और नैतिकता से किया जाता है।

दमन के साधन

सन् १६१९ से सन् १९४२ तक राष्ट्रीय आन्दोलनों की गतिविधि के साथ-साथ दमन के साधन भी बदलते रहे है। हर आन्दोलन ने जहाँ जनता को कुछ शक्ति दी वही सरकार ने भी उसे दबाने, उसे काबू मे रखने, कुचलने के साधनो मे तरक्की की और इस प्रकार दमन के साधन तथा आन्दोलन की शक्ति अपने-अपने तरीके से बढ़ते ही गये। सन् १६१६ व २१ की 'गान्धी की आन्धी' को नौकरशाही ने विशेषतः १४४ दफा द्वरा काबू कर लिया था, यद्यपि कही-कही आतंक फैलाने के लिए उसे फौजी कानून भी घोषित करना पड़ा था सन् १९३० में जनता ने कुछ विशेष चुने हुए कानून तोड़े। नौकरशाही ने विशेषत. लोगों को जेलो में भेजने, छोटे-छोटे हल्कों मे लाठी चार्ज करने, अखबारो पर पाबन्दी लगाने इत्यादि तरीकों को अपनाया। सन् १६३२ में देश में लगानबन्दी के रूप में कुछ विशेष कानून तोडे गये। नौकरशाही ने पकड़'-धकड, घुडसवारों द्वारा मार-पीट, बडे पैमाने पर लाठी चार्ज, सामूहिक जुर्माने इत्यादि शस्त्रो को विशेषतः अपनाया। सन् १६४२ में देश ने खुला विद्रोह किया। नौकरशाही ने सारे देश मे शान्ति स्थापित करने के लिए अर्द्ध फ़ौजी कानून का ऐलान कर दिया और व्यापक रूप से गोलियो की बौछारों से आन्दोलन का स्वागत किया। इस प्रकार हर आन्दोलन की शक्ति के विकास के साथ उसके दबाने के साधन भी व्यापक और कठोर बरते गये।

सन् १६४२ में सरकारी दमन-साधनों को हम मिस्टर नियोगी एम० एल० ए० के कथनानुसार निम्नलिखित भागों में बांट सकते हैः—

१. आम तौर पर जनता में पुलिस द्वारा आतंक बैठाने के प्रयत्न करना तथा खुले रूप से जनता को लूटना, उनके घरो में आग लगाना तथा मारपीट करना। इस प्रकार के काम विशेषत. विहार, युक्त प्रांत के पूर्वी जिलो, मध्य प्रान्त और आसाम की घाटी के जिलों में हुए।

२. जनता के समूहो तथा व्यक्तियो पर बिना किसी कारण ऊटपटांग तरीके से गोलियां चलाना।

३. निहत्थी, निर्दोष जनता पर संगठित रूप से गोलिया चलाना और

इस प्रकार जिन लोगों ने उत्पात किया था उनको कोई विशेष हानि न पहुचा-कर उन इलाकों की समस्त जनता के हृदय में आतंक जमाना । इस प्रकार की घटनाए देहली, कलकत्ता, आसाम प्रान्त की घाटी और युक्त प्रान्त के पूर्वी जिलो मे विशेषत: हुई हैं।

४. असगठित समूहों पर बिना किसी इत्तिला के गोलियां चलाना। अपरिचित लोगों द्वारा जहा-कही भी कर्फ्यू आर्डर की थोडी-सी अवहेलना हुई, वहां उन पर निर्दयता पूर्वक गोलिया चलाना। इस प्रकार की घटनाए देहली तथा उन सब स्थानों में हुई जहा आन्दोलन का रूप व्यापक और उग्र था।

५ छोटे बच्चो के खुले रूप से कोडे लगवाना व उन्हे बे-रहमी से पीटना और प्रतिष्ठित आदमियो तक को जनता के सामने अपमानित करना, जैसे गलियों को साफ करवाना काग्रेसी झडो का जलवाना इत्यादि।

६. जनता के सामने काग्रेस वालो के घरों को जलाना और फौज के द्वारा औरतों का सतीत्व नष्ट कराना। सवर्ण हिन्दुओं को अछूत कहलाने वाली फौजी टुकडियो के सैनिको से अपमानित कराना। ऐसी घटनाए मध्यप्रान्त, आसाम और बिहार में अधिक हुई।

मिस्टर नियोगी ने केन्द्रीय असेम्बली मे भाषण देते हुए कितनी ही घटनाओ का वर्णन किया जिससे सरकारी दमन के निर्दयता-पूर्ण काडो की झलक मिल सकती है। अपने भाषण के दौरान मे राज्य-परिषद् के एक सदस्य और मुजफ्फरपुर जिले के राष्ट्रीय युद्ध मोर्चे के एक नेता की बातो का हवाला देते हुए मिस्टर नियोगी ने बताया कि सैनिकों और पुलिस के सिपाहियो को खुला छोड़ दिया गया। उन्होंने वहाँ मनमाने ढग से निहत्थी जनता को लूटा, सम्पत्ति को नष्ट किया, गावो को जलाया, रुपया ऐंठा और पकड़ लेने की धमकिया दी। उन्होने यह भी बताया कि वहा मैंने अपनी आखो से देखा कि बाजार की सारी मालदार दूकाने लूटी गई। गाव के गाव सैनिको व पुलिसो द्वारा जलाये गये। मै इन घटनाओ को तथा इन दृश्यो को जीवन-पर्यन्त नही भूल सकता।" उन्होंने आगे गाजीपुर जिले के एक आनरेरी मजिस्ट्रेट द्वारा युक्तप्रान्त की सरकार को भेजे गये एक नोटिस का जिक्र करते हुए, जिसमे जमीदार ने सरकार से अपने गाँव में सैनिको द्वारा की गई बरबादी का हरजाना मागा था, बताया "चार यूरोपियन सिपाही १५० देशी सिपाहियो के साथ रायफलो द्वारा सुसज्जित होकर २४ अगस्त को उसके गाँव मे आये और उस गाँव के सारे आदमियो को गाँव छोड़ने का हुक्म दिया और थोड़ी देर बाद उन्होंने

सारी औरतो को घरों से बाहर निकलने का आदेश दिया और धमकाया कि जो बाहर नही आयगा उसको गोली मार दी जायगी। उसके पश्चात् उन सिपाहियो ने उन सब औरतो के जवरो को छीन लिया और उनके घरो पर आक्रमण किया और जितना भी जेवर, रुपया और सामान था सब पर कब्जा किया। इन सिपाहियो न मेरे किसानो के २० घरो मे आग लगा दी और इस प्रकार गाव के सब लोगों को राइफल की नोको से धमकाया और डर दिखाया, उन्हे रोने और चीखने तक को मना किया गया।"

उपरोक्त एक आध उदाहरणो के द्वारा केवल यह बताने का चेष्टा की गई है कि देश-भर में नौकरशाही के दमन-चक्र द्वारा निर्दोष और निहत्थी जनता पर हर प्रकार से अत्याचार हुए। आवश्यकता पड़ने पर आसमान से मशीनगन का भी प्रयोग किया गया। इस सब दमन का एक अभिप्राय था। जनता की उभरती हुई आवाज का फौरन गला घोट दिया जाय, उसकी सामूहिक शक्ति को तोड़ा जाय और उसके हृदय में आतक बैठाया जाय।

कांग्रेस पर सरकार के आरोप

इस किताब मे सरकारी दमन-काडो पर कोई विशेष जोर नही दिया गया है, क्योकि पुस्तक लिखने का मुख्य ध्येय जनता के कार्यो पर प्रकाश डालना है। केवल मिसाल के तौर पर कुछ सरकारी दमन के साधनो को बताने की चेष्टा की गई है। आदोलन के थोड़े दिनो पश्चात् सरकार ने एक पुस्तक छापी; जिसमे काग्रेस को उन तमाम उत्पातो, हिंसा तथा तोड़-फोड़ के कार्यो का दोषी ठहराते हुए दुनिया को यह बताने की चेष्टा की गई कि हिन्दुस्तान में जो कुछ उत्पात हुआ, जानें व धन की क्षति हुई, जनता को कष्ट पहुँचा उस सब की जिम्मेदारा काग्रेस पर है। जहाँ उस किताब में एक ओर यह सब कुछ दिखाने की चेष्टा की गई है वहाँ दुनिया को यह भी दिखाने का असफल प्रयत्न किया गया है कि आन्दोलन व्यापक नही था। उसने मित्र-राष्ट्र को युद्ध-प्रयास में कोई खास क्षति नही पहुँचाई। यह दोनो बातें जब एक ही किताब में पढ़ने को मिलती है तो कुछ आश्चर्य-सा होता है; क्योकि एक ओर तो सरकार ने काग्रेस को सारे आन्दोलन का जिम्मेदार ठहराने के लिए आन्दोलन की गति-विधि का वड़े ही उग्र, तीव्र व व्यापक ढग से प्रकट किया दूसरी ओर दूसरे देशो की जनता व सरकार की आँखो मे धूल झोकने के लिए इस आन्दोलन की गति को कम व थोड़ी वताने का असफल प्रयत्न किया है। सरकारी प्रचार-विभाग कुछ भी कहे, पर यह डके की चोट कहा जा सकता है कि सन्

१९४२ का 'खुला विद्रोह' ध्येय, राजनीति, निपुणता, व्यूह-रचना तथा आकार, विस्तार, त्याग, बलिदान, सगठन, जनोत्साह, आदि की दृष्टि से कही बढा-चढा था। सन् १८५७ का गदर, फ्रासीसी राजक्रान्ति, रूस की लाल क्रान्ति सभी कई बातो में इसके सामने फीकी जान पडती है।

तलपट

हर महान् आन्दोलन के बाद प्रतिक्रया-काल आता है। इस काल मे नेता व कार्यकर्त्ता आन्दोलन-काल में होने वाली घटनाओ, अपने द्वारा की गई गलतियो एव हानि-लाभों को आकने का प्रयत्न करते हैं, ताकि उस आन्दोलन की त्रुटियों व गलतियों से लाभ उठाकर आने वाले आन्दोलन मे उन्हे न होने दे। हर आन्दोलन के लिए यह अनिवार्य काल है और यह इसी प्रकार आता है जिस तरह रात के बाद दिन तथा कार्य के बाद थकान। हमारे सारे आन्दोलन १९१९, २१, १९३० व १९३२, १९४० व ४२ के पश्चात् ऐसा काल आया कि उसकी सतह पर शान्ति दिखाई दी, आन्दोलन का बाह्य रूप धीमा दिखाई देने लगा और नौकरशाही ने समझा कि अब उन्होंने आन्दोलन को दबा लिया है। पर हुआ इसके विपरीत अपने हर आन्दोलन का प्रोग्राम नारा व युद्ध-नीति रहते है। इसका अर्थ यह है कि गान्धीजी ने समय, जनता की शक्ति, देश की बाह्य स्थिति व असहनीय हालत सब को पूरे तरीके से आककर समयानुसार आन्दोलन के लिए, ध्यय, प्रोग्राम व नारे जनता को दिये। जनता उठी, आगे बढ़ी और थकान से पस्त होकर क्षणिक काल के लिए पीछे हटी। किन्तु हर एक आन्दोलन ने प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप मे जनता को क्रान्ति की कला की शिक्षा दी है। इसी प्रकार सन् १९४२ ने भी हमें अमूल्य सबक सिखाये है।

आन्दोलन की शिक्षायें

१. हमे इस बात का अनुभव हुआ है कि यद्यपि जनता मे क्रान्तिकारी मनोवृत्ति पैदा होगई है और देश में काफी क्रान्तिकारी शक्ति उत्पन्न हो चुकी है, पर हमारा सगठन ऐसा बिखरा हुआ है कि हम शक्ति का पूर्णतया प्रयोग करने के लिए मजबूत व सुदृढ नही है। अत. काग्रेस को अपना सगठन व्यापक, सरल और सुदृढ़ बनाना चाहिए, ताकि क्रान्ति-काल मे वह लम्बे अर्से तक कायम रह सके और जनता पर इसका नियत्रण रहे।

२. इस आन्दोलन में हमने अनुभव किया कि हमारे अहिंसा व हिंसा के प्रश्न पर मिले-जुले विचार है। अपनी इस अनिश्चित मानसिक स्थिति के कारण

हमें दोनों अस्त्रों के दुष्परिणाम तो भोगने पड़ते हैं, पर न तो हम जनता को पूर्णतः अहिंसा के लिए तैयार कर पाते हैं और न संगठित हिंसा के लिए ही। और इस प्रकार असंगठित अहिंसा और सुसंगठित हिंसा दोनों का नुकसान होता है। इस आन्दोलन ने हमें बताया कि असंगठित अहिंसा व सुसंगठित हिंसा से भारत कभी सफल नहीं हो सकता, अतः इसे अपनाना जान-बूझकर कुएं में गोते लगाना है। इस कारण हमें संगठित अहिंसा की ओर अधिक प्रयत्न करना चाहिए।

३. इस आन्दोलन के पश्चात् कांग्रेस-जन तथा सभी राजनीतिक विषयों पर सोचने वाले लोग इस बात पर एकमत हैं कि अब कांग्रेस के संगठन को बदलती हुई हालत के मुताबिक नये ढंग से चलाना होगा और उसकी बुनियाद किसी दार्शनिक आधार पर होनी चाहिए।

४. कांग्रेस-जन, विशेषकर साधारण कांग्रेस-जन इस बात को अनुभव करने लगे हैं कि कांग्रेस में अन्दरूनी आपसी मेल व परस्पर गहरी जानकारी होना आवश्यक है।

५. गान्धी जी के नेतृत्व में कांग्रेसी कार्यकर्ताओं का अधिक विश्वास बढ़ रहा है।

लाभ

१. सन् १९४२ के 'खुले विद्रोह' ने ठीक वही किया जो नाटक से पहले रिहर्सल (पूर्व तैयारी) द्वारा पूरा होता है। इस आन्दोलन ने जनता को खुले विद्रोह की कला तथा शक्ति छीनने की नीति का ज्ञान कराया।

२. इसने भारतवर्ष के सारे दबे-पिसे गुलाम लोगों का नेतृत्व किया। अतः आज इस आन्दोलन के कारण भारतवर्ष सारे एशिया के दबे हुए राष्ट्रों का मार्ग-प्रदर्शन करता है। इधर पश्चिम में अरब एक ओर खुले रूप से 'अंग्रेजो निकल जाओ' का नारा उठा रहा है तो दूसरी तरफ मलाया, जावा, सुमात्रा, इंडोचीन, चीन आदि सारे सुदूरवर्ती पूर्वीय देश हमसे 'अंग्रेजो निकल जाओ' का नारा सुनकर अपने-अपने यहां साम्राज्यशाही के विरुद्ध संघर्ष कर रहे हैं।

३. इस आन्दोलन ने भारत का सम्मान यहां और बाहरी देशों में काफी बढ़ा दिया है और स्वयं ब्रिटिश जनता में विचारों के आधार पर दो वर्ग पैदा कर दिये हैं। प्रगतिशील वर्ग अपने यहां की जनता को यह बताने की चेष्टा कर रहा है कि स्वतंत्र भारत हमारे लिए शक्तिशाली और अच्छा मित्र हो सकता है और दूसरी ओर साम्राज्यशाही विचारों के लोग वही पुराने साधन व मार्ग अपनाने का स्वप्न देख रहे हैं।

४. इस आन्दोलन ने जनता को अंग्रेजी शासन-व्यवस्था, उसकी शक्ति व उसके संगठन का ज्ञान कराया और यह भी बताया कि कितनी कम शक्ति से हम करोड़ों भारतीयों पर ब्रिटिश साम्राज्यवाद को लादे हुए हैं।

५. इस 'खुले विद्रोह' ने जनता को एक ऐसा नारा दिया जो सदा ही उसके हृदय में एक कसक और तड़प बनाये रखेगा और जिसके कारण उसमें एक नया जीवन और स्फूर्ति पैदा हो गई है।

हानि

जहां तक हमारी क्षति का सम्बन्ध है उसे केवल शारीरिक क्षति, भौतिक नुकसान, जैसे माल, सामग्री, रुपया-पैसा आदि का नुकसान तथा मानसिक यातनाओं के रूप में समझ सकते है। जैसे लोग जेलो में गये, कष्ट भोगे, सामूहिक व व्यक्तिगत जुर्माने दिये, गाँवो में आग लगी, हजारों खानदान वीरान हुए और तरह-तरह के अमानुषिक अत्याचार हुए। पर हम इस क्षति का यूरोप में होने वाली क्षति, कष्ट तथा यातनाओं से मुकाबला करते है तो यह सब उसके सामने बड़ी फीकी दिखाई पड़ती है। इस महायुद्ध में लाखो मारे गये, घायल हुए और करोड़ो की सम्पत्ति का नाश हुआ। कुछ देश स्वतंत्र रह सके तो कुछ पराधीन होगये। किन्तु हमारे यहां ता इसके बिलकुल विपरीत हुआ। नौकरशाही को मुह की खानी पड़ी। अन्त में उसको अपने दमन के सारे ही साधन निरर्थक दिखाई दिये। उसने स्वयं अपने प्रहार को वापस लिया। कांग्रेसी नेता छोड़े गये और कांग्रेस के साथ समझौता करना पड़ा। इसका बहुत कुछ श्रेय हमारे नारे और युद्ध-नीति को है।

संघर्ष जारी है

आज केन्द्र मे अस्थाया राष्ट्रीय सरकार कायम हो चुकी है और अधिकाश प्रान्तो में कांग्रेस मंत्रिमण्डल कायम है। साधारण आदमी सोचते हैं कि शायद भारत को स्वराज्य मिल गया। अब अंग्रेज हुकूमत व कांग्रेस के बीच कोई संघर्ष बाकी नही रहा। पर वास्तव में बात इसके विपरीत है। ब्रिटिश साम्राज्यवाद और भारतीय राष्ट्रवाद में तब तक संघर्ष जारी रहेगा जब तक या तो ब्रिटिश साम्राज्यशाही अस्त-व्यस्त न हो जाय और ब्रिटिश जनमत इस बात को स्वीकार न कर ले कि दूसरो को गुलाम रखना कोई फायदे की चीज नही है, बल्कि इसके विपरीत उसके लिए बहुत बड़ी कामत देनी पडती है। युद्ध होते है, अरबों व करोड़ों की सम्पत्ति का नाश होता है और देश की बहुमूल्य शक्ति यानी नौजवानो के खून की आहुति देनी पडती

है। अतः इस प्रकार की आर्थिक व सामाजिक व्यवस्था को नष्ट ही कर देना चाहिए, जिसके कारण न तो अपने देश को लाभ होता है; बल्कि दूसरे देशों को गुलाम बनाने और उनका पतन करने का अभिशाप व्यर्थ मे लगता है। युद्ध यद्यपि एक कठोर साधन है पर उसके द्वारा कौमो को अनेक सबक भी मिलते है। उसी के द्वारा जीवन के दृष्टिकोण तथा विचारों में भारी उथल-पुथल होती है और युद्ध-काल में अनेक लोग राष्ट्रीयता का नशा पीकर एक दूसरे की जान के भूखे होते है, मरते और मारते है। और बाद में जब वह नशा कुछ फीका पड जाता है तो उन्हे उसकी असली उत्पत्ति, कारण तथा उसकी निरर्थकता का पता चलता है। प्रत्येक साम्राज्यशाही राष्ट्र में भी एक भयकर क्रातिकारी परिवर्तन होता है और उस देश के लोग स्वय अपने साम्राज्य को अपने कन्धे से उतार फेकने का प्रयत्न करते है। यही कारण है कि यद्यपि युद्ध-काल में ब्रिटिश जनता ने चर्चिल को अपना नेता स्वीकार किया, पर युद्ध के बाद उन्हें अपने कन्धे से उतार फेकना ही मुनासिब समझा, क्योंकि उसने अनुभव किया कि जो नेता युद्ध-काल में जिता सकता है, आवश्यक नही कि शाति-काल का भी वही नेता हो। साम्राज्यवाद का विनाश एक ओर युद्धों के द्वारा होता है, दूसरी ओर उसके गृह में स्वयं विद्रोह और बगावत प्रारम्भ होती है और ठीक इसी काल में दबे-पिसे राष्ट्रो के लोग करोडों की तादाद में उसके विरुद्ध विद्रोह करते है। हम आज उस स्थिति मे से गुजर रहे है और हमें विश्वास है कि सघर्ष तब तक जारी रहेगा जब तक ब्रिटिश जनमत भाई-चारे तथा एक-दूसरे राष्ट्र की बराबरी के सिद्धांत को स्वीकार न कर लेगा। इतिहास हमारी तरफ है, घटनाए हमे मदद दे रही है। साम्राज्यशाही ढाचा अपने निरन्तर प्रतिस्पर्धात्मक कारणो से टूट रहा है। उसके विरुद्ध यहां और बाहर चारो ओर मनोवैज्ञानिक वातावरण तैयार है और अन्त में जैसा कि सघर्ष का नियम है, सघर्ष अपने अन्तिम काल में केवल नीति, विचार, धारणाओ व मानसिक शक्ति पर निर्भर रहता है। इस कारण हम यह कह सकते है कि इस दृष्टि से भी नैतिक पक्ष हमारा ही दृढ है। न्याय, नैतिकता, इतिहास, विचारों की प्रगति, दुनिया का जनमत सभी हमारी ओर है। अतः हमारी विजय अवश्य होगी।

नया नेतृत्व बनाम कांग्रेस हाई कमाण्ड

हर आन्दोलन की प्रतिक्रिया होती है। यह एक अनिवार्य काल है। उस काल में तरह-तरह के प्रश्न व पेचीदगियाँ पैदा हो जाती हैं। अन्दरूनी और

बाहरी दोनों ही ओर से नेतृत्व के ऊपर दबाव बढ जाता है। जनता में निराशा फैलती है। साथी कार्यकर्ता हताश होकर व्यर्थ की समालोचनाएं करने लगते हैं। कुछ उग्रदल वाले दूसरा नेतृत्व स्थापित करने की चर्चा करने लगते हैं। सगठन शिथिल हो जाता है। इस प्रकार इस काल में नेतृत्व को एक ओर जनता की निराशा को आशा मे बदलना होता है; हार को जीत का रूप देना होता है, दूसरी ओर विरोधी शक्ति से बचाव करना होता है और आने वाले आन्दोलन के लिए नई नीति, कला और कार्यक्रम सोचने पडते हैं। हमारा राष्ट्रीय नेतृत्व जिसे हम कांग्रेस हाई कमांड के नाम से सम्बोधित करते है कई बार इस अनिवार्य काल में से होकर गुजरा है। जब कितने ही राजनीति के पडित इस प्रकार की घोषणा करने लगे थे कि अब इस नेतृत्व के पुन. शक्ति मे आने की कोई आशा न रही और दूसरी ओर कुछ मन-चले उग्रवादी कार्यकर्ता नई नीति व नए प्रोग्राम की बातें करने लगे थे, तब भी हमने पिछले २६ सालों मे देखा कि हर आन्दोलन के पश्चात् कांग्रेस हाई कमान्ड अधिक शक्तिशाली और सम्मानित होकर निकला।

सन् १९४२ के आन्दोलन के पश्चात् देश में एक अजीब बहस प्रारम्भ हुई और उस बहस के परिणाम- स्वरूप नए नेतृत्व की बात जोर पकडती रही। सन् १९४२ मे तोड़-फोड़ के जो अनेक संगठित व असंगठित कार्य हुए और जिनमें काफी लोगों ने भाग लिया, उन्हें कांग्रेस हाई कमान्ड ने अपनाने से इन्कार कर दिया। स्वभावतः दूसरे लोगों ने जो नई कला, नई नीति व नए प्रोग्राम की बात करते हैं; उन कार्यों को अपनाया और इस प्रकार हिन्दुस्तान के राष्ट्रीय आन्दोलन में दो स्पष्ट विचार-धाराओं के चिह्न दृष्टिगोचर हुए। आज देश के सामने दो विचार-धाराए स्पष्ट रूप से मालूम पडती है। इन दोनों के अपने तरीके है। अत· अब हमारे लिए यह प्रश्न केवल कल्पना और बहस का नही है, बल्कि एक जीवित प्रश्न है और उसका उत्तर हमें स्पष्टतः देना है। प्रश्न है कि यदि समझौते की मौजूदा बातें जो आजकल हो रही है, असफल हो गई या टूट गई और ब्रिटिश साम्राज्यशाही ने समझौते द्वारा सत्ता सौंपने की नीति को छोड़ दिया तो कांग्रेस नेतृत्व क्या करेगा ? यदि उसने आन्दोलन छेडा तो वह किस प्रकार का होगा और उस का क्या प्रोग्राम होगा अथवा वह सन् १९४२ की तरह जनता को बिना किसी प्रोग्राम के फिर छोड देगा।

आज नये नेतृत्व ने, जो हमारे सामने है, अपने ढंग से मौजूदा स्थिति का विश्लेषण किया है। उसका कहना है कि आज देश में क्रान्तिकारी बेचैनी है। समाज का हर तबका सरकार के विरुद्ध उठ रहा है। आन्दोलन के लिए इससे

बढ़कर उपयुक्त समय दूसरा नही हो सकता। एक ओर ब्रिटिश साम्राज्य कमज़ोर हो चुका है तथा दूसरी ओर उसका भीतरी ढाँचा निकम्मा हो चुका है। इस लिए आज उससे कोई समझौता न करके उसके विरुद्ध एक सामूहिक क्रान्तिकारी आन्दोलन शुरू कर दिया जाय। यदि यह आन्दोलन शुरू न किया गया तो ब्रिटिश साम्राज्यशाही, जो इस समय केवल समय का लाभ उठाकर समझौता करने के लिए मजबूर हुई है, पुनः अपने को मज़बूत कर लेगी और बाद में राष्ट्रीय आन्दोलन को क्षीण करने का प्रयत्न करेगी और उपयुक्त समय पर प्रहार भी करेगी। अत समय की दृष्टि से, नीति के खयाल से मौजूदा समय क्रान्ति करने का समय है। इस समय साम्राज्यवादी ढाचे को अस्त व्यस्त करके शक्ति छीनी जा सकती है और अपना राज्य स्थापित किया जा सकता है।

इस नेतृत्व का अपना प्रोग्राम है। उसका कहना है कि जेल जाने के प्रोग्राम में अब कुछ रोचकता नही रह गई और हमारा राष्ट्रीय आन्दोलन उस सीढ़ी को पार कर चुका है। अब आन्दोलन करने का समय नही है; क्योकि आज समाज के सारे ही वर्ग, क्या मज़दूर, क्या किसान, क्या मध्यम श्रेणी के लोग, क्या उच्च श्रेणी के लोग ब्रिटिश साम्राज्यशाही के विरुद्ध हैं। उनमें विद्रोह करने की शक्ति ज़ोर मार रही है। अत. इस समय हमारे लिए आवश्यक है कि शक्ति छीनने की कला और तरीको की जनता को शिक्षा दी जाय। सन् १९४२ के आन्दोलन ने तो रिहर्सल का काम किया है। आने वाला आन्दोलन हमे शक्ति छीनने और साम्राज्यशाही सत्ता को नष्ट कर जनता का आधिपत्य स्थापित करने से प्रारम्भ करना चाहिए।

उनके प्रोग्राम के आक्रमणात्मक और रक्षात्मक दोनों पहलू है। आक्रमणात्मक प्रोग्राम द्वारा नये नेता जनता को गाँव, जिले और सूबेवार दस्तो में सगठित करना चाहतें है और फिर इन सब सूबो को एक अखिल भारतीय संगठन के रूप में। उनका कहना है कि यह दस्ते सरकारी सत्ता पर प्रहार करें। गांव की जनता को ग्राम पचायतो के रूप मे सगठित किया जाय। एक ओर जनता में, जिसमें आक्रमण करने की शक्ति क्षीण हो चुकी है, शक्ति पैदा की जाय और दूसरी ओर इस शक्ति को कायम रखने के लिए सैनिक-बल को बढ़ाया जाय। ब्रिटिश नौकरशाही की राज्य-व्यवस्था को अस्त-व्यस्त करने के लिए तोड़-फोड़ के कार्यों को व्यापक रूप से चलाया जाय। रेल, तार, सड़कें, पुल इत्यादि को नष्ट कर दिया जाय। इस प्रोग्राम को चलाने के लिए यह लोग गुप्त साधनो मे विश्वास करते है और इन लोगो का ख़याल है कि हमारा राष्ट्रीय आन्दोलन अब इस अवस्था को पहुँच गया है कि जब सरकारी

फौज व पुलिस के लोग हमारे साथ आ जायंगे और इस प्रकार जनता का आंदोलन अवश्य ही सफल होगा। यह लोग अहिंसा और हिंसा की बातों में नही पड़ते। अतः जिस साधन से उन्हे सफलता मिलती हो उसको ही अपनाने में उनका विश्वास है। इस प्रकार के नए नेतृत्व को आन्दोलन-काल में काफी सफलता भी मिली है। यह सफलता यद्यपि ध्येय तक पहुँचने की दृष्टि से नही के बराबर है, पर इस प्रकार के गुप्त आदोलन का एक रोचक तरीका होता है। एक शक्तिशाली दुश्मन की आँखों से अपने को बचाना, इधर-उधर छिपकर सी० आई० डी० की आँखों मे धूल झोकना, गुप्त प्रेस चलाना इत्यादि ऐसी अनेक रोचक बाते है जो नवयुवको को खास तौर पर बड़ी अपील करता है। इस प्रोग्राम के नेताओ से स्पष्टतः पूछा जाय कि इस नई युद्ध-कला द्वारा जनता मे कुर्बानी करने की कितनी शक्ति पैदा हुई और किस प्रकार उनके साधनो द्वारा आन्दोलन ने व्यापक रूप धारण करके अपनी गतिविधि को शक्तिशाली बनाया तो वह कुछ अधिक नही कह सकते।

काग्रेस हाई कमाण्ड का स्थिति-विश्लेषण इस से विभिन्न है। उनका कहना है कि देश में क्रान्ति के लिए न तो उपयुक्त मनोवैज्ञानिक तैयारी ही है और न सगठन ही। निस्सदेह जनता में बेचैनी व परेशानी है। ६ सालो में जनता काफी तकलीफों मे होकर गुजरी है। आज काग्रेस मंत्रिमडलो के स्थापित हो जाने तथा ब्रिटिश शक्ति के क्षीण हो जाने के कारण जनता के विभिन्न वर्गों में चीखने-चिल्लाने तथा अपने दुखो को ज़ोर से कहने की शक्ति बढ गई है। उस शक्ति के आधार पर हम यह अवश्य कह सकते है कि जनता क्राति चाहती है। पर उसकी अन्तरात्मा इस समय कुछ काल तक शान्ति चाहती है। वह अपने कष्टों का निवारण चाहती है। दूसरे हाई कमाण्ड का विश्वास है कि यदि ब्रिटिश साम्राज्यशाही धोखा करेगी तो वह साहस से मुकाबला करने को तैयार है। उसके लिए आवश्यक है कि कुछ काल तक ब्रिटिश नौकरशाही की शासन-व्यवस्था पर, जिसका जाल गाव-गाव मे फैला हुआ है, कब्जा करके अपने को अन्दर-ही-अन्दर और सुदृढ़ कर लिया जाय ताकि समय पड़ने पर इस शक्ति का प्रयोग आन्दोलन की गतिविधि को बढाने मे किया जा सके। इस काल में दुनिया की अन्य सरकारो के साथ अपने स्वतन्त्र सम्बन्ध स्थापित करके देश के सम्मान को बढाया जा सकेगा।

हमारे नेताओं का विश्वास है कि इस नीति के द्वारा ब्रिटिश साम्राज्यशाही में उतनी भी शक्ति न रह पायगी कि वह किसी दूसरे आक्रमण की कल्पना कर सके। इसलिए कांग्रेस हाई कमाड ने आज शाति और सुलह की

नीति को अपनाया है। उसका विश्वास है कि इस तरह हम बहुत थोड़े समय में अपने ध्येय के नज़दीक पहुंच सकेंगे।

तोड़-फोड, गुप्त कार्य तथा गुरिला मोर्चेबन्दी आदि के बारे मे काग्रेस हाई कमाड का कहना है कि इन तरीक़ो से हम आज़ादी के नज़दीक नही पहुँच सकते, बल्कि यह सब साधन किसी भी सामूहिक आन्दोलन की गतिविधि के लिए घातक है। अत. एक ओर सामूहिक आन्दोलन करना जिसमें लाखो-करोड़ो आदमी साहस, धर्य व जोश के साथ जुट सकें, खुलकर बलिदान कर सके और दूसरी ओर गुप्त साधनो की बातें सोचना एक साथ विभिन्न प्रकार की दो कल्पनायें करना है। काग्रेस हाई कमाण्ड की यह भी राय है कि जनता की ओर से की हुई कोई भी हिंसा सरकार की सगठित हिंसा को प्रोत्साहन देती है और इस प्रकार उसे निहत्थी जनता के विरुद्ध सगठित हिंसा करने का मौका मिल जाता है। हिंसा का सीधा नियम यह है कि जिसके पास अधिक शक्ति होती है वही जीतेगा। अत. यह नेतृत्व उस शतरज पर खेलना नही चाहता जिस पर उसे पूर्ण विश्वास है कि उसके मोहरो से ही उसे मात मिल सकती है। इसलिए वह हिंसा का विरोधी है और वह समझता है कि तोड़फोड़ के कार्यों से इतना अधिक लाभ नही हो सकता जितना कि नुकसान। अन्त में उसका यह भी कहना है कि तार, पुल इत्यादि जनता के पैसे से ही बने हैं, इसलिए उनका नाश करना अपना नुकसान करना है। इसके विपरीत यह कही अच्छा है कि जनता सामूहिक रूप में लगानबन्दी कर दे और सरकारी नियमों को न मानकर अपना सगठन स्थापित कर ले। यदि आन्दोलन का सामूहिक रूप कायम है और जनता उसमें शरीक है तो तोड-फोड के कार्यों की आवश्यकता ही नही। इस प्रकार यह नेतृत्व इस प्रोग्राम से सहमत नहीं है।

किसी नये नेतृत्व का प्रश्न तभी उठता है जब या तो पुराने नेतृत्व से अनेक पराजयो के कारण जनता ऊब उठी हो या उससे अधिक अच्छा नेतृत्व पैदा हो गया हो, जिसकी जड़ें समाज के अन्दर जम गई हो। जब हम इस प्रश्न को इस दृष्टि से देखते है तो मालूम पड़ता है कि वर्तमान कांग्रेस हाई कमांड आज पहले से अधिक सम्मानित व शक्तिशाली है। आज उसे जनता का अटूट प्रेम और विश्वास प्राप्त है। नेतृत्व का यह कर्त्तव्य है कि वह अपने सैनिको को पराजय की स्थिति से निकालकर जीत की स्थिति में रख दे। क्या आष्टी, चिमूर, सितारा, मिदनापुर, युक्त-प्रान्त के पूर्वी जिलो आदि के अपने सैनिको को, जिन्हें ब्रिटिश नौकरशाही ने लम्बी-लम्बी और मौत तक की सज़ाएं दीं थी, इस ने [illegible] नही छुड़ा लिया? इस प्रकार इस नेतृत्व ने सन् १९४२ की हार को

आज एक ऐसी जीत में बदल दिया कि ब्रिटिश साम्राज्यशाही को उन नेताओ के साथ, जिनको वह छोड़ने को तैयार न थी, बात करना नही चाहती थी, समझौता करने तथा अपने ही हाथो से शक्ति देने के लिए मजबूर होना पड़ा। अतः इस नेतृत्व की शक्ति क्षीण होने का प्रश्न तो उठता ही नही। दूसरा प्रश्न यह है कि क्या नये नेतृत्व ने समाज के अन्दर अपना इतना गहरा प्रभाव व लगाव पैदा कर लिया है कि समाज उसकी ओर आकर्षित हो जाय अर्थात् उसे अपनी आशाओ और आकाक्षाओ का केन्द्र समझे। अभी तो ऐसा हुआ नही है। इसके अलावा युद्ध-काल में जो नेता होते है जरूरी नही कि वही शान्ति-काल में भी हों। इस कारण हमारा विश्वास है कि देश की बागडोर मौजूदा काग्रेस हाई कमाड के हाथ मे रहेगी और यदि देश को नये आन्दोलन के लिए विवश होना भी पड़ा तो अगला आन्दोलन गान्धीवादी नेतृत्व में ही होगा।

: ३ :

मनोवैज्ञानिक वातावरण

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी का अधिवेशन

"परन्तु इससे क्या हुआ ? यह युद्ध भारत ने तो शुरू किया नही है ।"

"भाई, इसे मै जानता हूँ । अवश्य ही उन्होने हमारे नेताओ से परामर्श किये बिना ही भारत को युद्धग्रस्त घोषित कर दिया और इस प्रकार वे हमारे जन, धन और साधनो का उपयोग कर रहे है । किन्तु वे आखिर स्वाधीनता व प्रजातंत्र के लिए ही तो यह युद्ध लड़ रहे है ।"

"स्वाधीनता और प्रजातत्र की रक्षा के लिए, बिलकुल झूठ। यह कहो कि अपने साम्राज्य और बेईमानी से प्राप्त दूसरे लाभो की रक्षा के लिए यह युद्ध लड़ा जा रहा है । चाहे हमारे देश के वीर युद्ध मे जायं या न जाय, परन्तु इस बार साम्राज्यवादियो की कुशल नही है । उनके ग्रह बुरे है । क्या तुमने बच्चू सूर की भविष्यवाणी के बारे में कुछ नही सुना ? उनका कहना है कि १३ अगस्त से २३ अगस्त तक का समय अग्रजो के लिए बहुत कठिन है । उनका पतन अवश्यम्भावी है ।"

"हाँ; लक्षण तो कुछ ऐसे ही है, परन्तु हम ग्रहो के भरोसे क्यो बैठे रहे ? रूस व चीन की तरह हम भी क्यो न अपने पैरो पर खड़े हो जाये ? अपनी स्वाधीनता के लिए हम भिक्षा नही माँग सकते। उसके लिए तो लड़ना पड़ेगा और हमें ऐसा करना ही चाहिए । यही उपयुक्त समय है ।"

"तुम ठीक कहते हो । सरकार राजी-खुशी कभी कुछ नही देती । स्वाधीनता कभी उपहार के रूप में नहीं दी जाती । जिस स्वाधीनता और प्रजातन्त्र के लिए अग्रेज आज लड़ने का दावा कर रहे है, हमारे नेताओ ने भी वही चीज उनसे माँगी थी, परन्तु मिला क्या ? पहली बार लार्ड लिनलिथगो द्वारा एक परामर्शदात्री असेम्बली, दूसरी बार एमरी की अगस्त-घोषणा और तीसरी और अन्तिम बार सारे ब्रिटिश मन्त्रिमण्डल का उपहार—

क्रिप्स-प्रस्ताव। हमने मांगी थी रोटी, परन्तु मिले हमें पत्थर, वह भी एक नही तीन।"

"इसीलिए अब गांधीजी ने उनसे भारत से चले जाने के लिए कहा है। हम लोग भी उनसे अब उकता गये है। जितनी जल्दी वे इस देश से चले जायं उतना ही अच्छा है। लेकिन जब तक उन्हे भगाया नही जायगा तब तक वे टलने वाले जीव नही है।"

"वैसे तो मै राजनैतिक बातो को कम समझता हूँ, परन्तु एक बात ज़रूर जानता हूँ। वह यह कि गांधीजी को ईश्वरीय-प्रेरणा है। वे भविष्य की बातों को जान सकते है और उनका यह कहना है कि यह अन्तिम संग्राम होगा और उसे अन्त तक लड़ा जायगा। जो कुछ वे कहते है वह होकर ही रहेगा। गाधीजी अंग्रेजो के लिए वैसे ही है जैसे कृष्ण कंस के लिए थे। अंग्रेजों का अन्त निश्चित है।"

"चारो ओर यह अफवाह फैली हुई है कि इस बार गांधीजी एक ऐसा नया कार्यक्रम रखने वाले है जिससे देखते-देखते सारी सरकारी व्यवस्था पंगु हो जायगी, ताश के पत्तो की तरह बिखर जायगी। ९ ता० के बाद रेलगाड़ियाँ, मोटर बस, टेलोफोन इत्यादि कार्य करना बद कर देगे।"

"क्या तुम नही जानते कि काग्रेस के नेतागण बम्बई में जमा हो रहे है? देखना है, ये लोग वहा क्या निश्चय करते है। यह एक महत्त्वपूर्ण अधिवेशन होगा। हमारी दृष्टि उसी ओर लगी है। कमर बाधकर तैयार रहना चाहिए। यदि इस समय न लडे तो फिर आग की लपटे हम को घेर लेगी।'

"भाई, गाधीजी महात्मा से कही अधिक एक राजनीतिज्ञ है। वे जानते है कि यदि इस बार हम न लड़े तो मृत्यु, नाश और नैतिक अध पतन हमारा स्वागत करने के लिए तैयार हैं। हमे एक वीर के सदृश मरना चाहिए। गाधीजी की मान्यता है कि चाहे अंग्रेज हो चाहे जापानी, भारत को स्वाधीनता के शत्रुओं से लड़ना ही चाहिए।"

रेलगाड़ियो, मदिरालयो, बाजारो तथा चौराहो आदि मे लोग इसी प्रकार की बाते करते हुए पाये जाते थे। वातावरण आतकपूर्ण था। इस सनसनी के कारणो को ढूढ़ निकालना कुछ कठिन नही। भारत की भूमि पर पहला बम गिरने और शत्रु के भारत की सीमा तक पहुँचने से भी बहुत पहले से देश में घोर भय फैल गया था। लोगो ने बडे-बडे नगरों को छोडकर दूसरे स्थानों की ओर भागना शुरू कर दिया था। इसका कारण था। प्रथम तो कई पीढ़ियो से अंग्रेजी शासन में रहते-रहते लोग नपुंसक हो गये थे और उनम

किसी भी आतंक का मुकाबला करने की अधिक शक्ति न रह गई थी। दूसरे अन्य देशों से युद्ध के आरम्भ में भयंकर तबाही के जो समाचार प्राप्त हुए, उनसे उनका रहा-सहा साहस भी जाता रहा। ऐसे वातावरण मे अगस्त की ८ वीं तारीख को कांग्रेस-कार्य-समिति के प्रस्ताव पर अपना अन्तिम निर्णय देने के लिए अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी का बम्बई में अधिवेशन हुआ। उसमें अंग्रेजो से भारत छोड़कर चले जाने के लिए केवल इसलिए नहीं कहा गया था कि भारतवासियों की स्वाधीनता की मांग पूरी हो जाय, बल्कि उस समय यह भारत और मित्रराष्ट्रों की सुरक्षा के लिए भी आवश्यक था। लोगो का विचार था कि अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी का यह अधिवेशन कांग्रेस और भारत के इतिहास की एक महत्त्वपूर्ण घटना होगी और उसका प्रभाव संसार के इतिहास पर भी पड़ सकता है। इसलिए सारे विश्व का इस अधिवेशन की ओर उत्सुकतापूर्वक देखना आश्चर्य की बात न थी। अंग्रेज और अमेरिकन पत्र-प्रतिनिधियों के अतिरिक्त चीन और रूस के पत्र-प्रतिनिधि भी उसमें उपस्थित थे। ५० विदेशी पत्रकारों सहित कुल ३५० पत्र-प्रतिनिधि-पास बांट गये थे। देखने में यह बैठक वार्षिक अधिवेशन के समान ही भव्य थी, परन्तु महत्त्व और जनता के उत्साह की दृष्टि से यह उससे भी कही अधिक बढ़ी-चढ़ी थी। अधिवेशन के आरम्भ होने से लगभग एक सप्ताह पहले से कांग्रेस-भवन में बड़ी चहल-पहल मची हुई थी। अखिल भारतीत कांग्रेस कमेटी के सदस्यों, अतिथियों, दर्शकों व कार्यकर्ताओ का तांता-सा लगा हुआ था। कर्मचारी, कार्यकर्ता, स्वयंसेवक आदि बड़ी उमंग और जोश से आदेश देने और उन्हे पूरा करने के लिए इधर-उधर दौड़ते हुए दिखलाई दे रहे थे। लोगो के झुंड-के-झुंड प्रवेश-टिकट पाने के लिए इच्छुक थे। परन्तु कोशिश करने पर भी टिकटो की बढ़ती हुई मांग को पूरा नही किया जा सका। बहुत से निराश होकर लौट गये। कुछ लोगों ने स्थिति का लाभ उठाते हुए निजी तौर से १० रुपये के टिकट को १००० तक में बेच डाला। इस अधिवेशन के लिए एक लाख रुपये की लागत से गवालिया टैंक मैदान में बहुत बड़ा पंडाल खड़ा किया गया था।

३५००० वर्ग फीट पंडाल का हर इंच जनता से खचाखच भर गया था। हजारों आदमी पंडाल के बाहर उत्सुकता से राष्ट्रीय पार्लियामेंट की कार्रवाई को सुनने के लिए एक-दूसरे से चिपटे खड़े थे। लगभग २००० स्वयंसेवक, जिनमें २०० के करीब सेविकाएं भी थीं, दर्शकों, अतिथियों तथा कांग्रेस-सदस्यों का स्वागत तथा इंतजाम करने में संलग्न थे। चारों तरफ तिरंगे झंडे सारे दृश्य

को मनोहारी बना रहे थे। अधिवेशन शुरू होने से ठीक पहले एक घटना आश्चर्यजनक तरीके से देखने मे आई। उसका अभी तक मेरे मस्तिष्क पर प्रभाव है। उसने वहा पर एकत्र समस्त जनता पर अपनी छाप डाली। वह घटना यह थी कि एक हवाई जहाज कांग्रेस पंडाल के ऊपर अधिवेशन शुरू होने से कुछ मिनट पहले उड़ा। पता नही उसका क्या तात्पर्य था। हो सकता है कि उसके द्वारा ब्रिटिश-शक्ति का प्रदर्शन किया गया हो या अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी को इस बात की चेतावनी दी गई हो कि यदि उसने सरकार को चुनौती देने वाला प्रस्ताव स्वीकार किया तो उसका अच्छा परिणाम न होगा। शायद वह आगे चलकर बिहार मे की गई हवाई गोलाबारी की पूर्व-सूचना थी।

ठीक २॥ बजे 'वन्देमातरम्' गान के साथ अधिवेशन प्रारम्भ हुआ। देश के सम्मानित नेता मंच पर बैठे थे। इन बहादुर नेताओ को, जिनका सारा जीवन देश की स्वतत्रता की लड़ाई मे कटा था, देखकर साधारण आदमियो मे उत्साह पैदा होता था। वे उनकी ओर उत्सुकता, श्रद्धा, विश्वास और चाह की दृष्टि से देख रहे थे। राष्ट्रीय नारों की गगनभेदी ध्वनि के साथ राष्ट्रपति मौलाना अबुल कलाम आजाद मच पर आकर बैठे। कुर्सी पर बैठे-बैठे उन्होने बोलना शुरू किया। उनको सुनकर कौन था जो यह कह सकता कि वह उनसे अधिक भारत की रक्षा के लिए उत्सुक है। उन्होने बारदोली प्रस्ताव के पहले के हालात और युद्ध के प्रति काग्रेस के रवैये पर प्रकाश डाला। उनके मुह से शब्द निकल रहे थे और श्रोताओ पर एक अजीब प्रभाव पड़ रहा था। उन्होंने अधिवेशन मे दो भाषण दिये—एक प्रारम्भ में और दूसरा अधिवेशन की कार्रवाई समाप्त करते हुए। दोनो भाषण लोगों को बहुत दिनों तक याद रहेगे।

९ अगस्त वाला प्रस्ताव, जो 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव के नाम से मशहूर है, प० जवाहरलाल नेहरू ने पेश किया और सरदार पटेल ने उसका समर्थन किया। प्रस्ताव पर अग्रेजी में बोलते हुए प० नेहरू ने कहा—"प्रस्ताव कोई धमकी नही है। यह तो एक निमत्रण है। इसके द्वारा हमने बताया है कि हम क्या चाहते है। हमने सहयोग का हाथ आगे बढाया है। किन्तु उसके पीछे एक साफ इशारा भी है कि यदि कुछ बाते न हुई तो परिणाम क्या हो सकता है। यह स्वतत्र भारत के सहयोग का दावतनामा है। किसी दूसरी शर्त पर हमारा सह-योग नही हो सकता। उसके अलावा हमारा प्रस्ताव केवल सघर्ष और लडाई का वादा करता है।"

आगे चलकर प० नेहरू ने कहा—"दूसरे देशो मे रहने वाले हमारे कुछ

दोस्तो का खयाल है कि हम गलती कर रहे है । पर मै ऐसा नही कहता कि वे गलतफहमी में है, क्योकि जिस खास वातावरण में वे लोग रहे है, उसमें वह और कुछ सोच नही सकते । लेकिन मै इस बात की घोषणा करता हूँ कि हम अपनी धारणा में निश्चित है । उसके बारे मे किसी को गलतफहमी नही होनी चाहिए । हम एक समुद्र-तट पर खडे हुए है और यदि जरूरत हो तो गोता लगाने के लिए भी तैयार है ।"

आगे चलकर पं० नेहरू ने बताया—"जब यह प्रस्ताव पास हो जायगा तो यह केवल अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी का फैसला न होगा, बल्कि उसके द्वारा समस्त भारत की दबी हुई आवाज, धारणा तथा इच्छा का प्रतिनिधित्व होगा । इतना ही नहीं, मै तो यहां तक कह सकता हूं कि उसके द्वारा हम समस्त संसार की दबी हुई जनता की आवाज़ का प्रतिनिधित्व कर सकेंगे । अगर ब्रिटेन इस प्रस्ताव को मंजूर करेगा और उसके मुताबिक कार्य करेगा तो भारत में तथा सारी दुनिया में एक आश्चर्यजनक तब्दीली देखने को मिलेगी । उससे सारी लड़ाई का नकशा व रूप ही बदल जायगा और युद्ध के बीच एक क्रान्तिकारी परिवर्तन पैदा हो जायगा ।"

नेहरू जी ने बताया-"यह लडाई केवल लडाई ही नही है, बल्कि उससे कही अधिक महत्त्व रखती है। इस युद्ध की गोद में आने वाली भयकर क्राति छिपी है जो सारे ससार को ढक लेगी। युद्ध हो सकता है समाप्त हो जाय और यह भी हो सकता है कि कुछ और वक्त तक चलता रहे । लेकिन तब तक शान्ति नही हो सकती जब तक दुनिया के पराधीन देश आज़ाद नही हो जाते । बडे दुर्भाग्य की बात है कि पिछली लड़ाई से युद्ध के नेताओं ने कुछ नही सीखा और न उन्होंने युद्ध द्वारा होने वाली क्रान्ति को ही समझा । वर्तमान युद्ध के नेता भी इस युद्ध को पुराने ढंग से चला रहे है और सोचते है कि हम अधिक जहाज और हवाई जहाज़ बनाकर लडाई जीत लेंगे। हो सकता है कि उनकी अवस्था में मै भी यही करता । पर मै यह कहे बिना नही रह सकता कि ये नेता जनता की भावनाओं के आधार को नही समझ रहे है । जब तक ये उसे नही जानेंगे, उन्हे सफलता नही होगी, हालांकि मुझे आशा है कि यह कुछ सबक़ सीखेंगे और यह भी आशा है कि इसमें अधिक देरी न होगी ।"

चर्चिल तथा उनके जैसे अन्य अंग्रेजों की आलोचना करते हुए प० नेहरू ने कहा कि मिस्टर चर्चिल एग्लो-सेक्सन जातीय आधिपत्य की दृष्टि से सोचते है । मै अंग्रेजो और अमरीकन लोगों को याद दिलाना चाहता हूं कि संसार मे इन जातियो के अलावा और भी जातियां रहती है जो इस जातीय भेद-भाव व

आधिपत्य का बरदाश्त नही कर सकेगी। मित्र-राष्ट्रो के ध्येय की ओर सकेत करते हुए पडित जी ने कहा—"अभी तक उनके ध्येय नकारात्मक दृष्टि से केवल इसलिए ठीक है कि जर्मनी और जापान इनसे भी बुरे है। लेकिन यदि भारत स्वतन्त्र कर दिया जाय तो उससे लड़ाई का रूप बदल जायगा और मित्र राष्ट्रों का ध्येय व्यवहारत भी ठीक हो जायगा। उसका नाजी लोगो पर भी प्रभाव पड़ेगा और जो उनकी मदद कर रहे है उन पर भी एक गहरा और जबरदस्त नैतिक प्रभाव पड़ेगा। मुझे अफसोस है कि इंग्लैण्ड और अमेरिकन लोग इस प्रश्न पर सकीर्ण दृष्टि से सोच रहे है और उनके ध्यान में यह बात अभी तक नही आई कि भारत की आजादी का इस लड़ाई से क्या सम्बन्ध है।" कुछ जोश में आते हुए पं० जवाहरलाल ने कहा कि "कुछ लोग हमें धमकी दे रहे है, लेकिन वे नहीं जानते कि ऐसे नाजुक मौक़े पर धमकी का और भी भयंकर परिणाम हो सकता है और यह उनके लिए भी घातक हो सकता है। मैं तो भारतीय लोगों से अपील करूंगा कि वे इस संशय, धमकी व तनातनी के वातावरण में अपने सच्चे ध्येय और धारणा को न भूल जायं, वे भारत की आजादी के लिए ही नही, बल्कि समस्त दुनिया के लोगों की आजादी और विशेषकर रूस व चीन की आजादी के लिए लड़ रहे है। मै एक राष्ट्रवादी हूँ और मुझे इसका गर्व है, लेकिन में एक संकीर्ण राष्ट्रवाद के चंगुल में नहीं फंस सकता। हमे अपने मे अन्तर्राष्ट्रीय भावना पैदा करनी है।"

आगे चलकर प० नेहरू ने कहा—"हमारे रास्ते मे बहुत-सी कठिनाइया है। उन अग्रेजो और अमेरिकनो से, जो यह समझते है कि हम गलती कर रहे है, मै यह कहूँगा कि यह हमारी परेशानी है और उसे हम ही ठीक कर सकते है। हम अग्रेजो और अमरीकनो से कही अधिक जानते है कि गुलामी क्या चीज है; क्योंकि हम उसके अभिशापो को सहन कर रहे है। आखिर युद्ध में जापान ने भारत पर आक्रमण किया तो हमें ही कठोर कुर्बानी और तकलीफे बरदाश्त करनी होगी। हमें ही आग की लपटों में झुलसना होगा। अब तो हम आग में कूद पड़े है, या तो सफल होकर निकलेंगे या उसी में जलकर भस्म हो जायगे। जहा तक हिन्दू-मुस्लिम का प्रश्न है, मैंने मि० जिन्ना से जाकर बातचीत की और पूछा कि मुस्लिम लीग क्या चाहती है। मैंने उनसे पत्र लिखकर भी पूछा, लेकिन मुझे कोई भी उत्तर नही मिला। मिस्टर जिन्ना का रवैया वही है जो नाजी जर्मनी और फासिस्ट इटली का है। लेकिन फिर भी 'बम्बई क्रानिकल' हमसे यह कहता नही थका है कि मुस्लिम लीग से कांग्रेस को फैसला कर लेना चाहिए। मै 'बम्बई क्रानिकल' के सम्पादक से

पूछना चाहता हूं कि उनका इस पुराने तार को बजाने से क्या तात्पर्य है? जब कि कांग्रेस ने हर समय मुस्लिम लीग के पास सुलह की पेशकश की, हमारे सामने दरवाजा बन्द कर दिया गया और फिर उलटा हमारे ऊपर इलज़ाम लगाया गया। आख़िर हम कब तक ऐसा अपमान सहते रहेंगे?" (करतल ध्वनि)

सरदार पटेल

इस प्रस्ताव का समर्थन करने के लिए सरदार पटेल खड़े हुए, जिन्होंने एक सीधी और स्पष्ट वक्तृता द्वारा समस्त जनता मे बिजली-सी पैदा कर दी। उनके शब्दो मे बल था, निश्चित धारणा थी, स्पष्टता थी, और था जनता की भावना का प्रदर्शन। उन्होंने वही कहा जो जनता चाहती थी, अनुभव करती थी व किसी के द्वारा सुनना चाहती थी। यही कारण था कि उनकी वक्तृता के दौरान में उत्साह से भरी हुई जनता ने बार-बार करतल-ध्वनि द्वारा अपने भावो का परिचय दिया। निस्सन्देह उनकी वक्तृता में कुछ अप्रिय लगने वाले व तीखे वार भी थे। किन्तु यह एक ऐसे सरदार की वक्तृता थी जो मरते हुए लोगो में भी जीवन पैदा कर सकते है। सरदार ने कहा, "सरकार चाहती है कि हम उसमें और उसके हथियारों में विश्वास करें। क्या हम उन्हीं हथियारों का विश्वास करें, जिन्होंने बर्मा और मलाया के लोगो की रक्षा की? क्या हम ऐसे ही भाग्य का स्वागत करें जो उनका हुआ? वह उन देशो से भाग खड़ी हुई और वहाँ के लोगो को जापानियों के रहमो-करम पर छोड़ दिया। कौन जानता है कि वह हमें उसी तरह नष्ट और तबाह करके यहाँ से नहीं चली जायगी। हम वादों पर कैसे विश्वास करें जब कि धोखो का तांता लगा हुआ है।"

इस प्रस्ताव में बहुत-सी तरमीमे पेश हुई, जिनमे मुख्य वह थी जो कम्युनिस्टो ने पेश की थी।

प्रस्ताव तथा सशोधनो पर मत लेने से पहले मौलाना आज़ाद ने बताया कि किस प्रकार कांग्रेस बराबर दो साल से हिन्दू-मुस्लिम मेल का प्रयत्न कर रही है। लेकिन यह केवल एक-तरफा प्रयत्न रहा है। दूसरी पार्टी ने ज़रा भी हमारे बढे हुए हाथ की न तो सराहना की और न अपनी ओर से क्रियात्मक कदम ही उठाया। जहाँ तक कांग्रेस का ताल्लुक है, उसका रवैया बिलकुल साफ है। उसका दरवाजा सदा सबके लिए खुला हुआ है। इसलिए कांग्रेस को कुछ कहने की क्या जरूरत है? जो लोग हिन्दू-मस्लिम फैसले की बातें कहकर शोर-गुल मचा रहे है, अच्छा होता कि वे लीग का दरवाज़ा खटखटाते, जो हमारे लिए न केवल बन्द कर दिया गया है, बल्कि जिसमे कीलें

ठोंक दी गई है।" इसके बाद मौलाना आज़ाद ने प्रस्ताव व संशोधनों पर मत लिये। केवल कम्युनिस्टो द्वारा पेश हुए सशोधन के पक्ष मे १२ मत आये और शेष संशोधन या तो वापस ले लिये गए या गिर गए। इस प्रकार महान् करतल ध्वनि के बीच ८ अगस्त सन् १९४२ का वह ऐतिहासिक प्रस्ताव पास हुआ। ठीक उसके पश्चात् महात्मा गाधी ने २॥ घटे तक अग्रेजी और हिन्दुस्तानी में एक ओजपूर्ण तथा सारगर्भित भाषण दिया जिसका दर्शकों व सदस्यो पर जादू का-सा प्रभाव पड़ा। पूरे ढाई घटे तक एक अजीब सन्नाटा रहा। उस समय महात्मा गाधी की वाणी से निकला हुआ एक-एक शब्द मालूम पड़ता था लोगो के हृदयो व स्नायु-मण्डल पर अपना प्रभाव डाल रहा है। जिस समय गाधी जी बोल रहे थे तो मालूम देता था कि उनके ज़रिए सारा राष्ट्र अपने हृदय को खोलकर रख रहा है।

गांधीजी का भाषण

सबसे पहले गाधीजी ने उन लोगो को, जिन्होंने बड़ी दिलेरी व हिम्मत के साथ इस प्रस्ताव के विरुद्ध अपनी राय दी थी, बधाई दी। वे यह जानते थे कि प्रस्ताव बहुमत से पास होगा, फिर भी उन्होने अपने विचारो व विश्वासो का प्रदर्शन किया। इस प्रकार गाधीजी ने कहा कि उन्होने उस उसूल की रक्षा की है जो वह ५० साल से बराबर सबके सामने रखते रहे हैं। आगे चलकर हिन्दू-मुस्लिम एकता पर बोलते हुए महात्मा गांधी ने कम्युनिस्ट भाइयो का ध्यान मौलाना आज़ाद व पं० जवाहरलाल नेहरू के भाषणों की ओर दिलाया कि किस प्रकार काग्रेस ने एकता के प्रयत्न किये है और कहा, "एक जमाना था जब मुसलमान कहते थे कि हिन्दुस्तान हमारा मुल्क है। उस समय वे नाटक नही करते थे। वे हमारे साथ लड़े थे। ख़िलाफत में शरीक हुए थे। उनके साथ मै बरसो रहा। लोग कहते है कि मै भोला हू। पर इसके मानी यह थोड़े ही है कि मै यह मान लेता हू। पर मै सुन लेता हू। मुझे धोखेबाज़ बनने के बजाय भोला कहलाना अच्छा लगता है। मेरा तो यह स्वभाव है, कि जब तक कोई चीज़ सामने नही आती, मैं ऐतबार कर लेता हू। यह चीज प्रस्ताव में भरी है। मुसलमान और हिन्दू भी कहते है कि हिन्दू-मुस्लिम एकता होनी चाहिए। दूसरी सभी कौमो का भी इत्तिहाद होना चाहिए। होता है, तो अच्छा ही है। कुछ लोग मुझसे आकर कहते है कि तू जब तक जिन्दा है, तभी तक यह बनेगा। लेकिन मेरा हृदय इसे कबूल नही करता। जिसे मेरा दिल कबूल नही करता उसमें मुझे रस नही है। मै तो जब छोटा बच्चा था, तब से इस चाज को

जानता था। मदरसे में हिन्दू, मुसलमान और पारसी सब थे। उनसे मैंने दोस्ती की थी। मै जानता था कि यदि हम हिन्दुस्तान मे अमन से रहना चाहते है, तो पडौसी के फर्ज का भली-भांति पालन करना चाहिए। अफ़्रिका भी गया तो मुसलमानो का काम लेकर गया और सबका दिल हरण कर लिया। जो मेरे उसूलों के मुख़ालिफ़ थे, उन्होने भी मुझ पर विश्वास किया। वे जानते थे, कि यह जो बात कहेगा, वह न्याय की ही होगी। वहां से आया, सो भी हारकर नही आया। सबको रोते हुए छोड़कर आया। यहा भी वही चीज मेरे सामने पैदा हो गई। बड़ा काम किया, तो मुसलमानो के लिए भी किया। उस समय मुझे कोई दुश्मन नही मानता था। खिलाफत मे मैंने क्या स्वार्थीपन किया ? मैं गाय की पूजा करता हूं। हम एक है, तो सिर्फ इन्सान ही नही जीव-मात्र एक है। सब खुदा के बन्दे है। इसकी फिलासफी आज मै समझाना नही चाहता। वे दोनो भाई और मौलाना बारी मेरी गवाही दे सकते है कि मैने गाय के बारे मे क्या कहा था। मैंने कहा था कि गाय को बचाने के लिए मैं सौदा करना नही चाहता। अगर आप स्वतन्त्र रूप से ऐसा करेंगे, तो अच्छा होगा। मै तो मुसलमानों के साथ खाना भी खा लेता हू। लोग उस जमाने मे इसे अच्छा नही मानते थे। अब तो सब जान गये कि यह तो भंगी के साथ भी खा लेता है। लेकिन उन दिनो मौलाना बारी ने कहा कि मै आपको अपने यहां नही खिलाऊंगा। उस समय यह उनके लिए बड़ी शराफत की बात थी। बड़ी तगी से मकान मे रहते थे। उनके पास कोई महल थोड़ ही पड़ा था ? फिरगी महल के एक कोने मे रहते थे। मेरे लिए ब्राह्मण रखते थे। शराफत के साथ शराफत चलती थी। यह सब मै सबको सुनाना चाहता हू। जिन्ना साहब को भी। वे भी तो काग्रेसी थे। भले ही आज बिगड़ गये तो क्या हुआ ? भाई तो है। खुदा उनको बड़ी उमर दे। वे तब याद करेंगे कि गाधी ने कभी धोखा नही दिया, झूठी बात नही की। आज वे या मुसलमान नाराज है, तो मैं क्या करूं। मारना चाहे तो मार भी सकते हैं। मेरे पास क्या है, मेरी गर्दन तो उनकी गोद मे पडी है। और कोई मेरे गले में छुरी भी मार दे, तो बुरा भी नही लग सकता। मै बुरा क्यो मानू ? वह कोई सच्चे गांधी को थोडे ही मारना चाहते है, वह तो उस गाधी को मारना चाहते है जिसे वह बुरा मानते है। तो मैं तो वही आदमी हू। इस बात को मुसलमान न भूले। गालिया देना चाहे तो दें। इससे मुझे ईजा नही पहुचती। इस्लाम को मै जानता हूं। वह तो कहता है दुश्मन को भी गालियां देना बुरा है। मुहम्मद साहब भी यही कहते थे। वे दुश्मन को अपनाते थे। उसके साथ नेकी करते थे। अगर मुसलमान इस्लाम के

है तो जो आदमी खुदा को हाजिर नाजिर कहकर कोई बात कहता है, तो उस पर विश्वास करना चाहिए। जो गालियां देते हैं, वे तो गोलियां चलाते हैं। वे गोलियों से मेरा खातमा कर दे, तो भी मुझ पर असर नहीं कर सकते। पर इस्लाम का क्या ? वे बारह आदमी है। उन्हे मौलाना साहब ने कितना समझाया, पर उन पर कोई प्रभाव नही हुआ। पर इसकी कोई बात नहीं। जहा हमारी फिलासफी की बात हो, वहा दोस्ती इस्तेमाल न की जाय। आपको जो सही लगे, सो ही करे। कोई काम मेरे लिए नही, इस्लाम की भलाई के लिए करे है।

अगर पाकिस्तान सही चीज है, तो वह जिन्ना साहब की जेब मे पड़ा ही है। हर मुसलमान की जेब में पड़ा है। पर अगर वह सही चीज नही है, तो उसे कौन हजम कर सकता है। तकबरी से तो खुदा भी भागता है कोई क्या जाने कि जिन्ना क्या चाहते है। जिन्ना साहब बडे नाराज होते है। एक बार उन्होंने लिखा, 'मेरे खत पढकर आपको बहुत दुःख होता होगा। आपको मेरी बात बहुत चुभती होगी। पर मैं क्या करूं ? जो दिल मे है, सो कहता हूं।' मैं उन्हे इसके लिए मुबारकबादी देता हूं। लेकिन आप जो उस चीज को नही मानते, उनसे मै कहता हू कि आपको जो बात सही मालूम हो, वही करे। सबकी राह न देखे। अरब मे करोड़ो लोग पड़े थे। लाखो थे उनमे अकेले। उनमें अकेले पैगम्बर साहब की क्या बिसात थी ? पर उन्होंनें कभी ऐसा नही कहा कि जब मेरे साथ करोडों होगे तभी इस्लाम जारी करूंगा। मै आपसे कहता हूं, जिसे सही न माने, उसे कबूल न करें ; राजाजी से भी मैंने यही कहा। वे कहते थे कि दे दो। दे देंगे तो वे मागेंगे नही। मेरी शराफत होगी। पर मै इस चीज को ठीक नही मानता। मै तो जिन्ना साहब से भी कहता हू कि जो महज आपको मनाने के लिए बात करते है, उसे आप कभी कबूल न करे। मेरे पास कई मुसलमाव आते है। वे कहते है,पाकिस्तान बुरी चीज है। पर दे दो। पर पीछे इसका नतीजा क्या होगा ? यह बुरी बात है। और जब तक उसे मैं बुरा मानता हू, साथ न दूंगा। पर इसके मानी क्या है ? समझ लें हम मुसलमानो को दबा कर कोई बात नही करना चाहते। इस तरह विश्वास कैसे हो सकता है ? वह अहिंसा से हा होगा। इसलिए कहता हू कि जो हक की बात है, उसे मान ले। यह मै कांग्रेस का तरफ से कहता हूँ। पच भी बना सकते है। पर उनमे भी हमारा एतबार तो होना चाहिए। उसे भी नही मानेंगे, तो आपका जबरदस्ती नहीं तो क्या है ? उसे कोई कैसे मानेगा ? एक जिन्दा चीज के टुकड़े करेगे ? जिन्दा चीज को मारकर क्या लेंगे ? हां, हम यह कहते है कि कोई किसी को मजबूर

नहीं कर सकता । लड़ाई करके ले सकते हैं। मुझे जो खुल्लम-खुल्ला कहते हैं, ऐसा हिन्दू मैं नहीं हूं। कांग्रेस ऐसे हिन्दुओं का प्रतिनिधित्व नहीं करती। अगर आप कांग्रेस का एतबार नहीं करते, तो आपके हिन्दुस्तान के नसीब में झगड़े ही झगड़े हैं। पर यह ठीक रास्ता नहीं है। अगर मुझसे खुदा ठीक बोल रहा है, तो आप इससे मुझे डिगा नहीं पाएंगे। अगर चीज सही नहीं है तो तलवार के बल पर लेंगे, यह कहना क्या ठीक है? मुहम्मद साहब ने यह तरीका नहीं बताया।

मैंने बहुत वक्त लिया। सारी रात भर सोचता रहा। पर तन्दुरुस्ती की भी फिक्र रखनी पड़ती है। डॉक्टरों ने भी फरमाया कि सम्हलकर काम करो। पर जो चीज खुदा ने दे दी है, उसे तो उसके लिए खर्च करना ही है। और अभी तो जबान चल रही है। पहले तो मैं हिन्दू-मुसलमानों की बात करता हूं। हम एक बन जाएं, सही माने में मान लें. दिल में कोई परदा नहीं रखें और हिन्दुस्तान को विदेशी कब्जे से छुड़ाने के लिए यत्न करें। पाकिस्तान भी तो आखिर हिन्दुस्तान का एक हिस्सा है। इसलिए पहली बात यही है कि हिन्दुस्तान के लिए लड़ें। अगर ऐसा करेंगे तो बहुत जल्दी कामयाब होंगे। छः महीने तो बड़ी बात है। आज रात को भी ले सकते हैं। पर एक बात याद रखो। हिन्दू-मुसलमान एकता तो चाहिए। पर अगर नहीं मिलती, तो भी आजादी तो लेनी ही है।

पर हम यह समझकर नहीं लें कि अकेले हिन्दुओं के लिए लेना है। पैंतीस करोड़ के लिए लेना है। हक की बात है। जिन्ना साहब कहते हैं कि मुस्लिम राज होगा। मौलाना साहब की ऑफर का यह मतलब नहीं की मुस्लिम राज होगा। हो जाय तो उसकी भी परवा नहीं। पर जो हमने ऑफर की सो जिन्ना साहब की मुसलमानों की वाहवाही के लिए नहीं की। वह तो हिन्दू मुसलमान पारसी वगैरा सबकी होगी। मेरा लड़का मुसलमान हो गया, तो उसका होम-लैंड कहां होगा? और अब तो वह आर्य समाजी है। उसकी हालत क्या होगी? उसका कौन-सा मुल्क होगा, उसे कहां रखेंगे? वह अपने बाप को थोड़े ही भूल गया है। उसकी मां ने खत लिखा। वह पक्की हिन्दू है। राम को मानती है। पर उसका खुदा तो भोला है। अनपढ़ औरत है। पर उसका खुदा उसकी सुन लेता है। उसका नाम लिख लेता है। ऐसा बेवकूफ खुदा है, सो उसने लिखा कि मेरा लड़का मुसलमान हो गया, इसकी मुझे शिकायत नहीं। पर वह शराब पीता है. उसे आप कैसे बरदाश्त करते हैं? उसका लड़का खतरा उठाकर भी मुसलमानों के बीच यह देखने के लिए गया कि उसके बाप ने शराब और व्यभिचार दोनों में से एक भी छोड़ा या नहीं। पर उसने एक भी नहीं छोड़ा।

पर मैंने उससे सबक लिया। इस चीज को समझ सब जायं। इस लड़ाई में जितने हिन्दू हैं, उतने ही मुसलमान भी आ सकते हैं। मुसलमानों को कांग्रेस के दफ्तर में कौन-सी रुकावट है। वह तो बड़ा डेमोक्रेटिक आरगेनाइजेशन है। इसलिए पहला सबक यह है कि आप जो लड़ते हैं, सिर्फ हिन्दुओं के लिए नहीं लड़ते। सब माइनोरिटीज के लिए लड़ते हैं। मुसलमान भी लड़ें। सबके लिए लड़ें। आपस में जरा भी नहीं लड़ना चाहिए। किसी हिन्दू ने मुसलमान को मार डाला या किसी मुसलमान ने हिन्दू को मार डाला यह मैं नहीं सुनना चाहता। हिन्दू मुसलमान एक दूसरे के लिए अपनी जान दे दें। यह मसला सबका है। झगड़े के मौके हर वक्त आने वाले हैं। इसलिए कहता हूं, सब्र करें। कोई एक मारे तो आप दो न मारें। मुसलमान भी ऐसा ही करें। कोई तलवार चलाता है, तो अपनी गर्दन उसके हाथ में रख दें। मेरी हिदायत सबके लिए है। क्योंकि यह Mass Struggle कैसे चलेगा, सो बता रहा हूं। यह छोटी-से-छोटी शर्त है।

पकल साहब का फर्मान पढ़ें। उसे छापकर मैंने सरकार की खिदमत की है। 'हरिजन' में दे नहीं सकता था। आपको पता चल जायगा कि सरकार कैसे चलती है। पर उसका रास्ता टेढ़ा है। आपका सीधा है। आप आंखें मूंदकर भी उस पर चल सकते हैं। यही सत्याग्रह का रास्ता है।

कोई कहते हैं, यह जल्दी होगी। तैयारी की जरूरत है। जितनी मुसाफरी मैंने की, उतनी किसी ने नहीं की जो जिन्दा है। मैं लोगों को जानता हूं, मेरा तो दिल उनके पास है। और तैयारी का क्या करूं? मेरी तैयारी कच्ची, मैं कच्चा और मेरा लश्कर भी कच्चा। पर हमला आगया तो क्या करूं? अब तैयारी कर लें। खुदा क्या कहेगा? वह तमाचा नहीं मारेगा? क्या वह यह नहीं कहेगा कि तुझको मैंने जो खजाना दिया, उसे तो निकाल देता। बाकी तो पीछे मैं था ही। मैं सिर्फ हिन्दुस्तान के लिए नहीं लड़ता। यों तो मेरे पास बहुत-सी लड़ाइयां पड़ी थीं। पहले कहते थे, परेशान नहीं करेंगे। पर अब ऐसे कब तक बैठेंगे? वे बारह भाई जूझते हैं, तब मैं क्यों नहीं जूझूं? आप मेरे दिल को समझ सकते हैं।

अब क्या करना है, वह सुना दूं। आपने रेजोल्यूशन तो पास कर लिया। पर हमारी सच्ची लड़ाई शुरू नहीं हुई। आप मेरे मातहत होगये। अभी तो वाइसराय से मिन्नत करूंगा। समय तो देना होगा, उस बीच आपको क्या करना है।

मौलाना साहब ने पूछा कि तब तक कोई कार्यक्रम ता

तो बताइए। मैंने कहा, चरखा है। मौलाना साहब निराश होगये। मैंने कहा कांग्रेस इसके साथ काम करता है, तो कुछ तो चाहिए। इसलिए चरखा बताया। और भी कहता हूं। तब मौलाना खुश होगये। अब सुनाता हूं, सब क्या कर सकते हैं।

आप मान लें, कि हम आज़ाद बन गये। आज़ादी के माने क्या हैं? गुलाम की ज़ंजीरें तो छूटीं। उसके दिल से तो छूटीं। अब वह तदबीर करता है। अपने मालिक से कहता है, मैंने गुलामी छोड़ दी। लेकिन आप से नहीं लडूंगा। आप ज़िन्दा रखना चाहते हैं, तो ज़िन्दा रखें। आप मुझे खुराक देते थे। पर वह तो मेरी ही पैदा की हुई थी।

इस बीच में समझौता नहीं है। मैं नमक की सुविधायें या शराबबन्दी लेने को नहीं जा रहा हूं। मैं तो एक ही चीज़ लेने जा रहा हूं आज़ादी। नहीं देना है, तो क़त्ल करें। मैं वह गांधी नहीं, जो बीच में कुछ चीज़ लेकर आ जाय। आपको तो मैं एक मन्त्र देता हूं, 'करेंगे या मरेंगे।' जेल को भूल जायं। आप सुबह शाम यही कहें, कि खाता हूं, पीता हूं, सांस लेता हूं, तो गुलामी की ज़ंजीर तोड़ने के लिए। जो मरना जानते हैं उन्हीं ने जीने की कला जानी है। आज से तय करें कि आज़ादी लेनी है। नहीं लेनी है तो मरेंगे। आज़ादी डरपोकों के लिए नहीं। जिनमें करने की ताक़त है, वही ज़िन्दा रह सकते हैं। हम चींटियां नहीं। हम हाथी से भी बड़े हैं, हम शेर हैं।

पहले तो मेरे सामने अखबार हैं। वे न तो सरकार की आवाज़ हैं और अगर हमारी आवाज़ हैं, तो डरकर काम करते हैं। पर वह ज़ंजीर से छूट जायं। आज़ादी के लिए सबको बुलाता हूं। आप तो इस मैदान में आजायं। अपनी क़लम सूखे दें। अगर यह भय हो कि सरकार छापेखाने ले लेगी। तो मैं इतना ही कहता हूं कि अखबार बन्द कर दें। खामखाह ज़मानत न दें। अगर देना चाहें तो दे दें। पर क़लम को न रोकें। यह भी बहादुरी का काम है। मैंने क्या किया? इतना बड़ा कारखाना चलता था। उसको बन्द कर दिया। और अब फिर नया पेश पैदा हो गया। फिर मैंने तो आपको एक मध्यम मार्ग बताया। कड़वी चीज़ आपके सामने नहीं रखी। एलान कर दें कि अब स्टेंडिंग कमेटी को छोड़ देंगे। सिर्फ आज़ाद हिन्दुस्तान की सरकार को ही मानेंगे। अगर आप बहुत दूर नहीं जा सकते, तो कहें आपकी चीज़ भी लेंगे और कांग्रेस की भी लेंगे। अगर बरदाश्त नहीं कर सकते, तो नहीं करना है।

आज़ादी आ रही है, और इसके लिए राजा लोगों से तो मैं वह भी नहीं

मांगता। उनसे कहता हूं कि मै आपका खैरख्वाह हूं। काठियावाड़ का हूं। मेरे पिता तीन जगह दीवान रहे। आपका नमक खाया। मैं नमकहराम कभी नही हुआ। आपके सामने एक नमकहलाल मिन्नत करता है। अब तक आप सल्तनत के रहे। उससे सत्ता पाई। पैसे लिये। पैसे तो पिताजी ने भी पाये। पर उन्होंने पोलिटिकल एजेन्ट से लड़ाई की। एक दिन हवालात मे भी रहे। उनका मैं लड़का हू। मेरे जिन्दा रहते आप कुछ काम करेंगे तो आपके लिए जगह है। मेरे पीछे करेंगे तो भी जवाहरलाल नही मानेगे। वह तो कहता है राजा लोग, पूंजीपति, जमीदार किसी के लिए अब जगह नही है। वह तो प्लान्ड एकोनामी वाला है। उसकी बहुत-सी बाते पी जाता हूं। वह तो उड़ने वाला आदमी है। चाहेगा तो हवाई जहाज मे बैठकर चीन भी चला जायगा। पर मेरे पास तो सबके लिए जगह है। एक मंत्र है, तुझे कोई चीज अपनाना है, तो पहले खुदा को दे दे, उसको छोड़ दे। हिन्दुस्तान में इतने लोग है। मैं तो इन्ही की मारफत खुदा को पहचानता हूं। वही खुदा है। अगर वह नही है तो मैं दूसरे खुदा को नही जानता। इसी तरह राजा लोग भी प्रजा से कह दें, राज आपकी ही मिलकियत है। तब राजाओ को किसी बात की कमी न रहेगी। प्रजा उन्हे दोनो हाथों से देगी। वह राजा रहेगा। वंश-परम्परा नही। वंश-परम्परा भी रहेगी अगर वे दुनिया की सेवा करते रहेगे। इसलिए राजाओ से कहना चाहता हूं कि आप गुलामी में न रहे। रहना है, तो हिन्दुस्तानियो की सल्तनत मे रहे। पोलिटिकल डिपार्टमेंट को लिख दे कि खल्कत उठ गई तो हम कहां रहे। चक्रवर्ती तो मातहत राजाओं को बचाता है। जिसको राजा उठाते है, वह चक्रवर्ती नही। इसलिए कह दीजिए कि हम तो रैयत के होगये। वह बैठाएगी तो बैठेगे। हम उसका साथ देंगे। इसमे कोई कानूनी कठिनाई नही। राजाओ के लिए कोई कानून नही। पोलिटिकल डिपार्टमेट की जबानी बातो को ही माने तो मैं क्या करूं? यह तो आप दावा नही कर सकते कि हम अलग है। अगर आप रैयत के साथ रहेगे, तो आप उसके सरदार रहेगे।

राजाओ से इस तरह साफ-साफ कह दे। और इतने पर वे मारे तो मर जाय। तेरह हो तो तेरह। कोई बात छिपाकर नही करनी है। इस लड़ाई में गुप्तता तो है ही नही।

अब जज वगैरह से। वे भी अभी कुछ न करें। आज ही इस्तीफा न दें। रोक लें। पर अपनी आजादी कायम रखे। कह दें, मैं तो कांग्रेस का आदमी हूँ। रानाडे ने यही किया था। सिर्फ एक मर्यादा का पालन करूगा। न्यायासन पर न कांग्रेस का हू न सरकार का। आजाद। कोई कानून नही जो

मुझे यह कहने से मना करे। रानाडे जब तक जिन्दा थे ऐसा ही करते थे। कांग्रेस मे बराबर जाते थे, पर भाग नही लिया। समाज-सेवा-संघ पैदा कर दिया। उस जमाने मे यह कम नही था। आज भी जज ऐसा कर सकते है। गुप्त हिदायतें निकले, उनको न मानें। कह दे कि हम तो कांग्रेस के आदमी है। यह सरकार को मंजूर हो, तो रहे नही तो निकल जाय।

अब सिपाही! वे इतना तो कह दे कि अब तक तो हमने अपने दिल की बात छिपा कर रखी, पर अब तो हम कहते है कि हम कांग्रेस के हैं।

कई सिपाही मेरे पास आये, जवाहरलाल के पास भी आये, मौलाना साहब के पास आये, और अंलीभाइयो के पास भी आये थे। सिपाही नही बड़े-बड़े अफसर भी। पर हम उनको रोकते रहे। पर अब वे एलान कर दे कि हम पेट के लिए काम करते है, पर आदमी तो कांग्रेस के है। आप हमारे ही लोगों पर गोला-लाठी चलाने की बात कहेगे, तो नही मानेगे। अपने दुश्मन पर चला देंगे। इतना कह देंगे तो बहुत बड़ी आबोहवा पैदा हो जायगी है। कितने ही ऐरोप्लेन आये, हमें परवाह नही।

इसी तरह से प्रोफेसर और विद्यार्थी। उनको भी आज तो खीचना नही चाहता। वे भी इतना तो कह दें कि हम तो कांग्रेस के है। प्रोफेसर भी कह दे। वे तो उस्ताद है। पर काम तो हमारा ही करते है। मेरी भी एक गाना सिखाने वाली उस्ताद थी। वायोलिन सिखाती थी। कितनी मुहब्बत से वह सिखाती थी। नौकर की तरह काम करती थी। मै तो Englislh Gentleman बनने जा रहा था। उसका ठीक-ठीक अर्थ बताने वाला शब्द तो मेरे पास है ही नही। वाशिंगटन आयरलिंग ने इसकी ठीक परिभाषा लिखी है। सो वह मुझे इंग्लिश जेंटिलमैन बनाने के लिए वायोलिन सिखाती थी। जो फीस लेती थी उसका पूरा बदला देती थी। इसी तरह प्रोफेसर भी सिखाते है। उनसे हम कह दें, कि आप सल्तनत के है, या हमारे। हमारे है, तो अच्छा है। मकान खाली करने की आज जरूरत नही, इनमे से जिनको निकालना चाहूंगा, निकालूंगा। हवाई बात नही करता।

मेरे दिल में तो कहने को बहुत है। पर सब मै बाहर कर सकूं, इतना समय नही है। मुझे अभी थोड़ा अंग्रेजी में भी बोलना बाकी है। रात हो गई है, बहुत देर होगई है, फिर भी इतनी शान्ति से, इतने ध्यान से आपने मुझे सुना इसके लिए मै आपको धन्यवाद देता हूं। सच्चे सिपाही ऐसा ही करते है।

बाईस वर्ष तक बोलने-लिखने मे मैंने संयम रखा है, ताकत इकट्ठी की है। जो अपनी ताकत हमेशा खर्च नही करता वह ब्रह्मचारी—पाकदामन—कहा

जाता है। वह हमेशा जीभ पर काबू (संयम) रखकर दबी जबान से बोलेगा। जिन्दगी भर मेरा प्रयत्न इस दिशा में रहा है, फिर भी आज इतने सारे लोगों को इतनी रात तक रोक रखकर--आपके ऊपर जबर्दस्ती करके भी—मुझे आपको आज जो कहना चाहिए था, वह कह दिया। उसका मुझेपश्चात्ताप नही है। आपकी मार्फत सारे हिन्दुस्तान को कह दिया।

इसके बाद अंग्रेजी भाषा में बोलते हुए गाधीजी ने बताया कि जिनकी सेवा के लिए अभी आपने मुझे नियुक्त किया, उनके सामने मेरे अन्तर के मन्थन को बाहर उंडेलने में मैंने आपका बहुत समय ले लिया है। मुझे नेता-गिरी बख्शी गई—फौजी परिभाषा मे मुझे सेनापति पद दिया गया, पर मै इस दृष्टि से नही देखता। मेरे पास अपना सेनापति पद चलाने के लिए प्रेम के अलावा दूसरा शस्त्र नही है। जिस लकड़ी के सहारे मै चलता हूँ उसे तो आप आसानी से तोडकर फेंक सकते है, ऐसी है। ऐसे अपङ्ग आदमी को जब ऐसी लड़ाई का बोझा उठाने के लिए आमन्त्रित किया जाय तो इसमें उसके लिए पौरुष अनुभव करने जैसा क्या है? मेरा यह बोझा आप तभी हल्का कर सकते है जब कि मै आपके सेनापति के रूप में नही बल्कि आपके नम्र सेवक की तरह खड़ा रहू। जो सेवा में सबसे चढकर हो वह समान दरजे के सेवको में अगुआ सेवक है, इतना ही इसका अर्थ है।

इसलिए पहली सीढी पर ही मै आपसे क्या-क्या अपेक्षा रखता हूँ, इस बावत अपने मन के उद्‌गार मैंने अब तक आपके सामने रखे। ध्यान रहे कि आज भी अभी लड़ाई शुरू नही हुई है। अभी भी मुझे शरिस्ते मुजब अनेक विधिया करनी पड़ेगी। जो बोझा मुझ पर आया है, सच ही वह असह्य है। मुझे ऐसो के सामने जाकर विनय-प्रार्थना करनी है जिनका आज मुझ पर विश्वास नही है। दुनिया भर के अनेक मित्रो के आगे भी आज मै अपनी साख खो बैठा हूँ। मेरी समझदारी पर, बल्कि मेरी प्रामाणिकता पर भी उनके मन में शङ्का खड़ी हो गई है। मेरी समझदारी की कीमत कम आकी जाय, इसका मुझे दु:ख नही है, पर मेरी नीयत के बारे में शङ्का उठाई जाय, यह तो मेरे लिए दारुण आघात है। लेकिन आज तो यही स्थिति है।

ऐसे प्रसंग आदमी की जिन्दगी मे आते है, पर सत्य के शोधक के लिए जिसे डर या पाखण्ड के बिना मानव जाति अथवा देश की यथाशक्ति सेवा करनी है, उसे तो यह सब सहने ही पड़ते है। पचास वर्ष की अपनी शोध मे शुद्ध सेवा का इससे दूसरा रास्ता मैंने नही जाना। मैंने मानव जाति की, साम्राज्य की एक से अधिक प्रसगो पर यथाशक्ति सेवा बजाई है और मै ऐसा कह सकता हू कि कहीं

भी अपने किसी निजी स्वार्थ अथवा बदले की आशा से मैंने कोई काम नही किया। लार्ड लिन्लिथगो के साथ मेरी मित्रता है, जो उनके ओहदे की सीमा को भी लांघ गई है। अपनी लड़की के साथ भी उन्होंने मेरा परिचय कराया। उनकी लड़की और जमाई दोनों मेरी तरफ आकर्षित हुए। उनके जामाता ए. डी. सी० हैं और वे महादेव के खास मित्र बन गए हैं। इनकी लड़की आज्ञाकारिणी और सबको प्रिय लगने वाली है। इन सब पवित्र व्यक्तिगत सम्बन्धों का उल्लेख मैं इसलिए कर रहा हूं कि लार्ड लिन्लिथगो और मेरे बीच जो व्यक्तिगत प्रेम सम्बन्ध है, उसका आपको पता चल जाय। और ऐसा होने पर भी नम्रता पूर्वक जाहिर करता हू कि यदि कभी ऐसे लार्ड लिन्लिथगो के सामने, साम्राज्य के प्रतिनिधि रूप में, मरणान्त लड़ाई छेड़ना मेरे नसीब में लिखा होगा तो यह व्यक्तिगत प्रेम-सम्बन्ध रत्ती भर भी बीच में नही आएगा। मैं सल्तनत के पशु-बल का सामना करोड़ों भारतीयो की मूक-शक्ति से करूंगा, जिन्होने लड़ाई के लिए उपयुक्त अहिंसा के सिवाय और कोई मर्यादा नही रखी होगी। मेरे लिए अत्यन्त कठिन काम होगा कि जिनके साथ मेरा ऐसा घरोपा है, उन्ही के सामने मैं लड़ाई छेड़ूं। उन्होने एक से अधिक अवसरो पर मेरे शब्दों पर विश्वास किया है, मेरे लोगों पर भी विश्वास रखा है। यह कहते हुए मुझे गर्व और सुख होता है और यह मैं इसलिए कहता हू जिसमें सब जान लें कि जिस सल्तनत का मैं वर्षो तक वफादार रहा और जिसकी मैंने सेवा बजाई, वह सल्तनत जब मेरे विश्वास की पात्र नही रही तब, जो अंग्रेज उस सल्तनत का प्रतिनिधि था, उसको उसके सामने लड़ाई छेड़ने के पहले मैंने पूरी खबर कर दी थी।

ऐसे मौके पर चार्ली एंड्रूज की पवित्र याद आये बिना कैसे रह सकती है? एंड्रूज की आत्मा इस समय मेरे आस-पास मडरा रही है। मेरी नजर में अंग्रेजी संस्कृति की सबसे उज्ज्वल परंपराओ के वे सस्कार-मूर्ति थे। हिन्दुस्तानियो की अपेक्षा भी उनके साथ मेरा अधिक निकट का नाता था। मेरे ऊपर उनका गले तक विश्वास था। हमारे बीच में कुछ भी प्राइवेट (खानगी) नही था। रोज हम एक दूसरे के साथ अपने हृदय की बात खोलकर रख देते थे। जरा भी आनाकानी या मन की चोरी (छिपाव) बिना वह मुझे सब बता देते थे। गुरुदेव के भी वे मित्र थे जरूर, पर गुरुदेव की आत्मा से वे चकाचौंध होते और उनका अदब करते थे। पर मेरे तो वे प्राणप्रिय मित्र बन गये थे। वर्षो पहले वे गोखले का परिचय-पत्र लेकर मेरे पास आये। पीयर्सन और एंड्रूज दोनो आदर्श अंग्रेज के नमूने थे। मैं जानता हूं कि उनकी आत्माएँ अभी भी मेरी वेदना-वाणी सुन रही हैं।

कलकत्ता के मेट्रोपोलिटन (ईसाई धर्माचार्य) का भी हितैषिता से भरपूर मुबारकबादी का पत्र मिला है। उनको मै पाकदिल खुदापरस्त पुरुष गिनता हू। मेरी कमनसीबी से वे भी आज मेरा यह कदम पसद नही करते। फिर भी उनका दिल मेरे साथ है। उनके दिल की भाषा मै पढ़ सकता हू।

यह सारी पार्श्वभूमि उपस्थित करके मै दुनिया को बताना चाहता हूं कि पश्चिम में रहने वाले अनेक मित्रो का विश्वास आज मैने खो दिया है—और उसका मुझे दुःख है—तो भी उन सबकी मैत्री और प्रेम की खातिर भी मै अपने अन्दर से उठने वाली आवाज को दबा नही सकता। आत्मा कहिये, मूलगत स्वभाव कहिये, वह, या मेरे भीतर रहने वाले मेरे दिल का दर्द, मेरी व्यथा पुकार-पुकारकर कह रही है, आज मुझे प्रेरित कर रही है। मै भूत दया जानता हू। मनुष्य स्वभाव का भी मैने थोडा-बहुत अभ्यास किया है। ऐसा आदमी अपने अन्तरात्मा को समझ सकता है। आप उसे जो चाहे नाम दें, पर यह अन्दर की आवाज मुझे कह रही है--'तुझे अकेला बिना सहारे खड़ा रहना पड़े तो भी आज तमाम दुनिया के सामने खड़ा होने से ही तेरा छुटकारा है। दुनिया लाल-पीली, रक्तपूर्ण आखों से तेरे सामने घूरे तो भी तुझे उसकी नजर के सामने नजर मिला करके खड़े रहना है। डर मत। अपने अन्दर की आवाज को ही सुन। यह आवाज तुझे कहती है कि पुत्र, स्त्री, सम्पत्ति, शीश सब कुछ समर्पण कर देना, पर जिस चीजके लिए तू जिया करता है और जिसकी खातिर तुझे मरना है, उस सत्य की पुकार करते-करते मरना।' मित्रो, इस बात का विश्वास रखिये कि मुझे मरने की जल्दी नही है। मुझे अपने सौवें वर्ष तक जीना है। वल्कि मैने तो आयु की सीमा १२० वर्ष तक आँकी है। इतने मे तो हिंद आजाद होगया होगा--दुनिया भी आजाद हुई रहेगी। आज तो मै इग्लैंड को या अमेरिका को भी आजाद मुल्क के रूप मे नही मानता। अपनी रीति से ये भले ही आजाद हों—ये आजाद है दुनिया की रंगीन जातियो को गुलामी की जंजीरों मे जकड़े रखने के लिए। इन कौमो की आजादी के लिए क्या आज अमेरिका और इग्लैंड लड़ रहे है? तो फिर मुझे इस लड़ाई के पूरी होने तक रुकने को मत कहो। मेरी आजादी की परिभाषा को किसलिए आप सकुचित करते है? इंग्लैंड और अमेरिका के आचार्य, उनका इतिहास, उनका उदात्त काव्य-भंडार यह नही सिखाता कि आजादी की व्याख्या को संकुचित रखा जाय, विशाल नही बनाया जाय और ऐसी व्याख्या के गज से जब मै नापता हू तब मुझे कहना ही पड़ता है कि इग्लैण्ड क्या और

अमेरिका क्या, कोई भी आजाद नही है। उनके आचार्यो ने और कवियों ने जिस स्वतंत्रता के गाने गाये है, उसकी उनको पहचान नही है। इसकी पहचान करनी हो तो उनको हिन्दुस्तान के चरणो मे बैठना होगा। घमड और गुस्ताखी के साथ नही, पर सच्चे सत्यशोधक बनकर आना पडेगा। बाईस वर्ष से हिन्द इस आधारभूत सत्य का प्रयोग कर रहा है। यो तो कांग्रेस अपने जन्म-काल से ही जाने या अनजाने अहिंसा की—वैधानिक मर्यादा में रहकर आदोलन करने की—राह से चलती आई है और एसा होने पर भी दादाभाई और फीरोजशाह जैसे नेता हिन्द को अपनी अंगुली पर नचाते थे—वे विद्रोही थे, काँग्रेस-प्रेमी थे, कांग्रेस के कर्ता-वर्ता थे, तब भी उसके सच्चे सेवक थे, खून-खराबी और छिपे कामो को प्रश्रय देने वाले नही थे। आज काग्रेस में बहुत से रगे सियार भी है, यह में मजूर करता हू। सारा देश अहिंसक लड़ाई में ही कूदेगा ऐसा मेरा विश्वास है। क्योंकि मनुष्य के स्वभाव में रही हुई भलाई और विषम अवसरों पर सत्य को परखने और उस पर दृढ़ रहने की उसकी कुदरती शक्ति पर मेरा विश्वास है। पर मेरा विश्वास खोटा भी साबित हो तो भी मै अपनी राह से विचलित होने वाला नही हू, डिगने वाला नही हू। कॉग्रेस की राह शुरू से ही शान्ति की रही है। आगे चलकर उसमे स्वराज्य का समावेश हुआ और बाद की पीढियो ने उसमें अहिंसा-असहकार का तत्त्व शामिल कर दिया। दादाभाई ने जब ब्रिटिश पार्लियामेन्ट में प्रवेश किया, साल्सबरी ने उन्हे काला आदमी कहा। पर अङ्ग्रेज-जनता ने दादाभाई को अपनाया—चुना और साल्सबरी हारे। हिन्द खुशी से पागल होगया। पर हिन्द के लिए आज ये सारी बातें पुरानी हो गईं। पर इन सब पिछली भूमिकाओ को ध्यान में रखकर मै अङ्ग्रेजो से, यूरोप से और मित्रराष्ट्रो से पूछता हूं कि वे अपने हृदय पर हाथ रखकर कहें कि हिन्द जो आजादी मागता है, उसमे कौन-सा गुनाह है? ऐसी कारवाइयो और पचास से अधिक वर्ष तक ऐसी सेवाओ के इतिहास वाली सस्था पर अविश्वास करना, उसकी बदनामी करना और अपने हाथ के विशाल साधनो का उपयोग करके दुनिया भर में उसकी शिकायत करना यह क्या शोभा की बात है? आकाश-पाताल एक करके चाहे जैसे रास्ते से, विदेशी अखबारो की मदद लेकर, अमेरिका के प्रेज़िडेण्ट की मदद लेकर, चीनी सेनापति मार्शल चागकाइशेक की भी मदद लेने के प्रयत्न करके हिन्दुस्तान को भद्दे विकृत रूप में दुनिया मे पेश करना क्या उचित है? सेनापति चाग से मै मिला हूं। श्रीमती शेक ने हमारे बीच दुभाषिया का काम किया। उनकी सहायता से मैंने सेनाधिपति शेक का परिचय पाया और यद्यपि सेनापति को

मे पार नहीं पा सका तो भी उन्होने श्रीमती शेक की मार्फत उनके मन के झुकाव का मुझे परिचय पाने दिया। हमारे मुकावले मे आज सारी दुनिया को खड़ा किया गया है—उभाड़ दिया गया है। सभी अपनी नाराजगी का इजहार कर रहे है। कहते है कि हम भूल कर रहे है। हमारी प्रवृत्ति असमय की है। ब्रिटिश मुत्सद्दीगिरी के लिए मेरे मन में मान था। आज उसकी गन्दगी से मेरा जी अकुला रहा है। पर नौसिखुए अभी भी इसके चरणों मे अपना सबक ले रहे है। इन तरीको से ये शायद चार दिन दुनिया के लोकमत को अपने पक्ष में रख सकेंगे। किन्तु हिन्दुस्तान तमाम दुनिया के लोकमत के इस तरह के अघटित सङ्गठन के सामने खड़ा होकर भी आज अपनी पुकार बुलन्द करेगा। सारा हिन्दुस्तान मेरा त्याग करे तो भी मै दुनिया को सुनाऊँगा—तुम ठोकर खा रहे हो, तुम भूल में हो। हिन्द की आजादी मजबूती से पकड़ रखने वालो के पास से भी हिन्द अहिंसा के बल पर यह आजादी ले लेगा। यह आजादी आने के पहले भले ही मेरी आँखें बन्द हो जाय, मै भले ही रुक जाऊं, पर अहिंसा रुकेगी नही। बहुत ज्यादा देरी से लेना वसूल करने के लिए कदमबोशी करने, विनती करने वाले हिन्द की आजादी का विरोध करके चीन और रूस का भी तुम क्या भला कर सकने वाले हो। तुम उनको प्राणघातक धक्का ही लगाओगे। किसी महाजन को देनदार की आजिजी करते जाना है? और उसके सामने ऐसे-ऐसे विरोध-बाधाए उपस्थित करने पर भी कांग्रेस तो आज विरोधियों को कहती है कि "हम साफ शराफत की लड़ाई लड़ेगे, पीठ मे घाव नहीं करेंगे, हम अहिंसा को अङ्गीकार कर चुके है।" ब्रिटिश सरकार को दिक न करने की कांग्रेस की नीति का प्रचारक मै खुद ही तो था? तो भी आज यह सख्त भाषा इस्तेमाल कर रहा हूं। मै कहता हू हमारी शराफत के लायक ही यह वात है। इसमें अयुक्त—अनुचित ऐसा क्या है? किसी आदमी ने मुझे गर्दन से पकड़ रखा हो और वह मुझे डुवाना चाहता हो तो क्या मै उसकी पकड़ मे से छूटने के लिए उसी क्षण चेष्टा न करूं? कांग्रेस के निश्चय में अयुक्त अथवा असङ्गत ऐसा कुछ भी नही है।

विदेशो के अखबार वाले यहां इकट्ठे हुए हैं। उनकी मारफत दुनिया को और मित्र राष्ट्रों की प्रजाओं को— जिनका कहना है कि हिन्द का साथ उन्हे चाहिए—मै कहता हूं कि हिन्द को आजाद जाहिर करके तुम्हारी नीयत सच्ची करके दिखलाने का आज अवसर है। इसे खो दोगे तो जिन्दगी में ऐसी घड़ी आने वाली नही है और इतिहास इस वात को अंकित करेगा कि तुमने अवसर पर अपना फर्ज अदा न करके सब कुछ खो दिया। तुम्हारी मार्फत मै दुनिया का

आशीर्वाद मागता हू कि मै विरोधियों को मनाने मे सफल बनू। मित्रराष्ट्रों की जनता से मुझे उनका खुला फर्ज अदा करने के बाद और कुछ ज्यादा नही चाहिए। अहिंसा अथवा शस्त्र-सन्यास करने को मै उन्हे नही कहता। फासिज्म और उन लोगो के साम्राज्यवाद, जिसके सामने मै लड़ रहा हूं, दोनों के बीच भी मौलिक भेद रहा हुआ है। ब्रिटिश सल्तनत को अभी हिन्दुस्तान से जैसा चाहिये, वैसा क्या मिल रहा है? मिल रहा है, वह तो गुलाम से मिल रहा है। हिन्द आजाद दोस्त के रूप में साथ दे तो कितना फर्क पड़े, इसका विचार करके देख लो। आजादी यदि उसे मिलने वाली हो तो वह आज ही आनी चाहिए। ऐसा होने मे तुम मदद कर सकते हो। ऐसा होने पर भी मदद न करो तो बाद में आजादी मिले, उसमे स्वाद नही रहेगा। आज करो तो इस आजादी के चमत्कार से जो बात अशक्य लगती है, वह कल शक्य हो जायगी। हिन्द मुक्त होगा तो चीन को मुक्ति दिलाएगा, रशिया की मदद को दौड़ेगा। बर्मा-मलाया में अंग्रेजों ने तो प्राण बिछाये नही थे, हिन्दुस्तानियो की ही शक्तियों का नाश किया। किस तरह से बिगड़ी बाजी सुधारी जा सकती है, इस पर विचार करलो। मैं कहां जाऊं—चालीस करोड़ को कहां ले जाऊ? आजादी के स्पर्श बिना करोड़ों की जनता को दुनिया की मुक्ति के यज्ञ में दिल से भाग लेने की और क्या कोई रीति हो सकती है? आज तो जनता के प्राण शोषित हो गये हैं—पीस दिये गये है, उनकी निस्तेज आखों में तेज लाना हो तो आजादी कल नही, आज ही आनी चाहिए। इसी से मैंने आज कांग्रेस से यह बाजी लगवाई है, या तो काग्रेस देश को आजाद करेगी अथवा खुद फना हो जायगी। 'करेंगे या मरेंगें।'

गांधीजी के इस स्फूर्तिदायक एवं प्रेरणाप्रद भाषण ने देश को इस कोने से उस कोने तक हिला दिया। उससे संघर्ष की भूमिका और भी दृढ हो गई, जो पिछले कुछ समय से देश में तैयार हो रही थी। इसलिए जब सरकार ने ९ अगस्त को सुबह नेताओं की सामूहिक गिरफ्तारी करके कांग्रेस पर प्रहार किया, तो देश का बच्चा-बच्चा 'करेंगे या मरेंगे' की भावना से प्रेरित हो उठा। स्वतन्त्रता का संघर्ष शुरू हो गया और उसमें देश ने कितना गौरवपूर्ण हिस्सा लिया, यह हम अगले अध्यायों में बताने का प्रयास करेंगे।

: ४ :

बम्बई प्रान्त आग की लपटों में

अब हम भारत के विभिन्न प्रान्तों एव रियासतों में आन्दोलन जिस प्रकार चला, उसका कुछ खुलासा वर्णन देने का प्रयत्न करेंगे। सर्व प्रथम हम बम्बई को ही लेते हैं। यह वह स्थान है जहाँ अखिल भारतवर्षीय कांग्रेस कमेटी का महत्त्वपूर्ण इतिहास-प्रसिद्ध अधिवेशन हुआ था, यह वह जगह है जहां राष्ट्र के प्रिय नेतागण राष्ट्र से छीनकर जेल के सीखचो में बन्द कर दिये गये थे, यह वह नगर है जहां गवालिया मैदान में एकत्रित स्वतंत्रता के सिपाहियों (जिनमें अधिक सख्या महिला स्वयंसेविकाओं की थी) तथा उत्तेजित जनता को ब्रिटिश सरकार ने सर्व प्रथम अपनी गोलियों का लक्ष्य बनाया था।

बम्बई एक प्रसिद्ध नगर है। यह एक द्वीप पर बसा हुआ है तथा विशाल और भव्य बन्दरगाह एवं जहाजी गोदियो से युक्त है। यह बडी तीव्र गति से कलकत्ता को व्यापारिक क्षेत्र मे पछाड़ रहा है। यह ऐसे महत्त्व-पूर्ण स्थान पर स्थित है, जहाँ से यह पूर्वीय देशो के व्यापार का केन्द्र बन सकता है। रूई के व्यापार के लिए तो यह संसार का एक प्रधान केन्द्र है ही। इसमें सभी वर्गों के लोग रहते है तथा इसके मुख्य-मुख्य उद्योग पारसियो के हाथ में है। पारसी लोग बहुत उन्नतिशील है। ये सदा से ही राष्ट्रीय स्वतन्त्रता के समर्थक रहे है। यों तो ये भारत के प्रायः सभी हिस्सो में थोड़ी-बहुत संख्या में बसे हुए है, किन्तु बम्बई शहर मे इनका आधिक्य है। ये प्राचीन भारत की उस जाति की संतान है जो अग्नि देवता की उपासक थी। अतएव स्वभावतः ही इनमें अपने पूर्वजों की भाँति स्वतन्त्रता एवं न्याय के लिए तीव्र अनुराग तथा जोश है। इन्ही कारणों से जब-जब भारतीय स्वतन्त्रता का आन्दोलन छिड़ा है, बम्बई नगर सर्वदा सबसे आगे रहा है। इसकी बनावट ब्रिटिश नगरों से अधिक मिलती-जुलती है, जिससे यह एक अन्तराष्ट्रीय स्थान बन गया है। इसका आकार बहुत विस्तृत होते हुए भी यह अन्य नगरो की अपेक्षा अधिक साफ-सुथरा है। शिक्षा, कला, विज्ञान, उद्योग तथा व्यापार का यह मुख्य केन्द्र है।

भारत के प्रसिद्ध-प्रसिद्ध व्यापारीगण इसी नगर मे है, तथा उन पर महात्मा गान्धी एव काग्रेस का बहुत प्रभाव है। भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन में जब-जब रुपए की आवश्यकता पड़ी है, इन्होने खुले हाथो सहायता दी है। अतएव हम यह कह सकते है कि इन्होंने भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन को पुष्ट करने में बड़ी मदद की है। यहा के तथा इस प्रान्त के मजदूरो पर महात्मा गान्धी के प्रयत्नो का बहुत असर पड़ा है। वे सब आपस में एक सुव्यवस्थित सगठन के सूत्र मे गुँथे हुए है तथा उनके व्यवसाय-संघ काफी हद तक राष्ट्रीय है और जब-जब भारतीय काग्रेस ने स्वतत्रता का युद्ध छेड़ा है, तब-तब इन सबो ने अपनी एक सुदृढ़ फौज तैयार करके मैदान में लाकर खड़ी कर दी है। बम्बई शहर की उन्नति का श्रीगणेश अमेरिका के गृह-युद्ध से हा समझना चाहिए, जब कि इसे अपने रूई के व्यवसाय को बढाने का अच्छा अवसर मिला था। इस समय करीब ग्यारह लाख इकसठ हजार नर-नारी इसमें रहते है।

बम्बई प्रान्त का दूसरा नाम पश्चिमी प्रेसीडेन्सी है। इसके अन्तर्गत २६ ब्रिटिश जिले तथा १९ इधर-उधर बिखरी हुई रियासते है। यह भू-भाग समतल और उपजाऊ है तथा इसके उत्तरी भाग में नर्मदा नदी बहती है। इसका दक्षिणी हिस्सा पठारी है। उत्तरी भाग में, जो अधिक उपजाऊ है, रूई, अफीम और गेहूँ मुख्यतया उत्पन्न होते है। दक्षिणी हिस्से मे लोहे की खाने है, किन्तु कोयले का अभाव है। इस कारण इस प्रान्त को बिहार आदि प्रदेशो से, जहां कोयले की खाने है, अपना सम्बन्ध बनाये रखना पडता है। किनारे एव मैदानी भाग का जलवायु उष्ण एवं नम है, किन्तु पठारी प्रदेश बहुत सुहावना है। यहा के सुहावने एवं स्वास्थ्य-वर्द्धक जलवायु, के कारण भारत के भिन्न-भिन्न भागो के लोग स्वास्थ्य-लाभ के लिए इस प्रान्त में आते है। इस कारण यहां कई प्रसिद्ध आरोग्य-मन्दिर बने हुए है। यहा सभा-सस्थाओ के जल्से भी प्राय होते रहते है, जिसके फलस्वरूप यह प्रदेश भारत का एक बहुत उन्नत तथा जाग्रत भाग बन गया है। इस प्रदेश मे रूई के व्यवसाय ने बेहद उन्नति की है त। यहां से रूई, कपड़ा, चीनी, चाय, ऊन आदि विदेशो को भेजे जाते है। इस प्रान्त की जन-सख्या करीब एक करोड़ अस्सी लाख है तथा इसका क्षेत्रफल ७७,२२१ वर्ग मील है।

सम्पूर्ण बम्बई प्रान्त में तथा खासकर बम्बई शहर मे काग्रेस का बहुत अधिक जोर है। यहां के राष्ट्रीय सिपाही बहुत उत्साही तथा मजबूत है और राष्ट्रीय भावनायें उनके हृदयों में बड़ी मजबूती से घर कर चुकी है। जब ९ अगस्त को अंग्रेजी सरकार ने यकायक राष्ट्र पर हमला बोल दिया, तो इस प्रान्त ने

अंग्रेजी साम्राज्यवाद का साहसपूर्ण मुकाबला किया और उसे मुह-तोड़ उत्तर दिया। नेताओं को जेल में ठूस दिये जाने के बाद भी बम्बई प्रान्त ने ही जनता को आन्दोलन जारी रखने के लिए सलाह, नेतृत्व तथा सामग्री प्रदान की थी। इस प्रकार बम्बई ने स्वतत्रता के आन्दोलन का मुख्य मोर्चा वनने का गौरव प्राप्त किया।

९ अगस्त का दिन बम्बई में अपनी विशेषता लिये हुए आया। ८ अगस्त की रात को चारो ओर वादल छाए हुए दिखाई देते थे और किसी भयंकर तूफान की आशा की जाती थी। तूफान आया अवश्य, किन्तु वह था राजनैतिक, जिसके वेग मे करोड़ो हिन्दुस्तानी आशा, उत्साह, तड़प, कसक व झुंझलाहट से उठे। यह तूफान बम्बई तक ही सीमित न रहकर सारे हिन्दुस्ताव में विजली की भाति फैला। रात मे अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी के अधिवेशन के पश्चात् मै कमेटी के कुछ सदस्यों तथा अन्य साथियो के साथ अपने डेरे पर लौटा। हम लोग रात को एक अजीब प्रकार के मिश्रित विचारों को लेकर सोए। अब क्या होगा ? हमे क्या करना होगा ? गान्धीजी क्या प्रोग्राम देंगे ? आन्दोलन किस प्रकार चलेगा ? इसी प्रकार के विषयो पर हम लोग काफी देर तक आपस में बातचीत करते रहे। सुबह गान्धीजी ने हर प्रान्त के १०-१२ प्रमुख कार्यकर्ताओं को अपने विचार एवं प्रोग्राम देने को वुलाया था। मै भी उनमें से एक था और इस प्रकार मेरे हृदय में भी तरह-तरह की कल्पनाए पैदा हो रही थी। यकायक सवेरे चार बजे अखवार वेचने वालो ने आवाज़ दी, "कांग्रेस नेता गिरफ्तार कर लिये गये।" हम लोग सव-के-सव अवाक् हो उठे एक-दूसरे की ओर देखनें लगे। हम सभी की स्थिति किंकर्तव्य विमूढ़-सी हो गई। सवंनें यही निश्चय किया कि बिड़ला हाउस चलें और अपने अन्य साथियो से मिलें। पर सवेरे ७ बजे न कोई सवारी थी और न कोई अन्य साधन। चारो ओर आश्चर्य-चकित एव क्रोधित लोगो के गिरोह दिखाई देते थे। सब एक दूसरे से यही पूछ रहे थे कि अब क्या होगा, हमे अव क्या करना है ? सबके हृदय में 'करो या मरो' का मन्त्र अपना कार्य कर रहा था।

९ अगस्त के घुधले प्रभात का जिसमे भारत की आज़ादी की लड़ाई ने सहसा एक नए मोड़ पर कदम रखा था, सदैव ही अपना एक विशेष स्थान रहेगा।

९ अगस्त को सुबह ८ बजे गवालिया मैदान में राष्ट्रीय स्वयसेवक दल की परेड हुई थी। लेकिन उस समय तक सारे वम्बई ही क्या देश भर

में यह खबर फैल चुकी थी कि कांग्रेस नेता गिरफ्तार हो चुके हैं। चारों तरफ से लोग जानकारी प्राप्त करने के लिए उत्सुक थे, अतएव सब गवालिया मैदान मे इकट्ठे हुए। स्वयसेवकों के अतिरिक्त देश-सेविकाएं भी अपना केसरिया बाना पहने हुए कतारो में आ-आकर इकट्ठी हो रही थी, किन्तु जन-समूह के आने से पहले ही गवालिया मैदान पर पुलिस का कब्जा हो चुका था। फिर भी एक कार बड़ी होशियारी के साथ उस मैदान के बीच अपने रास्ते को चीरती हुई आगे बढी और झण्डे के पोल के पास तक पहुची। उसमें श्री भूलाभाई के सुपुत्र बैठे हुए थे। दक्षिण भारत के कुछ थोड़े से कांग्रेसी भी बीच तक पहुच गये। उन्होने झंडे को पोल के कुछ गज के फ़ासले से सलामी दी।

फौरन ही एक यूरोपियन सारजेण्ट उनके पास पहुंचा और उन्हे बताया कि गवालिया मैदान पर पुलिस का कब्जा है। स्वयसेवको तथा अन्य लोगो को वहा पहले से अलग कर दिया जाय, वर्ना उनके विरुद्ध अश्रु गैस का प्रयोग होगा। श्रीयुत् ए० नीलकान्त ऐयर, जो कोचीन प्रजा-मण्डल के प्रधान थे, ने कहा, "मै इस उत्सव का इचार्ज नही हू। अतः अच्छा हो यदि आप उक्त सज्जन को यह बात बताए" और यह कहकर श्रीयुत ऐयर ने श्रीमती अरुणा आसफअली को सर्जन के हुक्म की इत्तिला दी और कहा कि लड़के और लड़कियां, जो गवालिया मैदान में अपनी-अपनी जगह खड़े है, अच्छा हो आने वाले खतरे से बाहर निकल जायं। इस पर वे बाहर चले गये। अरुणा आसफअली ने बोलना प्रारम्भ किया। इसी बीच पुलिस ने अपने खौफ़नाक व मनहूस गैस टोपो को अपनी गाड़ियों से निकाल लिया और गैस-बक्सों को अपने हाथो मे ले लिया। अफसरो ने एक बार फिर चेतावनी दी कि लोग मैदान से निकल जायं। पर कोई भी अपने स्थान से न हिला। अरुणा आसफअली का भाषण खतम हो चुका था। राष्ट्रीय झण्डा ऊपर चढकर हवा में फहराने लगा था। पुलिस के लिए यह बात असहनीय थी। उसने स्वयसेवको के गिरोह पर, जो मैदान मे था, गैस छोड़ दी। इस प्रकार अंग्रेजों द्वारा भारतीय राष्ट्रवाद पर पर्लहार्बर जैसा आक्रमण प्रारम्भ हुआ। स्वय-सेवक तथा अन्य लोग ज़मीन पर लेट गये और दो मिनट के पश्चात् सारा समूह फिर उठ खड़ा हुआ। पुलिस का दूसरा आक्रमण शुरू हुआ और वह भी विफल रहा। इस प्रकार लगभग ६ हमलों के बाद पुलिस ने अपनी युक्तियो को बदल दिया। अश्रु-गैस को छोड़कर अब उन्होंने लाठी-प्रहार का आसरा लिया। कुछ स्वयसेवक नेता पुलिस की हिरासत में ले लिये गये और

इस प्रकार लाठियों के प्रहारों से जनता तितर-बितर होने लगी। श्रीयुत ऐयर पर, जो अश्रु-गैस के प्रभावों से अपनी जलती हुई आँखे पोछ रहे थे, लाठियों के प्रहार प्रारम्भ हुए। श्रीमती मृदुला बहन या मणि बहन पटेल ने, जो वहां पर थीं, तेज प्रहारो को सहा और मिस्टर ऐयर से अपने प्रान्त मे लौटकर कांग्रेस का पैगाम देने के लिए कहा। इस प्रकार कुछ देर राष्ट्रीय झडा फहराता रहा और अन्त में उस ब्रिटिश अफसर ने उसे खीचकर नीचे उतारलिया।

पूर्व निश्चयानुसार शाम को शिवाजी पार्क मे गान्धीजी तथा अन्य नेता बोलने वाले थे। यहां पर भी सैनिक पुलिस ने अपना आधिपत्य जमाने का विफल प्रयत्न किया। चौराहो और शिवाजी पार्क को जाने वाले रास्ते पर पुलिस-शक्ति का गहरा प्रदर्शन था, ताकि लोग डरकर वहां न जाय। फिर भी लगभग २ लाख आदमी चारो ओर से इस पार्क में इकट्ठा होगये। वहा जन समूह समुद्र की भाति उमड़ा हुआ दिखाई दे रहा था। यद्यपि बोलने वाले नेता न थे, पर कितने ही नेता जनता मे से आकर बोल रहे थे। कस्तूरवा वहां पर आने वाली थी, पर वह पहले ही पकड़ ली गई। इस समूह पर चारों ओर से लाठी-प्रहार तथा अश्रु-गैस के आक्रमण हो रहे थे, पर लोग दृढ़ता और खुशी के साथ इन वारो का मुकाबला कर रहे थे। पार्क के अतिरिक्त चारो ओर के मकानो की ऊपर की मजिलो मे अनगिनत जनता खड़ी हुई थी और कपडे, रूमाल व तौलिये भिगो-भिगोकर जनता के उस विशाल समूह के बीच फेंक रही थी, ताकि वह सफलता से अश्रु गैस का मुकाबला कर सके। वह अभूतपूर्व सघर्ष था। ब्रिटिश नौकरशाही अश्रु-गैस द्वारा जनता को भगाना चाहती थी। जनता अश्रु-गैस पर काबू कर विरोध प्रदर्शन करना चाहती थी। इस प्रकार ९ अगस्त को बम्बई में जगह-जगह लाठी-प्रहार किये जाने व गोलियां बरसाये जाने की खबरे मिली। लगभग १५ जगह पुलिस को गोलिया चलानी पडी और सरकारी आकड़ो के अनुसार ८ आदमी मरे और १६९ आदमी गोलियो से जखमी हुए।

इस प्रकार ९ अगस्त से बम्बई ने पूरे अगस्त मास तक यह न जाना कि शान्ति से बैठना कैसा होता है? सड़को पर चारो ओर पत्थर, छोटे-मोटे पेड़ व अन्य रुकावटो के साधन पड़े हुए थे। दीवारो पर, चौराहोपर, जमीन पर, यहा तक कि हर जगह गान्धी जी का 'करो या मरो' का आदेश लिखा हुआ था।

शहर में हड़ताल थी और कालेजो मे भी। आधी से अधिक मिलें बन्द थी और सरकारी रेलवे कारखाने भी बन्द करने पड़े थे। उत्साही नवयुवक जिस मोटर व ट्राम को देखते थे, जला देते थे। इस प्रकार कई दिनों तक

बम्बई में ट्रामें बन्द रहीं। पुलिस-स्टेशन तथा अन्य सरकारी इमारतों पर सामूहिक आक्रमण हुए। टेलीग्राफ के तार काटे गये। इतना ही नहीं, कितनी ही जगह रेल की पटरियों को उखाड़कर अस्त-व्यस्त करने के भी प्रयत्न किये गये। कहीं-कही तो स्टेशन जला दिये गये। सारांश यह कि जिस प्रकार से भी जनता अपना विरोध-प्रदर्शन कर सकती थी, वह सब उसने किया।

१० अगस्त को १० जगह पुलिस ने गोलियां चलाईं और ५ जगह फौज को गोलियां चलानी पड़ी। लाठी-चार्ज और अश्रु-गैस के प्रहारो की तो गिनती ही न थी। सरकारी आंकड़ों ने बताया कि १६ आदमी मरे और ११४ घायल हुए। १० अगस्त को सरकारी बयान द्वारा बताया गया कि सोमवार के दिन चारों ओर विरोध-प्रदर्शन हुआ और गिरगांव और दादर में विशेष प्रकार के कांड हुए। दोपहर में बी० बी० सी० आई० रेलवे के दादर स्टेशन पर आग लगाने का प्रयत्न किया गया, जिसे पुलिस ने रोक लिया। ६ पुलिस-स्टेशनो पर आग लगाई गई, जिनमें से २ जलकर भस्म हो गये। कुछ टेलीग्राफ के तार व पोस्ट बक्सों को तोड़ा-फोड़ा गया और एक ट्राम और एक म्युनिसिपल लारी में आग लगाई गई। फोर्ट एरिया में भी बहुत-सी जगह छोटी-छोटी सड़कों व गलियो में पत्थर व ईंटें व अन्य गन्दा सामान इकट्ठा करके रास्तों को बिल्कुल रोक दिया गया। ज्यों ही पुलिस ने इस सब सामान को उठाकर रास्तो को साफ किया, जनता ने उसमें फिर वैसा सामान लाकर रख दिया। इतना ही नहीं, कुछ जगह प्रदर्शन-कर्त्ताओ ने मजदूरो की बस्तियो में जाकर उन्हें काम पर न जाने की प्रेरणा भी दी।

११ अगस्त को बम्बई सरकार ने जनता के उभरते हुए क्रोध-प्रदर्शन तथा उसकी भावना को कुचलने के लिए कोड़ेमार कानून का उपयोग किया। उधर सारे शहर के विभिन्न स्थानो में अंग्रेजी हैट, टाई व यूरोपियन पोशाक का सामूहिक रूप से चौराहों पर जलाने का सिलसिला प्रारम्भ हुआ। उस दिन भी पहले रोज़ की तरह पुलिस ने दो जगह गोलियां चलाईं। उस दिन प्राय: सारे शहर में बस सर्विस तथा मोटरों का आवागमन बन्द रहा। इतना ही नहीं, जी० आई० पी० और बी० बी० सी० आई० रेलवे की लाइनों को कई जगह से उखाड़ा गया और माटुगा रेलवे स्टेशन पर जनता ने सामूहिक आक्रमण कर उसमें आग लगा दी और सिगनल इत्यादि सब चीजों को तोड़ डाला। परेल की ओर भी प्रदर्शन हुआ। स्कूल और कालेज बन्द रहे। बम्बई सिटी कारपोरेशन ने अपने मेयर की गिरफ्तारी के विरोध में अपनी बैठक स्थगित कर दी। उन्मादित जनता चारो ओर रेल, तार, डाकखानों, पुलिस-

चौकियों, रेलवे स्टेशनों पर आक्रमण करने व उन्हें जलाने लगी। लगभग १० बार से ज्यादा पुलिस को गोलियां चलानी पड़ी।

१२ अगस्त को भी यही हाल रहा।

१३ अगस्त को अंधेरी और विले पारले में डाकखाने जलाये गये। तार भी उखाडे गये। इस प्रकार सारे इलाके में अन्धेर छा गया। सिडनम कालेज के विद्यार्थियों ने भी विरोध-प्रदर्शन किये और शहर के प्रायः सारे ही स्टाक एक्सचेंज बन्द रहे और मंगलदास बाजार तथा इस इलाके के अन्य सारे बाजारों में हड़ताल रही। इस रोज तोड़-फोड़ का भी कितना ही काम हुआ। १३ तारीख तक बम्बई में लगभग १००० के करीब कार्यकर्ता पकड़ लिये गये। इस रोज सरकारी कथनानुसार ३ बार गोली चली और ३ आदमी मरे तथा ४२ जख्मी हुए।

१४ अगस्त को कालबादेवी मे तथा कुछ अन्य जगहों पर प्रदर्शन हुआ। स्टाक एक्सचेंज, रूई, सोना चांदी व कपड़े के बाजार पूर्णत बन्द रहे। ५० आदमी पकड़े गये। २५ प्रमुख व्यापारी भी पकड़े गये। पुलिस ने कई बार गोलियां चलाई और २ आदमी मरे।

इस प्रकार अगस्त मास मे हर रोज किसी-न-किसी इलाके में विरोध-प्रदर्शन होता रहा। बाजारों में हड़तालें रही, तार काटे गये, आवागमन के रास्तो को अस्त-व्यस्त करने का प्रयत्न किया गया। आन्दोलन का यह रूप प्राय सारे ही अगस्त मास तक रहा। सारे शहर मे कर्फ्यू था। पुलिस को सख्त हिदायत थी कि तोड़-फोड़ करने वाले को फौरन गोली मार दी जाय।

अगस्त के तीसरे सप्ताह से यद्यपि जाहिरा तौर पर बाजार कही-कही पर खुले पाये जाते थे, पर उनमें किसी प्रकार का भी व्यापार न होता था। सरकारी दमन-नीति के विरोध मे कितनी ही म्युनिसिपैलिटियों से प्रमुख लोग इस्तीफे दे रहे थे। उधर सरकार भी अपने दमन के साधनों को उग्र रूप दे रही थी। हड़ताल करने वालो को धमकी दी गई थी कि उनकी दूकानों के ताले तोड़ दिये जायगे। मिलो पर सरकारी कब्जा कर लिया जायगा। स्वभावत इस उग्र दमन के कारण आन्दोलन का वाह्य रूप दिनो-दिन कुछ घटता हुआ-सा दिखाई देने लगा। किन्तु अब वाह्य-प्रदर्शन के बजाय आन्दोलन को अधिक लम्बे समय तक चलाने के लिए एक सुदृढ संगठन बनाने के लक्षण दिखाई देने लगे थे। शक्ति का ठीक तरीके से प्रयोग करने के लिए उस समय के नये नेताओ ने अपने ही प्रोग्राम बनाये। उन्होने कुछ दिन निश्चित किये और तय किया कि उन दिनों कोई-न-कोई सामूहिक प्रदर्शन अवश्य किया

जाय । साथ ही उन्होंने अपना एक गुप्त संगठन भी बना लिया । प्रारम्भ में महीने में ऐसे तीन दिन निश्चित किये गये । यह थे ९ तारीख १५ तारीख और हर महीने का आखिरी इतवार । इन दिनो झंडा सलामी की जाती थी, जुलूस निकाले जाते थे और सभायें की जाती थी । इन दिनो के अतिरिक्त स्वतंत्रता-दिवस, तिलक-दिवस, राष्ट्रीय-सप्ताह, गान्धी-जयंती आदि समारोह भी मनाये जाते थे ।

आन्दोलन का यह रूप सन् १९४४ के फरवरी मास तक रहा । सितम्बर मास में बम्बई में कालेज खुले । लेकिन सैकड़ो विद्यार्थियो ने विरोध-प्रदर्शन किया और कालेज पर धरना दिया । इस सिलसिले में एलफिस्टन कालेज की ५ लड़कियां और कुछ लड़के पहली सितम्बर को गिरफ्तार हुए ।

बम्बई प्रान्त में दो साल मे लगभग ५० हजार आदमी विभिन्न अभियोगो में पकड़े गये । इनमें से लगभग एक हजार ऐसे लोग थे जो दो माह के बाद छोड़ दिये गये । साढ़े चार सौ से ५ सौ तक लोगो को ६ सप्ताह से लेकर ५ साल तक की सजायें हुईं । इनमे से झडा फहराने वालो तक को कई जगह २॥ साल की सजाए हुईं । रेडियो वाले विख्यात केस में एक कांग्रेसी को ५ साल और एक स्वयसेवक को ४ साल की सजा हुई । लोग निम्नलिखित अभियोगों में पकड़े गये:—

१. किसी ग़ैर कानूनी सस्था के मेम्बर होने पर ।

२. किसी प्रदर्शन में शरीक होने पर ।

३. हड़ताल करने व सभायें करने के अभियोग मे ।

४. दूकानो पर धरना देने और दूकानदारो की हड़ताल कराने पर ।

५. आपत्तिजनक पर्चे बाटने, छापने और पास रखने के अभियोग में ।

६. सरकार विरोधी नारे लगाने या दीवारो व सड़कों पर लिखने के अभियोग म ।

७. मजदूरो की हड़ताल करवाने या उसमें मदद देने पर ।

८ ढेले व सोडावाटर की बोतलें फेंकने के अभियोगो मे ।

९ तोड़-फोड़ सम्बन्धी कार्यो, जैसे तारो को काटने, ढेले फेंकने, रेल की पटरियो को अस्त-व्यस्त करने और विस्फोटक पदार्थ रखने के अभियोग मे ।

१०. डाक, तार, रेडियो इत्यादि के नियमो की अवहेलना करने पर ।

११. कर्फ्यू आर्डर तोड़ने तथा ग़ैर-कानूनी शस्त्र रखने के अभियोग में ।

१२. किसी भागे हुए अभियुक्त को पनाह देने पर ।

१३. सरकार विरोधी अन्य कोई कार्य करने पर।

बम्बई में पहला बम सन् १९४२ के आखिरी सितम्बर में फटा। फिर उसके बाद तो बमों के फटने का एक तांता-सा लग गया। अन्त में सन् १९४३ के फरवरी मास में गांधीजी के उपवास के समय उनकी गति धीमी हुई।

३ अक्टूबर सन् १९४२ को पजगांव कोर्ट के अहाते मे एक भयंकर विस्फोट हुआ, जिससे वहां की इमारतें जलकर राख हो गईं।

१८ अक्टूबर सन् १९४२ को फिर एक भयंकर विस्फोट हुआ जिसके कारण अरगेली रोड पर 'टाइम्स आफ इंडिया' अखबार का गोदाम जल गया। इसमे लगभग दो लाख रुपये की हानि हुई। पुलिस ने इस सम्बन्ध में बहुत से लोगों को पकड़ लिया, उनमें से कुछ छूट गये और कुछ पर मुकदमे चले। लेकिन अन्त में सभी मजिस्ट्रेट के यहां से बरी हुए। जिन्हे मजिस्ट्रेट की अदालत से सजा भी मिली, वे हाईकोर्ट से बरी हो गये। पर पुलिस ने इन सब लोगों को किसी-न-किसी मौके पर पकड़ लिया। इन लोगो के साथ जो बर्ताव किया गया, वह बड़ा ही बर्बर था। इनसे जानकारी प्राप्त करने के लिए हर प्रकार के हृदय विदारक तरीके अपनाये गये। कुछ लोग मार-पीट से बचने के लिए सरकारी गवाह भी होगये। इसी सम्बन्ध में वरली जेल मे दो बार लाठी-चार्ज भी हुआ।

तोड़-फोड़ के मुख्य प्रयत्न अगस्त के पहले सप्ताह मे खुले रूप से हुए, जब कि सैकड़ों की तादाद में लोग उनमें भाग ले रहे थे। पर पुलिस के दमन-चक्र के सामने यह सामूहिक रूप न ठहर सका और इसलिए सितम्बर के अन्त से उसने गुप्त रूप धारण कर लिया।

बम्बई ने हर आन्दोलन में कुछ-न-कुछ नवीनता प्रस्तुत की। पिछले आन्दोलनों मे बम्बई ने आर्थिक सहायता के अलावा सारे देश के आन्दोलनों को नये विचार दिये। इस खुले विद्रोह में भी बम्बई ने—बावजूद कितनी ही पाबन्दियों के—कुछ नई बातें की। उनमें एक यह थी कि रेडियो द्वारा सारे हिन्दुस्तान में आन्दोलन सम्बन्धी खबरे भेजी जाती थीं। इस काल मे रेडियो ब्राडकास्टिंग के सामान को इकट्ठा करने और उसे सुचारु रूप से चलाने के लिए महान संगठन की जरूरत थी। पुलिस ने इस ब्राडकास्टिंग स्टेशन को ढूढने के लिए सिर-तोड़ प्रयत्न किये। आखिर १९४२ के नवम्बर में उसने इस स्टेशन पर छापा मारा और उसका सामान जब्त कर लिया। कई लोगो को गिरफ्तार भी किया और उन्हें ४,५ साल तक की सख्त सजाएं दी गई।

बुलेटिनों की तो बम्बई मे भरमार ही रहती थी। बड़े अजीबोग़रीब

तरीके से यह बुलेटिन लोगों और सरकारी कर्मचारियो के पास पहुंचाए जाते थे। कितनी ही बार कई मोटरें गिरफ्तार भी हुई और लाखो बुलेटिव पकड़े गये।

१० अगस्त सन् १६४२ को केन्द्रीय सरकार ने सारे अखबारो तथा छापाखानो इत्यादि को सख्त ताकीद कर दी थी कि वे किसी भी रूप में आन्दोलन सम्बन्धी खबरें न छापें। बम्बई के मुख्य अखबारो ने इस अपमान-जनक स्थित को मजूर नही किया और छापाखानो ने काग्रेस बुलेटिन इत्यादि छापने में काफी मदद दी। कई छापेखानों व अखबारों की ज़मानतें भी ज़ब्त होगईं।

यद्यपि सरकार ने इस प्रकार की कड़ी हिदायतें जारी कर दी थी ताकि दूकानदार व बड़े-बड़े व्यापारी किसी भी प्रकार इस आन्दोलन में हिस्सा न ले सकें, फिर भी बम्बई के बड़े-बड़े बाजार कितने ही दिनों तक पूर्णतः बन्द रहे और उसके पश्चात् माह में एक-दो मर्तबा काग्रेस-प्रोग्राम के दिन बन्द रहते थे। १७ अगस्त सन् १६४२ को भारतीय व्यापारी सघ से सम्बन्धित लगभग ४० संस्थाओं के प्रतिनिधि एकत्र हुए। उन्होने सरकार की दमन-नीति की घोर निन्दा की और विशेषत: इस बात को बड़ी घृणा से देखा कि सरकार ने भोलेश्वर, माटुगा और दादर में जमा हुए कूड़े को शहर के सम्मानित व्यक्तियो से साफ करवाया। काग्रेस के ८ अगस्त वाले प्रस्ताव का समर्थन भी किया गया। इस प्रकार बम्बई के बाज़ार कांग्रेस के साथ रहे और जब कभी उन्हे हडताल करने का आदेश दिया गया तो उन्होंने उसका पालन किया।

सन् १९४२ के खुले विद्रोह मे बम्बई के मजदूरो ने उतना अच्छा भाग नहीं लिया जितना कि अहमदाबाद के मजदूरों ने। कारण स्पष्ट है। कुछ तो इन लोगो पर कम्युनिस्टो का प्रभाव था और दूसरे मुस्लिम मजदूर यद्यपि हृदय से आन्दोलन के साथ थे, पर वह खुले रूप से इसमें शरीक न हुए। इस कारण बम्बई की कपड़ा मिलें ६ अगस्त से आठ-दस रोज तक तो बन्द रही, लेकिन फिर चलनी शुरू हो गईं। फिर भी शुरू के दिनों में सारे मजदूरो ने आन्दोलन में भाग लिया।

बम्बई के विद्यार्थियो को सबसे पहले इस आन्दोलन मे अपने जौहर दिखाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। कौन जानता है इन्ही के आदर्श को लेकर सारे हिन्दुस्तान के विद्यार्थी आन्दोलन में कूदे हों। लगभग ८० प्रतिशत विद्यार्थी आन्दोलन के प्रारम्भिक दिनो में स्कूल-कालेजों से बाहर निकल आये। यद्यपि यूनिवर्सिटी के अधिकारियो ने कई दफा एक निश्चित तारीख तक स्कूल-कालेजों

म लौटने की धमकी दी, लेकिन विद्यार्थी अपने सकल्प से न हटे। यह सिलसिला ३,४ माह तक रहा। उसके पश्चात् इसका जोश धीमा पड़ गया और विद्यार्थी स्वयं ही कालेजों मे जाने लगे। इस काल में विद्यार्थियो ने दिल खोलकर आन्दोलन में हिस्सा लिया और सब यातनाओं को सहर्ष सहा।

सन् १९४२ में बम्बई कारपोरेशन पर कांग्रेस का कब्जा था। कांग्रेस-नेताओं की गिरफ्तारी के बाद कारपोरेशन ने काग्रेस की मागों का समर्थन किया और सरकार की आलाचना की। कारपोरेशन की बैठकों को कई बार स्थगित होना पड़ा। १० अप्रैल सन् ४३ को कारपोरेशन के मेम्बरों ने नगीनदास टी. मास्टर को, जो उस समय जेल में नज़रबन्द थे, अपना मेयर चुना। कारपोरेशन के ६३ काग्रेसी मेम्बरों में से ३३ नज़रबन्द थे।

बम्बई बार ने भी आन्दोलन-काल में एक महत्त्वपूर्ण सेवा की। उन्होंने चार प्रतिष्ठित एडवोकेटो की एक कमेटी बनाई जिसका काम जनता के नागरिक अधिकारो की हिफाजत करना था। इस कमेटी के मेम्बर मिस्टर डी० एन० बहादुर भूतपूर्व एडवोकेट जरनल, मिस्टर के० पी० पुरनपीवाला भूतपूर्व जज बम्बई हाईकोर्ट और मिस्टर के० एम० मुशी, भूतपूर्व होम मिनिस्टर थे। इन लोगो ने सरकारी दमन-नीति की तीव्र आलोचना की और नागरिकों पर जो तरह-तरह के गैर कानूनी प्रतिबन्ध लगाये जा रहे थे उनका विरोध किया। एक कानूनी सहायता कमेटी भी बनाई। उसने लोगों पर चलाये जाने वाले मुकदमो में काफी कानूनी मदद दी।

बम्बई के नागरिको ने इन्ही दिनो एक 'राजनैतिक पीड़ित सहायता फड' भी खोला। इसके द्वारा विभिन्न प्रान्तो मे कितने ही कार्यकर्ताओ व उनके परिवारो को मदद दी गई। बम्बई प्रान्तीय काग्रेस कमेटी के कथनानुसार सहायता प्राप्त करने वाले परिवारो की संख्या इस प्रकार है:—

महाराष्ट्र ८६, गुजरात १३, कर्नाटक ३७५, तामिलनाड ९, मलाबार ५, आंध्र ८७, बिहार ३८, बम्बई १५, उड़ीसा १७१, युक्त प्रान्त १६३, मध्य प्रान्त ३८। इस प्रकार इस कमेटी ने भारतवर्ष के कोने-कोने में जहा भी पता चला मदद देने की कोशिश की।

बम्बई की बाबत यह अनुमान लगाना कठिन है कि कितने लोगो ने खुले रूप से आन्दोलन मे अपना विरोध प्रदर्शित किया। पर प्रारम्भिक दिनो में बम्बई की काफी बस्तियां ऐसी थी जिनके सारे लोग इस आन्दोलन में किसा-न-किसी रूप में हिस्सा ले रहे थे। मालूम पड़ता था कि बम्बई के लोग काग्रेस के पीछे पागल हैं।

बम्बई के खुले विद्रोह के सरकारी आंकड़े

बम्बई सरकार की ओर से अगस्त विद्रोह के सिलसिले में ६ फरवरी १६४३ तक के जो अंक प्राप्त हुए हैं वे नीचे दिये जाते है। इन अंकों में गुजरात, महाराष्ट्र और कर्नाटक के अंक भी शामिल हैं।

गिरफ्तारियां	५०००
कितनी बार पुलिस ने गोलिया चलाई	१६५
कितने आदमी मरे	१०६
कितने आदमी घायल हुए	३३२
कितने आदमी पुलिस के मरे	५
कितने आदमी पुलिस के घायल हुए	५२७
कितने अवसरों पर टियर (आसू बहाने वाली) गैस का का प्रयोग किया	११
कितने अन्य सरकारी नौकर मरे	१

नोट:—एक रेवेन्यू हेड क्लर्क, जिसे भीड़ ने इसलिए अपने आगे कर लिया था कि उस पर पुलिस सामने से हमला न कर सके, पुलिस के गोली चलाने से मर गया।

कितने अन्य सरकारी नौकर घायल हुए	११५
कितनी बार फौज ने गोलियां चलाई	१४
कितने आदमी मरे	८
कितने आदमी घायल हुए	३२
कितने पुलिस स्टेशन या चौकियां और संतरियों के खड़े होने के अड्डे बरबाद कर दिये गये या उनको सख्त नुकसान पहुचाया गया	४३
प्रान्तीय सरकार की अन्य कितनी इमारतें बरबाद कर दी गईं या उनको सख्त नुकसान पहुचाया गया	१८२
सरकारी इमारतो के अलावा अन्य कितनी ऐसी इमारतें जैसे म्युनिसिपैलिटी की मिल्कियत, स्कूल, अस्पताल इत्यादि को बरबाद कर दिया गया या उनको सख्त नुकसान पहुचाया गया	३८
कितनी मशहूर प्राइवेट इमारतें बरबाद कर दी गईं या उनको सख्त नुकसान पहुंचाया गया	११
कितने बम फटे	३७५

कितने ऐसे बम या बारूदी चीजें पाई गईं जिनसे कुछ नुकसान नही हुआ। (इनमें ऐसे बम या बारूदी चीजें शामिल है जिनको पुलिस ने तलाशी

लेते समय अपने कब्जे में कर लिया)। २४३

कितने सरकारी नौकर मरे (इनमें फौज के चार बड़े अफसर भी शामिल हैं) ५

कितने सरकारी नौकर घायल हुए (इनमें फौज के १६ बड़े अफसर भी शामिल हैं) ८२

जनता के कितने लोग मरे (इनमें बम मारने वाले खुद भी शामिल है) मर्द ९ और बच्चे ४ १३

जनता के कितने लोग घायल हुए (इनमें बम बनाने वाले खुद भी शामिल है) मर्द ७८, औरतें ९०, बच्चे २० १८८

बिजली कम्पनियों की मशीनें इत्यादि तोड फोड़ डाली गईं २७

उन लोगो की सख्या जो ऐसी घटनाओं में मरे जो आन्दोलन के कारण घटित हुईं

(अ) सरकारी या रेलवे कर्मचारी ३

(ब) जनता के लोग ११

उन लोगों की सख्या जो ऐसी घटनाओं में घायल हुए जो आन्दोलन के कारण घटित हुईं

(अ) सरकारी या रेलवे कर्मचारी ५

(ब) जनता के लोग ३१

रेलवे स्टेशनो की सख्या जो बरबाद कर दिये गये या उन्हें सख्त नुकसान पहुंचाया गया १६

कितनी रेलगाड़ियां तोड़-फोड़ के कारण उलटी गईं १३

उन गांवोंया कस्बो की सख्या जिन पर सामूहिक जुर्माने किये गये १४०

सामूहिक जुर्मानों की रकम ६,९३,४५०

वसूलशुदा सामूहिक जुर्मानों की रकम ६ ०४,९६५

स्थानीय संस्थाओ की सख्या जिन्हें भारत रक्षा नियम ३८ ब के अधीन या किसी और प्रकार से तोड़ दिया गया २२

गुजरात प्रान्त

भारतीय आजादी के संग्राम में गुजरात का एक महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। उसकी अपनी ख्याति है। जहां एक ओर गुजरात ने अखिल भारतीय ख्याति के बड़े-बडे नेता जैसे महात्मा गान्धी, स्वर्गीय विट्ठलभाई पटेल, सरदार बल्लभभाई पटेल आदि पैदा किये हैं, वहां दूसरी ओर गुजरात को कई आन्दो-

लन चलाने का श्रेय भी प्राप्त है। गुजरात को यदि महात्मा गान्धी की अहिंसात्मक युद्ध-कला की प्रयोगशाला कहा जाय तो अनुचित न होगा। सन् १६१५ के पश्चात् जब गान्धीजी अफ्रीका से लौटे तो उन्होंने अहमदाबाद को अपना केन्द्र बनाया और यहीं से उन्होंने अहिंसा के प्रयोग तथा सत्याग्रह के शस्त्र को अमल में लाने के लिए इस छोटे से प्रान्त को अपना कार्य-क्षेत्र बनाया। उन्होंने इस महान् कार्य के लिए यहां उपयुक्त वातावरण पैदा किया और योग्य कार्यकर्ताओं को जन्म दिया। गुजरात ने गान्धीजी के प्रत्यक्ष नेतृत्व मे अन्याय के विरुद्ध तीन संघर्ष किये। इन संघर्षों द्वारा गान्धीजी के सत्याग्रह शस्त्र का विकास हुआ और आगे चलकर सारे हिन्दुस्तान मे उसका सामूहिक व व्यापक प्रयोग किया गया। सन् १९१८ में सर्व प्रथम खेड़ा जिले में मालगुजारी न देने का सत्याग्रह किया गया। इसके कुछ दिनो बाद अहमदाबाद के मजदूरो की व्यापक व विख्यात हड़ताल हुई और उसके परिणामस्वरूप अहमदाबाद में मजदूर महाजन संघ जैसी शक्तिशाली मजदूर यूनियन का निर्माण हुआ। इसके बाद रोलैट एक्ट के विरुद्ध आन्दोलन हुआ और गान्धीजी ने जनता को अहिंसात्मक एवं संगठित तरीके से उठने का पाठ पढाया। सन् १६२० के असहयोग आन्दोलन में गुजरात का काफी नाम रहा और कई प्रमुख व्यक्ति राजनैतिक क्षेत्र में आये। गुजरात विद्यापीठ की स्थापना हुई और प्रान्त में कितने ही आश्रम खुले। असहयोग आन्दोलन के पश्चात् एक छोटे से इलाके बोरसद में सत्याग्रह हुआ जो सरकारी लगान की ज्यादती के विरुद्ध था। इसका नेतृत्व सरदार वल्लभभाई पटेल ने किया। बारदोली के लगानबन्दी सत्याग्रह ने गुजरात का नाम और भी ऊचा उठा दिया। सन् १६३० व ३१ मे रही-सही कमी को गान्धीजी की 'डाडी-कूच' व 'नमक-सत्याग्रह' ने पूरा कर दिया और इस प्रकार गुजरात ने भारतीय राजनीति मे एक अभूतपूर्व स्थान ग्रहण किया।

गुजरात मे ५ जिले हैं। सूरत, खेडा, भड़ौच, अहमदाबाद और पचमहाल। आर्थिक दृष्टि से इस प्रान्त की हालत बहुत अच्छी है। सूरत, खेड़ा और भड़ौच की जमीन उपजाऊ है। अहमदाबाद सारे प्रान्त के व्यापार का केन्द्र है। निःसन्देह पंचमहाल कुछ पिछड़ा है। इसमें लगभग दो लाख भील रहते हैं और इसका बहुत बडा भाग बडौदा रियासत से मिलता है। गुजरात के लोग स्वभावत: गांधीजी के भक्त है और सरदार वल्लभभाई पटेल को बहुत मानते है। यद्यपि सन् १९४२ में क्राति के आर्थिक व सामाजिक कारण इस प्रान्त में अपनी परिपक्व स्थिति को न पहुचे थे, पर अन्य सारी बातें यहाँ मौजूद थी। गुजराता लोग महात्मा गान्धी तथा सरदार पटेल को अपनी आशाओ व

आकांक्षाओ का केन्द्र समझते हैं । अत ९ अगस्त १९४२ को जब कांग्रेसी नेताओ की गिरफ्तारी हुई तो अन्य प्रान्तो की तरह गुजरात के लोगो ने गाधीजी तथा पटेल से घनिष्ठ सम्बन्ध होने के कारण उन पर हुए प्रहार को अपने ऊपर प्रहार समझा । वे गुस्से से झुँझलाकर सैकड़ो की तादाद में उठ खड़े हुए ।

अहमदाबाद के लोगो ने नौकरशाही के विरुद्ध एक संगठित व लबी लड़ाई लड़ी, जिसका वर्णन मै आगे करूगा । गुजरात के गाव-गाव व कस्बे-कस्बे में आन्दोलन के प्रारम्भ के दिनो में सरकारी नीति के विरुद्ध विरोध-प्रदर्शन, हड़-तालें व सभाए हुई । विद्यार्थियों ने भी इस आन्दोलन मे बहुत बड़ा भाग लिया । सैकड़ो विद्यार्थी स्कूल कालेजों से पढ़ाई छोड़कर गांवो में फैल गये और कांग्रेस के सन्देश को घर-घर पहुंचा दिया । स्वभावत· सरकार ने आन्दोलन को उसके प्रारम्भिक काल में ही दबाने के सब प्रयत्न किये । अहमदाबाद में तो ६-७ तारीख से ही पुलिस के जमाव इधर-उधर दिखाई देते थे । यकायक सारे नेता ८ तारीख से ही पकड़े जाने शुरू होगये । सूरत जिले के बारदोली व जलालपुर ताल्लुको मे सरकार को भय हुआ कि कही लगानबन्दी सत्याग्रह न प्रारम्भ हो जाय इसलिए उसने वहां पर लगान पहले से ही इकट्ठा करना शुरू कर दिया । पुलिस गावो को घेर लेती थी और फिर लोगो से लगान वसूल किया जाता था । यही खेड़ा प्रान्त मे भी हुआ । बारदोली में बिलोची सिपाहियो का प्रयोग किया गया और गावो पर सामूहिक जुर्माना किया गया जिसे बड़ी सख्ती के साथ वसूल किया गया ।

गुजरात प्रान्त की म्युनिसिपैलिटियो व पचायतो मे से ९० प्रति शत पर कांग्रेस का कब्ज़ा था । इन संस्थाओं ने बड़ी दिलेरी के साथ कांग्रेस-प्रस्ताव का समर्थन किया । अतः उनमें से बहुतो को मुअत्तिल कर दिया गया ।

अन्य प्रान्तों की भांति जब आन्दोलन का व्यापक रूप यहा भी धीमा पड़ने लगा तो तोड़-फोड़ का कार्य आरम्भ हुआ । डाकखानो को बरबाद किया गया । टेलीफोन के तारो को भडौच और सूरत ज़िलो में सैकड़ो मीलो तक काट दिया गया । काठियावाड़ मे दो-तीन जगह रेल गिराने की दुर्घटनाए भी हुई, जिनमें एक पालघर स्टेशन और दूसरी कलुवी आर. एन. रेलवे स्टेशन के पास हुई । कुछ स्टेशनो को !जलाया गया । बी. बी एण्ड सी. आई रेलवे के भी कई स्टेशन जलाये गये । सन् १९४४ के मई मास से १९४५ के मई मास तक इस प्रकार के कार्य होते रहे, जिनमें डाकखानो को जलाना और पुलिस-थानों पर आक्रमण करना भी सम्मिलित था । खेड़ा जिले में लगभग ३० डाक ल जाने वाले हरकारो के थैले जलाये गए और उनका सामान ले लिया

गया। इस प्रकार डाक-व्यवस्था अस्त-व्यस्त करने के प्रयत्न हुए। गुजरात प्रान्त के आन्दोलन का जिलेवार विस्तार से वर्णन करने का यहां प्रयत्न किया जायगा।

अहमदाबाद

सन् १९४२ के आन्दोलन में अहमदाबाद को वही श्रेय प्राप्त है जो यूरोपियन महायुद्ध में स्टेलिनग्राड को था। ९ अगस्त के सवेरे अहमदाबाद के १७ प्रमुख कांग्रेस कार्यकर्ता पकड़ लिये गये। कांग्रेस भवन पर पुलिस ने कब्जा कर लिया। शहर को बाहर की दुनियां से बिल्कुल काट दिया गया। शहर में ५ आदमी से अधिक इकट्ठे न होने की घोषणा कर दी गई। फिर भी सारे शहर में सैंकड़ो आदमी इकट्ठे झंडे लेकर निकलने लगे। सारे शहर में पूर्ण हडताल रही। ६ व ७ तारीख से अहमदाबाद में सनसनी थी। पुलिस चारो ओर किसी प्रतीक्षा में दिखाई देती थी। अहमदाबाद कुछ ऐसे तरीके से बसा हुआ है कि वहा के लोग संगठित तरीके से जमकर बहुत अर्से तक लड़ाई लड़ सकते है। नेताओ पर प्रहार होते ही सारे शहर में खलबली मच गई। ऐसा मालूम दिया कि अहमदाबाद के नागरिक नौकरशाही के इस आक्रमण का संगठन, धैर्य व वीरता से उत्तर देना चाहते है। शहर में सामूहिक हड़ताल हुई। आमदोरफ्त के सारे जरिये बन्द हो गये और मजदूर-महाजन-संघ ने अनिश्चित समय तक हडताल करने की घोषणा की। अतः हजारों मजदूर शहर छोड़कर चले गये। आन्दोलन-काल में गुमास्ता संघ का भी निर्माण हुआ। गुमाश्तों, विद्यार्थियों तथा मजदूरों ने मिलकर अपनी एक सत्याग्रह समिति बनाई। इस प्रकार आन्दोलन को एक लम्बे काल तक चलाने की योजना बनाई गई। गुजरात-विद्या-प्रचारक मण्डल तथा स्वयसेवक दल ने भी आन्दोलन में काफी ख्याति प्राप्त की। १० व ११ तारीख के बीच शहर में विद्यार्थी संगठन कमेटी की स्थापना हुई जिसने अपना दैनिक पत्र निकालना प्रारम्भ किया। विद्यार्थी संघ ने गुजरात प्रान्त को ८ हिस्सो में बाँट दिया और अपनी एक केन्द्रीय कमेटी भी बना ली। १० तारीख के सवेरे गुजरात कालेज के विद्यार्थियों ने एक जुलूस निकाल कर कांग्रेस भवन तक जाने का प्रयत्न किया। उधर दूसरी ओर शहर से एक जुलूस निकलकर आने वाला था और दोनों जुलूसो को मिलकर कांग्रेस-भवन के सामने आना था। पुलिस ने विद्यार्थियो के जुलूस को अस्त-व्यस्त करने के लिए कालेज के आगे और पीछे के दरवाजों पर आक्रमण किया। यहा श्री विनाद किनारीवाला

नामक एक बहादुर नवयुवक को, जो कांग्रेस झंडा लिये हुए था, गोली का शिकार बनाया गया। विनोद किनारीवाला ने सीना खोलकर गोली का स्वागत किया और इस प्रकार झंडा दूसरे विद्यार्थी के हाथ में पहुचा। पुलिस ने झडा छीनने के बहुत से प्रयत्न किये, पर वह असफल रही। पुलिस ने भीड को लाठियों के प्रहारो से तितर-बितर करना चाहा। इस भीड़ मे अधिकांश विद्यार्थी थे, जिन्होने पुलिस के वार को असफल करने के लिए एक नई नीति को अपनाया। जब भी पुलिस भीड़ के पास आती थी, वे छोटी-छोटी टुकडियो में बंट जाते थे। उस दिन कई लडके ज़ख्मी हुए। पुलिस ने इन ज़ख्मी लडकों के पास किसी को न आने दिया। कितनों को इस प्रयत्न में मार भी पडी। इस जुलूस में २॥ व ३ हज़ार लडके थे। जुलूस को तितर-बितर करने के लिए अश्रु-गैस का प्रयोग भी हुआ। फल स्वरूप यह जुलूस अपनी योजनानुसार कांग्रेस-भवन तक न पहुच सका। इसी बीच अन्य कालेजो व स्कूलो के विद्यार्थी जुलूसों के रूप में नारे लगाते हुए आगे बढ़े। पुलिस ने उनकी शक्ति को देखकर उन्हे पुल पार करने दिया। जनता के उमडते हुए जोश तथा शक्ति को देखकर १० तारीख को शहर में फौजें बुलाई गईं। थोडी देर पश्चात् ही ७०० सैनिक लारियों में भरकर आये और उन्होंने लडकियों तथा लड़कों के जुलूस पर भयकर लाठी चार्ज प्रारम्भ किया। छात्रों का यह जुलूस ज़मीन पर बैठ गया और उन्हे इन निर्दयी सैनिकों ने उठा-उठाकर ढेलों की तरह निर्दयतापूर्ण तरीके से फेंकना शुरू कर दिया।

११ अगस्त १९४२ को नौकरशाही ने जनता को उमडती हुई बाढ को रोकने के लिए अत्यन्त क्रूर शस्त्रों को अपनाया। टैंकों और मशीनगनों का शहर में प्रदर्शन किया गया, ताकि लोगों के हृदय मे आतक बैठ जाय। पुलिस गलियों में घुसी और आदमियों तथा बच्चों व औरतो तक को मारना-पीटना शुरू कर दिया। बूढे तक उनके क्रूर और निर्दय हाथों से न बच सके। यह मार-पीट इतना अन्धाधुन्धी से की गई कि बड़े-बड़े मिल-मालिकों को भी निर्दोष ही इसका शिकार होना पड़ा। सारा शहर वियाबान हो गया। मिल, बाज़ार, स्कूल, कालेज सब बन्द थे। उधर उन्मत्त जनता ने डाकखानों, तार-घरो इत्यादि पर हमले शुरू कर दिये। अहमदाबाद में गोलियाँ चलना जीवन की एक साधारण घटना बन गई।

१२ तारीख को पुलिस ने ८ बार गोलियां चलाईं और अपने रहने के लिए फौज ने सिनेमाघर पर कब्ज़ा कर लिया।

अहमदाबाद का शहर किले की तरह बसा हुआ है। इसमें अन्दर-ही-

अन्दर बहुत-सी पोले है और एक सरकिल से दूसरे सरकिल मे जाने के लिए रास्ते इस तरह बने हुए है कि जनता पुलिस व फौज के विरुद्ध सामूहिक व सगठित मोर्चा आसानी से कायम कर सकती है। इस किलेबन्दी की वजह से जनता को काफी सहूलियत हुई। जब लाठियो के प्रबल प्रहारो तथा अन्य दमनकारी उपायो के कारण आन्दोलन का बाह्य रूप धीमा पड़ने लगा तो जनता ने अपनी सुविधा व स्थिति के अनुसार विरोध प्रदर्शन के तरीके भी बदल दिये। रात को लोग अपनी छतो पर चढ़-चढकर काग्रेसी नारे बोलते थे और पुलिस उन्हे पकड़ नही पाती थी और न देख ही पाती थी। इसका प्रतिकार करने के लिये फौज ने बिजली की बड़ी-बड़ी रोशनियो का प्रयोग किया और घोषणा की कि जो कोई उस उजाले में दिखाई पडेगा, उसको मार दिया जायगा। रात के समय अलग-अलग पोलो मे एक-एक दो-दो हजार के जुलूस निकलते थे और जब पुलिस और फौज के सैनिक एक पोल में जाते थे तो ठीक उसी समय दूसरी पोल में जुलूस निकलना शुरू हो जाता था।

इस प्रकार जन-आन्दोलन कितने ही मास तक चलता रहा। इस आन्दोलन में नौजवानो, गुमाश्तो, मजदूरो तथा विद्यार्थियो ने विशेष रूप से भाग लिया। शहर के प्रमुख व्यापारियो की हमदर्दी भी उनके साथ थी। पुलिस ने गुस्से मे आकर रास्ते चलते नागरिको को मारना-पीटना शुरू कर दिया था।

जहां तक गिरफ्तारियों का सम्बन्ध है, अहमदाबाद मे रोजाना ही पुलिस कितने ही लोगों को पकड़-पकड़ कर अपनी लारियो में भरकर ले जाती थी और शहर से बहुत दूर कहीं छोड़ आती थी। प्रारम्भ में दो-तीन सौ गिरफ्तारियां रोज़ाना हुईं। नवयुवक अधिकतर पकड़े गए। बहुत से लोग पुलिस-चौकियो से ही छोड़ दिये गए। अहमदाबाद में १०५७ आदमी पकडे गए, ३९७ नजरबन्द रहे और ४३० को सज़ा हुई।

सन् १९४२ के आन्दोलन में अहमदाबाद सारे गुजरात के आन्दोलन का केन्द्र रहा। यहीं आन्दोलन के सगठन और सचालन के आवश्यक साधन जुटाये गए। लगभग ५०० विद्यार्थियो ने प्रतिज्ञा की कि वे आन्दोलन को चलाने के लिए अपना पूरा समय लगायगे। यह लोग एक निश्चित प्रोग्राम और योजनानुसार देहात की ओर पिल पड़े। पहले अहमदाबाद जिले में गये और फिर दूसरे जिलो मे।

समय के साथ आन्दोलन धीमा पड़ता गया। फिर भी अहमदाबाद मे लोगों ने महीने में दो-तीन रोज़ ऐसे निश्चित किये, जब कि वे कई सामूहिक व व्यक्तिगत प्रदर्शन करते थे। विद्यार्थियों की हलचलें लगभग एक साल तक

रही। कपड़ों की मिलो की हड़ताल लगभग ३॥ माह तक रही। बड़े व छोटे बाज़ार लगभग ४ माह तक बन्द रहे। म्युनिसिपल बोर्ड के कर्मचारियों की हड़ताल लगभग ४ माह तक रही। अखबारों ने भी काफ़ी समय तक हड़ताल रखी। अनगिनत बार लाठी चार्ज हुए। प्रारम्भक दिनो में तो उनका ताता ही बन्धा रहा। लगभग २० बार पुलिस को गोलिया चलानी पड़ी। प्रायः एक-डेढ साल तक माह की ९ तारीख के प्रदर्शनों पर गोलियां चली। १५ से २५ वर्ष तक की अवस्था के लोगो ने एक बहुत बड़ी सख्या मे आन्दोलन में हिस्सा लिया। १४ से अधिक आदमी मरे, २२५ आदमी जिनके सख़्त चोटें आई थी, शफाखानो में भर्ती हुए और जिन लोगो ने अपना दूसरी जगह इलाज कराया उनकी सख्या का कुछ पता नही चलता। सरकारी इमारतो पर भी हमले हुए। इनमें १२ काण्ड मशहूर हैं।

१, दसोराई, ताल्लम, ममलतदार, मदलपुरा, चोर, जुडिशियल कोर्ट, पुलिस सिटी हेडक्वार्टर, बहुत से छोटे-छोटे डाकखाने, अस्थायी पुलिस चौकियाँ, म्युनिसिपल स्कूल, बिजलीघर, मेडिकल हास्पिटल, छोटे रेलवे पुल, म्युनिसिपैलिटी, पुलिस सब इंस्पेक्टरो के बंगले।

तोड़-फोड़ कार्य

नीचे लिखे स्थानों पर तोड़-फोड़ के काय हुए:—

१. पांच बिजला के स्टेशन। २ विक्टोरिया की मूर्ति। ३. मेडिकल स्कूल होस्टल। ४ एलिस पुलिस चौकी। ५ घनकामता पुलिस चौकी। ६. प्रेम दरवान पुलिस चौकी। ७ मनु नायक बम केस। ८. पिपार्दी पोल बम केस। ९ गवर्नमेंट लेबर वेलफेयर सेन्टर। इसके अतिरिक्त १० जगह और बम फटे। रेल गिराने के तीन प्रयत्न हुए। २० मिलो मे तथा गवर्नमेंट वर्कशाप और ए० आर० पी० के आफिस मे टेलीफोन के तार कटे और प्रायः शहर के सभी जगह के तार काटे गये। कुछ लारियां जो फौजी सामान लिये जा रही थी, लूटी गई।

खेड़ा जिला

खेड़ा गुजरात का महत्त्वपूर्ण जिला है। यहां की भूमि बहुत ही उपजाऊ है और यहाँ के बहुत से लोग हिन्दुस्तान के बाहर के देशो में व्यापार करते हैं। अहमदाबाद की घटनाओं ने खेड़ा जिले के लोगो को बता दिया था कि उन्हें क्या करना है और उनके ऊपर क्या बीतना है। अतएव खेड़ा जिले की कपड़ा मिल भी अहमदाबाद की भांति बन्द कर दी गई और प्रमुख कस्बो में प्रायः

सभी स्कूल तथा कालेज बन्द रहे व बाजारों में हड़तालें रही। जिले के निवासियों ने संगठन-शक्ति का काफी परिचय दिया और यहां से जो दूध व अन्य खाद्य-सामान फौज के लिए जाता था उसे भेजने से इन्कार कर दिया।

लाठी-चार्ज तो उन दिनो गांवो और कस्बों की दिनचर्या बन गई था। नड़ियाद, आनन्द, कपड़ध्वज, डाकोर, उमरेठ, बोरसद, धवा, चकला, इत्यादि स्थानों में कई लाठी-कांड हुए। बिना किसी विशेष कारण के लाठी-प्रहार किय जाते थे। मालूम होता था कि पुलिस के सिपाहियो को ऊपर से कुछ ऐसा ही करने की आज्ञा थी। खेड़ा जिले में १६ बार गोलियां चली। जिन स्थानो मे गोलीकांड हुए, उनमें नडियाद, डाकोर, आदास, चकला, भदरन, कारगसहत कस्बो के नाम उल्लेखनीय है। इनमें आदास और डाकोर के नाम तो सारे हिन्दुस्तान मे मशहूर हो चुके है। आदास में जिस हृदयहीन तरीके से विद्यार्थियों पर गोलियां चलाई गईं उसकी अपनी हृदय विदारक कहानी है।

बड़ौदा से ५० विद्यार्थियों की एक टोली ने निश्चय किया कि वह गांव-गांव मे प्रचार करती हुई तथा जनता को कांग्रेस का प्रोग्राम बताती हुई आगे बढ़ती जायगी। ऐसा मालूम पड़ता हैं कि उनके साथ कोई पुलिस पार्टी भी उनका पीछा करती हुई चली। सूरत और खेड़ा जिले के गावों में आदास रेलवे स्टेशन पर यह टोली दो हिस्सो मे बट गई। सायंकाल का समय था। विद्यार्थीगण पास के एक खेत में, जो स्टेशन के करीब था, भ्रमण करने लगे। ठीक उसी समय पुलिस की टोली हवलदार सहित स्टेशन पर पहुची। पुलिस वालो ने उन विद्यार्थियो को रेल में बैठने का आदेश दिया। हवलदार के बर्ताव तथा दारोगा की बातो से मालूम पड़ता था कि उन लोगों ने शराब पी रखी थी। पुलिस जमादार, जो पहले से विद्यार्थियो का पीछा कर रहा था और जिसे आस-पास के गावो मे जनता की ओर से कुछ सुनना भी पड़ा था, उन लोगों पर अधिक क्रोधित था। कस्बे मे आते ही उसने विद्यार्थियो को खेत में बैठने का आदेश दिया। ये लोग गाड़ी से जाना चाहते थे, पर यह समझकर कि जमादार का हुक्म उन्हे गिरफ्तार करने का है, वे वही बैठ गये। ट्रेन छूट चुकी थी। आदास का स्टेशन गांव व शहर के बाहर था। इस प्रकार इन निहत्थे छात्रों पर पुलिस ने गोलिया चलाईं जिससे ५ छात्र तो फौरन ही मर गये और १२ जख्मी हुए। गोलियो की आवाज तथा लड़को की चीख-पुकार ने गाव के लोगों का ध्यान इस घटना की ओर खींचा। पर पुलिस वालो ने उन्हे लड़को के पास न जाने दिया। उन्होने यहा तक बर्बरता की कि घायलो को पानी तक देने की सुविधा न दी। वे सारी शाम और तमाम रात उसी स्थिति में पड़े

रहे। सुबह सामान के पुलन्दों की तरह उन्हे लारियो में भरकर शफाखाने पहुंचाया गया और लुत्फ तो यह था कि यह सब करने के बाद भी पुलिस ने उल्टा उन्ही पर मुकदमा चलाया।

डाकोर गोली-कांड आदास से भी अधिक हृदय-विदारक है। रंचोद-राई के प्रमुख शिवाले के पास पुलिस ने निहत्थी जनता पर गोली चलाने का आदेश दिया। पुलिस के दबाव के कारण जनता छोटी-छोटी गलियों मे भागने लगी। पर पुलिस ने उनका पीछा किया और तब तक गोलिया चलाना जारी रखा जब तक कि उनका सारा गोला-बारूद खतम न होगया। फिर भी जनता का उत्साह भग न हुआ और उसने पुलिस पर आक्रमण करना चाहा। लेकिन स्वर्गीय छोटाभाई मुखी के हस्तक्षेप पर पुलिस का बाल भी बाँका न हुआ, अन्यथा पुलिस का एक भी आदमी जिन्दा न बचता। पर थोड़ी ही देर बाद दूसरी पुलिस-पार्टी वहा पर आ गई और उसने छोटाभाई मुखो को अपनी गोली का शिकार बनाया। यहाँ पर यह बात उल्लेखनीय है कि श्रीयुत छोटाभाई मुखी को थाने के पास मारा गया और घटो तक उनकी लाश वही पड़ी रही। आश्चर्य की बात तो यह है कि पुलिस के सिपाही, जो उनके पास थे, वही थे जिन्हें छोटाभाई मुखी ने जनता के प्रचंड क्रोध से बचाया था। इस प्रकार इन दो काडो मे ७-८ विद्यार्थी मरे। घायलो की सख्या का तो पता ही नही चला। खेड़ा जिले में निम्नलिखित सरकारी इमारतो पर जनता के सामूहिक आक्रमण हुए। नड़ियाद आय-कर आफिस, गवर्नमेंट हाउस, धर्मराज हाई स्कूल सौचित्र हाई स्कूल।

१. नड़ियाद और अहमदाबाद मे बम फटे और नडियाद के आय-कर आफिस में आग लगाई गई।

२ कितनी ही जगह तार काटे गये।

३. लगभग ७५ डाकखानो के डाक के थैलो को लूटा गया और ३० फीसदी डाकखाने बन्द कर दिये गए।

४ खेड़ा जिले में १० हजार रुपया सामूहिक जुर्माना हुआ। इस जिले में २९६ गिरफ्तार और ११२ नजरबन्द किये गए। ११७ आदमियो को सजाएं दी गई।

सूरत जिला

हड़ताले प्राय सभी कस्बो मे रही और कई जगह काफी अर्से तक चली। कपड़ा-मिलें ३॥ मास तक, बाजार दो मास तक और विद्यार्थियो की हड़ताल एक साल तक रही। गोलिया सूरत, जलालपुर और बारडोली मे कई बार चली।

सूरत गुजरात प्रान्त का एक महत्त्वपूर्ण जिला है। व्यापार तथा खुश-हाली यहां पर काफी है। सूरत में मुसलमानों की तादाद भी काफी है। सूरत जिले में आन्दोलन का उतना व्यापक रूप तो न रहा, पर सूरत शहर में काफी चहल-पहल रही। विद्यार्थियो के आन्दोलन का रूप बहुत काफी बढा-चढ़ा रहा।

सूरत में ३० से अधिक पुलिस-चौकियो पर जनता के सामूहिक व गुरिला आक्रमण हुए, बहुत से डाकखानों को भी जलाया गया तथा किशन और तिबरवा रेलवे स्टेशनों पर भी आक्रमण किये गए।

तोड़-फोड के कार्य में सूरत पीछे नही रहा। सूरत शहर व जलालपुर ताल्लुके में निरन्तर तार काटने का प्रोग्राम चलता रहा। बारडोली में काफी दूर तक रेल की पटरिया उखाड दी गईं। दिपाली और जलालपुर में भी रेल की पटरियाँ उखाड़ी गई। तापती वैली मे ९ माह तक बराबर रेल की पट-रियो को उखाडने का सिलसिला जारी रहा।

सूरत जिले में १,६५,३५० रुपया सामूहिक जुर्माना हुआ, पर इससे कही अधिक गुण्डों की मदद से वसूल किया गया। सूरत जिले के सारे कांग्रेस-सगठन पर पाबन्दी लगा दी गई। जितने आश्रम थे उन पर कब्जा कर लिया गया। सूरत की म्युनिसिपेलिटी ने आन्दोलन में काफी मदद दी और इसीलिए उसको मुअत्तिल कर दिया गया।

सूरत जिले में कुल १२८१ गिरफ्तारिया हुईं और ३७६ व्यक्तियों को नजरबन्द किया गया। इसके अलावा ९०५ व्यक्तियो को सजाये हुईं।

भड़ौच जिला

भड़ौच जिले के जम्भूसर ताल्लुके मे आन्दोलन की गतिविधि तीव्र रही। यहा के आन्दोलन ने महाराष्ट्र सूबे के सतारा जिले के आन्दोलन जैसा रूप ग्रहण किया। यहा के प्रमुख नेता श्री छोटाभाई का हिंसा के साधनो में विश्वास है। उन्होने इस आन्दोलन-काल में अपनी शक्ति के अनुसार जनता को हिंसात्मक साधन अपनाने का प्रोत्साहन दिया। अतः कुछ नवयुवक इस विचार-धारा से प्रभावित होकर ताल्लुके में अपनी सरकार कायम करने तथा पुलिस-चौकियो व थानों पर आक्रमण करने की नीति को अपनाने लगे। ये नवयुवक विशेषत वही लोग थे जो आन्दोलन-काल से पहले अखाडों में व्यायाम आदि करते थे। इनके विचार प्रारम्भ से ही हिंसा की ओर झुके हुए थे। ठीक इसी समय इन लोगो को प्रमुख बागी मेघजी नायक का भी सहयोग प्राप्त हुआ। मेघजी भडौच जिले में एक विचित्र बागी है जिनके लिए जनता में बड़े विचित्र खयाल

है। मेघजी ने, सुना जाता है, कभी भी किसी गरीब को नही लूटा। इसके विपरीत वे अमीरो को लूटकर गरीबो की सहायता किया करते है। इस जिले में थानो पर आक्रमण किये गये और सरकारी हथियारो को छीनकर वहा से हटाने के सफल व असफल प्रयत्न हुए। भडोच जिले मे आमदोरफ्त के रास्ते भी थोड़े है, और इसलिए पुलिस आक्रमणकारियो को तेजी से पकड़ने मे सफल नही हुई। उसके विपरीत मेघजी और छोटाभाई के लूटने के अपने प्रोग्राम सफल रहे। उन लोगो ने पुलिस की वर्दियां पहनकर कई थानो पर प्रहार किये और इस प्रकार ३ माह तक इन लोगो ने अपने-अपने इलाको मे अपना राज्य स्थापित रखा।

सरकारी आकड़ों के अनुसार इस जिले में १७१ गिरफ्तारिया हुई, ९९ नजरबन्द किये गए और ७२ को सजायें दी गई। गैर-सरकारी सूत्रो के अनुसार गिरफ्तारियो की सख्या इमसे कही अधिक रही।

पंचमहल जिला

नेताओ की गिरफ्तारी के पश्चात् इस जिले म भी हड़तालें और सामूहिक प्रदर्शन प्रारम्भ हुए और सरकार ने लाठियो की बौछारों से उसका स्वागत किया। विद्यार्थियो ने स्कूल कालेज छोड़े और हड़ताल करने के कारण कितने ही दूकानदार पकड़े गये। इस जिले में गोलीकाड केवल एक वार ही हुआ। एक फरार को पकड़ने के लिए पुलिस को गोलियां चलानी पडी। ठीक इसी तरह तोड-फोड़ के कार्य भी कम हुए। हा, डिस्ट्रिक्ट बोर्ड आफिस जलाये गए और कलोल में दो-तीन पुलिस-चौकियों पर बम के विस्फोट हुए। कलोल तालुके में शिवराज ग्राम के पास गुजरात रेल की पटरी उखाड़ी गई। इसका तात्पर्य यह था कि पुलिस और फौज की टुकड़ियां जो कलोल मे दमन करने के लिए आ रही थी, उनको रोका जाय। इस उद्देश्य के लिए कलोल रेलवे पुल को तोड़ने के प्रयत्न किये गए। इस प्रकार कई गाड़ियां गिर पड़ी और सैनिको के चोटें आई। मेनसेना और कलोल में भी रेल का चलना वन्द हो गया था। कलोल के नज़दीक हज़ारो आदमी एक मेले में इकट्ठे हुए और वे अपने साथ लाठियां व बर्छी इत्यादि शस्त्र भी लाये। पुलिस और जनता में झगड़ा हुआ। इस जिले में औरतो ने भी काफी सख्या मे भाग लिया। करोदी ग्राम मे कुछ थोड़े से गुरिलो ने पुलिस की टुकड़ियो से हथियार रखवा लिये। पर फौज ने गांव वालो से इस कार्य का काफी वदला लिया। कलोल में रेवेन्यू दफ्तर भी जला दिया गया। इन इलाकों में पुलिस और गुरिला दस्तो के इक्के-

टुक्के कई झपट्टे हुए । इस जिले मे २८३ व्यक्ति गिरफ्तार किये गए, ३१ नज़रबन्द रखे गये और २४४ को विभिन्न सजायें दी गईं ।

महाराष्ट्र

महाराष्ट्र का भारत के इतिहास में अपना निराला स्थान है । यहां के लोग मेहनती, जफाकश, हृष्टपुष्ट, गठीले तथा तीव्र बुद्धि है । इस इलाके की भौगोलिक स्थिति और खासकर पथरीली और पहाड़ी ज़मीन का यहा के लोगों के जीवन, शरीर तथा विचार-धारा पर गहरा प्रभाव पड़ा है । स्वभावतः महाराष्ट्र के लोग गुरिला लड़ाई के लिए बहुत ही उपयुक्त है । उनका इतिहास भी उन्हें इस ओर प्रोत्साहन देता है ।

महाराष्ट्र मे ब्राह्मण व अब्राह्मण दो पार्टिया है । विशेषतः सरकार के सारे महकमों पर तथा उन्नति के सारे साधनों पर ब्राह्मणों का ही आधिपत्य है, पर अब कांग्रेस की गतिविधि के साथ अब्राह्मण लोगो मे बड़ी जागृति फैल रही है और उनके पढ़े-लिखे लोग हर क्षेत्र में छा जाना चाहते है । महाराष्ट्र मे कई जिलो में आन्दोलन ने जो जोर पकड़ा उसका एक कारण यह भी था कि ब्राह्मण लोग ज्यादातर सरकारी कर्मचारी थे और उनके विरुद्ध जनता मे काफी भाव थे । अतः सन् १९४२ मे इन इलाकों मे जब जनता उठी तो उसे इस बात से भी प्रोत्साहन मिला कि वह ब्रिटिश नौकरशाही के साथ इस ब्राह्मण-शाही का भी अन्त कर देगी । महाराष्ट्र में इस आन्दोलन मे गांव के लोग अधिक आये और आन्दोलन की गति खानदेश, सतारा, कोल्हापुर रियासत और शोलापुर में अधिक रही ।

महाराष्ट्र के देहातो व प्राय. सभी कस्बो ने सन् १९४२ में अपना खेल खेला । सरकार ने अपनी पूरी शक्ति के साथ जनता के इस महान् एवं प्रबल प्रयत्न को कुचलने की कोशिश की । प्रारम्भ मे बडे-बडे शहरों में हड़ताले और प्रायः विराट प्रदर्शन शुरू हुए। बाद में पूना, शोलापुर, नासिक और अहमदनगर के सभी स्कूल व कालेज बन्द होगये और इस प्रकार हज़ारो विद्यार्थियों ने आन्दोलन की गतिविधि को बढाने में सहायता दी ।

पूना में गोली-काण्डों की भरमार

१० अगस्त को परसराम भाऊ कालेज के सामने विद्यार्थियों का एक विशाल समूह इकट्ठा हुआ । पुलिस ने गोलियां चलाईं । जनता गोलियों की बौछारो में इधर-उधर भागने लगी । पुलिस वालो ने गलियों तथा बाज़ारों में भागने वाला जनता को लाठी से मारना शुरू कर दिया और डाक्टरो तक को

किसी प्रकार की मदद न करने दी। इस प्रकार सैकड़ों आदमी घायल हुए। पर पूना-निवासी बिना किसी भय के निरन्तर अपन जुलूस निकालते रहे। अनेक मर्तबा लाठी-वर्षा तथा गोलियों की बौछारें हुईं। विद्यार्थियो के एक समूह ने शिवाजी मदिर पर एक झडा लगाकर शहर मे जुलूस निकालने का प्रयत्न किया। पुलिस ने गोलियाँ चलाईं और कई दर्जन विद्यार्थी घायल हु । रात को जनता की टुकड़ियों ने पुलिस के थानों व चौकियो पर आक्रमण किया। गोलियां चली और दो आदमी मरे। पूना की पुलिस ने जब काग्रेस तथा अन्य लोक-नेताओं को गिरफ्तार कर लिया तो हज़ारों की तादाद में विद्यार्थी सैनिकों व पुलिस के सिपाहियों के घेरो को चीरते हुए आगे बढ़ने का प्रयत्न करने लग। पुलिस ने गोलियां व लाठिया चलाईं। दो रोज़ के बाद पूना शहर को फौज के आधीन कर दिया गया जिसने कितनी ही बार इधर-उधर अन्धाधुन्ध गोलियां चलाईं। इस प्रकार चार रोज़ तक शहर मे फौज का अधिकार रहा। आन्दोलन सतह से हटकर गुप्त षड्यंत्र का रूप धारण करने लगा। आन्दोलन को जीवित रखने के लिए लोगों ने गुप्त सगठन कायम कर लिये।

अब शहर मे तोड़-फोड़ के कार्य अधिक मात्रा में होने लगे। कैपिटल सिनेमा में बम फटा। इस सिनेमा में अधिकतर गोरे सिपाही आते थे। इस विस्फोट मे ५ गोरे सैनिको की मृत्यु हुई। पूना के निकट गोली-बारूद के एक गोदाम मे भयंकर आग लगी, जिसके कारण एक करोड़ रुपये से अधिक का नुकसान हुआ।

जो गोली-बारूद इन विभिन्न काण्डो में इस्तेमाल किया गया, सुना जाता है कि वह कुर्की के फौजी गोदाम से आया था। यदि यह सच हो तो ऐसा फौज के सैनिकों और अफसरों की सहानुभूतिपूर्ण रवैये के कारण ही हुआ होगा। बाद में एक महाराष्ट्र षड्यंत्र केस भी चला जिसमे इस फैक्ट्री के २५ आदमी पकड़े गये थे। पूना मे आन्दोलन ज्यादा काल तक न रहा, किन्तु जो कुछ हुआ उसमें विद्यार्थियो का विशेष हाथ था। लगभग ३० व ४० जगह टेलीफोन के तार भी काटे गये। तोड़-फोड़ के कार्य अक्तूबर व नवम्बर मास में अधिक हुए।

पूर्वी व पश्चिमी खानदेश

पूर्वी व पश्चिमी खानदेश में यद्यपि आन्दोलन का रूप अधिकतर सामूहिक न रहा, पर पूर्वी खानदेश के कुछ इलाको मे, विशेषकर नन्दूबार और अमलनेर के इलाकों मे आन्दोलन का रूप बड़ा ही उग्र और व्यापक रहा। प्रारम्भ में इन जिलो के शहरो में हडताले, जुलूस और सभाये हुईं जिनको

लाठी-प्रहारो द्वारा तितर-बितर कर दिया गया। १४ व १५ अगस्त को नन्दूर्‌बार मे विद्यार्थियो का एक जुलूस निकला जिस पर पुलिस ने गोलिया चलाईं। यद्यपि विद्यार्थियो का जुलूस शान्तिपूर्वक सडको व गलियो में से गुजर रहा था, किन्तु पुलिस ने उन पर बेंतो की बौछारे शुरू कर दी। बहुत से विद्यार्थी घरो मे घुस गये। जो किसी जगह न घुस सके उन पर एक थानेदार ने गोली चलाई। वह उत्तेजना से पागल होकर कुछ छात्राओ की तरफ लपका। इसी समय उसके सामने एक लड़का आया जिसने अपना सीना खोलकर उससे गोली मारने के लिए कहा। थानेदार ने लड़के के गोली दाग दी, पर सौभाग्य से वह उसे न लगी। लड़के ने बिना किसी हिचकिचाहट के थानेदार को फिर गोली मारने की दावत दी। इस बार उसने फौज के सिपाहियो से उसे पकड़ने के लिए कहा और इस प्रकार उसे पकड़कर गोली मार दी गई। यह वीर वही जमीन पर गिर पड़ा। उसके पश्चात् थानेदार एक टोली मे घुसा और एक लड़के को गोली मारी। इस प्रकार ४ लडके मरे और १७ जख्मी हुए। उन्हे किसी भी प्रकार की डाक्टरी सहायता नही दी गई। एक वकील को, जो गाधी टोपी पहने पास ही तागे में बैठे जा रहे थे और जिन्होने इन जख्मियो के प्रति सहानुभूति दिखानी चाही थी, तागे से नीचे खीच लिया गया और कोडे लगाये गये।

पूर्वी खानदेश के अमलनेर इलाके मे आन्दोलन का रूप उग्र रहा। यह वह इलाका है जहा महाराष्ट्र प्रात के कितने ही प्रमुख किसान व मजदूर नेता पैदा हुए हे। साने गुरुजी यही के रहने वाले है। इस इलाके में युवतियो ने भी काफी हिस्सा लिया। यहा के नेता डा० उत्तम पाटिल थे जो कि एक किसान के घर में पैदा हुए थे। इनके पीछे इनकी बीबी लीला पाटिल ने भी आन्दोलन मे बहुत हिस्सा लिया और तोड-फोड के अभियोग में उन्हे ६ साल की सजा हुई। वह पूना हॉस्पिटल से पुलिस की हिरासत से फरार हो गई। सन् १९४४ मे डा० उत्तम पाटिल भी गिरफ्तार हुए, परन्तु वह भी पुलिस हिरासत से भाग गये और गुरिला आन्दोलन का सचालन करते रहे।

अमलनेर में इन लोगो ने एक सामूहिक मोर्चा लगाया जिस पर लगभग ३ हजार आदमी जमकर दृढता के साथ पुलिस से लडे और पुलिस-स्टेशनो, डाकखानो, रेलवे स्टेशनो तथा ताल्लुका कचहरी पर कांग्रेस का झंडा फहराने के लिए आक्रमण किये। काफी लोग पकडे गये और अन्त मे गोली भी चलाई गई। कुछ अर्से बाद आन्दोलन का सामूहिक रूप छिन्न-भिन्न होने लगा और वह गुरिला युद्ध के रूप में बदल गया। इन दोनो जिलो की भूमि और भौगोलिक स्थिति गुरिला युद्ध के लिए उपयुक्त भी है।

नासिक

नासिक शहर मे नेताओं की गिरफ्तारी के बाद फौरन ही हड़ताल हुई और रोजाना जुलूस निकलने शुरू होगये। पुलिस कुछ लोगो को पकडने के लिए आई तो लोगो ने पुलिस के हथियार छीन लिये। उसके बाद पुलिस ने नासिक में लाठियो की बौछारो से आतंक फैलाना शुरू कर दिया। गोली भी चली। आन्दोलन ने गुप्त रूप धारण कर लिया। तार काटने, डाकखानो को जलाने, रेलवे लाइनो को उखाड़ने के सामूहिक काम भी हुए। ब्रिटिश नौकरशाही ने सामूहिक जुर्माने किये। नासिक जिले के देहातो में भी आन्दोलन हुआ। इसमे मुख्यत: किसान लोग थे। सवा महीने पश्चात् नासिक में अन्न के लिए आन्दोलन शुरू हो गया।

अहमदनगर

काग्रेस-कार्य-समिति के सदस्य अहमदनगर मे रखे गये, इस कारण इस जिले का महत्त्व आन्दोलन की दृष्टि से और भी बढ गया। सच तो यह है कि आन्दोलन-काल मे सारे देश की आखें अहमदनगर के किले की ओर ही लगी रही। कितने ही मुर्झाये दिल आशा व प्रोत्साहन के लिए किले की ओर देखते थे। यह किला पिटी व पिसी जनता की आशाओ व आकाक्षाओ का केन्द्र बन गया। पटवर्धन बधु भी यही के रहने वाले थे। यहा के आन्दोलन में मुख्यत. किसानो ने हिस्सा लिया। प्रारम्भ मे हडतालें हुईं, विरोध-प्रदर्शन हुए, सभाये हुई और अन्त मे आन्दोलन का रूप गुरिला युद्ध मे वदल गया। तोड़-फोड़ के कार्य भी काफी हुए। अहमदनगर जिले के एक बेंच मजिस्ट्रेट की अदालत में आग लगाई गई। केण्टोनमेण्ट में गुरिला तबके ने पुलिस के सिपहियों की वर्दी उतरवा ली।

जिले के अन्दर गांवो मे भी आन्दोलन फैला। कोपर गाव और शेगाव में काफी समय तक निरन्तर तार काटने का कार्य चलता रहा और अधिकारियो के लिए अपना काम चलाना काफी मुश्किल कर दिया गया। डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट के यहाँ तथा मॉडर्न हाईस्कूल और लडकियों के स्कूलो मे कई बार बम-विस्फोट भी हुए। स्कूल बहुत दिनो तक बन्द रहे। तोड़-फाड़ सम्बन्धी कार्यो का पता चलाने के लिए पुलिस ने काफी तलाशिया ली। इन तलाशियो में दो फौजी ठेकेदारो और एक दूकानदार के यहा भी तलाशी हुई।

सितारा

सन् १९४२ के खुले विद्रोह में सितारा जिले ने अपना एक निराला

ही इतिहास बनाया है। इस जिले की अपनी विशेष स्थिति है, जिसका वहा के आन्दोलन के विकास व गतिविधि पर खास प्रभाव पड़ा है। यह एक पहाड़ी जिला है और ऐतिहासिक दृष्टि से बहुत मशहूर है। मराठा साम्राज्य का सितारा एक प्रमुख शहर रहा है और मराठे अपने सैनिक गुणो के लिए इतिहास में प्रसिद्ध हुए हैं। उनमें बड़े उच्च श्रेणी के नेता हुए हैं। भारतीय सेना में भी सितारा के सिपाहियों की काफी बड़ी सख्या है। यह जिला अग्रेजो के लिए सैनिकों की भर्ती का केन्द्र है। सितारा के आदमी हृष्ट-पुष्ट, गठीले तथा बहादुर है। पूर्व की ओर सितारा ज़िला पश्चिमी घाटो और नीरा नदी के साथ उत्तर से शुरू होता है और दक्षिण मे बरना नदी के साथ समाप्त होता है। पश्चिमी भाग पहाड़ी कतारों से भरा पडा है। इसी जिले मे महाबलेश्वर का विख्यात पहाड़ है। कृष्णा नदी भी यही से निकलती है। पूर्वी भाग कम उपजाऊ है जहा वर्षा भी कम होती है।

सन् १९२१ से यहां पर जन-आन्दोलन का जन्म हुआ। प्रारम्भ म सत्यशोधक आन्दोलन का श्रीगणेश हुआ। इस आन्दोलन का उद्देश्य कुछ सामाजिक सुधार करना था। सन् १९२७-२८ मे बारदोली मे किसान-सघर्ष और लगानबन्दी आन्दोलन शुरू हुआ तो सितारा के किसानों में भी जागृति पैदा हो गई और वह बारदोली के किसानों से प्रोत्साहन लेने लगे। इसके थोडे दिनो बाद सन् १९३० का सत्याग्रह प्रारम्भ हुआ और गान्धीजी के डान्डी कूच ने सितारा जिले के किसानो में एक नई स्फूर्ति व आज़ादी की इच्छा पेदा कर दी। लगभग ५७ आदमी इस जिले से जेल गये और हज़ारो किसानों ने जंगल-सत्याग्रह मे भाग लिया। तम्बूरा, रेठरी और बिलेशी गाँवों मे इस सत्याग्रह ने विशेष स्थान प्राप्त किया। उस समय यहा अपनी सरकार बनानें के प्रयत्न हुए, पर पुलिस की बड़ी ताकत द्वारा उन्हें दबा दिया गया।

सितारा में जो बीज सन् १९३० मे बोया गया था, वह सन् १९४२ में बड़े वृक्ष के रूप में प्रकट हुआ। आन्दोलन के व्यापक होने के कई कारण थ। सितारा जिले के प्राय. हर गांव के कितने ही लोग फौज में भरती होगये थे। उनके घर वालो को उनकी चिन्ता थी। अंग्रेज़ी साम्राज्य से लोगों का विश्वास उठ रहा था। अत इस स्वतन्त्रता आन्दोलन में उनको अपने घर वालो के लौटने की एक झलक दिखाई दी। यहां के किसान काफी जागृत हो चुके थे। यहा की भौगोलिक स्थिति आन्दोलन को लम्बे अर्से तक जारी रखने में सहायक हुई और परम्परा ने गुरिला युद्ध के लिए प्रेरणा दी।

९ अगस्त को जब सितारा जिले की जनता ने कांग्रेसी नेताओं की

गिरफ्तारी की बात सुनी और अपने जिले में गिरफ्तारियां होते देखी तो काफी जोश पैदा होगया। सैकड़ो जगह सभायें हुई और उनमें कार्यकर्ताओ ने लोगो से जीने व मरने की शपथ ली। इन सभाओ में कितने ही गावों के मुखियो ने इस्तीफे दिये। जब महाराष्ट्री नेता बम्बई से लौटकर आये तो जनता ने उनका पवित्र तीर्थ से लौटे हुए यात्रियो की भांति हार्दिक स्वागत किया। लोग बड़ी उत्सुकता से पूछते थे, 'गान्धीजी ने क्या कहा ? क्या आदेश दिया ? क्या अब वह बूढे हो गये हैं ?' इस प्रकार के प्रश्न पूछते हुए उनकी आंखों से अश्रुधारा बहती थी। अन्त में खिन्न होकर वह पूछते थे, 'क्या गांधी जी पकड़ लिये गये ? उन्हे क्यो पकड़ा गया ? निर्दयी सरकार को उन्हें इस बुढापे मे पकड़ते हुए दया नही आई ?' और तब वह क्रोध से उन्मत्त हो पागल की तरह पूछते थे, 'अब हमे क्या करना चाहिए ? गान्धीजी ने हमें क्या करने का आदेश दिया हैं ?' लौटे हुए काग्रेसी नेताओ ने जनता का कांग्रेस का प्रोग्राम व गान्धीजी का आदेश बताया।

यद्यपि जिले मे दफा १४४ लग चुकी थी, पर लोगों ने लगभग १०० से अधिक स्थानों पर सभायें की। किरलोसकर कापर फैक्ट्री मे पूर्ण हड़ताल हुई और यह फैक्ट्री एक माह तक बन्द रही।

लोगो ने अपना क्षोभ ताल्लुका कचहरी के सामने शान्त प्रदर्शन करके उतारना चाहा। ताल्लुका के प्रत्येक गांव से ग्रामवासी एक निश्चित तिथि पर जुलूस बनाकर 'भारत छोड़ो' का नारा लगाते हुए किसी ज़िम्मेदार कांग्रेस-कार्यकर्ता के नेतृत्व मे ताल्लुका कचहरी के पास आये। वहा उनके नेता ने काग्रेस-झडा फहराया और अगस्त-प्रस्ताव लोगो को समझाया। उसके बाद व्याख्यान हुआ और लोगों ने झंडा अभिवादन किया। लोग विजय-मुद्रा में पीछे हटे। यह लोगों का शान्तिमय कदम था। २४ अगस्त से १० सितम्बर तक यानी ९ अगस्त के बाद दूसरे पखवाड़े मे ताल्लुका मे ५ बार शान्तिमय प्रदर्शन किये गए। इस प्रकार का प्रथम प्रदर्शन कराद में २४ अगस्त को हुआ। यह लोगो के लिए एक नई चीज़ थी। श्री बालकृष्ण पटेल उन्दालय निवासी के लगभग २५ हज़ार किसानों ने शान्तिपूर्वक प्रदर्शन में भाग लिया और कचहरी नेतृत्व में तक गये। कचहरी के हाते के बाहर एक महती सभा हुई। तभी एक पुलिस अधिकारी आया और उसने नेता से पीछे हट जाने को कहा। इसके बाद हथियारबन्द पुलिस भीड़ के बीच मे घुसी। बन्दूक की चोट से एक कांग्रेस-कार्यकर्ता श्री पाडुरंग देशमुख घायल हुए। इससे लोग आवेश में आ गये। इस पर नेता खड़ा हुआ और लोगों को तितर-बितर हो जाने का आदेश दिया। उसने

कहा, "हमारा प्रदर्शन सफल हो चुका। हम विजयी हो गये। अब आप लोग घर चले जाइये। मैं जानता हू कि हम लोग इस समय इतनी संख्या मे है कि हम उनको पकड़ सकते है जो हमे पकड़ना चाहते हैं। पर हमारे प्रदर्शन का तात्पर्य यह नही है। मैंने शान्तिपूर्ण तरीके पर कैदी होना स्वीकार कर लिया है। गान्धीजी ने हमको कुछ करने या मरने का आदेश दिया है। लेकिन उन्होंने हमे अहिंसक रहने के लिए भी कहा है। अगर हम हिंसात्मक कार्य करेंगे तो गान्धीजी उसे पसन्द न करेंगे। उनके हृदय को बहुत दुःख होगा। इसलिए आप शान्तिपूर्वक घर चले जाइए।"

गान्धीजी के नाम पर यह एक कसम थी। लोगो ने अपने नेता का कहना माना और वे शान्तिमय ढग से अपने घरो को वापस लौट गये।

सितारा ने आगे चलकर, जब आन्दोलन ने गुप्त रूप धारण किया, तो इस दिशा मे और भी असाधारण ख्याति प्राप्ति की। जो कार्यकर्ता फरार हुए उन्होंने समानान्तर सरकार की स्थापना की। इसे पटरी सरकार कहा जाता था। इसने सरकार-परस्तो में भारी आतक बिठा दिया। उसका न्याय-शासन बड़ा सख्त था। जो लोग इस सरकार की दृष्टि से अपराध करते थे और विदेशी राज को मदद पहुचाते थे, उनको अग-भग करके सख्त सज़ा दी जाती थी। जब अन्य भागो मे शान्ति होगई, तब भी सितारा मे सरकार का दमन बराबर जारी रहा। वहाँ पूर्ण शान्ति तो काग्रेसी मन्त्रि-मण्डल की स्थापना के पश्चात् ही कायम हुई, जब कि तमाम दमनकारी कार्रवाई बन्द की गई।

कर्नाटक

भारतवर्ष के राष्ट्रीय आन्दोलन के इतिहास मे कर्नाटक का सदा महत्त्व-पूर्ण स्थान रहा है। सन् १९२१ से १९४२ तक जितने भी आन्दोलन चले, कर्नाटक के लोगो ने इन सबमे अपनी प्रतिभा, सगठन-शक्ति व सामूहिक जोश का प्रदर्शन किया है और अनेक प्रकार की यातनाये सही है। स्वभाव से ही यहा के लोगो का गान्धीजी के नेतृत्व मे पूर्ण विश्वास रहा है। कर्नाटक का शानदार इतिहास है। वह कला व सस्कृति के लिए विख्यात है। कर्नाटक के लोगो को सगीत से बडा प्रेम है और वे स्वभावत. धार्मिक है। शायद इसी कारण उन्हे गान्धीजी के नेतृत्व मे और अधिक विश्वास है। दक्षिण के वीरो की अनेको कहानियां प्रचलित है। यहा रेड्डी, तलवार, वादम, नायक आदि कितने ही प्रकार के सैनिक हैं जिन्होंने अपनी बहादुरी व सैनिक कला के कारण कर्नाटक मे ही नही बल्कि दक्षिण के और सूबो मे भी ख्याति प्राप्त की है।

मैंने उपरोक्त बातों को थोड़ा-सा केवल इसलिए बताने का प्रयत्न किया कि आन्दोलन की गतिविधि पर प्रत्येक प्रान्त की जनता की मनोवृत्ति, भावनाओं, कल्पनाओं तथा बाह्य परिस्थितियो का गहरा प्रभाव पडता है। कर्नाटक में जब कांग्रेसी नेताओ के पकड़े जाने की खबर फैली तो वहां के लोगो ने विभिन्न आन्दोलनों द्वारा जो ट्रेनिंग पाईथी, उसके अनुसार अपना विरोध प्रकट किया। वे लाखों की तादाद में संगठित रूप से उठे और आन्दोलन को सबसे अधिक लम्बे काल तक सामूहिक व व्यक्तिगत रूप मे जारी रखा। इस दृष्टि से कर्नाटक प्रान्त सारे भारत मे सर्वप्रथम है। किसी भी प्रान्त में इतने सगठित रूप से आन्दोलन का प्रवाह नही रहा। इसका श्रेय कर्नाटक के नेताओं को ही है। इतना ही नही जहां एक ओर कर्नाटक के गांव-गांव मे विद्रोह की यह अग्नि फैली वहां दूसरी ओर हमने देखा कि वहां पर एक भी सरकारी कर्मचारी की हत्या नही हुई, हालांकि वहाँ लोगों के घरों को जलाया गया और उन्हे तरह-तरह की शारीरिक यातनाएं भोगनी पड़ीं।

गान्धीजी का सन्देश

८ अगस्त, सन् १९४२ की रात को कर्नाटक के नेता श्री गोपालराव विलवादी गान्धीजी के पास सन्देश लेने के लिए गये। गाधीजी ने सघर्ष की सम्भावना समझते हुए यह सन्देश दिया, "मै कर्नाटक के रहने वालो से यह आशा करता हू कि वे आने वाले यज्ञ में अपनी पूर्ण शक्ति से योग देंगे।" इसका वहा के लोगों पर इतना गहरा असर पडा कि उन्होने अनगिनत लाठियों के प्रहारों, गोलियो की बौछारो, और फौज व पुलिस की ज्यादतियो को दिलेरी व जवांमर्दी से खुशी-खुशी सहा। लगभग २ हजार आदमी आन्दोलन मे पकड़े गये।

आन्दोलन की गतिविधि

कर्नाटक मे होने वाले आन्दोलन को हम तीन भागो मे बांट सकते है—

१. ८ अगस्त सन् १९४२ से लेकर १६ सितम्बर सन् १९४२ तक।

इस काल में वहा की जनता ने सामूहिक विद्रोह किया और न्याय व शान्ति-रक्षा का भार अपने ऊपर ले लिया। गाव-गाव और कस्बे-कस्बे मे हड़तालें, सभायें और विरोध-प्रदर्शन हुए और इस प्रकार जनता ने ब्रिटिश राज्य को मानने से साफ इन्कार किया। पर यह जो कुछ हुआ, वह सब संगठित नही हुआ। इसमें जोश की मात्रा अधिक थी।

२. १८ सितम्बर सन् १९४२ से लेकर ५ नवम्बर सन् १९४२ तक।

इस काल में कर्नाटक के नेताओ ने जनता के जोश व शक्ति को ठीक तरीके से प्रयोग करने के लिए आन्दोलन को संगठित रूप दिया और सरकार के विरुद्ध संगठित नीति को अपनाया । इसी काल में कर्नाटक में सरकारी राज्य-व्यवस्था तथा मार्ग-व्यवस्था रेल, तार, टेलीफोन आदि को अस्त-व्यस्त करने का संगठित प्रयत्न किया गया ।

३. ५ नवम्बर सन् १९४२ से लेकर ५ मई सन् १९४६ तक ।

इस काल में कर्नाटक मे संगठित खुले सामूहिक प्रयत्न हुए। सरकारी राज्यसत्ता प्राप्त करने के लिए यह प्रयत्न शुद्ध सत्याग्रही आधार पर थे । पर इस बार उनमें अधिक तेजी व शक्ति थी । इस प्रकार आन्दोलन का पहला काल असंगठित व क्षणिक था, दूसरे मे संगठित व सतत प्रयत्न थे और तीसरे में सत्याग्रही सिद्धान्तों का पूर्णतः पालन किया गया । गान्धीजी के छूटते ही यहाँ के आन्दोलन की गति समाप्त हो गई ।

इन तीनों कालो में जो आन्दोलन इस प्रान्त में हुए और जिस प्रकार के प्रोग्राम बनाये गये उन्हे हम दो भागो में बांट सकते हैं । (१) सत्याग्रही विरोध प्रदर्शन और (२) सरकारी व्यवस्था को अस्तव्यस्त करने के तोड़-फोड़ के काम । जहां तक पहली किस्म के कामो का सम्बन्ध है, उनका विस्तार से बताना मुश्किल है, पर फिर भी उस प्रोग्राम के अधीन इस प्रकार के कार्य किये गये :—

१. जुलूसों और जलसो पर लगे हुए प्रतिबन्ध को साफ खुले तरीके पर तोड़ा गया ।

२. छापेखानों तथा साइक्लोस्टाइल वाले प्रतिबन्धों की अवहेलना की गई ।

३. बुलेटिन व पोस्टर खुले रूप से बांटे गए ।

४. नमक कानून तोड़ा गया ।

५ अदालतो व शराब की दूकानों पर पिकेटिंग किया गया ।

६. बगैर टिकट के सफर किया गया ।

इस प्रकार के प्रोग्राम पर सारे प्रान्त में अमल हुआ और सरकार ने उसे पकड़-धकड़, लाठी, राइफल की मार तथा भारत रक्षा कानून द्वारा विफल करने का प्रयत्न किया ।

तोड़-फोड़

इस प्रान्त में जो तोड़-फोड़ के कार्य हुए, उनमें मुख्य ये हैं :—

१. टेलीग्राफ और टेलीफोन के तारो को उखाड़ा गया । इस प्रकार के

२६०० सफल व असफल प्रयत्न प्रान्त मे हुए।'

२. २२० गावों मे गाव के रेकार्ड छीने व जलाये गये।

३. छोटे व बड़े लगभग ३२ डाकखानों को क्षति पहुंची और उन पर कब्ज़ा करने के प्रयत्न हुए। लगभग ५१ फी सदी चिट्ठी डालने की संदूकचियों को बरबाद किया। लगभग १०० डाक थैले छीने गये और उन्हें बरबाद किया गया। लगभग १६ डाक ले जाने वाली गाड़ियों पर आक्रमण हुए और डाक के थैलों को छीना गया।

४. लगभग ४४ डाक बगलों को क्षति पहुंची या पूर्णत बरबाद कर दिये गये। बंगलों में उस काल में पुलिस व रेवेन्यू अफसरो के कैम्प थे।

५. लगभग ६५ शराब व गांजे की दूकानों पर आक्रमण हुए और उन्हें नष्ट किया गया और लगभग ५० डिब्बो को जिनमे शराब भरी हुई थी, बहा दिया गया।

६. २५७ गावो के सरकारी दफ्तर या तो क्षति-ग्रस्त हुए या नष्ट हुए।

७ १॥ लाख रुपये की सरकारी लकड़ी मे आग लगा दी गई।

८. लगभग २६ रेलवे स्टेशनो को या तो जलाया गया या क्षति-ग्रस्त किया गया।

९. लगभग ११ बार रेलगाड़िया पटरी पर से उतरी और १३ दफा रेल की पटरियां उखाडी गई और रेलवे सम्पत्ति को क्षति पहुचाने के अनेक प्रयत्न किये गये।

नोट—केवल एक दफा एक मुसाफिर गाड़ी उतरी जिसमे एक आदमी को क्षति हुई। अन्यथा अधिकतर मालगाड़ियो को ही उलटनें का प्रयत्न किया गया।

१०. सडको पर के लगभग २५ पुलियो के तोड़ने के सफल व असफल प्रयत्न हुए।

११. इस वार लगानबन्दी का प्रयत्न नही हुआ, सिर्फ सरकार जो रुपया वसूल करती थी उसे छीनने के अनेक प्रयत्न हुए।

१२. लगभग ३० पुलिस सिपाहियो की वर्दिया उतरवाई गई और उनसे हथियार रखवा लिये गये।

विशेष उल्लेखनीय वात यह है कि कर्नाटक प्रान्त में एक भी मिसाल ऐसी नही मिलती कि जनता ने किसी की व्यक्तिगत सम्पत्ति पर आक्रमण किया हो या उसे लूटा हो। सारा आन्दोलन सरकारी सत्ता के विरुद्ध केन्द्रित था और जब आन्दोलन के नेताओ को मालूम हुआ कि दो-चार जगह स्कूलों

के रिकार्ड जलाये गये तो उन्होने ऐसा न करने की हिदायत जारी कर दी। बाद में इस बात का पता चला कि यह वह स्कूल थे जहां पर पुलिस ने अपने कैम्प डाल रखे थे।

दमन के तरीके प्राय: सभी जगह एक-से रहे। डराना, आतक फैलाना, मासूम लोगो से रुपये वसूल करना आदि उपाय काम में लिये गये। पर चूंकि कर्नाटक प्रान्त में कितने ही कार्यकर्ता ऐसे थे जो आन्दोलन प्रारम्भ होते ही अपने घरों से भाग निकले थे और आन्दोलन का सचालन कर रहे थे, इसलिए पुलिस ने उनको पकड़ने के लिए उनके रिश्तेदारो व मित्रो को अनेक प्रकार की यातनायें दी। बेटे के बजाय बाप को पकड़ा गया और लोगो को पुलिस और फौज के घेरे में जमा किया गया तथा इस प्रकार उनके हृदय में भय बिठाकर उनसे भागे हुए लोगो की जानकारी प्राप्त करने की कोशिश की गई।

प्रारम्भ मे धारवाड़, बेलगांव और उत्तरी कनारा में इन फरारो की सख्या, जो घोषित की गई, ३०,२२ तथा ३४ थी, लेकिन कुछ ही दिनो बाद फरारो की सख्या केवल धारवाड़ जिले मे ही २३२ तक पहुच गई। उन लोगो ने आत्म-समर्पण नही किये और पुलिस के नियम की अवहेलना की। जब पुलिस उन्हें न पकड़ सकी तो यह कार्य फौज को सौंपा गया। फौज ने बेलगाव जिले व धारवाड़ तथा रतनार जिले के प्रमुख इलाको को घेर लिया और पहाड़ो व जंगलो को छान मारा। फौजी रात को गावो पर हमले करते थे। इनके आक्रमणो का यह तरीका था कि गांव से बाहर लारियां खड़ी करके रात को गावो में चुपके से घुसते थे और सड़को पर खड़े होकर आने-जाने वाले आदमियो को रोकते थे। रात भर उन्हे बन्द रखते थे और फिर उन सब जगहो की तलाशी लेते थे। जहां पर उन्हे किसी फरार का सन्देह होता था वहां न केवल घरो की तलाशी ली गई, बल्कि फरारो को एक-एक करके चुनने के भी प्रयत्न हुए। रात को घरो में जा-जाकर टार्च की रौशनी व बन्दूको के प्रहारो से तलाशिया ली गई। जगलों में रात को उड़ने व चमकने वाले बम अर्थात् रोशनी करने वाले बम फेंके गये। रास्ते में जहा कही भी इक्के-दुक्के आदमी मिलते थे उन पर गोली चलाई जाती थी। इस प्रकार कितने ही लोग जख्मी हुए। पुलिस ने मार-पीट की तो हद कर दी। उगलियो में पिनें चुभाना, रात को सोने न देना, तथा अन्य प्रकार की मानसिक यातनाएं देने के काफी उदाहरण मिलते हैं। एक स्कूल मास्टर को बस से नीचे उतारकर इसलिए सड़क पर खींचा गया कि उसने कांग्रेसी नारे बोले थे। बेतकी जिले मे एक छोटे से बच्चे के सारे दात तोड़ दिये गये, क्योकि उसने फरारो की बाबत कोई इत्तिला नही दी।

वेलगाव जिले के एक गाव में पुलिस की एक टुकडी ने ५० लारियों के साथ ६ नवम्बर सन् १९४२ को घेरा डाला और प्रत्येक घर की तलाशी ली। उस समय उस लाइन के टेलीग्राफ पोस्ट पर पुलिस और फौज का पहरा था। डिप्टी सुपरिण्टेण्डेण्ट और चार सब इंसपेक्टर वहां पर मौजूद थे। वहां पर उन्हें कुछ नही मिला। उन्होने केवल चर्खा-संघ के दो कार्यकर्त्ताओ को पकड़कर ही सन्तोष किया।

३ नवम्बर को आधी रात के कुछ देर पश्चात् कई सौ फौजी सैनिको ने सकेश्वर ग्राम पर धावा बोला। सारे गांव व उसके खेतों तक को घेर लिया और गांव के लोगो को एक घर से दूसरे घर तक नही जाने दिया। लगभग २०-३० आदमियो को हिरासत में लिया और फिर बाद में छोड़ दिया। उत्तरी कनारा में डिप्टी सुपरिण्टेण्डेण्ट पुलिस ने कई सौ पुलिस के सिपाहियों सहित अंकोला से बसेगौन और लुवेरे तक २० वर्ग मील के क्षेत्रफल पर धावा बोला। हर घर की तलाशी ली। इस प्रकार पुलिस ने फरारों के पकड़ने के कितने ही व्यर्थ प्रयत्न किये, पर इस इलाके के लोगों ने अपने कार्यकर्त्ताओ को, जो उन्हें अपने जीवन से भी कही अधिक प्यारे थे, बचाया और पुलिस तथा फौज के अनेक प्रयत्नों के बावजूद कार्यकर्त्ता आजाद लोगों की तरह घूमते रहे।

कर्नाटक में लगभग १८ जगह गोलिया चली। बगलौर में दो दिन के अन्दर पांच जगह गोलिया चली। इस प्रकार प्रान्त में लगभग १७८ आदमी मरे और ६०० घायल हुए। लगभग १६ जगह लाठी चार्ज हुआ और ३१ दफा में लगभग ९० आदमी सख्त जख्मी हुए और सैकड़ो को छोटी-मोटी चोटें आई। पुलिस ने फरार व्यक्तियों को पकड़ने के लिए ढाई सौ से १५ सौ रुपए तक के इनाम की घोषणा की और लगभग साढ़े तीन सौ कार्यकर्ताओ को गजट द्वारा फरार घोषित किया। लगभग ३ लाख ३६ हजार रुपए गावो व शहरो पर सामूहिक जुर्माने के रूप में लगाये गये, पर वसूल इससे कही अधिक किया गया। लगभग १५ गावों मे इस जुर्माने को वसूल करने के लिए कुर्किया हुई। आन्दोलन-काल में लगभग ३ हजार कुर्कियां हुईं और लोगो के बर्तन, गाय, बैल, भैंस सभी कुर्क कर लिये गये। विभिन्न अपराधो में बहुत से लोगों पर मुकदमे चले और इस प्रकार कर्नाटक प्रान्त मे ५ आदमियों को फांसी की सजा हुई और ११ को काला पानी। इसके अतिरिक्त और भी बहुत से लोगों को लम्बी सजाएं हुईं। सारे प्रान्त मे लगभग ७१५७ आदमी गिरफ्तार हुए, जिनमे से २५०० मैसूर रियासत के थे।

इन इलाकों में से कुछ ने जुर्माना न देने का निश्चय किया। यह इलाके

निम्नलिखित है—पैंचापुर, हीरा पागेस, वादी और होसूर; बेलगांव जिले में कुमागिली और गाकारा। उत्तरी कनारा जिले में हीरावोगेसवादी ग्राम मे जब डिप्टी क्लेक्टर साहब १५ नवम्बर १९४२ को जुर्माना वसूल करने गये तो उस गांव के मुखिया और अहलकारान ने कलेक्टर के साथ जाने और उस गांव के लोगों की सम्पत्ति कुर्क करने मे मदद देने से साफ इन्कार कर दिया। उत्तरी डिवीजन के कमिश्नर ने तो साफ तरीके से सरकार को लिख दिया कि जुर्माना वसूल करने की नीति से लोगों के अन्दर और आग भड़कती है। फिर भी कर्नाटक में जुर्माना वसूल करने मे एक प्रकार की खुली लूट हुई। अनेकों जगह पुलिस ने सामान को लूट लिया और निर्दिष्ट जुर्माना देकर बाकी सामान अपने साथ ले गये।

कर्नाटक प्रान्त के न्याय-विभाग ने कितने ही व्यक्तियों को छोड़ दिया, जिन्हे नीचे की अदालतो ने बिना कानून-कायदे लम्बी सजाए दे दी थी।

कर्नाटक प्रान्त मे आन्दोलन-काल मे अनेक ऐसे उदाहरण मिलते है जब कि जनता ने बावजूद काफी उत्तेजना के हिंसा के मार्ग को नही अपनाया और न किसी व्यक्ति की सम्पत्ति को ही नुकसान पहुंचाया।

अमरगढ़ रेलवे स्टेशन के स्टेशन मास्टर ने एक प्रमुख कार्यकर्ता से शिकायत की कि उनका बटुआ छीन लिया गया है। उसने वहां पर उसकी तहकीकात की और उनका बटुआ वापस दिलाया।

इसी प्रकार जनवरी सन् १९४३ मे जब कि जनता की एक टुकड़ी ने अनकालजी पुलिस स्टेशन पर धावा बोला तो कुछ लोगों ने इन सिपाहियो का निजी सामान भी उठा लिया। पर बाद मे मालूम हुआ कि आग से बचाने के लिए उन लोगों ने उसे एक सुरक्षित स्थान पर रख दिया था। इस प्रकार के और भी कई उदाहरण मिलते है।

मैंने ऊपर कर्नाटक में होने वाले आन्दोलन का बाह्य रूप बताने का प्रयत्न किया है। जहां वह व्यापक था वहा संगठित भी था और उसकी गति-विधि से पता चलता है कि उसके नेता बड़े ही नीति-निपुण थे। यहां पर सामूहिक प्रदर्शन और तोड़-फोड़ दोनों ही प्रकार के कामों मे एक जैसी संगठन-शक्ति दिखाई देती है। जैसा मैंने ऊपर बताया है, यहा के लोगों में वीरता है और वे वीर की हृदय से पूजा करते है। इस कारण कर्नाटक प्रान्त में कितने ही ऐसे अपूर्व उदाहरण मिलते है जिनको सुनकर गर्व से छाती ऊंची हो जाती है। यदि इस प्रकार के उदाहरण कही यूरोप के रण-क्षेत्र मे हुए होते तो ब्रिटिश सरकार उन बहादुरों को तरह-तरह के खिताब और तंमगे देती, पर पराधीन

भारत में तो गोलियो द्वारा ही उनका स्वागत किया गया।

वीरतापूर्ण कार्य

हुबली में गोलियो की बौछार से नरेनदन नामक एक छोटी उम्र के बालक की मृत्यु हुई। मरने से कुछ पहले डॉक्टर ने उससे पूछा कि तुम क्या चाहते हो, तो उस बहादुर बच्चे ने अपनी मुट्ठी बांधकर जोर से कहा, "मै स्वराज्य चाहता हू, और कुछ नही।" अगले दिन १५ हजार के समूह द्वारा उसकी अर्थी सजाकर जुलूस निकाला गया।

बेलगांव जिले मे खदरीशिवपुर ग्राम मे ग्रामीण लोग एक जलसा करने के लिए इकट्ठे हुए और उन्होने अपने को पूर्ण स्वतन्त्र घोषित किया। यह खबर सुनते ही पुलिस के सुपरिण्टेण्डेण्ट सदल-बल गाव मे पहुचे। उस समय गांव में प्रभात-फेरी निकल रही थी। पुलिस अफसर ने लोगो को तितर-बितर होने का आदेश दिया। लेकिन जुलूस के नेता शोतिया जोतिया ने कहा, "हम आज़ाद लोग है और आपके हुक्म को नही मान सकते। डिप्टी सुपरिण्टेण्डेण्ट ने गोली चलाने की धमकी दी। नेता ने धमकी को नजरअन्दाज किया और वही उसे गोली मार दी गई।

सवादत्तकी ग्राम मे जब एक प्रमुख नागरिक अमाधपत की गिरफ्तारी हुई और उसे नभतल दायर के दफ्तर ले जाया गया तो एक बड़े हुजूम ने उसे पुलिस से छीनना चाहा। गोलिया चली और जनता ने उनका वीरतापूर्वक मुकाबला किया अन्त में अमाधपत को छोड़ दिया गया।

विद्यार्थियों और मज़दूरों का योग

अन्य प्रान्तो की भाति कर्नाटक प्रान्त में भी विद्यार्थियो ने आन्दोलन में अपूर्व जोश व बलिदान का भाव दिखाया। प्राय हर कस्बे में, जहा स्कूल थे, उन्होने हड़ताले की, भारत-रक्षा-कानून की धाराओं को तोड़ा और प्रचार के लिए गावो मे गये। कितनी ही जगह उन्होने स्टेशनो को जलाया। देवनगर और बहावर के विद्यार्थियो ने जुलूस निकालने, झडों की सलामी देने, बुलेटिन बांटने व छापने के कार्यो में विशेष हाथ बटाया। धारवाड, हुबली, घटक, गेरगाव के विद्यार्थियो ने विदेशी कपड़े और टोप इत्यादि जलाने तथा अपने प्रोफेसरो व अध्यापको को खादी से कपड़े देने के प्रोग्राम को चलाने का भी प्रयत्न किया। लगभग ३०० विद्यार्थियो को सजाए हुई। कितने ही विद्यार्थियों ने कई माह तक पनावा और देवनगर के बीच बग़ैर टिकिट सफर किया और रेलगाड़ी के इंजनो पर कांग्रेसी झडा लगाया और यूरोपियन लोगो को गांधी टोपिया पहनाने का प्रयत्न किया।

कर्नाटक में बहुत कम मिलें है। फिर भी भारत मिल्स और हुबली रेलवे वर्कशाप में हड़तालें रही।

आन्दोलन की विशेष बातें

सन् १९४२ के नवम्बर मास मे अखिल भारतीय खुफिया विभाग ने अपनी रिपोर्ट छापी थी। उसमें लिखा है कि कर्नाटक के प्रमुख कांग्रेस-नेता आन्दोलन से बाहर रहे अथवा फरार होगये। उन्होंने अपने सगठन को सुदृढ बनाकर सूब में तोड़-फोड के काम प्रारम्भ किये। पर वास्तविकता उसके विपरीत है। निस्सन्देह कर्नाटक के प्रमुख नेता बाहर रहे और उन्होने आन्दोलन का सगठन भी किया पर उन्होने अपनी पूरी शक्ति इस ओर लगाई कि आन्दोलन को लम्बे अर्से तक जारी रक्खा जाय और उस समय के विभिन्न कार्य-क्रमो को सफलता पूर्वक चलाया जाय। चूकि इन लागों का अपने-अपने इलाकों में गहरा प्रभाव था, इसलिए जनना ने उन्हें हर प्रकार की मदद दी। यह लोग खुले तरीके से गावो में घूमते थे और कार्य करते थे। हा, सरकारी कर्मचारियो के साथ सीघा मोर्चा न लेते थे। वे इस बात का ध्यान रखते थे कि किसी को जान की हानि न हो।

डेढ साल से अधिक काल तक कर्नाटक प्रान्त की जनता का साहस व जोश वैसा ही बना रहा, यद्यपि उसे दबाने व आतक फैलाने के अनेक प्रयत्न किये गये। पुलिस व फौज की लारिया गावो में घुमाई जाती थी पर जनता के हृदय मे लचक पैदा नही हुई। वह इस प्रकार के आक्रमणों की आदी हो गई थी और उसने उनके प्रत्युत्तर देने के तरीके भी सीख लिये थे। लारी के आते ही यथा-सम्भव दूसरे गावो मे खबर भेज दी जाती थी।

अन्तिम प्रयास

आन्दोलन का अन्तिम काल ५-११-४३ से शुरू होता है, जब कि कर्नाटक प्रान्त के कार्यकर्त्ताओ ने सत्याग्रह-समिति बनाई और आन्दोलन के अन्दर पुन: नई जान डाली तथा उसको सामूहिक रूप देने का प्रयत्न किया। समिति ने निश्चय किया कि सरकार की खाद्य-नीति तथा आये दिन होने वाली अन्य ज्यादतियों के विरुद्ध जनता को नये सिरे से अपना विरोध-प्रदर्शन करने के लिए प्रेरित किया जाय। सभाएं की जायं और जुलूस निकाले जाय तथा लगे हुए प्रतिबन्धों को तोड़ा जाय। इस प्रकार ५-११-४३ से ५-५-४४ तक ६०० आदमी और औरतो को सजाए हुई।

६ मई सन् १९४४ को जब गाधीजी छूटे तो कर्नाटक के कई कार्य-

कर्ताओ ने उनके आदेशानुसार खुले रूप से कार्य करके तथा अपने को सरकार को सौंपना शुरू कर दिया और इस प्रकार कर्नाटक प्रान्त का विद्रोह जो ९ अगस्त सन् १९४२ को शुरू हुआ था, कई उतार-चढाव के बाद समाप्त-प्राय हो गया।

कुछ आंकड़े

यद्यपि किसी प्रान्त के ठीक-ठीक आंकड़े प्राप्त करना मुश्किल है पर कर्नाटक के कांग्रेस नेताओं व कार्यकर्ताओ ने संगठन को इतना व्यवस्थित और सुदृढ बना रखा था कि उनका अपने प्रान्त के हर जिले, कस्बे व गांव से सीधा सम्बन्ध रहा। फिर भी जो आकड़े आगे दिये जाते है, हो सकता है कि वे अधूरे हो और वास्तविक आंकडे कही अधिक हो।

गिरफ्तारियां

जिला	सख्या	घोषित गिरफ्तारियां
बेलगांव	२३२६	२२
बेलारी	१५१	
बीजापुर	३६५	
कुर्ग	७४	
धारवाड़	१३३७	२८४
उत्तरी कनारा	६४४	१४
दक्षिणी कनारा	३८	
मैसूर राज्य	२५०४	
कुल योग	७४३९	३२०

आन्दोलन-काल मे सरकार ने फरारो को पकड़ने तथा तोड़-फोड़ के कार्यो का पता चलाने के लिए २५० रुपये से लेकर ५०० रुपए तक इनाम देने घोषणा की। इनमें से १० धारवाड जिले तथा ९ बेलगाव जिले के कार्यकर्ताओ के फरारो के लिए घोषित किये गये।

गोली-काण्डों में जन-हानि

कर्नाटक प्रान्त में आन्दोलन में गोली-काण्डों के फल-स्वरूप हमारे आकड़ो के अनुसार लगभग १८१ आदमी मरे और ५२० जख्मी हुए। कुछ स्थानो के अक प्राप्त न हो सके। बगलौर शहर में तोपखाने का भी प्रयोग किया गया और अश्रु-गैस कई बार छोड़ी गई।

जुल्मों की अन्य घटनायें

प्रान्त के कुछ ही स्थानो मे हुए जिन लाठी-प्रहारो के अंक प्राप्त हुए है उनके अनुसार इन स्थानों में ३१ मर्तबा लाठी-प्रहार हुए और उसके फल-स्वरूप ८९ व्यक्ति जख्मी हुए।

दक्षिणी कनारा के कार्यकर्त्ता श्री सञ्जीवन कामत को १५ बेत तार काटने के आरोप में लगाये गये।

आन्दोलन के सिलसिले में ५ को फासी, ११ को आजीवन कालापानी, ६ को ७ साल, ६४ को ५ साल, १५ को ४ साल और १२० को ३ साल कैद की सजाएं दी गई। साधारणतः कर्नाटक मे ६ माह से लेकर २ साल तक की सजाएं हुई। किन्तु कितने ही लोगों को डिस्ट्रिक्ट तथा ताल्लुका पुलिस में काफा अर्से तक रहना पड़ा।

निम्न प्रकार सामूहिक जुर्माने वसूल किये गये।

बेलगांव	१२	२०६००० रु०
बीजापुर	१	२००० रु०
धारवाड़	२३	६३९०० रु०
उत्तरी कनारा	२६	५३५०० रु०
मैसूर रियासत	४	२००० रु०
जमखन्डी रियासत	१	९००० रु०
कुल योग	७०	३३६४०० रु०

नोट.—केवल निपानी नगर से १॥ लाख रुपया वसूल किया गया।

अन्य कार्य

ब्रिटिश कर्नाटक के १६ स्टेशनो और मैसूर रियासत के ९ स्टेशनों पर हमले किये गये।

			जायदाद को हानि
ब्रिटिश कर्नाटक	८	५	३
मैसूर रियासत	३	८	१०

केवल एक पैसेंजर ट्रेन धोखे से उलट गई, किन्तु इस घटना में कोई भी जख्मी नहीं हुआ। उसके बाद कभी भी पैसेन्जर न ट्रेनही उलटी गई।

पुल व पुलियों को क्षति पहुचाने की २५ वारदातें हुई।

तार काटने की बेलगांव जिले में ५६०, बेलारी मे १३०, बाजापुर में ७०, धारवाड़ में ३९०, उत्तरी कनारा में १८० और मैसूर रियासत में ३५०।

इस प्रकार कुल १६८० घटनाए हुई। कुर्ग के आंकड़े प्राप्त नही हो सके।

डाकखानों की हानि

बेलगाम जिले के निपनी, नन्दागढ़, बेल्होनगल, सावाडवटी, गनपती-गली, बेलगांव शहर और १२ दूसरे डाकघरों को, बीजापुर के बगलकोट डाकखाने को, धारवाड़ के ९ डाकखानो को तथा मैसूर रियासत में बंगलौर शहर हैड पोस्ट आफिस और शहर के तीन और डाकघरों को नुकसान पहुँचाया गया। बेलगांव, गोकक, हुबली, बैंदगी, सिरसी और सीडापुर के मुख्य डाकघरों मे चिट्ठियों को जलाया गया।

नीचे लिखे अनुसार डाक की लारियों पर हमले किये गये और थैलों को लूटा गया—

जिला	लारियो की सख्या	थैलो की संख्या	चिट्ठियो के डिब्बे
बेलगांम	७	७२	—
बेलारी	१	१	२५
बीजापुर	—	३	५
धारवाड़	५	२९	०
उत्तरी कनारा	३	३	०
मसूर रियासत	—	—	१२

बेलगांव जिले में १८ छोटे डाकखाने पूर्णतः बन्द होगये थे और कुछ काल तक तो बेल्होगंली ताल्लुका के सारे छोटे डाकखानो की डाक तालुका पास्ट आफिस से मिलती थी।

बेलगाम जिले मे डाक बगलों और आरामघरो पर १७, बेलारी मे १, बीजापुर में ३, धारवाड़ में ९ और उत्तरी कनारा में ४। इस प्रकार कुल ३४ हमले किये गये।

बेलगांव मे १३६, धारवाड़ मे ६४ और उत्तरी कनारा में २५ गावो के इस प्रकार कुल २२५ रिकार्ड बर्बाद किये गये।

बगलौर शहर मे शराब व गांजे की सारी दूकाने एक माह तक पूर्णतः बन्द रही। बेलगांव जिले मे बेचप्नाष गांव के नजदीक २५० और मैसूर रियासत मे ५० ताड़ी के पेड़ काट डाले गए।

डीडवाद १५०० रु०, टोलगी ३००० रु०, हानर ६५० रु०, टीगाडोली ४५० रु०, नेगलर ८०० रु०, ईटागी और सेसलर ८०० रु० हेवल ३००० रु० कुल १०२०० रु० का सामूहिक जुर्माना किया गया।

युद्ध सम्बन्धी क्षति

१. युद्ध में भेजने के लिए गंगावती नदी के किनारे जो स्लीपर व लकड़ी जमा की गई थी उसे जला दिया गया। इस प्रकार लगभग एक लाख की क्षति हुई।

२. उत्तरी कनारा में हृथीकर में साल की लकड़ी के डिपो भी जलाये गये और लगभग १५ हजार का नुकसान हुआ।

३ उत्तरी कनारा में सिरसी में गवर्नमेंट के लकड़ी के स्टाक को आग लगाकर जला दिया गया।

४ बेलगाम में दो घास के फौजी स्टाक जला दिये गये और लगभग २० हजार का नुकसान हुआ।

पुलिस को निहत्था बनाना

पुलिस को निहत्ये बनाने के ६ प्रयत्न किये गए जिनमें लगभग २६ से अधिक पुलिस अफसरों व सिपाहियों के हथियार धरवा लिये गये और उन्हें निहत्था बना दिया गया। इसके अतिरिक्त पुलिस-चौकियों से कई जगह हथियारों को हटा लिया गया।

: ५ :

बिहार में खुला विद्रोह

कुछ आंकड़े

जिला	नजरबन्द	गिरफ्तार	दण्डित	मारे गये	घायल हुए	सामूहिक जुर्माना
पटना	—	४३३४	२२४३	३०	१२१	८,००,०००
मुंगेर	५४	९२७	३८८	८६	३५	१,९७,७००
चम्पारन	१७	२,००८	७००	२२	५५	१,०३,३५०
शाहबाद	७९	२२५५	१८१०	—	—	५०,०००
गया	४६	१,०३२	७८९	१४	—	३,५३,३००
हजारीबाग	३२८	१३,३१०	७,००१	५३३	६६९	१,७७,२००
भागलपुर	१०४	४,०००	१,०००	४४७	३६२	२,१८,४८०
मुजफ्फरपुर	६०	१००	३००	५०	१००	३,६९,०००
पूर्णिया	२५	१,४७५	७००	४६	६०	१,२८,०००
सारन	५५	२,०००	७१२	५१७	—	१,२५,०००
राची	१२	३९४	९१६	—	—	६,०००
दरभङ्गा	१८	१,२००	२००	३८	१००	४,८८,६००
मानभूम	—	—	—	५	१६	३४,६४०
सिंहभूम	२५	१७५	२७२	—	—	२,१६४
पलामु	८	—	३००	—	१,२८६	३,४००
सथालपरगना	—	६००	—	२६	—	५०,०००

नोट—विहार मे १२२ जगह गोलिया चली। ५२५० सरकारी सस्थाओं पर आक्रमण हुआ। १४४९ गॉव और ४७ सस्थाये सरकारी दमन और लूट की शिकार हुईं।

बिहार का वलिदान

सन १९४२ के आन्दोलन ने बिहार में अपना एक विशेष इतिहास बनाया है, जिसका प्रत्येक पृष्ठ व्यक्तिगत एव सामूहिक वीरता, अपूर्व जनो-

त्साह, बलिदान, हृदय-विदारक दमन, गांवों की लूट, सैनिको की पाशविक वृत्ति के नंगे नाच, अबलाओ, निरीह बच्चों तथा निरपराध जनता पर लाठियो और गोलियों की बौछार, राज-सत्ता प्राप्त करने के सामूहिक एवं व्यक्तिगत सफल और-असफल प्रयत्न तथा इसी प्रकार की अन्य सैकड़ों बातो से भरा पड़ा है।

साम्राज्यशाही के आक्रमण का उत्तर बिहारवासियो ने खुले विद्रोह द्वारा दिया और 'करो या मरो' मंत्र से उन्मादित हाकर मालूम पड़ता है सारा-का-सारा बिहार एक साथ समुद्र की भाति उमड़ पड़ा। क्या गाँव, क्या शहर, प्रान्त के कोने-कोने में विद्रोह फट पड़ा, जिसने मुर्दा दिलो में भी जान डाल दी और उन्हें स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए हँसते-हँसते प्राण निछावर करने के लिए तैयार कर दिया। ऐसा होना बिहार जैसे प्रदेश के लिए कोई आश्चर्य की बात नही है। क्रान्ति के सब कारण बिहार में परिपक्व दशा में पहुंच चुके थे। इसके अतिरिक्त बिहार सदा से ही हिन्दुस्तान का राजनैतिक एवं सास्कृतिक केन्द्र रहा है। उसके आंगन में देश की राजधानी रह चुकी है। उसने देश की स्वतंत्रता को आते-जाते देखा है। उसने संसार को भारत का सदेश सुनाया है। संसार के दो महान् धर्मो को उसने जन्म दिया है। उसे भारत की आज़ादी के कई प्रसिद्ध आन्दोलन छेड़ने एवं उन्हे सफल बनाने का श्रेय प्राप्त है। बिहार मे ही गाधीजी के नेतृत्व में चम्पारन का सत्याग्रह हुआ। रचनात्मक कार्य के कितने ही सुव्यवस्थित आश्रम, राजेन्द्र बाबू जैसे महान् तपस्वी नेता तथा अपने अपूर्व साहस, विलक्षण बुद्धि-कौशल आदि के द्वारा देश को मुग्ध एवं चकित करने वाले जयप्रकाश नारायण जैसे वीर—ये सब बिहार की ही देन है।

बिहार मुख्यतया कृषिप्रधान प्रान्त है। यहा कस्बे बहुत कम है। स्वभाव से ही यहां के लोग सीधे, सरल और धार्मिक प्रकृति के हैं। इनमें विश्वास, धैर्य तथा रचनात्मक कार्य करने की प्रवृत्ति स्वभावत. अधिक है। यहां पर कांग्रेस के अधिकाश नेता देहात के लोग है और इन पर गान्धीजी के सिद्धातों का गहरा प्रभाव है। हा सारन जिले में, जो श्री जयप्रकाशनारायण की जन्म भूमि एवं निवासस्थान होने के कारण समाजवादियों का मुख्य गढ़ माना जाता है, समाजवादी विचार बढ रहे है। किन्तु प्रान्त की जनता गान्धीजी तथा उनकी नीति से ही अधिक प्रेम करती है। अतएव जब ९ अगस्त को बम्बई शहर में ब्रिटिश नौकरशाही ने कांग्रेस पर पर्लहार्बर जैसा प्रहार किया और बिहार के प्राण राजेन्द्र बाबू भी जेल के सीखचो में बन्द कर दिये गये तो जनता क्षुब्ध हो उठी। वह अपने क्रोध को, अपने आवेग को, हृदय को विदीर्ण कर

बाहर फूट पड़ने वाले जोश को रोक न सकी और अपने प्रान्त के तथा जिले के प्रमुख नेताओं के पकड़े जाने के बावजूद उसने अपना विरोध अत्यन्त उग्र रूप में प्रकट किया।

आन्दोलन का रूप

विद्रोह का आरम्भ हड़तालो से हुआ। प्रान्त भर के प्राय. सभी स्कूलो तथा कालेजो के विद्यार्थी ब्रिटिश सरकार के इस निन्दनीय कार्य के प्रति अपनी हार्दिक घृणा प्रकट करने के लिए अपनी पढ़ाई को छोड़कर स्कूलो तथा कालेजों से बाहर आ गये। प्रान्त भर के व्यापारियों, मजदूरो आदि ने भी पूर्ण हड़ताल कर दी। स्थान-स्थान पर जुलूस निकाले जाने लगे और विरोध प्रदर्शन किया जाने लगा। पर जनता को इससे सन्तोष न हुआ। क्रोधित एव उन्मादित जनता कुछ अधिक करना चाहती थी। उसने मिस्टर एमरी का कांग्रेस प्रोग्राम सम्बन्धी ब्राडकास्ट भाषण सुना। उधर बम्बई से लौटे हुए कार्यकर्ताओ ने जनता को बताया कि उन्हें सरकारी व्यवस्था को अस्त-व्यस्त कर उसे मटियामेट कर देना चाहिए। अत. १३-१४ अगस्त से ही विहार मे सरकारी सत्ता पर कब्जा करने, रेल, तार, डाक, इत्यादि महकमो को अस्त-व्यस्त करने तथा गुलामी के जूए को उतारकर उसके स्थान पर अपनी स्वतंत्र सरकार स्थापित करने के सफल एवं असफल प्रयत्न क्या शहर, क्या गाँव, क्या बाज़ार, क्या घर सभी जगह प्रारम्भ होगये।

एक हज़ार से कही अधिक डाकखानो पर जनता ने या तो कब्जा कर लिया या उन्हे बरबाद कर दिया। इस प्रकार बहुत से गांवो में कोई डाकखाना ही न रह गया था। इन गावों मे स्वयं सेवको के सगठित दल घूमते थे और मोर्चा-सा बनाकर रहते थे। गाँवो के लोगों को आशका थी कि कोई बाहरी ताकत उन पर हमला करेगी। अत अपनी सत्ता व सम्पत्ति को बचाने के लिए उन्हे सतर्क रहना है। यद्यपि विद्रोह का साम्राज्य छाया हुआ था, परन्तु सराहनीय बात यह थी कि गाँवो में कोई लूट-मार के चिह्न नही थे। हिन्दू और मुसलमान दोनो ही सामूहिक रूप से पचायते बना रहे थे और शान्ति स्थापित करने के प्रयत्न कर रहे थे। कितने ही गाँवो पर जब फौज ने धावा बोला तो वहाँ के लोगो ने सगठित एवं शातिमय तरीको से दमन का मुकाबला किया। मुजफ्फरपुर के जिले में जनता ने लकड़ी के ढाल बनाकर गोलियो का मुकाबला किया। कुछ गावो में देहाती लोगों ने लम्बे-लम्बे बाँसों में आग लगाकर फौजी लारियो का मुकाबला करने की सोची थी। प्रायः हर गाँव में पचास स्वयसेवक रहते थे और कुछ गाँवों में तो उनका संगठन और मोर्चाबन्दी इतनी अच्छी

थी कि फौजवालो को उस गांव में घुसने से पहले सोचना पड़ता था। संथाल परगना तथा दक्षिणी डिवीजन के सिंहभूम, मानभूम, हजारीबाग आदि कुछ जिलों को छोड़कर बाकी सभी जगह यह आन्दोलन अभूतपूर्व उत्साह के साथ चला। पर इसका मतलब यह नही कि उन जिलो में वलिदान न हुए। बलिदान अवश्य हुए और उनका भारत के स्वतन्त्रता-युद्ध में एक विशेष स्थान है। कहने का तात्पर्य इतना ही है कि अन्य जिलो की अपेक्षा उनमें आन्दोलन की गति धीमी रही। पूर्वी तथा पश्चिमी विहार में तो लाखों की तादाद में जनता उठी और उसने ब्रिटिश शासन के चगुल से निकलने के विभिन्न रूपों में अनेक सफल व असफल प्रयत्न किये।

आन्दोलन की विशेषता

आन्दोलन की घटनाओ पर विचार करते समय हमारा ध्यान उसकी दो एक खास बातो पर गये बिना नही रहता। प्रान्त के मुसलमानो न भी अपने भाइयों के साथ इस आन्दोलन में काफी भाग लिया। प्रान्त में आन्दोलन सबधी मुस्लिम बन्दियो की सख्या २५० तक पहुँच गई थी। काफी प्रलोभन दिये जाने पर भी मुसलमानों ने आन्दोलन में सहयोग देने से मुंह न मोडा और उनको अपने पर बडा नाज़ है। यहाँ की स्त्रियों ने भी पुरुषो के साथ कधे-से-कधा भिडा कर स्वतन्त्रता की इस लडाई में वीरता का परिचय दिया।

जेलों पर हमला

विहार प्रान्त में कई स्थानो पर उत्तेजित जनता ने जेलो पर हमले किय और कैदियो को भगा दिया। मधुवनी में कैदियो ने जेल अधिकारियो के विरुद्ध विद्रोह कर दिया, सुपरिन्टेन्डेण्ट पकड़ लिया गया और जबरन जेल में ठूंस दिया गया। राजनीतिक कैदियो को छोडकर बाकी सब कैदी जेल से भाग निकले, किन्तु उनमे से दो बाद में पकड़ लिये गये। करीब ३००० व्यक्तियों ने हाजीपुर जेल पर हमला किया। जेल के फाटक नष्ट-भ्रष्ट कर दिये गये और करीब १०० कैदी, जिनमे राजनैतिक कैदी भी शामिल थे, जेल से फरार हो गये। बाद में कुछ राजनैतिक कैदी पुलिस के हाथो पड़ गये और बुरी तरह पीटे गये, गधे पर चढ़ाकर घुमाये गये तथा उन पर ८०,००० रुपया जुर्माना किया गया। सीतामढ़ी में १० हजार लोगो ने अपने नेता ठाकुर मडलसिंह तथा दूसरे कैदियो को मुक्त करने के लिए जेल को चारो ओर से घेर लिया। पुलिस ने जनता पर अश्रु गैस का प्रयोग किया किन्तु जनता धैर्य के साथ डटी रही और आखिर जेल पर कांग्रेस का तिरगा झडा लहराकर मानी। आरा और गोड़ा (संथाल

परगना) की जेलें भी जनता के क्रोध का शिकार बनी और वहां से क्रमश· ७००
तथा ६०० कैदी भगा दिये गये ।

विद्यार्थियों का कार्य

बिहार के आन्दोलन में विद्यार्थियों तथा गाँवो के नौजवानो ने खास हिस्सा लिया । नई विचार-धारा से प्रभावित इन विद्यार्थियो तथा नौजवानो के झुड-के-झुड घर-घर गली-गली एव गाव-गाव से निकल-निकल कर स्थान-स्थान पर घूमने लगे और जनता को अपनी स्वतंत्र 'सरकार स्थापित करने का दिव्य-सदेश सुनाने लगे । इन नौजवानो में त्याग था, उत्साह था, जोश था और थी अपने देश को स्वतत्र करने की तीव्र इच्छा । उनकी वाणी मे मुर्दा दिलो में भी जोश भरने की शक्ति थी । यही कारण था कि अधिकांश जगह गाँवो में फैले हुए सरकारी कर्मचारियो को जनता की इस उमडती हुई बाढ के सामने अपना सिर झुकाना पडा और गाँव-गाँव मे सरकारी इमारतो पर काग्रेस के झडे लहराते हुए दिखाई पड़ने लगे । लोगो ने कम-से-कम कुछ दिन के लिए तो जाना कि स्वतन्त्रता क्या चीज है ?

तोड़-फोड़

बिहार मे तोड़-फोड़ का प्रोग्राम तब प्रारम्भ हुआ जब जनता तथा उस समय के नेताओ को दिखाई देनें लगा कि अब ब्रिटिश सरकार अपना राज्य पुन· स्थापित करने तथा जनता को कुचलने के लिए बड़े पैमाने पर पुलिस और फौज इधर-उधर भेज रही है । जनता सरकार की इस नीति से घबरा उठी । उसके पास सुसज्जित सैनिको का मुकाबला करने के लिए आवश्यक सामान कहा था ? अतएव उसे सरकार की इस कोशिश को विफल करने का यही एक तरीका दीख पड़ा कि चारो और रेल-तार काट दिये जाय, स्टेशन जला दिये जाय और इस प्रकार यातायात के साधन नष्ट कर दिये जाय । इस प्रोग्राम में उसने काफी सफलता प्राप्त की । पूर्वी, पश्चिमी तथा उत्तरी जिलो के थोड़े से स्टेशनो को छोड़कर प्राय सभी स्टेशन या तो जला दिये गये थे या उन्हे वहुत अधिक नुक़सान पहुँचा दिया गया । मीलो तक रेल की पटरियाँ उखाड़ दी गई । पूरे अगस्त और १५ सितम्वर तक यही हालत रही । न कही टिकिट मिलते थे और न .कही उन्हे काटने की पंचिग मशीन तथा अन्य औजार ही मिलते थे । वहुत दिनो तक लोग एक ही टिकट द्वारा सफर कर सकते थे और तार इत्यादि भेजने का सिलसिला तो कई महीने वाद जारी हुआ ।

शाहबाद, आरा, दरभंगा, चम्पारन, मुजफ्फरपुर, भागलपुर, मुंगेर, पुर्णिया आदि जिलो मे लगभग ८० प्रतिशत देहातों मे स्थित थाने अपने सदर मुकामो पर आ गये थे और कितनी ही जगह ये जिले के सदर मुकाम भी घब-राहट की स्थिति मे कार्य कर रहे थे। जिले की कचहरियाँ बन्द हो गई थी और इन जिलो के देहातो में अंग्रेजी राज्य के अधिकांश चिह्न गायब होने लगे थे। यह स्थिति कुछ इलाको मे अगस्त मास तक और कुछ जिलो मे एक डेढ़ मास बाद तक ही टिक सकी।

मजदूरों का सहयोग

बिहार प्रान्त मे टाटानगर तथा डालमिया नगर दो ही प्रधान औद्योगिक केन्द्र है। राष्ट्र-नेताओ की गिरफ्तारी का समाचार सुनते ही टाटानगर के मजदूर भी क्रोधित एव अधीर हो उठे। उन्होने विरोध स्वरूप हड़ताल करने का निर्णय किया। इसी बीच १५ अगस्त की रात को उनके पाच नेता श्री एम० जोहन, एम० के घोष, टी० पी० सिन्हा, एन० सी० मुकर्जी तथा त्रेता-सिंह उनसे छीनकर जेलो के अन्दर ठूंस दिये गये। त्रेतासिंह २८ वर्ष के वह नौजवान सिक्ख थे जिन्हे जेल की सख्तियो के विरुद्ध दो बार भूख हड़ताल करनी पड़ी। दूसरी भूख हड़ताल समाप्त होने के बाद ही वह वीर पटना के सरकारी अस्पताल मे अपना यह नश्वर शरीर देश की वेदी पर उत्सर्ग कर सदा के लिए शान्त होगया। मजदूर लोगों का क्रोध चरम सीमा पर पहुँच चुका था, अब वे उसे दबाए रखने मे असमर्थ थे। परिणामस्वरूप २० अगस्त से ३०,००० मजदूरो की हड़ताल आरम्भ हुई। क्या बूढ़े, क्या जवान, क्या हिन्दू, क्या मुसलमान, क्या स्त्री, क्या पुरुष सभी श्रेणी के मजदूरों ने हड़-ताल में भाग लिया और इस तरह यह दिखा दिया कि देश के नेताओं के प्रति उनकी कितनी हमदर्दी है तथा देश की स्वतन्त्रता को वे अपने व्यक्तिगत सुख एवं आराम से कितना अधिक महत्त्व देते है। मजदूरों की यह हडताल लगातार १३ दिन तक चलती रही। उसकी यह विशेषता थी कि वह पूर्ण अहिंसात्मक रही। जन तथा धन किसी की भी कुछ हानि न की गई। श्री टी० एम० शाह के शब्दों मे, "हड़ताल इतनी स्वाभाविक तथा शान्तिपूर्ण थी कि अमेरिकन और अन्य विदेशी सैनिकों को भी इसकी भूरि-भूरि प्रशसा करनी पड़ी और यह कहना पडा कि इस तरीके की हडताल की हम अपने देश के मजदूरों से भी आशा नही कर सकते।" अधिकारी वर्ग ने मजदूरो में फूट डालने तथा नये मजदूर भरती करने के लिए तरह-तरह से लालच दिये, धमकाया, डराया,

बहकाया पर एक भी मजदूर हड़ताल तोडने के लिए तैयार नही हुआ। हर एक को इस बात का गर्व था कि वह अपने लिए नही, अपने परिवार के लिए नही, बल्कि अपने देश की स्वतन्त्रता के लिए लड रहा है। बहुतों ने अपनी जान जोखिम मे डाली, फैक्टरी के दरवाजो पर पिकेटिंग की, जेल गये तथा अन्य बहुत-सी मुसीबतो को झेला। इस प्रकार का प्रदर्शन अन्य स्थानों के मजदूरों ने भी किया और अपने बलिदान तथा त्याग द्वारा देश की स्वतंत्रता की लड़ाई को आगे बढाया।

बिहार प्रान्त में सरकारी दमन का इतिहास हृदय-विदारक, खून खौला देने वाली लज्जाजनक घटनाओ व काडों से भरा पड़ा है। इसका हरेक पृष्ठ निहत्थे किन्तु उत्तेजित लोगों के खून से रंगा हुआ है। नौकरशाही ने जिस क्रूरता से लोगो की भावनाओं को कुचलना चाहा वैसा सम्भवतः संसार में अन्यत्र शायद ही किया गया हो। बिहार के हरे-भरे सम्पन्न गांव किस प्रकार श्मशान में परिवर्तित कर दिए गये, इसकी अपनी ही रोमाञ्चकारी कहानी है, जिसको सुनकर दिल दहलने लगता है, आखो मे खून उतर आता है और शरीर का एक-एक अंग विद्रोह करने लगता है।

टॉमी, गुरखा, पठान, जाट, आदि सैनिक मनमाना अत्योचार करने के के लिए प्रान्त के प्रायः सभी जिलो मे छोड़ दिये गए। प्रारम्भ मे गोरे सिपाही भी भेजे गये क्योकि नौकरशाही काले सिपाहियो पर पूर्णतया विश्वास नही कर सकती थी। इन गोरे सिपाहियो ने नशे में चूर होकर अंधाधुध लोगो का गोलियो का शिकार बनाया। बहुत जगह इन मनचले सिपाहियो ने दिलबहलाव के लिए भी गोली के वार किये। गांवो को लूटा गया, जलाया गया तथा इस प्रकार आतक जमाकर पुन. ब्रिटिश राज-सत्ता के चिह्न पुनर्जीवित किये गए। जिलो मे थाने पुनः वापिस गये। जो सिपाही तथा थानेदार जनता के डर से भाग गये थे वे अब फौज की सहायता से फिर अपनी—अपनी जगह बुला लिये गए। फौजी लोग तथा पुलिस के कर्मचारियों ने स्त्रियों के साथ भांति-भांति के अत्याचार किये। उन्हे नगा कर-पीटा गया, घसीटा गया, उनके साथ बलात्कार किया गया। कितने ही ग्रामीण लोगो को बुरी तरह पीटा गया, कितनों को पकड़ने की धमकी देकर उनसे रुपया ऐंठा गया। खाते-पीते लोगों को केवल अपनी सम्पत्ति के कारण और भी अधिक तकलीफों का सामना करना पड़ा। पुलिस व फौज के सिपाहियों की इन पर खास दृष्टि रही और यही लोग थे जिन्होंने युद्ध-प्रयासों में काफी पैसा दिया था।

चर्खा-संघ पर हमला

बिहार प्रान्त मे चर्खा-सघ की सस्थाए भी पुलिस के दमन से अछूती न रही। पहले-पहल पुलिस ने मधुवनी केन्द्र पर, जो जिले का प्रधान केन्द्र है, हमला किया और उसकी तमाम सम्पत्ति पर मोहर चपड़ी लगा दी । बाद में तो सकोरा, लहेरिया, सराय, मुजफ्फरपुर, मामजद, पाजनगर, बरसिघयार, हाजीपुर, भगन, बिगडा, नवादा, शिवनार, चाववाला, राँची आदि स्थानो के खादी आश्रमो पर भी सरकार ने कब्जा कर लिया और उन पर मोहर चपड़ी लगा दी गई। शकरपुर, हहदपुर, खजाँली, ऊमगाँव, हयखा, भैरावा, डीघवाडा, सीतामढी तथा बिथौली के खादी भडारों में आग लगा दी गई और तमाम सामान जलाकर राख कर दिया गया। महदपुर, मघुपुर, भानीगची, विक्रम एवं बेदुल में तो पुलिस तथा फौजियों ने खादी भंडारो को बुरी तरह लूटा और इस प्रकार कमीनेपन का परिचय दिया । बिहार चर्खा-सघ के ६० से अधिक मुख्य कार्यकर्ता जेल के सीखचो मे बन्द कर दिये गए। सघ से जिसका थोड़ा बहुत भी प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष सम्बन्ध था पुलिस वालो ने उसे भी अछूता न छोड़ा। संघ के कपड़े धोने वाले बेचारे धोबियों के घर भी लूट लिये गए।

इनके अतिरिक्त पुलिस तथा फौजियो के अन्य जघन्य एवं अमानुषिक कृत्यों का विवरण जिलो के विवरण मे आगे दिया जायगा।

१. पटना जिला

पटना सम्पूर्ण बिहार प्रान्त का सदर मुकाम है, अतएव आन्दोलन का श्रीगणेश भी यही से हुआ। बम्बई में नेताओं की गिरफ्तारी के साथ पटना मे राजेन्द्र बाबू के पकड़े जाने से जनता क्षुब्ध हो उठी। पटना तथा अन्य शहरो में हडताल प्रारम्भ होगई। पटना के सब स्कूल तथा कालेज बन्द हो गये। उत्तेजित जनता ने रेल, तार, डाक आदि प्राय. सभी सरकारी सस्थाओ पर अपना अधिकार जमा लिया और पूर्ण रूप से सरकारी शासन को पगु बना दिया। पुलिस चौकियो तथा सरकारी कचहरियो पर भी जनता का अधिकार हो गया। बडे-बड़े सरकारी अफसरो को या तो अन्य स्थानो पर भाग जाना पड़ा या जनता को आत्म-समर्पण कर अपनी जान बचानी पड़ी । यातायात के सभी साधन नष्ट कर दिये गए, जिससे वहाँ की कोई खबर बाहरी दुनियां को न मिल सकी। इस प्रकार कुछ दिनो के लिए पटना दुनियो के दूसरे हिस्सों से एक प्रकार अलग-सा हो गया।

सोमवार १० अगस्त का दिन पटना के इतिहास मे अत्यन्त महत्त्वपूर्ण दिन था। इस दिन जिस उत्साह एवं जोश के साथ दो-चार नही, दस-बीस नही, सैकड़ो-हजारों की संख्या मे स्कूलों तथा कालेज के लड़के राष्ट्रीय झडे हाथ में लिये शहर की सड़को पर घूम रहे थे, उसका स्मरण कर मुर्दा दिलों मे भी जोश आये बिना नही रह सकता। यह वह दृश्य था, जिसने नौजवानो को हँसते-हँसते देश की आजादी के लिए अपने प्राणो के कुर्बान होने का सबक सिखाया था, यह वह अपूर्व पर्व था जिसने स्त्रियों को अपनें भाइयो तथा पतियो के साथ स्वतन्त्रता के इस पवित्र युद्ध में कन्धे-से-कन्धा भिड़ाकर लड़ने को तैयार किया था, राष्ट्रीय सैनिको की यह वह परेड थी, जिसने छोटे-छोटे बच्चो को अपनी जाने न्योछावर करने को तैयार किया था।

स्वतन्त्रता के ये नौजवान सिपाही, कांग्रेस के अहिंसा के सिद्धान्त का पूरी तरह से पालन करते हुए जगह-जगह लोगो को बलिदान करने के लिए तैयार करते हुए घूमने लगे। सरकारी अधिकारियो ने पुलिस की सहायता से उन्हे तितर-बितर करना चाहा। पर नौजवानों के त्याग ने सिपाहियो का दिल दहला दिया और उन्होने लाठी चार्ज करने से साफ इन्कार कर दिया। ११ अगस्त को सवेरे से प्रभात फेरियाँ शुरू हुईं। स्कूलों तथा कालेजो में पिकेटिंग प्रारम्भ हुआ। पिकेटिंग करने वालो पर लाठी चार्ज किया गया। कई पकड़े गये, बहुतो को चोटें आईं। सारा शहर इन नारो से गूज रहा था। "बम्बई से आई आवाज, इन्कलाब जिन्दाबाद" "जेल की कड़ियाँ करें पुकार, इनकलाब जिन्दाबाद" ऐसा प्रतीत होता था मानो शहर का एक-एक कण 'इन्कलाब जिन्दाबाद' की ध्वनि कर रहा है। विद्यार्थी गण बड़ी उमग के साथ आगे बढ रहे थे। पुलिस लाइन के पास कलक्टर आर्चर कुछ घुड़सवारो तथा लाठी धारी सिपाहियो के साथ जुलूस को रोकने के लिए खड़ा था। मौलवी बशीर ने बढ़ती हुई जनता पर लाठी प्रहार करने का हुक्म दिया, किन्तु मि० आर्चर के रोक दिये जाने पर जनता उसी गति से आगे बढ़ती गई। गर्ल्स हाई स्कूल के पास जुलूस पहुँच गया। अचानक जनता पर बेतो की वर्षा होने लगी, घोड़े दौडाये जाने लगे, लाठी का प्रहार होने लगा। बलूची घुड़सवारो ने बड़ी बर्बरता का परिचय दिया। जनता तितर-बितर हो गई। सैकड़ो देशभक्त लाठी के शिकार हुए। किसी का हाथ टूटा, किसी की टाग टूटी, किसी का सिर फट गया, किसी के छाती पर चोट आई तो किसी के दात टूट गये। जनता मे प्रतिहिंसा की आग जल उठी। बिखरे हुए लोग इकठ्ठे हो गए और अत्याचारियो पर ईंटो से प्रहार करने लगे। पर जनमत हिंसावृत्ति के पक्ष में न था। अतएव लोगोने अपना

बालक ने आतुर भाव से डाक्टर से प्रश्न किया—"मेरे गोली कहां लगी है पीठ पर या सीने मे ?" डाक्टर लडके के भाव को समझ गया। उसने गोली के घाव की ओर इशारा करते हुए कहा, "गोली सीने के बीच मे लगी है।" लडका कुछ मुसकराया और बड़े गर्व के साथ धीमे स्वर में बोला, "अच्छा, लोग यह तो न कहेंगे कि भागते हुए के गोली लगी थी।" बस, अन्तिम शब्द के साथ उसके प्राण पखेरू इस नश्वर शरीर को त्याग कर उड गए। वह बालक तो आज दुनिया में नही हैं, किन्तु उनका बलिदान भारत के स्वतन्त्रता के युद्ध मे अमर हो गया है।

घायलो के शरीर से जो गोलियाँ निकाली गई थी, उनकी जांच करने से पता चला है कि वे दमदम गोलिया थी, जिनका व्यवहार अन्तर्राष्ट्रीय विधान के मुताबिक युद्ध-काल मे भी मना है।

सरकार का दमन चरम सीमा को पहुँच गया था। उसकी प्रतिक्रिया भी होनी थी। लोग अपने भावो को अधिक न रोक सके। उन्होंने हिंसा का जवाब हिंसा से देने की ठान ली। फलस्वरूप पटनासिटी स्टेशन गोदाम, शहर के सब लेटर बक्स, पटना-जकशन, पोस्ट आफिस आदि अनेक सरकारी स्थान जनता के क्रोध के शिकार बने। बहुत से इंजन तोड डाले गये, बिजली के तार कट गये, खम्मे तथा रेल की पटरियाँ उखाडी गईं। शहीदो की चिताओ से उठी हुई यह हिंसा की प्रबल ज्वाला पटना शहर तक ही सीमित न रह सकी। वह सम्पूर्ण पटना जिले तथा सारे बिहार प्रान्त मे फैल गई।

दो तीन दिन तक जनता का राज्य रहा। १४ अगस्त को १० हजार टॉमी फौज शहर में जा पहुची। गोरे फौजी लारियो में भर-भर कर नगर में गश्त लगाने लगे और लोगो पर भांति-भांति के अत्याचार करने लगे। बड़े-बड़े प्रोफेसर, डाक्टर तथा अन्य अफसर भी गोरो के इन अत्याचारो से न बच सके, फिर साधारण जनता का तो कहना ही क्या ? समस्त शहर में सैनिक राज्य स्थापित हो गया। दो दिन बाद और पलटन आ गई और टोलिया बनाकर इन लोगो ने सारे पटना जिले पर अपना अधिकार जमा लिया।

पटना के अतिरिक्त विक्रमपुर, बाढ़, बख्तियारपुर, गिरियकुस्थावां, सिलान, हिल्सा, चडी व एकागसराय थानो मे आन्दोलन का जोर अधिक रहा। गिरियकुसिलान, स्थावा, हिल्सा, चंडी व एकागसराय के थानो पर से तो पुलिस वापिस बुला ली गई थी और काफी अर्से तक वहां ब्रिटिश सरकार की सत्ता गायब रहा। बिहटा, गुलजारबाग, सपिसोपुर, नेपस, हरदासडीघा, करौता, अथ-मल, गोला, अंगार, पटना सिटी, बकाघाट, फतुआ, खुसरापुर, मोकामाघाट

आदि कई अन्य स्टेशनों पर भी जनता ने आक्रमण किये और आग लगाई तथा फर्नीचर वगैरा को नष्ट किया। हिल्सा और बिहार शरीफ की कचहरियो पर भी झडे फहराए गए तथा उन्हें जबरदस्ती बन्द करा दिया गया। फतुहा म दो कनाडियन अफसर उत्तेजित जनता द्वारा जला दिए गए। मुकासा और बिहटा की प्रसिद्ध लूटें हुई जहाँ हजारो गट्ठर कपड़ा लूटा गया।

फुलवारी मे गोली चार्ज में १७ आदमी मरे। बाढ मे ८ आदमी घायल हुए तथा एक की मृत्यु हुई। बिक्रम में दो मरे तथा ४० घायल हुए। नौबतपुर में भी एक आदमी मारा गया। इसी प्रकार अन्य जगहो पर भी बलिदान हुए है, पर उनके आकड़े प्राप्त नही हो सके है।

पटना जिले में सरकार का दमन बड़े अमानुषिक ढंग पर हुआ। कहा जाता है कि बिहार शरीफ की जेल में कैदियों का पानी की जगह पेशाब तक पिलाया गया था। कई दूसरी जगह प्रतिष्ठित व्यक्तियों को पकड़ कर उनसे गन्दी नालियों को साफ कराया गया।

२. मुंगेर जिला

मुगेर जिले में कांग्रेस का प्रचार खूब हुआ है। अगस्त १९४२ मे ता श्रीकृष्णसिंह तथा जगलाल चौधरी, भूतपूर्व मन्त्री बिहार सरकार, ने काफी तूफानी दौरे किये थे और समय पर मुस्तैदी के साथ आन्दोलन मे जूझ पड़ने के लिए वहा की जनता का आह्वान किया था। ९ अगस्त से यो तो अहिंसात्मक रूप से हड़ताल, जुलूस, पिकेटिंग आदि आरम्भ होगए थे, किन्तु १४ तारीख को अचानक तोड़-फोड़ प्रारम्भ हो गई। समस्त जिले मे एक भयकर तूफान खड़ा होगया। लड़कियो ने भी आन्दोलन में भाग लिया। कचहरी पर तिरगा झण्डा फहराया गया, पिकेटिंग किया गया और वकीलो को वकालत स्थगित करने के लिए लाचार कर दिया गया। जिले के २० थानो में से १७ थाने आन्दोलन के शिकार हुए। बलिया, खडगपुर तथा तारापुर के थानो मे ताले डाल दिये गए और व्यवस्थाओं का भार जनता ने अपने ऊपर ले लिया। तारापुर में तो शासन-प्रबन्ध-समिति बनी, न्यायाधीश नियुक्त हुए तथा स्वयसेवको का दल सगठित किया गया। जिले भर के समस्त प्रमुख-प्रमुख स्टेशन जला दिये गए। गिद्धौर, झाझा, बादलपुरा, बखरी, परिहारा, खडगपुरा, असरगज, गोगरी, बख्तियारपुर, क्यूल तथा शेखपुरा के डाकखाने एवं खगड़िया व क्यूल तथा कई अन्य स्थानो के शराबघर भी आक्रमण के शिकार हुए। जमई, बेगुसराय, खगडिया और मुगेर की कचहरियो पर झडे फहराये गए और उनमे ताला लगाया गया। खड़गपुर, गोगरी क्यूल और शेखपुरा के रजिस्ट्री ऑफिस के

कागज़ात गलियों मे फेक दिये गए। बरियारपुर तथा तारापुर के पुल तोड़े गये। खगड़िया बैंक और मिस्टर एविन्स की कोठी पर भी धावा हुआ। बरौनी का कोयला-डिपो व जमुई तथा खड़गपुर के हाई स्कूलों के फर्नीचर और लाइब्रेरी की पुस्तकें बर्बाद कर दी गईं। समस्तीपुर से खड़गपुर जाने वाली रेलगाड़ा पर कब्जा कर लिया गया और उसे आज़ादी का सन्देश ले जाने वाले स्वयंसेवको के लिए प्रयोग किया गया।

मुगेर में विद्यार्थियों को जुलूस बड़े वेग के साथ राष्ट्रीय नारे लगाता हुआ आग बढ रहा था। पुलिस ने उसकी गति का रोकना चाहा और वह अचानक लोगों पर लाठी-प्रहार करने लगी। किसी का कपाल फटा तो किसी का हाथ टूटा; कोई अपने नाक कान सम्भाल रहा था तो किसी की छाती में चोट लगी दिखाई देती थी। नगर के प्रसिद्ध वकील श्री निरापद मुखर्जी पुलिस की इस बर्बरता को देख रहे थे। उनका खून खौल उठा, आंखे क्रोध से लाल हो गईं। वे उत्तेजित होकर आगे बढ़े तथा गरजकर अंग्रेज सार्जेण्ट को ललकारा "इन मासूम बच्चे-बच्चियो को क्या मारते हो, मेरी छाती पर मारो। मै देखना चाहता हूं कि तुम्हारी बन्दूकों में कितनी गोलियाँ है, तुम्हारी लाठियों में कितनी शक्ति है।"

तारापुर मे जनता ने थाने पर अधिकार करके नये दारोगा तथा जमादार नियुक्त किये। चौकीदारो को नई हुकूमत की आज्ञा-पालन करने का हुक्म हुआ। गावो मे अमन तथा शान्ति स्थापित करने के लिए स्वयसेवको का एक दल संगटित किया गया और गाव-गांव में पचायतें बनाई गई एव उनके ऊपर पांच न्यायाधीश मुकर्रर किये गये। शासन-प्रबन्ध अत्यन्त सुन्दर रहा और जनता के जान-माल की चोरो तथा बदमाशो से रक्षा की गईं। अन्य स्थानो पर जब पुलिस अंधाधुन्ध लूट-खसोट कर रही थी तो सग्रामपुर के एक धनी ग्वाले ने सोचा कि अपने धान के ढेर पुलिस की भेट करने के बजाय गरीब भाइयों में बांट दिये। सेबोर मे सरकारी कृषि फार्म पर जनता को बड़ी मुसीबतें सहनी पड़ी। फौज ने चारो ओर से गांव को घेर लिया और धान के गोदाम लूट लिये। फौजियो ने एक हिन्दू तथा एक मुसलमान के घर पर भी हमला किया और ४०—५० तोले सोना लूट लिया। कलापुर में क्रोधित जनता ने स्टेशन पर हमला किया और उसमें आग लगा दी। तारापुर में अमरीकन फौजी बलाये गए, पर न जाने क्यो उस दिन उन्होने गोली चलाने से इन्कार कर दिया। उत्तेजित जनता स्टेशन पर टूट पड़ी और उसे जलाकर राख कर दिया। स्टेशन मास्टर जैसे-तैसे अपनी जान बचाकर भागा।

इस जिले में जनता कितने उत्साह, जोश एवं आवेग के साथ विद्रोह कर रही थी इसका पता इसी से लग सकता है कि जब सरकार को लाठी तथा गोली से कुछ सफलता न मिल सकी तो उसने आम जनता पर निर्दयता पूर्वक हवाई जहाज से गोलियो की बौछार की। जनता के लिए इस प्रकार का आक्रमण विलकुल नया था। अतएव ४० व्यक्ति शहीद हुए और ३५ बुरी तरह घायल हुए। मामूली तरीके से घायल होने वालो की सख्या तो अनगिनत थी। इसके अलावा बेगुसराय, वरिआरपुर, खड़गपुर, नौगाची, खगड़िया, मानसी, गोगरी, महेशखूट, मदारपुर, रोहियार, सूर्यगढा, तेघडा आदि १६ अन्य स्थानो मे भी गोली चली जिससे ४० आदमी मारे गए और बहुत से घायल हुए। वरियारपुर मे समूह के एक-एक व्यक्ति को गोली का शिकार बनाया गया तथा ९० गैर सैनिको ने जनता को बुरी तरह पीटा और कइयो को घायल कर दिया। कोचाही मे राह चलते आदमियो पर गोली चलाई गई।

३. चम्पारन जिला

चम्पारन भारत के इतिहास मे महात्मा गान्धी के नेतृत्व मे हुए प्रथम सत्याग्रह के रूप में बहुत प्रसिद्ध होचुका है। इसको काफी समय तक महात्मा गान्धी एवं राजेन्द्र बाबू के निवास-स्थान होने का सौभाग्य भी प्राप्त हो चका है और इन दोनो महान् नेताओं के सम्पर्क के कारण यहा की आम जनता और विशेषकर कांग्रेस कार्य-कर्ताओं में अहिंसा की भावना काफी घर कर चुकी है। अतएव इस जिले में आन्दोलन का नेतृत्व प्राय: कांग्रेस-कार्यकर्ताओ के हाथ में रहा, जिससे जनता की ओर से किसी भी सरकारी आदमी की जान लेने की कोशिश नही की गई। हाँ, सरकारी संस्थाओ को लूटने-फूंकने का प्रयत्न अवश्य किया गया पर वह भी अहिंसा समझकर या पुलिस के अत्याचारो से तंग आकर।

१० तारीख को आम हडताल के रूप मे आन्दोलन का श्रीगणेश हुआ। ११ तारीख को बहुत बड़ा जुलूस निकाला गया जिस पर पुलिस द्वारा लाठी-चार्ज किया गया और पाच आदमी घायल हुए। १२ अगस्त को लाइन, तार आदि तोडने का काम रक्सौल से शुरू हुआ और सगौली, मोतीहारी, मेहसी आदि स्टेशनो का बहुत नुकसान किया गया। उत्तेजित जनता ने मोतीहारी के इन्कम-टैक्स ऑफिस को जला दिया, रिक्रूटिंग ऑफिस पर आक्रमण किया तथा पुल, तार इत्यादि नष्ट कर दिये। गोविन्दगढ़, रक्सौल, सगौली, ढाका, घोडा-साहन, पिपरा, कैसरया, मधुबन. आदापुर के थानो, ढाका, रामगढ़वा आटेरा,

मखुआ, घोडासाहन के डाकखानों एवं ढाका के नहर-दफ्तर पर धावे किये गए और उनको लूटने-फूंकने की भी चेष्टा की गई।

बेतिया डिवीजन के अन्तर्गत सब थानो पर तिरगे झडे लगाये गए। अधिकाश थानो की पुलिस सब डिवीजन के हेडक्वार्टर पर आगई। करीब-करीब सब पोस्ट आफिसो पर जनता का कब्जा हो गया।

आन्दोलन प्रारम्भ होते ही सरकार ने मोतीहारी के हिन्दू क्लेक्टर से सब अधिकार छीनकर दो यूरोपियनो को, जिनमे से एक सर्किल मैनेजर था तथा दूसरा मधुबन स्टेट का मैनेजर, सौंप दी। यूरोपियनो ने टॉमियो की सहायता से जनता पर बड़े अमानुषिक अत्याचार किये। बेतिया, घोडासाहन, फुवाटा, पच पोखरिया और मेहसी स्थानो पर गोली चलाई गई। मेहसी मे रामावतार शाह को प्लेटफार्म पर बुलाकर गोली से उड़ा दिया गया। आदापुर काग्रेस आश्रम जला दिया गया। सगौली फुलवारिया, मेहसी, बरकागाँव, नरकटियागज आदि ५० स्थानो पर फौज द्वारा लूट की गई। जेल में भी काफी बर्बरता का परिचय दिया गया। उदाहरण के लिए ३ आदमियों को एक कम्बल और १० को पानी पीने के लिए एक गिलास दिया गया। ४० आदमियो के स्थान मे १२० आदमियो को ठूस दिया गया इत्यादि-इत्यादि। बेतिया डिवीजन में फौजियो ने बहुत अत्याचार किया। वे अपनी जरूरत की चीजें दूकानो से उठा ले जाते, रात को गाँवो पर हमले करते और लोगो को बुरी तरह लूटते तथा उनकी स्त्रियो के साथ बलात्कार करते। जो कोई भी गान्धी टोपी पहने दिखाई देता था उसकी मिट्टी पलीत की जाती थी। यहा पर लोगो को ४० साल तक की सजाएँ हुई थी।

४. शहाबाद जिला

शाहबाद को लोग आजादी की प्रथम लडाई के नेता श्री कुंवरसिह की जन्मभूमि के रूप मे जानते है। इस जिले मे १० अगस्त से आन्दोलन का श्रीगणेश हुआ। शाहाबाद में कार्यकर्ताओं ने विद्यार्थियो की सहायता से शहर भर मे बडा भारी प्रदर्शन किया। शाम के समय रमना मैदान मे एक विशाल सभा हुई। लोग बड़े उत्साह, उमग एवं धैर्य के साथ अपने नेता श्री प्रद्युम्न मिश्र का व्याख्यान सुन रहे थे, जो उन्हे काग्रेस की स्थिति तथा नौकरशाही की बर्बरता बता रहे थे। पुलिस के कर्मचारी मिश्रजी को गिरफ्तार कर आन्दोलन की गति को रोकना चाहते थे। अतएव वे भीड को चीरते हुए उन्हे पकड़ने के लिए आगे बढे। जनता उनके इस निन्दनीय कार्य को सहन न कर सकी।

उसका पारा चढ़ गया और वह बड़े वेग से पुलिस पर टूट पड़ी। पुलिस का धैर्य छूट गया, वह भाग खड़ी हुई। बेचारे सब डिवीजनल अफसर को अपने हैट तक को सम्हालने का होश न रहा। वे जैसे-तैसे अपनी जान बचाकर भागे।

इतने में ही पुलिस के अन्य अफसर भी सशस्त्र पुलिस के साथ घटना-स्थल पर जा पहुंचे। उन्होंने सिपाहियों को जनता पर लाठी-चार्ज करने का हुक्म दिया। परन्तु जनता इससे घबराई नहीं। वह ज्यों-की-त्यों बैठी भाषण सुनती रही। आजादी के इन दीवानों के साहस ने सिपाहियों के हृदय दहला दिये; उन्होंने अपने देश भाइयों पर गोली चलाने के जघन्य कार्य से मुंह मोड़ लिया। बस, लोगों के दिलों से सरकारी रौब उठ गया। सभा की समाप्ति पर सभी सरकारी दफ्तरों पर झंडे फहराये गए। जिले के अन्य १७ थानों पर भी जनता ने बिना खून-खराबी के अधिकार कर लिया। पर यह स्थिति कुछ ही दिन तक कायम रही। बाद में गोरे सैनिक जिले भर में फैल गये और उन्होंने जनता के खून से जिले भर को रँग दिया। आरा, कोवनरा, भभौरा, जुकहटी, शाहपुर, लगडी, बलीगंज, सहसराम, भँभौवा, मोठगिनी, भभुआ, कुमराव, नया-नगर, बलोहा, कटैरया, एमरी और शाहाबाद में जनता पर गोली चलाई गई।

बड़सरा, पीरो, सन्देश, जगदीशपुर, रोहतास, चेनारी, किनार, नोखा, नासरीगंज, रामगढ़, चांद, अधौरा, चैनपुर, कुदरा, डुमरांव, नवाबनगर, ब्रह्मपुर आदि के थाने जनता के आक्रमण के शिकार हुए। बड़हरा, शाहपुरा, रोहतास, दिलार, नोखा, विक्रमगंज, रामगढ, चांद, अधौरा, तथा चैनपुरा थानो में जनता ने ताला डाल दिया और पुलिस को आत्म-समर्पण करने के लिए बाध्य किया।। सहसराम थाना लगभग डेढ़ मास तक जनता के अधिकार में रहा। चैनपुर, भभुआ और रामगढ़ थानों में जनता ने अपनी शासन-प्रबन्ध-समितियां बनाईं। सेमगांव, गढ़ौती, परपौखुरी, बनौती, पियरीं, नुवार, हुसन-बाजार, कुम्हऊ, करबन्दियां, डीहरी, विक्रमगंज, कुदरा तथा डुमरांव के स्टेशन जला दिये गए। पीरो में विद्यार्थियों ने रेलवे ट्रेन पर कब्जा कर लिया और उसका उपयोग स्वयंसेवकों को इधर-उधर लाने लेजाने में किया। इसके अतिरिक्त सहसराम, डालमियानगर, नोखा, विक्रमगंज, भभुआ, रामगढ़ तथा डुमरांव के डाकखाने लूटे व जलाये गए। नगर आफिसों और शराब की भट्टियों पर भी आक्रमण हुए। कस्तर पुल्ला सड़क के पुल तोड़ डाले गये। आन्दोलन की यह विशेषता रही कि थानों पर जनता का अधिकार होने से यद्यपि पुलिस भाग खड़ी हुई थी, फिर भी कहीं भी चोरी डकैती नहीं होने पाई। थानों की पुनः स्थापना होने के बाद ही इनका जोर रहा।

इस जिले के इतिहास में डुमरांव का नाम सदा अमर रहेगा। १६ अगस्त की शाम को ५००० व्यक्ति थाने पर झंडा फहराने के लिए पहुचे कपिलमुनि नामक २१ वर्षीय नौजवान के हाथ मे राष्ट्रीय झंडा था। वह आगे बढ़ा। थानेदार ने गरजकर कहा—"खबरदार, आगे पैर रखा तो गोली से उड़ा दूंगा।" कपिलमुनि पुलिस की ऐसी धमकियों से डरने वाला थोड़े ही था। वह तो देश की आजादी के लिए अपनी चिता में खुद आग लगाने को तैयार था। वह आजादी का दीवाना बड़े गर्व के साथ राष्ट्रीय झंडा लिये थानेदार के सामने जा खड़ा हुआ। निर्दयी थानेदार ने चट अपना रिवाल्वर दबाया और देखते-देखते धांय-धांय करती हुई गोली युवक के सीने के पार हो गई। युवक का बलिदान पूरा हुआ। वह पृथ्वी पर गिर पड़ा पर झंडा अब भी उसके हाथ में था। थानेदार झुण्ड की ओर लपका और उसे अपने पैरों के तले कुचल दिया।

राष्ट्रीय झंडे का यह अपमान पास में खड़े हुए रामदास लुहार नामक युवक को सहन न हुआ। उसका खून खौल उठा और वह झंडे को उठाने के लिए उसकी ओर लपका। पर वह झंडा उठाने भी न पाया था कि थानेदार के रिवाल्वर की गोली उसके सीने में से निकल गई। वह वहीं गिर पड़ा। युवक के इस बलिदान ने अबकी बार एक साठ वर्ष के बूढ़े को तैयार किया। उसके बाल सफेद हो चले थे, पर उसके खून में अब भी गरमी थी। वह अपना सीना निकाले हुए आगे बढा। भला, थानेदार इसे कब सहन करता। उसने तत्काल उसे भी अपनी गोली का शिकार बनाया। पर भीड़ वीरों से खाली न थी। देखते-ही-देखते १६ वर्ष का बालक गोपालराम भीड़ को चीरता हुआ झंडे के पास आ पहुँचा। निर्दयी थानेदार की गोली उसकी कमर में लगी। वह घायल होकर जमीन पर गिर पड़ा और चार घंटे बाद अस्पताल में अपने देश की आजादी के लिए शहीद हो गया। १६ अगस्त का वह दिन चला गया, पर इन वीरों के बलिदान सदा के लिए अमर होगये। देश की आज़ादी के इतिहास में मृत्यु से खेलने वाले इन वीरो का नाम सदा स्वर्ण अक्षरों में लिखा जायगा।

दमन भी खूब हुआ। १८ स्थानों पर गोली चली। सहसराम मे मशीनगन, का प्रयोग किया गया और जुलूस पर गोलियाँ बरसाई गईं। गंगा के तटवर्ती गांवो को घेर लिया गया और वहां के घरों को लूटा तथा बर्बाद किया गया। लोगों के घरो में आग लगा दी गई और इस प्रकार गांवों को श्मशान के रूप में बदल दिया गया। धनडीहा, कसाय, जितौरा, संभौली, बलीगांव आदि अनेक गाँवों में जनता को बुरी तरह पीटा गया और मारते-मारते उन्हें धरती

पर लिटा दिया गया। बलीगाँव के नौजवान छात्र श्री नन्दगोपालसिंह को इतनी बुरी तरह पीटा गया कि आज भी उसके शरीर पर लाठी के निशान बने हैं।

कांग्रेस-कार्यकर्त्ताओं को अत्यन्त कड़ी सजाएं दी गईं। मामूली अपराधों पर बीस-बीस वर्ष का कठोर कारावास दिया गया। पांच आदमियों को तो फांसी की सजा हुई। सगराव के कांग्रेस कार्यकर्ता जमीर खां को पकड़ने के लिए उनके भाई को कैद कर लिया गया, हालांकि उनका आन्दोलन में कोई हाथ न था। इससे पता चल सकता है कि पुलिस दमन पर कितनी तुली हुई थी।

इस जिले में पुरुषों के साथ स्त्रियों और बच्चों पर भी गोलियां चलाई गईं और उनको तरह-तरह से दमन-चक्र में पीसा गया।। बनसोई में स्त्रियों से बलात्कार भी किया गया।

५. गया जिला

गया पटना-रांची सड़क पर आबाद होने के कारण फौजी केन्द्र है और काफी फौज यहाँ रहती है। अगस्त सन् १९४२ में यद्यपि जिले भर में काफी असन्तोष की भावना फैली हुई थी, किन्तु फौजियो के बड़ी सख्या में वहां मौजूद होने के कारण लोग कुछ भयभीत से थे। यही कारण है कि ९ अगस्त को नेताओ की गिरफ्तारी से जहां समस्त बिहार में आग भभक उठी, वहां गया में भय और सन्देह का ही वातावरण बना रहा। पर बहुत जल्दी यह डर का भूत लोगो के हृदय से हट गया और वे अपनी जान हथेली पर रख कर पूर्ण उत्साह के साथ आन्दोलन में सक्रिय भाग लेने लगे। इस प्रकार वहां १३ अगस्त से आन्दोलन का श्रीगणेश हुआ। जिले भर में अराजकता फैल गई। लगभग डेढ़ मास तक जिले भर में यातायात बन्द-सा रहा।

जनता ने वज़ीरगंज, बेलागंज, कुर्था, घोसी, अरवाल, नवीनगर, कुटुम्बा, दादनगर के थानो पर आक्रमण किये। १४ थानों को प्रबन्ध न कर सकने के कारण सब डिवीजनों में बुला लेना पड़ा। दादगंज, बेलनगंज, तथा वज़ीरगंज के रेलवे स्टेशन जला दिये गए। शराब की भट्टियों और १६ डाकखानों पर भी जनता ने तोड़-फोड़ की। अरवाल, नवीनगर, दादनगर, घोसी, कुर्था के पोस्ट आफिस लूटे तथा जलाये गए। कुछ नहर के आफिस भी जनता के क्रोध के शिकार हुए।

गया जिले में गोली चली, जिसमें ३ व्यक्ति मरे तथा ११ घायल हुए। २ लाठी व भाले से मारे गये। १८ अगस्त को जब जनता कुर्था थाने पर झंडा फहराने पहुँची तो उस पर बर्छी और भालो से आक्रमण किया गया और श्री श्यामबिहारीलाल, मंत्री थाना कांग्रेस कमेटी को भाले से मार डाला गया।

मरबाल थाने में प्राइमरी स्कूल के अध्यापक श्री दुसाध्यसिंह को पीटते-पीटते मृत्यु के घाट उतार दिया गया। उसका अपराध केवल यह था कि वह पहले दिन जुलूस में शामिल हुआ था। इसी प्रकार सामूहिक जुर्माना वसूल करने में भी काफी सख्ती से काम लिया गया।

इस जिले के आन्दोलन की यह विशेषता थी कि यहां के मुसलमानों ने भी देश की आज़ादी की इस लडाई मे खुले दिल से भाग लिया और अन्त तक कई मुसलमान कार्यकर्ता आन्दोलन का सचालन करते रहे।

६. हजारीबाग जिला

हजारी बाग में आन्दोलन का श्रीगणेश ११ अगस्त से हुआ। श्रीमती सरस्वती देवी एम० एल० ए० ने एक जुलूस सगठित किया, जिसका उद्देश्य नेताओ की गिरफ्तारी के विरोध में शान्तिपूर्ण प्रदर्शन करना था। दो-एक दिन तक इसी प्रकार जुलूस निकलते रहे। परन्तु जब सरकारी अधिकारियो ने कुछ छेड-छाड की तो उत्तेजित जनता ने पोस्ट ऑफिस, यूरोपियन क्लब, लाल कम्पनी तथा डिप्टी कमिश्नर की अदालत में साधारण-सी तोड़-फोड़ की।

इस जिले में सबसे अधिक राजनैतिक चेतना अबरक की खानों तथा गिरिडीह के आस-पास कोयले की खानो में काम करने वाले मजदूरो में है। ये लोग नेताओ को गिरफ्तारी की खबर सुनते ही अधीर हो उठे। उन्होने झुमरी तलैया में जुलूस निकाला। पोस्ट आफिस, रेलवे स्टेशन और शराब की भट्टी पर साधारण तोड-फोड करके जुलूस तितर-बितर हो गया।

डोमचांच में जनता नें एक जुलूस निकाला। यद्यपि जुलूस शान्ति से निकल रहा था, पर अधिकारी इसे भी सहन न कर सके। उन्होंने जुलूस पर लाठी-चार्ज किया, हन्टर चलाये तथा गोली भी चलाई, जिससे २ व्यक्ति मारे गय और २२ के लगभग घायल हुए। जन-समूह विशाल था। वह निर्भीकता के साथ डटा रहा। स्थानीय कांग्रेसी नेता लोगों को बराबर अहिंसक बने रहने का आदेश देते रहे और उन्होने आश्चर्यजनक रूप से लहू की घूंट पीकर उनकी इस कठोर आज्ञा का पालन किया।

सरकार का दमन-चक्र इस जिले में बडी भंयकरता से चला। कोडरमा थाने में गिरफ्तार व्यक्तियों पर हन्टर से इतनी बुरी तरह मार पडी कि उसे सुनकर बडे-बडे साहसा पुरुषों का भी दिल दहल जायगा। पुलिस ने अपनी राक्षसी प्रकृति का परिचय देते हुए लोगो को चोराहो पर नंगा करके हटरो से पीटा और जब तक उनका शरीर लहू-लुहान न होगया और वे अधमरे न

होगए तब तक उन पर बराबर मार पड़ती रही । असह्य पीड़ा के कारण बेहोश हो जाने पर भी मार बन्द न हुई और बाद में वे जेलखानो की काल-कोठरियो के अन्दर ठूस दिये गए । एक-दा ने तो जेल के फाटक पर पहुंचते-पहुंचते ही दम तोड़ दिया।

बड़ी-बड़ी कम्पनियो के मालिको को अपमानित किया गया और उनकी सम्पत्ति को नुकसान पहुचाया गया ।

बाबू जयप्रकाशनारायण का साहसपूर्ण कार्य

एलिजाबेथ काल के एक अग्रेज कवि ने कहा है "लोहे के सीखचो से जेल नहीं बनती " (Iron bars do not prison make) । यह तो मनुष्य का मन ही है जो जेल का निर्माण करता है । बिलकुल खुले मैदान मे रहने वाला व्यक्ति यदि अपने को बन्दी समझता है तो वह पूरे माने में बन्दी है, और यदि जेल के अन्दर बैठा हुआ अपने को मुक्त मानता है तो वह मुक्त है। क्योंकि 'भावना के अनुसार क्रिया होती है' इस सिद्धान्त के अनुसार वह लौकिक अर्थ में अपने आपको मुक्त करने के लिए स्थूल प्रतिबन्धो को तोड़ने का कोई साधन निकाल ही लेता है । अपने अपूर्व साहस, विलक्षण बुद्धि-चातुर्य आदि गुणों के आधार पर बाबू जयप्रकाशनारायण ने इस विषय में हमारे सामने एक अद्भुत आदर्श रखा है । जिसकी सनसनीपूर्ण कहानी सुनकर कोई भी व्यक्ति मुग्ध हुए बिना नही रह सकता ।

नेताओ की गिरफ्तारी के साथ देश में एक उग्र आन्दोलन की आग भड़क उठी । पर जयप्रकाश बाबू हजारी बाग की सेन्ट्रल जेल मे नजरबन्द थे। "स्वतंत्रता की कीमत चुकाने के लिए दीवाने देशभक्त आगे बढ रहे थे । और जयप्रकाश जेल के सीखचो के भीतर यह सब बेबस होकर देखते रहे । उनकी वीर आत्मा भला यह कैसे सहन कर सकती थी ।"

११ नवम्बर सन् १९४२ का महत्त्वपूर्ण दिन आया और उसके साथ भारतीयो का प्रसिद्ध त्यौहार दिवाली भी । देश भर मे अपूर्व उत्साह के साथ लोग उत्सव में भाग लेने लगे । बन्दियों ने भी जेल में रास-रग मचाने का निश्चय किया । बिहार के प्रधान मत्री श्रीकृष्णसिंह आदि सब बडे-बड़े व्यक्ति इसमें शरीक थे । अतएव अधिकारियो को उसमें अड़चन डालने का मौका न मिला । रात्रि के समारोह के समय राजबन्दी बैरको के बाहर रखे गये । बडी धूम-धाम के साथ उत्सव प्रारम्भ हुआ । उधर अधिकारियो की आखो मे धूल झोककर जेल की दीवार फादने की योजना बन चुकी थी । आगे उत्सव हो रहा था पीछे, जयप्रकाश बाबू तथा उनके पाच साथी श्री रामनन्दन मिश्र,

योगेन्द्र शुक्ल, सूर्यनारायणसिंह, गुलाबचन्द्र गुप्त और शालिग्रामसिंह अपनें पूर्व निश्चित कार्यक्रम के अनुसार जेल की ऊंची-ऊची दीवारे लाघकर बाहर निकल गये। अन्य साथी तो अच्छी तरह निकल गये किन्तु जयप्रकाश बाबू के गहरी चोट आई। एक साथी ने उन्हें अपने कधे पर ले लिया और आगे बढने लगे। इस प्रकार वे थोड़ी देर में खतरे से बाहर निकल गये। वहा दो सशस्त्र रक्षको के साथ एक मोटरकार उनकी प्रतीक्षा में खड़ी थी। राची तक वे इसी मोटर मे गये। आगे बीहड वन था। मोटर का जाना उसमें सम्भव नही था। अतएव उसे उन्होने वही अग्नि की भेट चढ़ा दिया और सबने गया की ओर पैदल यात्रा प्रारम्भ कर दी।

ऊबड़-खाबड़ जंगली रास्ता, बस्ती का बचाव तथा पैदल यात्रा, बडी भयंकर समस्या थी। पैदल चलते-चलते काटों और झाड़ियो के कारण पैर लहू-लुहान होगये। छाले पड़-पड़कर फूट रहे थे, जिनसे पीड़ा और भी असह्य हो रही थी। एक-एक करके चार दिन बीत गये, पर भोजन से भेट नही हुई। भाग्य से पांचवें दिन एक जंगल मे कुछ जंगली फल मिले, जिनको खाकर बेचारों ने कुछ क्षुधा शान्त की। सारा जिस्म थककर चूर हो गया था। शरीर का एक-एक अग आगे बढ़ने से विद्रोह कर रहा था। परन्तु फिर भी चलना था इसलिए वे चलते गये।

धीरे-धीरे गया पहुचे। जयप्रकाश बाबू के पास सौ रुपये का एक नोट था। उसको खर्च करके कपड़े खरीदे और जैसे-तैसे एक मित्र के यहा शरण का प्रबन्ध हुआ। अब समस्या काम करने की आई। देश मे घूमकर आन्दोलन की आग को फिर से भडकाने का प्रोग्राम बनाया गया। अतएव जयप्रकाश बाबू बनारस आये और वहा के छात्रों एवं कार्यकर्ताओं को आन्दोलन के विषय में आदेश देकर उन्होंने रीवां की ओर प्रस्थान किया। बीच-बीच मे मुख्य-मुख्य स्थानो पर इसी प्रकार लोगो को फिर से आन्दोलन के लिए तैयार करते हुए वे बम्बई पहुचे और अच्युतपटवर्धन से भेंट की। पटवर्धन महोदय पहले से ही पश्चिमी भारत को एक नये सांचे मे ढालने का प्रयत्न कर रहे थे। उधर अरुणा आसफअली और डा० राममनोहर लोहिया कलकत्ते में ऐसी ही तैयारी में लगे हुए थे। इस प्रकार सबने आपस मे विचार-विमर्श कर कार्य प्रारम्भ कर दिया। किन्तु इसकी सफलता के लिए समय-समय पर कार्यकर्त्ताओ का आपस में मिलना और उसके लिए ट्रेनिंग देना आवश्यक था। समूचे ब्रिटिश भारत मे गुप्तचरों का सुदृढ़ जाल बिछा हुआ था, एक अगुल भूमि भी खतरे से खाली नही थी। अतएव नेपाल की भूमि इस कार्य के लिए उपयुक्त समझी

गई और सन् १९४३ के अप्रैल मास में एक जंगल के अन्दर कार्यकर्त्ताओं का प्रथम सम्मेलन हुआ जिसमे 'आजाद हिन्द' दस्ते का निर्माण किया गया।

इस दस्ते का प्रतीक तीन वाण माने गये जो स्वतंत्रता, रोटी और एक राष्ट्र के द्योतक थे। इसकी शिक्षा बिलकुल फौजी ढंग की थी और इसके सदस्यो को चांदमारी, छापामार लड़ाई आदि सभी युद्ध के कौशल सिखाये जाते थे। धीरे-धीरे इस दस्ते की कार्यवाही बहुत तीव्र होगई और उससे अंग्रेजी सरकार की भाति नैपाल सरकार भी भय खाने लगा। निदान २४ मई सन् १९४३ को श्री जयप्रकाश, डा० लोहिया तथा उनके तीन अन्य साथी गिरफ्तार करके हनुमाननगर मे बन्द कर दिये गये। उधर से अंग्रेजी फौज जयप्रकाश जी आदि के हथियाने के लिए नैपाल की सीमा पर आ पहुची। जब दस्ते के अन्य कार्यकर्त्ताओ को इस षड्यन्त्र की सूचना मिली तो उन्होने जेल के अधिकारियो को ऊचे-नीचे सभी तरीको से अपने अनुकूल करने की भरसक चेष्टा की, किन्तु उनको सफलता न मिली।

समय निकलता गया और अंग्रेजी फौज नजदीक आती गई। कार्यकर्त्ताओ को गुप्त रूप से खबर मिली कि नैपाल सरकार जयप्रकाश बाबू आदि को कल ही अंग्रेजी सरकार के हवाले करने जा रही है, क्योकि "बर्बर और युगो से गुलामी की वृत्ति रखने वाली स्वतत्र भारतीय रियासतो का ठिकाना ही क्या और उसकी दृष्टि में इन जानो का मूल्य ही क्या ?" अतएव वे भावी परिणाम की आशका से अधीर हो उठे और सबने एकत्र होकर यह निश्चय किया कि जेल पर छापा मारकर नेताओ को छुडा लिया जाय। चार पाच नवयुवक कार्यकर्त्ता गुप्तचर के रूप में बन्दियो के कैम्प पर पहुँचे। उन्होंने भाँति-भाँति के प्रलोभन देकर वहा के प्रायः सभी रक्षको को अपनी ओर मिला लिया। उधर कार्यकर्त्ताओ ने कई दल बनाकर नगर में प्रवेश किया। एक दल ने जाते ही जेल की दाहिनी ओर के एक मकान मे आग लगा दी और चारो ओर से 'दौड़ो-दौडो' 'आग बुझाओ' 'जान बचाओ', आदि की आवाजे आने लगी। लोगो को इस प्रकार बुरी तरह से चिल्लाते देख जेल के सन्तरी आग बुझाने के लिए घटनास्थल की ओर दौड पडे। जेल पर बहुत ही कम सन्तरी रहे। कार्यकर्त्ताओं का दूसरा दल समय की प्रतीक्षा में था ही। अतएव उसने इसी बीच में जेल पर हमला कर दिया और तत्काल जेल के सन्तरी को मौत के घाट उतार दिया। बन्दूक की आवाज़ सुनकर हवलदार ने ऊपर से गोली चलाना प्रारम्भ किया, किन्तु लोगो ने उसे गिरा दिया। इतने में आग लगाने वाला दल भी आ पहुँचा। लगभग १०-१२ हज़ार व्यक्ति इकट्ठे होगये। 'मारो, पकड़ो', का

ज़बरदस्त शोर होने लगा। हल्ला सुनकर अधिकारी लोग दौडकर वहां पहुँचे किन्तु लोगों के उत्साह के सामने उनकी हिम्मत कुछ करने की नही हुई।

भीड ने जेल का फाटक तोड़ दियो और रोशनी बुझा दी। चारों ओर अधेरा छा गया। जयप्रकाश बाबू के लिए मार्ग खुला था। अतएव वे अपने साथियो के साथ बिना किसी विशेष कठिनाई के भाग निकले।

जेल से निकलने के पश्चात् जयप्रकाश बाबू ने बगाल, बिहार, युक्त-प्रान्त, पंजाब आदि प्रान्तो मे भ्रमण किया तथा आन्दोलन को जारी रखने के लिए लोगो को उत्साह दिलाया। इस दौड़-धूप में उन्होने एक दिन का भी विश्राम नही लिया। फलतः उनका स्वास्थ्य बहुत गिर गया जिससे उनको बाध्य होकर काश्मीर की ओर जाने का निश्चय करना पड़ा। पर वे काश्मीर नही पहुंच पाये और बीच में ही अमृतसर मे गिरफ्तार करके लाहौर के शाही किले में नज़रबन्द कर दिये गये।

इस प्रकार इस वीर पुरुष ने भारत की भावी संतान के लिए त्याग, साहस एव बुद्धि-चातुर्य का आदर्श हमारे सामने उपस्थित कर दिया।

७. भागलपुर जिला

यह जिला सदा से देश की आजादी के लिए संग्राम में बिहार के और जिलो की अपेक्षा आगे रहा है। इसी जिले के बहिपुर स्थान मे सन् १९३० में देशरत्न बाबू राजेन्द्रप्रसाद पर लाठियो की मार पड़ी थी। तब से इस जिले में ऐसी जागृति पैदा हुई कि यह काग्रेस के काम में सबसे आगे बढ गया। जहां इस जिले में डा० राजेन्द्रप्रसाद के प्रभाव के कारण गाधीवादी कार्यकर्त्ताओ की काफी सख्या है, वहां प्रसिद्ध समाजवादी नेता बाबू जयप्रकाशनारायण का मुख्य क्षेत्र होनें के कारण उग्रवादियों की भी कमी नही है। अतएव शुरू-शुरू के एक-दो दिनो को छोड़कर बाकी सारे आन्दोलन मे यहां की जनता मे हिंसक प्रवृत्ति अधिक मात्रा में पाई गई। हाँ, सुपोल मे जनता ने अन्त तक अहिंसा-नीति पालन किया।

इस जिले में भागलपुर, बांका, मधेपुर तथा सुपोल ये चार सब डिवीजन है, जिनमे सुपोल को छोडकर अन्य तीनो सब-डिवीजनों में आन्दोलन का बहुत जोर रहा। भागलपुर में १० अगस्त को जनता एव विद्यार्थियो के अलग-अलग जुलूस निकले। दोनो जुलूस शहर में घूमकर कचहरी पर जा पहुचे। विद्यार्थियो ने क्लक्टर आफिस तथा हेड पोस्ट आफिस पर धावा बोल दिया और दोनो पर राष्ट्रीय झंडा फहरा दिया। १९ तारीख को जनता ने काग्रेस-भवन

पर, जो ९ अगस्त से पुलिस के अधिकार में था, हमला किया और उसे पुलिस के हाथों से छीन लिया। इसके बाद तो शहर के कालेज के रेकार्ड, इंस्पेक्टर आफ स्कूल का आफिस और इन्कम-टैक्स आफिस में आग लगा दी गई। भागलपुर के रेलवे–गोदाम को लूटा गया तथा थाने के दफ्तर, पोस्ट आफिस तथा रजिस्ट्री आफिस जलाकर खाक कर दिये गये। जनता ने मालगोदाम पर हमला कर सैकडो बोरे चीनी लूट ली। खगरिया से कटिहार तक १०० मील रेल की पटरी उखाड़ दी गई। पसराहा और नारायनपुर के बीच की लाइन बिलकुल नष्ट कर दी गई, जिससे छः माह तक गाड़ी बन्द रही।

१३ तारीख को सहफाबाद के चर्खा-शिक्षण-शिविर से पुलिस ने चर्खे, धुनके इत्यादि सब सामान उठा लिया और उसे थाने मे बन्द कर दिया। पुलिस के इस निन्दनीय कार्य को जनता सहन न कर सकी। वह उत्तेजित हो उठी और थाने पर टूट पड़ी। थाने की सब वस्तुएं तोड़-फोड कर नष्ट-भ्रष्ट कर दी गईं और चर्खा–संघ का सब सामान वापिस ले लिया गया। पच्छंगछिया, सहरसा तथा सोनसा, कचहरी इन तीनों स्टेशनो के माल-गोदामों को लूट लिया गया, जिनमें १०,००० स्लीपर तथा बहुत-सा दीगर फर्नीचर था। तीन इंजन ईंट-पत्थरों से मार-मार कर तोड डाले गये।

बनगाँव थाने के अन्तर्गत १२ जमीदारो के पास लाइसेस की बन्दूके थी। कांग्रेस के स्वयंसेवको की तरफ से उन्हे नोटिस दिया गया कि वे अपनी-अपनी बन्दूकें काग्रेस-कैम्प में जमा करा दें। जमीदार घबड़ा उठे और २४ घटे के अन्दर ७ बन्दूके कांग्रेस-कैम्प में जमा हो गई। सहरसा मिशन की बन्दूक और बडियाही कोठी की क्रिश्चियन मेम मिस एच० ई० के पास से एक मोटरकार, एक रेडियो सैट, एक बन्दूक, १२ कारतूस, १ डाइनेमों तथा ५० टीन पेट्रोल काग्रेस स्वयसेवको ने अपनें अधिकार में कर लिया। इस प्रकार पूरी शक्ति सचित कर स्वयसेवको ने सहरसा, पच्छगछिया आदि ५ विभिन्न स्थानो में अपने कैम्प स्थापित किये और गाँव-गाँव मे काग्रेस-प्रचार करने लगे। मोटरो द्वारा स्वयसेवक एक स्थान से दूसरे स्थान पर डाक ले जाते थे तथा प्रचार का काम करते थे।

सुपोल में अन्य डिवीजनो की भाति हिंसा से काम नही लिया गया। जनता ने किसी भी सरकारी सम्पत्ति को नुकसान नही पहुचाया यद्यपि अधिकार सब थानो पर कर लिया गया था। पुलिस के हथियार भा छीनकर ताले मे बन्द कर दिये गए। सरकारी कर्मचारियों के साथ मित्रतापूर्ण बर्ताव किया गया। एक महीने तक इसी तरह दफ्तर बन्द रहे और उन पर स्वयसेवको का

पहरा रहा। वर्षा के दिन होने के कारण इस डिवीजन के चारो तरफ बीसो मील तक पानी-ही-पानी भरा पड़ा था। अतएव दमन करने के लिए बाहर से फौज न आ सकीं। पर बाद में जैसे-तैसे नावो से फौज यहा पहुचाई गई। उसने आते ही भाँति-भाँति के अत्याचार शुरू कर दिये और जनता को खूब लूटा-खसोटा। जिन सरकारी कर्मचारियो के साथ अब तक भाई-चारे का व्यवहार किया गया था वे भी अब सैनिक-सहायता पाकर जनता के लिए मौत का परवाना बन गये। अहिंसक और निहत्थे लोगो को नगा करके पीटा जाता था और गोरे सैनिक उनकी छाती पर बैठ जाते थे।

भागलपुर और बाका सब डिवीजन मे जब फौज के अत्याचारो से आन्दोलन की गति बहुत ही मन्द पड़ गई तो वहा के बचे-खुचे काग्रेस कार्यकर्त्ताओ ने परशुराम बाबू की अध्यक्षता मे 'परशुराम दल' के नाम से एक दल तैयार किया, जिसका काम सरकारी स्थानो पर हमला करना था। पर पुलिस ने इस दल पर हमला किया और परशुराम बाबू को गिरफ्तार कर लिया। इसके बाद सियाराम बाबू ने इसका नेतृत्व किया जिससे इसका नाम 'सियाराम दल' हो गया। सियाराम बाबू की अध्यक्षता मे इसकी हलचल कुछ तीव्र रही। कितने ही स्थानो पर इस दल नें पुलिस वालों पर हमले किये और उसके हथियार छीन लिये। कही-कही इस दल के आदमी भी पुलिस की गोली के शिकार बने। इस दल के कार्यकर्त्ताओं द्वारा सैकड़ो ऐसे आदमियों के नाक-कान या हाथ की उंगलियां काट डाली गईं जिन्होने इस दल की खोज करने में पुलिस को गुप्त या प्रत्यक्ष रूप से सहायता दी थी। इधर सरकार ने बाका तथा भागलपुर जेल से लगभग ८० डकैत सजा पूरी होने से पहले ही छोड़ दिये। वे महेन्द्र गोप के साथ सियाराम दल मे शामिल होगये। इससे दल की शक्ति बहुत बढ़ गई और उसने सरकारी संस्थाओ पर हमले किये तथा उन्हें बुरी तरह नुकसान पहुचाया। कुछ दिनों बाद महेन्द्र गोप कैद कर लिये गये और उन पर कई केस लगाकर उन्हे फांसी दे दी गई। परन्तु कितनी ही बार पुलिस और फौज द्वारा घेरा डालने पर भी सियाराम बाबू गिरफ्तार न किये जा सके। हो सकता है, बहुत से लोग इस दल की राज-नीति से सहमत न हों, परन्तु इनके साहस, त्याग, बहादुरी, सेवा एवं देशभक्ति की तारीफ किये बिना नही रहा जा सकता।

दमन भी इस जिले मे बड़े जोरो से चला, जिसकी कहानी सुनकर रोंगटे खडे हो जाते है। भागलपुर में कुछ कैदियो ने अपना विरोध-प्रदर्शन किया और बगावत का झंडा उठाया, जिससे उन पर अधाधुन्ध गोलियो की

बौछार की गई और १२५ कैदी पिंजड़ो में ही भून दिये गये। एक अफ़सर भी मारा गया। सुखबार घाट, त्रिमुहा घाट आदि घाटो पर फौजी अड्डे कायम किये गये जो दोनो ओर के राहगीरो की मरम्मत करते और उनका सामान लूट लेते थे। बहिपुर थाने में, जो सियाराम दल का अड्डा घोषित किया गया था, प्रत्येक तीन-चार गाव पीछे प्रमुख चौराहो पर फौजी कैम्प स्थापित किये गये। इसमे रहने वाले सैनिक अपनी आवश्यकता की कोई भी चीज मोल न लेते थे, बल्कि जनता से लूट लाते थे। रास्ते चलती एव घरों में बैठी स्त्रियो को घसीट लाया जाता था और उनके साथ बलात्कार किया जाता था।

सरकार दमन पर कितनी तुली हुई थी, इसका पता इसी बात से लग जाता है कि फरार लोगो का पता लगाने के लिए उनके सम्बन्धियो को चाहे वे किसी भी अवस्था के हो, गिरफ्तार कर लिया जाता था। ७० वर्ष के बूढे से लेकर डेढ़ वर्ष के दुधमुहे बच्चे तक जेल में ठूँस दिये गये थे। भागलपुर मे पुलिस ने एक १८ महीने के बच्चे को जिसके पिता फरार थे, कैद कर लिया और उसे ४ दिन तक अपनी मा से अलग रखा। परन्तु बाद में जेल अधिकारियो ने उसकी जिम्मेवरी लेने से इन्कार कर दिया और वह छोड़ दिया गया। इसी प्रकार भागलपुर के ७० वर्ष के बूढे मदन झा को भी जेल के सीखचो मे बन्द कर दिया गया था।

बिहार के अन्य जिलो की अपेक्षा इस जिले मे सबसे अधिक स्थानो पर गोली चली तथा सबसे अधिक मनुष्य गोली के शिकार हुए। गावो को फूक देने का राक्षसी कार्य भी यही जारो से हुआ।

यहा के खादी-भडार भी दमन की लपटो से अछूते न बच सके। सैफाबाद का चर्खा-शिक्षण-शिविर जलाकर खाक कर दिया गया तथा सुपोल का स्वराज्य-भवन और खद्दर-भडार नष्ट-भ्रष्ट कर दिये गये।

८. मुजफ्फरपुर जिला

यह जिला बिहार प्रान्त में महात्माजी के रचनात्मक कार्यक्रम का मुख्य केन्द्र है और यहाँ के अधिकाश कार्यकर्त्ता अहिंसा द्वारा ही स्वराज्य प्राप्ति के सिद्धान्त में विश्वास रखते है। अतएव यहा पर आन्दोलन का श्रीगणेश अहिंसक रूप से हुआ। जनता का मुख्य उद्देश्य जुलूसो तथा हड़तालो द्वारा प्रदर्शन करना एव थानो आदि सरकारी सस्थाओ पर कब्जा करके सरकारी मशीन का चलना बन्द कर देना था। परन्तु पुलिस अधिकारियो ने झूठी अफवाहे फैलाकर लोगो में हिंसा की भावनाओं को उकसाया।

आन्दोलन प्रारम्भ होते ही जनता ने शांन्तिपूर्ण तरीके से जिले के प्राय. सभी थानो, रजिस्ट्री और पोस्ट आफिसो तथा स्टेशनो पर तिरंगे झंडे लगा दिये। पुलिस कर्मचारी या तो हैडक्वार्टर पर भाग गये या उन्होने जनता की अधीनता स्वीकार कर ली। पुपरी थाने का थानेदार अर्जुनसिंह भयभीत होकर अपने साथियो के साथ सीतामढी भाग गया। वहां जाकर उसने अपने गुप्तचरो द्वारा जनता में यह बात फैलाई कि २४ तारीख को अर्जुनसिंह २० लारी फौज लेकर पुपरी थाने की ओर आरहा है और विद्रोहियो को ठीक कर देगा। इस पर २४ तारीख की सुबहै ही गाव के लोग बाजपट्टी मे आकर हजारो की संख्या मे इकट्ठे होगये। अर्जुनसिंह तो नही आया, पर दुर्भाग्यवश मधुवनी बाजार से एक मोटर वहाँ आ पहुंची। जोश तथा आवेग मे भरी जनता ने समझा कि अर्जुनसिंह आया है और बिना सोचे समझे उस वह पर टूट पड़ी, जिससे सब डिवीजनल अफसर हरदीपसिंह, एक पुलिस इसपेक्टर, एक अर्दली और एक हवलदार जनता की क्रोधाग्नि मे भुन गये। इस घटना की सूचना जब जिला अधिकारियो को मिली तो २५ अगस्त को ११ लारी फौज के साथ कलक्टर, इन्स्पेक्टर जनरल पुलिस तथा अर्जुनसिंह पुपरी पहुचे। उसी दिन उन्होंने वहां की प्रसिद्ध फर्म लालचन्द मदनगोपाल पर हमला किया और ३० हजार की सम्पत्ति लूट ली। सेठ साहब के दो लड़के निरजनप्रसाद एव गोपालप्रसाद गिरफ्तार कर लिये गए और उन्हे बन्दूकों के कुन्दों से अपमानित किया गया। तीसरे लड़के देवकीप्रसाद को मौत के घाट उतार दिया गया सबसे बड़े लड़के निरजनप्रसाद की नव-वधू की इज्जत लेने की कोशिश की गई। पर उस वीर महिला ने छुरा लेकर उनका सामना किया, जिससे वह कोशिश विफल रही। २६ तारीख को अर्जुनसिंह पुनः ९ लारी फौज लेकर पुपरी आया और उसने लोगो पर अन्धा-धुन्ध गोलियो की वर्षा की जिससे ३ मरे और १२ घायल हुए। ३ सितम्बर को वह पुन· १० लारी फौज लेकर पुपरी जा धमका और वहा की प्रसिद्ध दुकान, गौरीशकर की दूकान तथा सीताराम स्टोर को लूटा और इस प्रकार ६० हजार रुपये हथियाये। इन घटनाओ से समूचे थाने मे आतक-छा गया। बन्दगाव की जनता घबराकर नैपाल की तराई मे भाग गई। पीछे से फौजियो ने बन्दगाव मे आग लगा दी जिससे ३०० घर जलकर खाक हो गए।

अत्याचार का फल अवश्य मिलता है। अर्जुनसिंह के अत्याचारो का घड़ा भर चुका था। सरकार भी उसके काले कृत्यो से दहल उठी। परिणाम स्वरूप उस पर डकैती का अभियोग लगाया गया और उसे ८॥ साल के लिए

अपने दुष्कर्मों का फल भोगने को जेल भेज दिया गया।

पारू, लालगज, मीनापुर, कटरा आदि स्थानो मे भी जनता ने शान्ति-पूर्ण तरीके से थाने, पोस्ट आफिस वगैरा पर राष्ट्रीय झडे फहराये। १५ तारीख को मीनापुर के थाने पर जनता ने धावा बोला पुलिस की ओर से गोली चलाई गई जिससे एक मरा तथा १० घायल हुए। इस पर जनता आपे से बाहर हो गई। उसने ईंटो-पत्थरो से थाने के दारोगा पर प्रहार किया जिससे वह जख्मी होकर गिर पड़ा। जनता ने थाने के फर्नीचर एवं कागजात के ढेर के साथ वही उसका दाह-सस्कार कर दिया। इसी दिन हाजीपुर सब-जेल भी तोड़ी गई और कांग्रेस-कार्यकर्त्ता जेल से बाहर निकाल लिये गए।

सीतामढी मे ११ तारीख को जनता और विद्यार्थियों के एक जुलूस ने स्टेशन पर हमला किया और रेलगाड़ी पर कब्जा कर लिया। लोग बिना टिकट सफर करने लगे। पर जब जनता ने देखा कि इससे सरकार के काम मे कोई बाधा नही पड़ती है तो उसने १४ तारीख का रात को दरभंगा से रक्सौल तक जाने वाली रेल की पटरी को उखाड़कर फेंक दिया और यातायात के मार्ग बन्द कर दिये। सीतापुर-मुजफ्फरपुर रोड भी तोड़ दी गई और पुल उखाड़ दिये गये।

नौकरशाही के दमन की कहानी अन्य स्थानों के अत्याचारो से बहुत कुछ मिलती-जुलती है। भगवानपुर, रतनपुरा, बिठौली, बन्दगाव, पुपरी, शिवहर आदि अनेक गांव जला दिये गए। कांग्रेस-जनों के घर लूट लिये गए। सीतामढी में ठा० रामनन्दनसिंह एम० एल० ए० का बंगला लूटा गया और जला दिया गया, जिससे करीब ५० हजार की हानि हुई। शिवहर मे नवाब हाईस्कूल व लाइब्रेरी का सामान लूट लिया गया और उसमे आग लगा दी गई। यहा तक कि बोर्डिंग हाउस के लड़को का सामान भी नही छोड़ा गया। पुपरी, बिठौला, सीतामढ़ी, बिछौवा, सिहान तथा हाजीपुर के खादी भडार या तो लूट लिये गये या जला दिये गये जिससे १२, १२१ रु० ८ आ० ६ पा० की हानि हुई। बन्दगांव कत्ल-केस में रामफल धानु को फासी की सजा हुई तथा श्री प्रदीपसिंह, तिलेश्वरसिंह एव हरनन्दन गोप को आजीवन कारावास की सजा हुई। बाजपट्टी-केस मे जहां बहुत से बेगुनाह लोग फसाये गये वहाँ कुछ ऐसे आदमियो को भी मुलजिम बनाया गया जो उक्त घटना के समय जेल में थे। जैसे श्रीरामहृदय शर्मा, २० अगस्त से ही गोरखपुर जेल मे बन्द थे, और बाबा नरसिंहदास, जो उस समय बेलखंड थाने में थे, उक्त केस मे मुलजिम बनाये गए, किन्तु वे बरी होगए। इससे पुलिस की धांधली का कुछ अनुमान लगाया जा सकता है।

६. पुर्णिया जिला

यह जिला बिहार प्रान्त की पूर्वी सीमा पर होने के कारण बंगाल से बिलकुल मिला हुआ है। अतएव सुभाष बाबू के अग्रगामी दल का यहां के किसानो और मजदूरो पर खास असर पड़ा। यही कारण है कि इस जिले मे आन्दोलन का जोर अधिक रहा।

इस जिले मे आन्दोलन बहुत संगठित रूप से चलाया गया। अन्य जिलो की भांति यहा भी प्रारम्भ मे आन्दोलन का रूप अहिंसात्मक रहा। जनता ने शान्तिपूर्ण तरीको से जुलूस निकाले, आम हड़ताल की तथा सरकारी स्थानो पर अधिकार किया और झंडे फहराये। १३ तारीख को कटिहार थाने पर जनता के एक बड़े झुंड ने हमला बोल दिया। सब डिवीजनल अफ़सर ने गोली चलाने का हुक्म दिया और सिपाहियों ने लोगों पर अन्धाधुन्ध गोलियो की बौछार शुरू कर दी। आठ आदमी मारे गये, जिनमे एक १३ वर्ष का बालक ध्रुव, (शान्तिनिकेतन का छात्र) भी था। ध्रुव की दाहिनी जांघ मे गोली लगी और वह वही गिर गया। बाद मे अस्पताल मे बालक ध्रुव ने सदा के लिए आंखे मूंद ली। १३ अगस्त का वह दिन चला गया पर बालक ध्रुव का बलिदान ध्रुव की तरह सदा चमकता रहेगा। ध्रुव का यह बलिदान युग-युग तक देश के बालकों मे अपनी मातृ-भूमि के सम्मान के लिए इसी प्रकार प्राण निछावर करने की भावना जागृत करता रहेगा। ध्रुव के पिता डा० कुण्डू, जो इस प्रांत के प्रमुख कार्यकर्ता है, पुत्र का दाह संस्कार करके घर के लिए रवाना हुए। रौंतारा स्टेशन पर गाड़ी रोक ली गई तथा पुत्र-शोक से विह्वल डा० साहब बन्दी बना लिये गये। बेचारे मृतक पुत्र का श्राद्ध भी न कर पाये। "कितना करुणापूर्ण रहा होगा उस समय का वह दृश्य जब पुत्र-शोक को हृदय मे दबाए कुण्डू शान्ति भाव से जेल की ओर जा रहे थे।

इस घटना ने जनता को उत्तेजित कर दिया। वह मचल उठी और उसने रुपौली, धमदाहा, धरहरा, बरारी, रानीगंज, फारबिसगंज आदि १३ थानो पर हमले किये, जिससे एक थानेदार और ३ सिपाही मारे गये। दर्जनो डाकखाने और रेलवे स्टेशन लूटे तथा फूंके गये।

पुलिस ने कटिहार, बनमखी, रसीगज, रुपौली, धनदाहा, देवीपुर, खजाची, हाटी, पुर्णिया, कदनी तथा कन्हरिया मे गोली चलाई जिससे ४५ मरे और ६० से अधिक घायल हुए। टीका पट्टी तथा बनमखी के खादी-भण्डार जला दिये गये। ७० गांव भी सरकार के दमन के शिकार हुए और ५०० परिवारो के घर लूटे तथा जला दिये गये।

इस जिले मे विहार के अन्य जिलो की अपेक्षा मुसलमान अधिक सख्या मे रहते है। यहा के मुसलमान भाइयो ने भी खुले दिल से देश की आज़ादी की इस लड़ाई में भाग लिया।

१०. सारन जिला

नेताओ की गिरफ्तारी के साथ ही जिले भर मे सरकार-विरोधी अहिंसात्मक प्रदर्शन शुरू होगये। बाजारो और स्कूल-कालेजो मे हडतालें हो गईं। १३ अगस्त को सेवान में सभा हो रही थी कि पुलिस जनता पर टूट पड़ी और उसने गोली चलाना शुरू कर दिया, जिससे ३ मरे तथा ९ घायल हुए। पुलिस द्वारा किए इस अमानुषिक अत्याचार के कारण जनता उत्तेजित होगई और उसने ककड़ का जवाब पत्थर से देने का निश्चय किया। लोग सरकारी सम्पत्ति तथा यातायात के साधनो को नष्ट कर शासन-सूत्र का चलना असम्भव कर देने पर उतारू हो गए। १४ अगस्त को लगभग २० हजार आदमियो ने छपरा स्टेशन को घेर लिया और उसमें आग लगा दी। बाद में कचहरी और लोको इजिन-शेड को भी फूक दिया गया। महाराजगज थाने को आक्रमणकारियो ने अपने अधिकार मे कर लिया और उस पर तिरगा झडा फहरा दिया।

एक बड़ी भीड़ द्वारा सोनपुर जकशन पर धावा किया गया और रजिस्ट्री ऑफिस जला दिया गया। कुछ लोगो ने इजिन-शेड में खड़े तीन इजिन चला करके छोड़ दिए, जो जाकर नदी में गिर गए। १५ और १६ अगस्त को जनता ने भड़ावड़ा के थाने और रजिस्ट्री ऑफिस पर धावा करके उन पर ताला लगा दिया और स्टेशन अग्नि देवता की भेंट चढा दिया। १८ अगस्त को भड़ावड़ा में एक सभा हो रही थी। उसी समय ५ गोरे और ऐंग्लो इडियन टॉमी बन्दूके तथा रिवाल्वर लेकर सभा-स्थल पर आ धमके और अधाधुन्ध गोली चलाने लगे। भीड़ नें हडवडा कर उन पर धावा बोल दिया और उनके हथियार छीन लिए तथा उन्हे मौत के घाट उतार दिया। जनता के भी २ आदमी मरे। सारे आन्दोलन में इस जिले से केवल यही ६ सरकारी व्यक्ति मारे गए थे।

सेवान में थाने पर झडा लगाने के लिए जनता उमड़ी। उधर से पुलिस ने गोलियो की बौछार प्रारम्भ कर दी। बा० फुलैनाप्रसाद तथा अन्य तीन व्यक्ति शहीद हुए। आक्रमण के समय बाबू फुलैनाप्रसाद की धर्म-पत्नी श्रीमती तारावती अपने पति के साथ थी। जब फुलैनाप्रसाद के गोली लगी

तो इस वीर महिला ने अपनी साड़ी फाड़कर, अपन पति के पट्टी बांध दी और फिर झडा लेकर थाने की ओर बढ़ी। जब वह थाने पर झडा फहराकर वापिस लौटी तो उसके पति और गोलियाँ लग जाने के कारण वीर गति का प्राप्त हो चुके थे।

अमर शहीद श्री फुलेनाप्रसाद का बलिदान भूला नही जा सकता। प० बनारसीदास चतुर्वेदी के शब्दों मे एक ओर थी उस अटलव्रती की खुली हुई छाती, दूसरी ओर दानवी शक्तियों का जमघट उधर से आवाज हुई धॉय और इधर गोली लगी ......नम्बर एक। फिर आवाज हुई धॉय..... और गोली लगी नम्बर दो......इस प्रकार एक के वाद एक गोली चली और आ गोलिया शरीर को बेध गई। नवी गोली से सिर के टुकड़े-टुकडे होगये और निर्जीव शरीर धराशयी हो गया। अथवा यो कहिए कि रण-प्रागण मे वह सिह सदा के लिए सो गया। भारतीय सत्याग्रह के इतिहास मे यद्यपि अनेक सिपाहियो ने वीर गति पाई है, परन्तु सारन के श्री फुलेनाप्रसाद के प्रयाण पर ससार के किसी भी अहिंसक योद्धा को ईर्ष्या हो सकती है।"

सोनपुर में बच्चों पर गोली चलते देखकर एक मुसलमान अपनी छाती खोलकर फौजियो के सामने आ खड़ा हुआ और उन्हे जोर से ललकारा। झट से उसकी छाती पर गोली लगी और वह शहीद हो गया।

पुलिस एवं फौज द्वारा घर जलाने लाठी चार्ज करने, बलात्कार करने आदि की घटनाये तो हर जिले की भाँति यहाँ भी बहुत हुई, परन्तु कुछ नवीन घटनाए भी हुईं जिनमें पुलिस की बर्बरता एव अमानुषिकता पराकाष्ठा को पहुची हुई दिखाई देती है। नाखा बाजार मे बिहार के भूतपूर्व मिनिस्टर श्री जगलाल चौधरी के दो वर्ष के अबोध बालक का इन अत्याचारियो ने मृत्यु की भेंट चढ़ा दिया। गोरो की एक टुकड़ी ने छपरा से सेवान जाते समय रास्ते मे खेत मे काम करते हुए १३ और १८ वर्ष के दो लड़को की गोली द्वारा हत्या कर डाली। मलखाचक गाव में बा० रामविनोदसिंह के मकान को डायनामाइट से उड़ा दिया गया। ३ सितम्बर सन् १९४२ को जब छपरा शहर में गोरी पलटन का जुलूस शहर की सड़को मे से होता हुआ जेल के पास से गुजरा तो बन्दियो ने राष्ट्रीय नारे लगाये। इस पर उक्त पल्टन का कैप्टिन चिढ़ गया और उसने जेल में जाकर १६ प्रमुख बन्दियो के अपने सामने ३०-३० बेंत लगवाये।

सारन जिले में लगभग छः लाख नर-नारियो ने इस आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया।

११. रांची जिला

यह पहाड़ी जिला है तथा यहाँ के निवासी अधिकतर अशिक्षित, भोले-भाले एवं मूल निवासियो की सन्तान है। फौजियो का यह बहुत बड़ा केन्द्र था। अतएव फौजियो की हलचल तथा देश की अन्य परिस्थितियो के कारण यहाँ के निवासी भी एक बड़ी तीव्र बेचैनी का अनुभव कर रहे थे। इसलिए अगस्त-आन्दोलन मे उनका विद्रोह के लिए उठ खडा होना स्वाभाविक था। किन्तु वर्षा का मौसम होने तथा आवागमन की असुविधा के कारण अगस्त भर आन्दोलन राँची तथा उसके आस-पास के स्थानो तक ही सीमित रहा। सारे जिले में आन्दोलन की आग भड़कने मे काफी समय लग गया। परन्तु आन्दोलन देर से प्रारम्भ होने के कारण वहाँ अक्टूबर तक इसका काफी जोर रहा।

विद्यार्थियो ने स्कूल कालेज छोड़कर अहिंसात्मक तथा शान्तिपूर्ण प्रदर्शन प्रारम्भ किये यहाँ के पुलिस अधिकारियो ने बड़ी होशियारी एव बुद्धिमानी से काम लिया। उन्होने प्रदर्शन तथा सरकारी इमारतो पर झड फहराने के काम मे किसी भी प्रकार का दखल नही दिया। परिणाम यह हुआ कि भोली-भाली जनता झडे फहराकर वापिस लौट गई। सरकारी इमारतो पर थोड़ी बहुत जगह जो ताले लगाये गये थे वे पुलिस अधिकारियो की प्रार्थना तथा इस आश्वासन पर कि वे आजाद सरकार की आज्ञानुसार कार्य करने को तैयार है, खोल दिये गये।

माडर, कुडूँ चैनपुर, बेरी तथा बिशनपुर के थानो पर झडे फहराए गये और कुडू को छोडकर बाकी सबमे ताले डाल दिये गये। अरगोड़ा रेलवे स्टेशन जलाया गया। राँची और लोहरदगा के बीच की रेलवे लाइन उखाड़ी गई तथा हिनू के हवाई अड्डे लोहरदगा के फौजी कैम्प, राँची के पोस्ट-ऑफिस एव ग्रीष्म कालीन सेक्रेटेरियट; पर भी तोड़-फोड़ की गई। तार काटने का काम कोकर गाव के हल्के में विशेष रूप से हुआ।

जेल के सामने एक जुलूस पहुँचने पर अन्दर से विद्यार्थियो ने जेल तोड़कर बाहर निकलने की चेष्टा की, किन्तु बाहर से पूरी सहायता न मिलने तथा अन्ये कैदियो के बाधा उपस्थित करने से एक फाटक पार करने पर उन्हे रोक दिया गया। बाद मे जेल मे लाठी-चार्ज किया गया, जिससे शहर के सबसे धनी परिवार के लड़के आत्माराम बुधिया के गहरी चोट आई।

१२. दरभंगा जिला

दरभगा प्राचीन मिथिला की राजधानी है। यहा की जनता आज भी

आजादी की भावना से ओत-प्रोत है। यहा के लोग इस बात को अच्छी तरह जानते है कि स्वतत्रता कितनी कीमती वस्तु है । यही कारण है कि अगस्त-आन्दोलन मे यहा की जनता गोली चलने पर भी पीछे न हटी; उसका उत्साह वैसा-का-वैसा बना रहा।

इस जिले मे काग्रेस का नेतृत्व प्रारम्भ से ही गान्धीवादियो के हाथ मे रहा है। अत यहां विधानवादियों की कमी नही है। नेताओं की गिरफ्तारी के साथ ही यहां पर बडे पैमाने पर अहिंसात्मक प्रदर्शन किये गए। यहाँ के कांग्रेस-कार्यकर्त्ताओ ने इस बात का विशेष ध्यान रखा कि कही हिंसक प्रवृत्तियों द्वारा आन्दोलन की पवित्रता खण्डित न हो जाय। लोगो ने भी अपने नेताओं की आज्ञाओं का पूरा पालन किया और गोली तथा लाठी की मार खाकर भी उत्तेजित न हुए। तार काटना, पुल तोड़ना, सड़कें उखाड़ना आदि उनके विचार मे हिंसा की श्रेणी मे नही आते थे। इसीलिए उन्होंने इन्हे अपनाया। इस प्रकार आन्दोलन बहुत अशो तक अहिंसक रहा, किन्तु अन्दामा गाँव में एक पुलिस सब इन्सपेक्टर जनता की क्रोधाग्नि का शिकार हो गया।

दरभगा में १० अगस्त से आन्दोलन का हड़तालो से श्रीगणेश हुआ। विद्यार्थियो के नेतृत्व मे १६ तारीख तक रोजाना जुलूस निकलते रहे। जिनमे १० हजार तक लोग भाग लेते थे। दो-चार बार जुलूसो पर पुलिस की ओर से लाठी-चार्ज भी हुआ जिसमे काफी विद्यार्थियो के चोटें आई । रेल की पटरिया उखाड दी गई, तार काटे गए, ट्रेनो पर अधिकार कर लिया गया, थाने पर कब्जा करके वहां के सब कागजात जला दिये गए और सरकारी इमारतो पर तिरंगा झडा फहरा दिया गया। १७ तारीख को एक बहुत बड़ा जुलूस देहातों से एकत्रित होकर आया। जब वह स्टेशन पर पहुंचा तो उस पर गोली चलाई गई। एक आदमी मरा और १० घायल हुए । जानकी मिश्र को बूट की ठोकरो से पीट-पीट कर मृत्यु के घाट उतार दिया गया।

बेहरा में १० तारीख को पुलिस ने काग्रेस दफ्तर पर छापा मारा और सब कागजात उठाकर ले गई। इसी दिन थाना काग्रेस कमेटी के मत्री को किसी अज्ञात स्थान से एक कार्यक्रम मिला, जिसमें १६ बातें थी । इसके आधार पर थाने आदि पर अधिकार करने की योजना बनाई गई और १३ तारीख को एक बड़े जुलूस द्वारा अहिंसात्मक रूप से थाने पर झडा लगाया गया। गावो मे भी इस कार्यक्रम का खूब प्रचार किया गया। परिणामस्वरूप १९ तारीख को ५० हजार की भीड़ आस-पास के गांवों से एकत्रित होकर श्रीमती जानकी देवी की अध्यक्षता मे बेहरा आ पहुंची और थाने पर धावा करके

कुछ कागजात और फर्नीचर की होली जला दी । थाने के कर्मचारी अपनी जान बचाकर भाग गये । फिर जनता ने रजिस्ट्री तथा पोस्ट ऑफिस पर ताला लगा दिया और ४५ स्वयसेवको का पहरा बैठा दिया । एक सार्वजनिक सभा करके आवागमन के साधनो को नष्ट करने का निश्चय किया गया और सड़क-तार आदि नष्ट किये गए एव मनगाछी और सरकारी स्टेशनो की लाइनें उखाड़ दी गई । २२ तारीख तक थाने पर जनता का अधिकार रहा । २२ को दरभंगा से गोरा पल्टन आ गई और दमन शुरू हो गया ।

मधुबनी मे १२ तारीख को विद्यार्थियों एव जनता का एक सम्मिलित जुलूस जब कचहरी पर पहुचा तो पुलिस ने लाठी जार्ज के द्वारा उसे तितर-बितर करने की चेष्टा की और श्री विन्देश्वरीसिंह तथा श्री विश्वनाथ लालकर्ण को गिरफ्तार करके उनके हन्टर लगाये । पर जनता के उत्साह पर इसका कुछ भी प्रभाव न पड़ा । वह वहीं डटी रही । पुलिस-अधिकारियों पर जनता के इस साहस का इतना प्रभाव पड़ा कि उन्होने तत्काल गिरफ्तार व्यक्तियो को छोड दिया एवं कचहरी पर राष्ट्रीय झंडा लगाने की छुट्टी दे दी । दूसरे दिन हजारो की तादाद मे गाँवो से जनता आई और उसने तार काटना व पटरी उखाडना शुरू कर दिया । १५ अगस्त को गणेशचन्द्र झा की अध्यक्षता मे छ हजार आदमियो का जुलूस निकला । थाने पर पहुचते ही जुलूस पर पुलिस द्वारा लाठी-चार्ज किया गया, पर जनता इस अमानुषिक प्रहारो को सहकर भी डटी रही । पुलिस ने गोली चला दी । एक आदमी घटना-स्थल पर मर गया, दूसरे के सख्त चाट आई । पुलिस उसे पैर पकडकर घसीटती हुई थाने मे ले गई । बेचारा थाने मे पहुचते ही मर गया ।

१४ तारीख को खजौली थाने के कुलआही गाँव में लोगों ने सब डिवीजनल अफसर की मोटर तोड डाली और कान्स्टेबलो से साइकिलें छीन ली । फसारोड की फ्लैक्स कम्पनी (Flex company) पर जनता ने हमला किया और उसे जलाकर नष्ट कर दिया, जिससे दो लाख का नुकसान हुआ ।

सरकारी दमन भी जोरों से चला । सिंधिया थाने में पुलिस और टॉमियों ने अमानुषिक अत्याचार किये । १८ परिवारों के घर जला दिये, लोगो को मार-मार कर बेहोश कर दिया तथा एक प्रतिष्ठित वृद्ध कांग्रेसी को अधमरा करके उसके मुह में डोम से पेशाब डलवा दिया । राइफल और सगीन के बल कितने ही घरो में घुसकर स्त्रियों पर बलात्कार किया । इतना ही नहीं, खेत में घास छीलती हुई लड़कियाँ भी इनकी कामान्धता का शिकार बनी ।

समस्तापुर डिवीजन मे फौजियो ने काग्रेस-कार्यकर्त्ताओं के घरों मे घुसकर उन्हे बुरी तरह पीटा तथा घर में लगी हुई गान्धीजी एव जवाहरलालजी की तस्वीरो को पैरो से कुचल दिया। बागमती मे जनता ने जटमल नामक पुल नष्ट कर दिया था। जब फौज वहा पहुची तो उसने राजबन्दियो को कपड़े उतरवाकर और पुल दिखा-दिखा कर इतनी बुरी तरह से पीटा कि बहुतेरे बेहोश हो गये और कई हफ्ते मे ठीक हुए। पीड़ितो में समस्तीपुर सब-डिवीजन की काग्रेस कमेटी के प्रधान डाक्टर डी. एन. झा भी थे। मदेपुर, तरवारा, लहेरियासराय, उमगाँव, बाजीदपुर, राजनगर आदि ५४ जगहो के खादी-भण्डार या तो लूट लिये गए या जलाकर नष्ट कर दिये गए, जिससे ३०-३१ हजार की हानि हुई। दीप नामक गाव मे दो सौ मकान जला दिये गए। मधुबनी के पुलिस इन्स्पेक्टर और सुपरिण्टेण्डेण्ट पुलिस दमन की साक्षात् मूर्ति बने हुए थे। आन्दोलन के पहले इनके पास कोई खास सम्पत्ति न थी। परन्तु आन्दोलन के दिनो मे इन्होने कोठी और बगले खरीद लिए और बहुत-सी जमीदारी ले ली।

१३. मानभूमि

मानभूमि के वीरो ने भी अपनी मातृ-भूमि के मान के लिए अपने लहू को बहाया है, दमनकारियों की लाठियो के प्रहार सहे है तथा अपने सामने अपनी सम्पत्ति की बरबादी देखी है।

मानभूमि जिले के काग्रेसी नेता श्री अतुलचन्द्र घोष है। आपकी उत्कट लगन और निस्वार्थ सेवा ने जिले में और मुख्यकर पुरुलिया सब डिवीजन मे बहुत से सक्रिय कार्यकर्त्ता उत्पन्न किये है। इन्होने जिले भर को अपनी सेवाओ से मुग्ध कर लिया है। जनता काग्रेस से प्रेम करती है और सदैव उसकी आज्ञाओ को मानने के लिए तैयार रहता है। अगस्त-क्रान्ति का दिव्य-घोष होते ही जिला-का-जिला अपना रोष प्रकट करने के लिए तैयार हो गया। सथाल तथा महतो जाति के लोग, जिनकी सख्या जिले में सबसे अधिक है, तीर-भालों से सुसज्जित होकर युद्ध के लिए आ खड़े हुए। परन्तु अतुलबाबू की आज्ञा से उन्होंने हिंसा का इरादा छोड़ दिया और अहिंसक एवं शान्तिपूर्ण तरीको से सरकार का विरोध करना प्रारम्भ कर दिया। झडे लगाना, हड़ताल करना आदि जो आन्दोलन का सामान्य रूप था, अगस्त भर चलता रहा, और पुरुलिया, बाँदवान एव बड़ा बाजार के थानो पर तथा रघुनाथपुर की कचहरी और धनबाद (झरिया) के स्कूलो पर तिरगे झडे फहराये गए। ७६ आदमी पिकेटिंग करते हुए पकड़े गये।

इसी बीच जनता को अन्य प्रान्तों में होने वाले पुलिस के अत्याचारों तथा उनकी प्रतिक्रिया में होने वाले हिंसात्मक कार्यों का पता चला और तोड-फोड का प्रोग्राम भी प्राप्त हुआ। जनता में प्रतिहिंसा जाग उठी अत: थानों पर हमले किये गए। बाँदवान और बड़ा बाजार के थाने जलाये गए। बडा बाजार के पोस्ट ऑफिस के तमाम कागजात एव धनबाद पोस्ट ऑफिस की इमारत तक फूककर राख कर दी गई। मान बाजार से पुरुलिया आने वाला सड़क पर पुल भी तोडे गये। लालपुर तथा लघुरमा के मिलिटरी कैम्प मे आग लगाने की चेष्टा की गई। सारे जिले में तार काटना व शराब की भट्टियो को नष्ट करना भी कई दिनो तक जारी रहा।

यहां जो दमन हुआ उसकी कहानी अन्य स्थानों का कहानी से बहुत-कुछ मिलती-जुलती ह। जिन स्थानों पर गोलियां चलाई गई, उनमे से जरगाव, मानवामार और कबरासगढ ये तीन स्थान प्रसिद्ध है।

१४. सिंहभूमि जिला

इस जिले मे 'मिल एरिया' में रहने वाले मजदूरो ने ही खास तौर से सरकार विरोधी प्रदर्शनो मे भाग लिया। जमशेदपुर की टाटा स्टील कम्पनी के ३०,००० तथा अन्य कम्पनियो के ५,००० मजदूरो ने नेताओ की गिरफ्तारी के विरोध में ६ अगस्त से हडताल शुरू की। उन पर कांग्रेस वालो का अधिक प्रभाव था। अतएव उनके सब प्रदर्शन पूर्ण रूप से अहिंसक रहे। उन्होने किसी भी अफसर की जान लेने का प्रयत्न नही किया। पूरे १३ दिन तक बडे शान्ति पूर्ण ढग से हडताल को चलाया। मजदूरो के त्याग ने कुछ सिपाहियो को भी प्रभावित किया और २८ सिपाहियो ने शान्तिपूर्वक हथियार रख दिये और सरकारी नौकरी से स्तीफे दे दिये।

यहां पर मजदूरो तथा विद्यार्थियो का पूरा सहयोग रहा। स्कूलो में हडताल हुई और जुलूस भी निकले। जमशेदपुर मे ब्लूम ब्रिज को तोडने की चेष्टा की गई। राची के आसपास तार भी काटे गए।

६ सितम्बर को जमशेदपुर में १५ हजार से अधिक लोगो का जुलूस निकला, जिसमे हरिजनो की सख्या अधिक थी। ये लाग राष्ट्रीय नारे लगाते हुए जेल के फाटक पर जा पहुचे और वहाँ के अधिकारियो से कहा—'हम अपने नेताओ के दर्शन करना चाहते है, उन्हे, बाहर निकालिए।' जनता को यह शक था कि उसके नेताओ पर जेल मे सख्ती की जाती है। जेल अधिकारी जनता की माँग को ठुकरा न सके। वे डर के मारे काँप रहे थे। उन्होने जनता की आज्ञा का पालन करने मे ही अपना भला समझा। तुरन्त नेता

लोग बाहर लाए गए । जनता उन्हे ठीक स्थिति में देखकर अत्यन्त प्रसन्न हुई। उसने खूब जोर से जयघोष किया और अपने नेताओ को फूलो की मालाओ से लाद दिया तथा मानपत्र भेट कर वापस लौट गई। यहा की जनता कितनी शान्त रही यह घटना इस बात का सुन्दर उदाहरण है।

१५. पलामू

पलामू प्रान्त के दक्षिण पश्चिम में स्थित है। प्रायः समस्त जिला जगल एव पहाड़ियो से आच्छादित है। इसकी जनसख्या ८ लाख १८ हजार है और यहाँ के निवासी अधिकाश कोल तथा सथाल है। जिले में यातायात के साधन बहुत कम है तथा शिक्षा का भी कम प्रचार हुआ है। स्कूल शहरो तक ही सीमित है। अतएव जब देश भर मे क्रान्ति की ज्वाला धधक रही थी तो यहाँ के देहातो मे प्रायः शान्ति दिखाई पड़ती थी। पर शहर आन्दोलन की लपटों से न बच सके। वहाँ के विद्यार्थियो तथा वकीलो ने आगे बढकर जनता का नेतृत्व किया। हड़ताल और जुलूस विशेष कार्यक्रम थे। डाल्टनगज, गढ़वा, हुसैनाबाद, लैसलीगज और लतिहार के थानो पर जनता ने झडे फहराने की चेष्टा की तथा गढवा को छोड़कर शेष थानो पर झडे फहराये भी गए। डाल्टनगज थाने की पुलिस को आत्म-समर्पण के लिए बाध्य किया गया और जेल पर आक्रमण करके जनता ने अपने नेता ठा० रामकिशोर एम० एल० ए० को जेल से बाहर निकाल लिया। डाल्टनगज, गढवा और हरिहरगज के डाकखाने भी जनता के आक्रमण के शिकार हुए। डाल्टनगज के थाने को तो लोगों ने जलाकर खाक कर दिया। इसके अतिरिक्त स्थान-स्थान पर शराब की भट्ठियो को भी बर्बाद किया गया।

इस जिले मे सरकार द्वारा जो दमन हुआ वह अन्य स्थानो से मिलता-जुलता था। हाँ, एक बात खास थी। यहा के जमींदारो ने दमन करने मे पुलिस का साथ दिया और किसानो को पिटवाया, गिरफ्तार करवाया और इस प्रकार 'देश-द्रोही' का कलकपूर्ण खिताब प्राप्त किया।

१६. संथाल परगना

सथाल परगना भी अगस्त आन्दोलन की लपटो से अछूता न रहा। यद्यपि यहा आन्दोलन का रूप अन्य जिलो जैसा न रहा, परन्तु फिर भी यहां ६०० व्यक्ति गिरफ्तार किये गये, जिनमें २०० तो यहां के मूल निवासी थे। इस जिले मे ६ आदमी गोली के शिकार हुए एव २० जेलो में मर गये। यहाँ पर कई लोगों को ३५ साल तक की सजायें हुई।

: ८ :

आसाम में आन्दोलन

एक नज़र में

ज़िला	नज़रबन्द	गिरफ़्तारियाँ	सज़ायें	सामूहिक जुर्माना
लखीमपुर	१९	३११	२१४	१०,००० रु०
शिवसागर	२३६	३४७	२८७	१,४०,००० ,,
नौगांव	९०	१६००	१७००	८७,००० ,,
दारंग	८	४२०	१४२	४५,७००० ,,
कामरूप	४३	६५५	६१४	६६,०११ ,,
ग्वालपाड़ा		७	९	३८,००० ,,
	३९६	३६५०	२७६३	३,८६,७११ रु०

नोट—लगभग २,३२,००० रु० सामूहिक जुर्माना वसूल किया गया।

कितनी जगह गोली चली	९
कितने घायल हुए	लगभग १०००
कितने मरे	७०–८०
साधारण लाठी-चार्ज	१५
सख्त लाठी-चार्ज	१७
कितनी जगह तोड़-फोड़ हुई	२१
कितनी जगह विस्फोट हुए	६
कितनी जगह गाड़ियां गिराई गईं	९

नोट.—प्रान्त की लगभग ९२ लाख जन-संख्या में से करीब २० लाख आदमियों ने आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया।

आसाम प्रान्त भारत की पूर्वी सीमा बनाता है। सीमा-प्रान्त का अपना महत्त्व होता है और वही इसका भी है। इसका क्षेत्रफल ६७,३३४ वर्ग मील है, पर यहां आबादी अपेक्षाकृत बहुत कम है, क्योंकि यहा पहाड़ी

प्रदेश अधिक हैं। प्राकृतिक दृष्टि से आसाम तीन भागों में बटा हुआ है— ब्रह्मपुत्र या आसाम घाटी, सूरमा घाटी तथा पहाड़ी भाग। सूरमा घाटी के सिलहट एवं कछार जिले सबसे अधिक बसे हुए है। बाहर के लोग यहा काफी आकर बस गये है। जैसे बिहारी ग्वाले, बगाली, मारवाड़ी आदि। मेमनसिह आदि स्थानो से बहुत से मुसलमान भी यहाँ आये है। मारवाडी लोगो के हाथों में यहा का अधिकाश व्यापार है तथा बंगाली लोग सरकारी नौकरियाँ करते हैं। इन दोनो वर्गों के लोग यहाँ की राजनीतिक हलचल मे बहुत कम भाग लेते हैं। यही कारण है कि सन् १९४२ के आन्दोलन में अधिकाश भाग स्थानीय लोगो ने ही लिया।

शायद कुछ लोग यह सोचते हों कि देश के एक कोने पर स्थित होने के कारण ९ अगस्त को नेताओं की गिरफ्तारी के साथ बम्बई से जो क्रान्ति की भयकर लपट ब्रिटिश साम्राज्यशाही को भस्म करने के लिए उठी, उसका आसाम की जनता पर खास असर न पड़ा होगा। पर बात ऐसी नही है। आसाम देश के उन भागो मे से है जहा आन्दोलन का रूप अत्यंत उग्र रहा। यहा के लोगों ने सन् १९४२ के खुले विद्रोह मे अपूर्व त्याग, बलिदान, उत्साह एव जोश का परिचय दिया।

नेताओ का गिरफ्तारी से आसामवासियो के हृदय पर वज्र टूट पड़ा। इस अमानुषिक प्रहार को उन्होंने अपनी आशाओ और उमगों पर प्रहार समझा। वे उत्तेजित हो उठे और ऐसी अविवेकपूर्ण सरकार को, जो महात्मा गाधी और जवाहरलाल नेहरू जैसी महान् आत्माओ को जेल के सीखचों में ठूंस देने के जघन्य कार्य से जरा भी न हिचकीं, अस्त-व्यस्त कर अपनी समानान्तर सरकार स्थापित करने के लिए उन्होंने अपने प्राणों की बाजी लगा दी। सरकार भला यह कब सहन करने लगी? उसने उन पर भाति-भाति के अमानुषिक प्रहार किये, पर आसामवासियों ने देश की आजादी के लिए उन सबका अपने अहिंसा शस्त्र से सामना किया एव कई महीनो तक सरकारी शासन को पंगु बना दिया।

आसामवासियो के हृदय में आजादी के लिए जलती हुई ज्वाला को देश ने अगस्त-क्राति में ही देखा। क्या ग्रामीण, क्या नागरिक, क्या बूढे, क्या जवान, क्या स्त्री, क्या पुरुष, क्या धनी, क्या निर्धन, क्या शिक्षित, क्या अशिक्षित, क्या हिन्दू, क्या मुसलमान प्राय. सभी वर्गों तथा श्रेणियो के लोगों ने प्राणों की बाजी लगाकर देश की आजादी के इस आन्दोलन को आगे बढ़ाया। वे भी अजीब दिन थे जब जिसे देखिये उसी के हृदय में उत्तेजना उबाल खा रही थी। थोड़े

से पहाड़ी भाग को छोडकर सारा-का-सारा आसाम क्रान्ति की गोद मे खेल रहा था।

ऐसा होना स्वाभाविक था? क्योंकि क्रान्ति के लिए सभी आवश्यक कारण अन्य स्थानों की अपेक्षा यहा अधिक मात्रा मे विद्यमान थे। सामने से जापान बढ़ता हुआ आ रहा था तथा बर्मा एव मलाया की हार से लोगों का अंग्रेजो की शक्ति पर से विश्वास उठ चला था। फौजियो के लाखो की सख्या में वहा आजाने के कारण लूट-खसोट, व्यभिचार, वस्तुओ की कमी आदि बातो का जोर बढ़ रहा था। फौजियो के रहने तथा हवाई अड्डे आदि बनाने के लिए बिना कुछ दिये और अन्य इतजाम किये लोगो से जबरन गाव-के-गांव खाली कराये जा रहे थे। इन सभी कारणो से जनता का असन्तोष चरम सीमा पर पहुंच चुका था। बारूद तैयार थी, केवल चिनगारी की आवश्यकता थी। नेताओ के पकड़े जाने के साथ ही वह सुलग उठी।

आसाम के लोग सीधे, सरल और धार्मिक प्रकृति के है। प्राकृतिक कठिनाइयो के कारण यातायात के साधन वहां अधिक विकसित नही हो पाये है। अतएव स्वाभाविक रूप से ही यहां के लोगों का सुझाव गाधीजी के सिद्धातो की ओर है। वे रचनात्मक कामों को विशेष रूप से पसन्द करते है। ब्रह्मपुत्र की घाटी में रहने वाले अधिकांश लोग काग्रेसवादी है। मुसलमानो पर जमीयतुल-उलमा का अधिक प्रभाव था। सिलहट के ४०० मुसलमान आन्दोलन मे जेल गये। वहां पर काग्रेस के अधिकाश लोग मध्यम श्रेणी के शिक्षित नौजवान व्यक्ति है, पर उच्च वर्ग के लोगो का भी किसी-न-किसी रूप मे सहयोग अवश्य है।

विद्रोह का श्रीगणेश हडतालो एव शान्तिपूर्ण प्रदर्शनो से हुआ। हड़ताल इतने जोरों पर चली कि तमाम स्कूल, कालेज बन्द हो गये। देहात के मजदूरो ने भी अपना काम बन्द कर दिया। राष्ट्रीय नारो के साथ बड़े-बड़े जुलूस निकाले जाने लगे। प्रायः ऐसा होता था कि स्त्री-पुरुष, लड़के-लड़किया मीलो दूर से जुलूस बनाकर आते थे। उनके हाथो मे राष्ट्रीय झडे रहते थ जिनको वे थानो, स्टेशनो, पोस्ट ऑफिसो आदि सरकारी सस्थाओ पर फहराने का प्रयत्न करते थे। हिसाब लगाने से पता चलता है कि प्रान्त के करीब दो-तिहाई लोगो ने इन प्रदर्शनो मे भाग लिया। सरकारी सस्थाओ पर किए गए आक्रमण प्रायः अहिंसक और शान्तिपूर्ण होते थे, किन्तु कानून का दम भरने वाले किराये के टट्टुओं ने इनका जवाब किर्चो और गोलियो से दिया जिसके कारण भारतमाता के कितने ही अमूल्य लाल छिन गए।

ज्यो-ज्यो दमन बढ़ता गया त्यों-त्यों लोगो ने और भी अधिक उत्साह दिखाया । सरकारी दमन ने लोगो के जोश को कुचलने की अपेक्षा उसे पुष्ट किया । करीब चार महीने तक सरकारी शासन एकदम पगु बना दिया गया । बहुत से स्थानों पर जनता ने अपनी पंचायतें स्थापित कर ली, पुलिस का काम गांव के लोग ही करते थे । कई स्थानो पर तो पचायतों ने अपनी जेलें भी बना ली थी ।

आन्दोलन के दो रूप थे । एक रचनात्मक और दूसरा अवरोधात्मक । रचनात्मक दृष्टि से देहातों को स्वत पूर्ण इकाई बनाने का प्रोग्राम था, जिससे एक निश्चित समय के भीतर उन्हे स्वतत्र घोषित किया जा सके । अवरोधात्मक प्रोग्राम के अनुसार फौज के ठेकेदारो को गाँवों से मिलने वाली चीजो पर रोक लगा दी गई थी । धान, पशु, तरकारी आदि वस्तुओ को विरोधी लोग लुक-छिपकर न ले जा सके इसकी रक्षा के लिए यातायात के सभी साधन, यहां तक कि सरकारी सड़के भी नष्ट कर दी गई थी ।

आन्दोलन के कुछ दिन पूर्व से ही गाँव वालो ने अपनी रक्षा के लिए शान्ति-सेना बना ली थी, जिसमे गरीब २०,००० स्वयं सेवक थे । इन लोगों ने गांव-गाव मे अपने तम्बू गाड रखे थे और रात को बारी-बारी से गाव के प्रत्येक नाको पर पहरा देते थे । इन लोगों का काम था गाव की निगरानी रखना और किसी खतरे का सन्देह होते ही तुरही बजाकर गाव वालों को सावधान कर देना । सेवक अपने कर्त्तव्य को बड़ी तत्परता से पूरा करते थे । कई वीरों ने गोली खाकर भी तुरही बजाई और गाव वालों को खतरे से बचने के लिए सावधान किया ।

आन्दोलन के प्रथम १८ दिन बड़े शान्तिपूर्ण रहे । सारे आसाम मे कही भी रेलवे की सड़क नही उखाडी गई । केवल एक मामूली घटना हुई । उसके लिए अधिकांश मे जंगली हाथी को उत्तरदायी बताया जाता है । परन्तु नवम्बर मास से सड़कें तोड़ना, गाड़ियो को उलटना, मालगोदामों, स्टेशनो, जंगलात के बगलों, फौजी गोदामों एव भिन्न-भिन्न प्रकार के स्कूलों को लूटने तथा जलाने का काम प्रारम्भ हो गया । ६ स्थानो पर गाड़ी गिराई गई, जिनमें से दो जगह भारी जन-धन की हानि हुई । २६ नवम्बर को गोहाटी रेलवे स्टेशन से १४ मील दूर पर एक फौजी गाड़ी गिराई गई जिसमें करीब १५० व्यक्तियों की जाने गईं । इसके अतिरिक्त देशी बम भी बनाये गए, जो कालेजों के कमरों, तार-घरो एवं रेलवे प्लेटफार्मो पर फटते थे । क्रान्ति की यह आग नौगांव जिले मे महात्मा गान्धी के उपवास तक धधकती रही । आसाम की कांग्रेस

सरकार के प्रधान मंत्री श्री गोपीनाथ बारदोलाई के शब्दो में, 'इस प्रकार के हिंसापूर्ण कार्य बहुत अंशों में आपसी ईर्ष्या व्यक्तिगत शत्रुता, युद्ध के ठेकेदारों की बिना काम किये ही बिल पास कराने की नीच मनोवृत्ति तथा गबन करने वाले अफसरों द्वारा ऑफिस रेकार्ड नष्ट कर अपनी चोरी छिपाने के लज्जा-जनक प्रयत्नो के कारण ही हुए है' आन्दोलनकारियो का वास्तव में उनमें बहुत कम हाथ रहा है।

जैसा कि पहले बताया जा चुका है कि आन्दोलन बहुत अशो तक अहिंसात्मक रहा। तेजपुर सब-डिवीजन में ऐसे साहसपूर्ण अहिंसक कार्यों का प्रदर्शन हुआ है जिनकी समता संसार के किसी भी देश के इतिहास में मिलनी कठिन है। एक-दम निहत्थे और शान्त स्त्री-पुरुषो ने दराग जिले के ढेकिया-जुली, बेहाला, गोहपुर आदि स्थानो पर गोलियों का छाती खोलकर सामना किया। गोहाटी से १६ मील दूर मुक्तापुर गाँव में कांग्रेस के प्रसिद्ध कार्यकर्त्ता श्री महेन्द्रनाथ डेका के सभापतित्व में ५००० आदमियो की एक सभा हो रही थी। दारोगा पुलिस को लेकर वहा पहुँचा और उसने सभा विसर्जित करने एव श्री डेकाजी को बन्दी बनाने की आज्ञा दी। जनता इस धमकी से न डरी। वह सभा-स्थल पर डटी रही। साथ ही उसने अधिकारियो से साफ-साफ कह दिया कि श्री डेकाजी इस समय हमारे अधिपति हे। हम ब्रिटिश हुकूमत को नही मानते। दारोगा ऐसा मुह-तोड़ उत्तर पाकर जल-भुन गया और उसने गोली चलाने का हुक्म दे दिया। पर इससे पहले कि सिपाही गोली चलायें, सब लोगों ने उनको घेर लिया और उनकी बन्दूकें छीन ली। उन्होंने किसी को जरा भी चोट न पहुंचाई। श्री डेकाजी आगे बढ़े और एक अहिंसक सिपाही की भांति अपने-आपको पुलिस अधिकारियों को सौंपने के लिए तयार हो गये। जनता ने आवाज उठाई "नही, नही ऐसा नही हो सकता। आज प्रजा का दिन है। यदि अधि-कारी लोग आपको गिरफ्तार करना चाहते है तो कल आयें।" इतना कह वह अपने नेता को घर लिवा ले गई और उधर दारोगा भी अपने साथियो के साथ अपने घर चला गया। दूसरे दिन डेकाजी ने अपने वादे के अनुसार १५-२० प्रधान कार्यकर्त्ताओं के साथ अपने-आपको पुलिस अधिकारियो को सौंप दिया। श्री डेकाजी को एक साल की सजा हुई। इसी प्रकार कामरूप में भी हजारों लोगो की एक भीड़ ने पुलिस अधिकारियो को घेर लिया, परन्तु उन्हें किसी प्रकार की हानि नही पहुंचाई। केवल अपने साथ जुलूस मे शामिल कर लिया। आसाम के लोगों ने इस प्रकार अहिंसक अनुशासन का परिचय दिया।

आसाम के आन्दोलन मे स्त्रियों ने खूब हिस्सा लिया और वह भी पूर्ण

अहिंसात्मक रूप में। जहाँ भी गोलिया चली, लाठी-चार्ज हुए, स्त्रियाँ पुरुषों के साथ मौजूद थी। इतना ही नही, गोली खाने या गिरफ्तार होने के लिए सब से आगे स्त्रियां ही बढी। देश की आजादी के लिए हंसते-हंसते प्राण न्यो-छावर कर देने वाली वीर कन्या कनकलता, तुलेश्वरी आदि पर कोई भी राष्ट्र गर्व किये बिना नहीं रह सकता। ऊपरी आसाम में फौज के अत्याचारों से जनता के जान-माल की रक्षा करने में श्रीमती अन्नप्रिया एव सुधालता की अध्यक्षता में स्त्रियो के एक बडे जत्थे ने बडी तत्परता एव साहस का परिचय दिया। पुलिस के अत्याचारो से पीडित प्रदेशों में अपनी जान खतरे में डालकर भी जनता की रक्षा का काम आसाम की स्त्रियो ने ही किया। राष्ट्रीय आन्दोलन के इतिहास मे आसाम की स्त्रियों का चमकता हुआ स्थान रहेगा।

कुछ अपूर्व बलिदान

(१) कमला मीरी का नाम भारतीय इतिहास मे अमिट रहेगा। यह वीर अपनी साहसपूर्ण दृढता द्वारा हमे मेवाड के महाराणा प्रताप की याद दिला देता है। उसने अपनी आन की रक्षा के लिए तिल-तिल कर अपने प्राण गवा दिए, पर मुह से उफ तक नही की।

कमला मीरी गोलाघाट जिला काग्रेस कमेटी का एक सदस्य था। सदा से ही यह काग्रेस-कार्यों मे प्रधान भाग लेता था। अतएव अधिकारियों की उस पर नज़र थी। आन्दोलन प्रारम्भ होने पर अधिकारियों ने कमला मीरी को गिरफ्तार कर लिया। मजिस्ट्रेट ने कमला मीरी से कहा—

'हम तुम्हे छोड सकते है, पर एक बात का आश्वासन चाहते है।'

'वह क्या ?' कमला मीरी ने पूछा।

'तुम काग्रेस के काम मे सहयोग देना छोड दो।'

कमला मीरी को ये वचन विष में बुझे हुए बाण के सदृश लगे। वह आवेश मे आ गया और गरज कर बोला, 'बस रहने दीजिए, साहब ! मै ऐसे अपमानजनक वचन सुनना नही चाहता। आप मुझसे कभी भी ऐसी आशा न कीजिएगा। मैंने काग्रेस का जो काम सम्भाला है वह किसी लालच में आकर नही। मेरा सम्पूर्ण जीवन कांग्रेस के लिए है। मैं काग्रेस के लिए ही जीता हू और काग्रेस के लिए ही प्राण दूगा। आप कृपया ऐसे लज्जाजनक शब्द मेरे सामने न कहिये।'

मजिस्ट्रेट ऐसा कठोर एव खरा उत्तर सुनकर चुप हो गया और तत्काल कमला मीरी को ८ महीने की कडी कैद का हुक्म सुना दिया।

कमला मीरी जोरहाट भेज दिया गया। जेल के गन्दे वातावरण एव

खराब भोजन ने उनके स्वास्थ्य पर गहरा असर डाला और वह बीमार हो गया। दवा आदि का प्रबन्ध ठीक न होने के कारण हालत गिरने लगी। कुछ दिन बाद ऐसा होने लगा मानो कमला मीरी का जीवन-दीप बुझने वाला है। उसे स्वयं इस बात का भान होने लगा। अधिकारियो ने जीवन एव मृत्यु के बीच पडे इस युवक को अपनी आन से गिराने की एक और कोशिश की, वे उसके पास गये और कहने लगे, 'अच्छा हम तुम्हें सदा के लिए काग्रेस का त्याग करने को नही कहते। हमें सिर्फ इतना आश्वासन दे दो कि पैरोल की अवधि में तुम आन्दोलन में भाग नही लोगे।'

कमला मीरी को अधिकारीवर्ग के ये वचन वज्र के समान लगे। वह इस अपमान को सहन नही कर सका। उसने शैया पर पड-पडे ही उत्तर दिया, 'मैं कायरो की भांति छूटने की अपेक्षा वीरतापूर्वक मृत्यु का आलिंगन करना अधिक श्रेयस्कर समझता हूं। मुझे जान की अपेक्षा मान अधिक प्यारा है। आन की रक्षा के लिए यदि मुझे प्राण भी त्यागने पड़ेंगे तो यह मेरे लिए अत्यन्त गौरव की बात होगी।'

अधिकारियो पर युवक के इन निर्भीकतापूर्ण वचनो का बडा प्रभाव पडा। वे वहां से चुपचाप चले गए। पर युवक को फुसलाने का प्रयत्न उन्होंने जारी रखा। कमला मीरी भी उनके वचन सुन लेता, पर कुछ उत्तर नही देता था। धीरे-धीरे उसकी हालत बहुत गिर गई। मृत्यु के एक या दो दिन पहले जेलर स्वयं उसके पास आया और आश्वासन की बात कहने लगा। युवक से अब रहा न गया। उसने कडककर उत्तर दिया—

'यह यंत्रणा मै किसी स्वार्थ के लिए नही, बल्कि तुम्हारे और अपने, सबके लिए, सह रहा हू। फिर तुम मुझे आश्वासन देने के लिए क्यों कह रहे हो।

इस प्रकार यह वीर घुल-घुलकर मर गया, पर अपनी आन पर उसने तनिक भी धब्बा नहीं आने दिया। लोगो ने देखा, अन्त समय तक उसके चेहरे पर सन्तोष की एक दिव्य आभा चमक रही थी।

कमला मीरी आज इस दुनिया मे नही है पर उसका यह बलिदान सदियों तक देश के बच्चों में अपनी मातृभूमि की आजादी के लिए हंसते-हंसते प्राण न्योछावर करने की पवित्र भावना जागृत करता रहेगा।

(२) श्री कौशल कुअर का नाम भारत की आजादी की लड़ाई के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखा जायगा। इस वीर का जन्म आसाम की प्रसिद्ध जाति अमोह में हुआ था। यह जाति सदा से ही अपनी वीरता एवं

सच्चाई के लिये विख्यात है। अंग्रेजों से पहले आसाम पर इसी जाति के लोगों का राज्य था। अतएव कौशल कुंअर में भी अपने पूर्वजो की भांति सचाई के लिए विशेष अनुराग था। यह वीर सरूपथार इलाके में रहता था। कांग्रेस के नाम पर जो प्रोग्राम उसे मिलता गया वह वैसे-का-वैसा लोगों को बताता रहा। अचानक सरूपथार की रेल दुर्घटना हो गई। अधिकारियों ने झट कौशल कुंअर को इस केस में फंसा लिया। कौशल कुंअर घटना-स्थल पर उपस्थित नही था। किन्तु पुलिस वालो ने उस पर यह अभि-योग लगाया कि उसने जनता के सामने यह घोषणा की है कि गाड़ी उलटना तथा यातायात के साधन नष्ट करना कांग्रेस के प्रोग्राम में है। डिप्टी कमिश्नर के सामने केस चला और उसे मार्च १९४३ में फांसा का हुक्म सुना दिया गया। गवर्नर के सामने अपील की गई, पर कुछ फल नही निकला और १५ जून १९४३ को कौशल कुंअर देश की आजादी के लिए हंसते-हंसते फांसी के तख्ते पर झूल गया।

कौशल कुंअर का अपने सम्बन्धियों के अलावा अन्य किसी व्यक्ति से नही मिलने दिया गया। हा, १४ जून की दोपहर को श्री गोपीनाथ जी बार-दोलोई आदि कुछ बन्दियो को अपने व्यक्तिगत प्रभाव के कारण कौशल कुंअर से भेंट करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। बारदोलोईजी पर इस भेंट का इतना गहरा प्रभाव पडा कि उन्होने इसका पूरा वर्णन अपनी डायरी मे नोट कर रखा है। हम पाठकों की जानकारी के लिए बारदोलोईजी के शब्दों का भावार्थ यहां देते हैं:—

"हमारी इच्छा थी कि हम कौशल कुंअर को उसके अन्तिम समय में कुछ सात्वना दें। अतएव हम उससे मिलने के लिये गये। परन्तु उसको सांत्वना देना तो दूर रहा, उल्टे हमने ही उससे सांत्वना प्राप्त की। हम वहा से ऐसी पवित्र उत्तेजना लेकर आये जो हम चाहते है कि जीवन भर बनी रहे। हमें ऐसा मालूम पड़ा कि मुक्ति प्राप्त करने के लिए जो साधना कौशल कुंअर कर रहा था उसे उसने आज पूरा कर लिया है। उसने स्थितप्रज्ञ की स्थिति, प्राप्त कर ली थी। मृत्यु के कुछ क्षण पूर्व एक अजीब प्रकार की खुशी उसके चेहरे पर फूटी पड़ती थी। उसके वचनों से उसका ईश्वर पर दृढ विश्वास और उसके हृदय की शान्ति एव स्थिरता टपक रही थी। इन बातो ने मुझ पर जादू का-सा असर किया। लेखनी के द्वारा कौशल कुंअर के शब्दों एवं भावो को व्यक्त करने में मैं अपने-आपको बिलकुल असमर्थ पाता हूं। फिर भी उसनें जो कुछ कहा, उसका सार इस प्रकार था;

"मैं निर्दोष हूं। मुझे व्यर्थ में अपराधी बनाकर फांसी दी जा रही है। यह मेरे साथ ज्यादती है। मैं महात्मा गाधी एवं उनकी अहिंसा-नीति पर श्रद्धा रखता हू। मैं जीवन-भर फलाहारी रहा हू और पिछले ९ महीनों से तो मैंनें नमक भी छोड दिया है। ऐसी सूरत में मै गाड़ी उलटने जैसी बात सोच ही नही सकता, उसमें सक्रिय भाग लेना तो दूर रहा। गाड़ी उलटने में तो अनेक नर-नारियों की हत्या होती है, जो मुझे अत्यन्त प्यारे हैं। हाँ, यह बात सत्य है कि सच्चा कांग्रेस-कार्यकर्ता होने के नाते, जो भी साहित्य कांग्रेस के नाम पर मुझे मिलता गया, मैंने उसे वैसा-का-वैसा जनता को बता दिया। इसके अतिरिक्त मैं लोगो के साथ नाम-कीर्तन तथा धर्म-चर्चा भी किया करता था। फासी की सज़ा से मुझे तनिक भी दुःख एव चिन्ता नही है। जब देश के लिए कैद चार-पाच सौ बन्दियो मे से मुझे ही यह सज़ा मिली है तो मेरा यह विश्वास हो गया कि ईश्वर मुझे बहुत प्यार करता है और इसीलिए उसने मुझे इस काम के लिए चुना है। मैं तो यह मानता हू कि इसी दैवी प्रेरणा के कारण आप लोगो का तथा दूसरे प्रेमियों का प्रयत्न मुझे बचाने मे सफल न हो सका। मैंने अपनी स्त्री एवं बच्चों को, जो दुःख से अधीर हो रहे थे, अच्छी तरह समझा दिया है कि यदि मानवी शक्ति के द्वारा मेरी जान बचाई जानी सम्भव होती तो मैं बच जाता। मुझे अकाट्य कर्म-फल को सहर्ष स्वीकार करना चाहिए। इसमें चिन्ता एव सताप करने की क्या बात ? जीवन है तो मृत्यु, और मृत्यु है तो जीवन। जब मैं जनमा था तो मुझे डेढ घटे तक बेहद पीड़ा झेलनी पड़ी थी। किन्तु अब तो १५ मिनट भी नही लगेंगे। मेरा आत्मा स्वतन्त्र है, उसका कोई कुछ नही कर सकता। ईश्वर ने मुझे यह प्रदान का और वही अब इसे वापिस ले लेगा।"

इतना कहकर कौशल कुंअर चुप हो गया। कांग्रेस स्वयंसेवको ने, जो वहां उपस्थित थे, इस महान् आत्मा के सामने सिर झुका दिया। मेरे मुख से केवल इतने ही शब्द निकल सके, "ईश्वर आनदस्वरूप है और उसे मैं तुममें देख रहा हूं।"

कौशल कुंअर की अवस्था इस समय ३८ वर्ष की थी, किन्तु उसने अभी तक किसी गुरु से दीक्षा नहीं ली थी। अतएव कुछ क्षण ठहरकर उसने गोस्वामी श्री डेका सत्राधिकार से, जो उस समय जोरहाट जेल में नजरबन्द थे, दीक्षा लेने की इच्छा प्रकट की। गोस्वामीजी ने उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ली और उसे उसी समय दीक्षा दे दी थी।

कालकोठरी में रहते हुए भी पिछले तीन महीनों में कौशल कुंअर का वजन घटने की अपेक्षा बढ़ा ही था। वह निरन्तर गीता का अध्ययन एवं मनन करता रहता था। पहरा देने वाले चौकीदार उसे प्रेम एवं आदर की दृष्टि से देखने लगे थे। फांसी के दिन खूब ज़ोर का वर्षा हो रही थी। जब सुबह साढ़े चार बजे प्रधान चौकीदार सशस्त्र पुलिस के साथ उसकी कोठरी मे गया तो वह शातभाव से सो रहा था। उसने उसे जगाया और वह तुरन्त खड़ा हो गया। चौकीदार एवं जेलर, जो वहां उपस्थित थे, के कथनानुसार उसकी आवाज एव व्यवहार में किसी प्रकार की अशान्ति एव घबराहट नहीं थी। उसने ५ मिनट तक भगवान् से करुण प्रार्थना की: इतने ही मे सुपरिन्टेन्डेन्ट ने उसे हुक्म सुनाया और जल्दी से तैयार होने के लिए कहा। कौशल कुंअर उठा और झट उनके साथ फासी-घर की ओर चल दिया। रास्ते मे वह गोस्वामीजी के बताये हुए मंत्र को मस्ती से गा रहा था। तख्ते पर खड़े होकर उसने सबसे प्रार्थना की कि यदि मैंने आप लोगों को कुछ हानि पहुंचाई हो या अपशब्द कहे हों तो आप मुझे क्षमा करे। जब फांसी का फंदा उसके गले मे डाला जा रहा था तो उस समय भी वह गोस्वामीजी के दिए हुए मत्र को जप रहा था। देखते-ही-देखते तख्ता खीच लिया गया और कौशल कुअर सदा के लिए संसार से विदा हो गया।"

एक दूसरे प्रत्यक्षदर्शी ने इस घटना के विषय मे लिखा है।

"लड़कपन में मै इतिहास पढा करता था कि देश-प्रेम के लिए लोग हंसते-हंसते फांसी पर चढ गये। तब मुझे यह बात कुछ बनाई हुई-सी मालूम पड़ती थी। लेकिन, जब फांसी की कोठरी में, १४ जून १९४३ को फांसी होने के एक दिन पहले, मैंने कौशल कुअर को देखा तो मेरा मस्तक श्रद्धा से उसके चरणो में झुक गया। प्रसन्न मुख, होठों पर थिरकती मुसकान और आंखो में एक दिव्य ज्योति। इतिहास मेरी आंखों के सामने सजीव हो उठा। उसके अन्तिम शब्द अब भी रह-रह कर मेरे कानों में गूज उठते है।

जिसने जन्म लिया है, वह एक दिन अवश्य मरेगा ही मुझे खुशी है कि इतने लोगों मे ईश्वर ने मुझे ही चुना। ईश्वर मुझे प्यार करता है।

स्वतत्रता की बलिवेदी पर न्योछावर होने के लिए उसने हसते-हंसते फांसा का फदा अपने गले मे डाल लिया। फंदा खीचा गया मुह से अस्फुट स्वर निकला 'पार करो दीनानाथ संसार सागर' और वह महान् आत्मा गुलामी के बन्धन से मुक्त हो गई।

निर्दोष व्यक्तियों के बलिदान, उनके आँसू कभी व्यर्थ नही जाते।

अतएव देश की आजादी के लिए हँसते-हँसते अपने प्राण न्योछावर करने वाले आसाम प्रान्त के नर-नारियों के ये बलिदान हमे अपने पवित्र आदर्श को आगे बढाने में आत्म-बल प्रदान करेंगे।

अन्य प्रान्तों की भाति यहा पर भी आन्दोलन का श्रीगणेश विद्यार्थियों की हड़ताल से हुआ और बाद में भी उसकी बागडोर काफी हद तक विद्यार्थियो के हाथों में रही। यहा के विद्यार्थियो ने न केवल शिक्षण-सस्थाओं का ही बहिष्कार किया, प्रत्युत उन्होने नौजवानो के साथ मिलकर "मृत्यु दल" (Death Brigade) का सगठन भी किया जिसका उद्देश्य उसके नाम से ही प्रकट है। सितम्बर १९४२ से दिसम्बर ४३ तक आन्दोलन को चालू रखने के लिए बहुत-सा साहित्य प्रकाशित हुआ था। उसमें यह कार्यक्रम दिया गया था,—

१. सरकारी आवागमन के साधनों का विध्वंस।
२ रेलवे लाइन को उखाड़ना।
३. सरकारी इमारतो, पुलिस, ऑफिसों आदि का तोड़ना-फोडना।
४. समानान्तर सरकार की स्थापना आदि।

इस कार्य-प्रणाली को स्थिर करने वाले तथा उसके अनुसार आन्दोलन का संचालन करने वाले अधिकतर विद्यार्थी ही थे।

आसाम मे जैसा अमानुषिक और वीभत्स दमन हुआ वह साम्राज्यवाद की समूची यातनाओ का निचोड़ था, पर फिर भी क्रान्ति दबी नही। आसाम में पुलिस एवं फौज ने अहिंसक एव शान्तिपूर्ण प्रदर्शन करने वाली जनता के खून से होली खेली। लोगों पर अन्धा-धुन्ध गोलियो की बौछार कर देना, लाठियों का प्रहार करना, उनकी बहन-बेटियो के साथ बलात्कार करना, उनके घर जला देना तथा उनके छोटे-छोटे मासूम बच्चो को मौत के घाट उतार देना सरकारी कर्मचारियो के लिए साधारण-सी बात थी। सचमुच कुछ दिन के लिए आसाम में पुलिस और फौज का राज कायम हो गया था। चन्दा वसूल करने वाले स्त्रियो के जेवर, बैल, गाय, यहा तक कि बर्तन एव पहनने के कपड़े भी नोच-खसोट कर ले जाते थे। कई स्थानो पर तो लोगों को किर्चें भौंक-भौंक कर मार डाला गया, ठीक उसी प्रकार जैसे कि जंगली सूअर को शिकार मे मारा जाता है। पुलिस और फौज ने इन कामो में बहुत-से बाहरी गुण्डो से भी मदद ली थी।

जेल में भी बडा अत्याचार किया गया। कैदियों को न तो पूरा भोजन दिया गया जाता था न पूरे कपड़े। सर्दियाँ लोगों को ठिठुर-ठिठुर कर बितानी

पड़ी। २४ फरवरी १९४३ को जोरहाट जेल मे निर्दोष राजनैतिक बन्दियों पर किये गये अत्याचारो की कहानी बडी लोमहर्षक है। बन्दियों का अपराध सिर्फ इतना ही था कि वे अपने नेता महात्मा गाधी के उपवास पर अपनी सहानुभूति दिखाने के लिए सामूहिक प्रार्थना एव नाम-कीर्तन कर रहे थे।

उत्तरी आसाम

आन्दोलन की गति तीव्र होने के पहले ही यहाँ के सब नेता गिरफ्तार कर लिए गए थे, पर फिर भी जोरहाट और सिवसागर में सरकारी अदालतो के सामने बडे-बड़े शान्तिपूर्ण प्रदर्शन हुए। लोगो को अदालत में जाने से रोकने के लिए पिकेटिंग की गई। शहरों एवं गावो मे सभाएं की गई, जिनमें स्त्री-पुरुष सभी ने बड़े उत्साह से भाग लिया। भाग्य से उस समय यहाँ डिप्टी-कमिश्नर एक हिन्दुस्तानी था जो बडा नरम एव सहनशील था। अतएव सशस्त्र पुलिस के लगातार गश्त लगाने पर भी जनता पर लाठियो या गोलियो की वर्षा नही होने पाई। परन्तु बाद में यूरोपियन अफसर के आ जाने पर सभी प्रकार के अत्याचार हुए।

२० सितम्बर को सिवसागर में एक सभा होने वाली थी। पुलिस ने सूचना पाते ही चारो ओर शहर के सभी नाकों पर फौज तैनात कर दी। परन्तु लोगो का उत्साह इससे कम न हो सका और करीब ८-१० हजार स्त्री-पुरुष शहर मे घुस आये और शहर भर में राष्ट्रीय नारे लगाते हुए घूमने लगे। पोलिटेकनिकल इन्स्टीट्यूट और सिवसागर के पास सशस्त्र पुलिस और कुछ लोगों की भिड़न्त हो गई, जिसमें १९ आदमी बुरी तरह घायल हुए। शान्ति-सेना के कैम्प मे उनकी मरहम-पट्टी की गई। बाद में झगड़ा और बढ़ता, किंतु हिन्दुस्तानी डिप्टी कमिश्नर ने बीच-बचाव करके रक्त-पात न होने दिया। नौकर-शाही की दृष्टि मे डिप्टी कमिश्नर का यह अपराध था जिसके फलस्वरूप बेचारे को वहा से दूसरी जगह जाना पड़ा।

इस जिले मे आन्दोलन रचनात्मक और अवरोधात्मक दोनो रूपो मे चला। रचनात्मक प्रोग्राम के अनुसार स्वत. पूर्ण गावो का निर्माण किया गया तथा पचायतें स्थापित की गईं। इन पचायतो में गाव के सभी वर्गो का प्रतिनिधित्व रहता था। चरीगाव, हटीगढ, टेमोक आदि स्थानो पर स्वाधीन सरकार भी कायम की गई। अवरोधात्मक प्रोग्राम के अनुसार फौज एव फौज के ठेकेदारों को गावों से मिलने वाली सभी सहायताओ पर रोक लगा दी गई थी। इस प्रकार धान, पशु तरकारी आदि का गाव से जाना एकदम बन्द हो गया था। जो लोग इस नियम की अवहेलना करते थे उनको उचित दण्ड दिया जाता था।

इस असहयोग के कारण अधिकारी लोग बडे क्रोधित हुए और उन्होंने लोगों को गिरफ्तार करना तथा उन पर किर्चों एवं लाठियों से प्रहार करना शुरू कर दियो। जोरहाट में पुलिस के इन प्रहारों के कारण ५० कार्यकर्त्ताओ को स्थाया चोटें पहुची और बहुत से घायल हुए।

जोरहाट सब-डिवीजन मे टेओक काग्रेस का एक प्रधान केन्द्र है। यहा पर असहयोग का सबसे अधिक जोर रहा और फौज के लिए मदद प्राप्त करने में बड़ी कठिनाई होने लगी। अतएव अधिकारी लोग जल भुन गए थे और वे किसी अवसर की प्रतीक्षा कर रहे थे। अचानक एक दिन ३००० ग्रामीण कांग्रेस दफ्तर के सामने जमा हुए, जो थाने के बिलकुल ही पास था। बस, दारोगा की मनचाही हो गई। उसने झट जोरहाट से काफी तादाद में फौज बुला ली और पुलिस तथा फौज की सहायता से एकत्रित भीड पर हमला कर दिया। किर्चों एव लाठियों से निरपराध स्त्री, पुरुष तथा बच्चों पर बुरी तरह प्रहार किया गया। कुछ स्त्रियां राष्ट्रीय झडे लिए हुए थी। दमनकारियों ने उनके हाथ से झडे छीनने की कोशिश की, लेकिन वीर महिलाओ ने अपने प्राणों की बाजी लगाकर भी राष्ट्रीय झडे का अपमान न होने दिया। दो स्त्रियो के सांघातिक चोटे लगी तथा १८ अन्य स्त्री-पुरुष घायल हुए। प्रधान-प्रधान काग्रेस कार्यकर्ता, गिरफ्तार करके जेलों में डाल दिये गये और बाद में दो महीने पीछे उन पर केस चलाया गया और १३ व्यक्तियो को २१ महीने से लेकर दो साल तक के कठिन कारावास की सजाए हुईं।

सरकारी विज्ञप्ति के अनुसार एक और दो नवम्बर को टीटाबार के मैनेजर का बंगला, अमगुरी का अग्रेजी मिडिल स्कूल और प्राइवेट गर्ल्स स्कूल, डिमोउ का ब्राच पोस्ट ऑफिस तथा टीटाबार जला दिये गये। तीन नवम्बर से लेकर १२ नवम्बर तक कई स्थानो पर स्कूल तथा पोस्ट ऑफिस आदि जलाये गये तथा तार काटे गये। फरवरी १९४३ में लकवा रेलवे स्टेशन के पास एक सवारी गाड़ी गिराई गई जिसके कारण बहुत से व्यक्ति घायल हुए और कुछ मारे गए।

उत्तरी आसाम के सिवसागर एव लखीमपुर जिलों में गोली न चली, इसका यह अर्थ नही कि यहा सरकारी दमन-चक्र की गति कुछ धीमी रही। यहाँ जेल के बन्दियो को भी अत्याचारों का शिकार बनाया गया, जोरहाट जिले में राजनैतिक कैदियो को न तो पूरा भोजन दिया जाता था, न पूरे वर्तन और न पूरे कपड़े। बेचारे बूढे एव जवान स्त्री-पुरुषो को सर्दी की रातें ठिठुर-ठिठुर कर बितानी पड़ती थी। अपनी शिकायतें दूर करने के लिए बन्दियो ने एक-

दो दिन भूख हड़ताल भी की, परन्तु कुछ परिणाम न निकला। इसी बीच २४ फरवरी, ४३ का दिन आ पहुचा। बन्दियो को महात्मा गान्धी के उपवास की सूचना मिली तथा यह भी ज्ञात हुआ कि उनकी अवस्था चिन्ताजनक है। सहानुभूति प्रदर्शन करने के लिए कुछ लोगो ने नाम कीर्तन प्रारम्भ किया। कुछ लोग दैनिक प्रार्थना कर रहे थ तथा कुछ भोजनशाला में भोजन कर रहे थे। अचानक बाहर से आग लगने की घटी बजी। चौकीदार लोग पहले से तैयार की हुई लाठिया लेकर दौड़े। उधर रिजर्व पुलिस के सिपाही भोजन-शाला में पहुचकर बन्दियो पर अन्धाधुन्ध लाठियो की वर्षा करने लगे। लाठी-प्रहारो से बंदियो को इतनी चोटे आईं कि भोजनशाला का फर्श लहू-लुहान हो गया। इतना ही नहीं, इन निर्दयी लोगो ने दो-एक वार्डों का छोड़-कर, जिनमें प्रधान-प्रधान नेता थे, बाकी वार्डो के फाटक खोल दिये और उनमें घुसकर बन्दियो को बुरी तरह से पीटा। ४० व्यक्तियो के साघातिक-चोटे आई, जिनमे १५ के तो सिर फट गए। हाथ, पैर, छाती, कमर आदि में चोटे आने वालो की सख्या तो अनगिनत थी।

सुबह जब श्रीयुत गोपीनाथ बारदोलाई आदि नेताओ को इस घटना की सूचना मिली तो उन्होने अधिकारियो की अनुमति से घटनास्थल पर जाकर वस्तु-स्थिति की जाच की। जहा आग लगी थी, वहा पर पुराने मकान के शहतीर के कुछ अधजले कूडे तथा मिट्टी के तेल भिगोये हुए कुछ टाट के चिथड़े पडे हुए थे, जिनसे यह स्पष्ट प्रकट होता था कि बन्दियो को पीटने के लिए आग का बहाना किया गया था, वास्तव में आग नही लगी थी।

इसी प्रकार लखीमपुर डिवीजन के नारायणपुर गाव मे भी झूठा बहाना बनाकर लोगो को बुरी तरह से पीटा गया। बात यह थी कि इस गाव के पास एक अग्रेजी हवाई जहाज टूटकर गिर गया था। गाव के कुछ लोग कौतूहल वश उसे देखने के लिए वहा चले गये। बस, फिर क्या था। सब-डिवीजनल अफसर ने लोगो पर इल्जाम लगाया कि वे जहाज का कुछ सामान उठाकर ले गये है अतः उन्हे मरम्मत आदि काम में बेगार देनी पड़ेगी। लोग निर्दोष थे, इसलिए उन्होने बेगार देने से साफ इन्कार कर दिया। एस० डी० ओ० नें कुछ बहाना निकाला। गाव मे कुछ कांग्रेस-कार्यकर्त्ता भी रहते थे। अतएव उसने चट लोगो पर यह इल्जाम लगा दिया कि वे इन काग्रेस-कार्य-कर्त्ताओ के कहने से सरकार के विरुद्ध बगावत करते है और उसने फौज का गाव लूटने-खसोटने का हुक्म दे दिया। अफसर का हुक्म पाते ही फौजी गाव पर टूट पड़े। उन्होने गाव के स्त्री-पुरुषो को बुरी तरह पीटा, उनके घरो का

लूट लिया, स्त्रियों के साथ बलात्कार किया एव प्रमुख लोगो को बन्दी बनाकर तरह-तरह की तकलीफें दी और अपमानित किया।

सरकारी दमन की भीषणता से आन्दोलन का बाह्य रूप दब गया और लोग लुक-छिपकर मौका लगने पर तोड़-फोड़ करने लगे। यह तब तक चलता रहा जब तक कि सन् ४३ मे गाधीजी एव वायसराय का पत्र-व्यवहार प्रकाशित नही हो गया।

नौगांव जिला

नौगाव जिले मे आन्दोलन की गति सबसे तीव्र रही। यहा के ग्रामीणों ने भी नागरिको के साथ आन्दोलन को आगे बढाने मे पूरा सहयोग दिया। सरकारी दमन से बचने के लिए यहा के लोगो ने तुरही बजाकर अपने-आपको इकट्ठा करने की प्राचीन परिपाटी से काम लिया था। शान्ति-सेना का प्रधान कार्य-क्षेत्र इसी जिले में था। यहा के बरापुजिया गाव के वीर पुरुष तिलक डेका ने जिस साहस एव कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया है, उसकी समता ससार के इतिहास में मिलनी कठिन है।

बरापुजिया गाँव ग्राडट्रकरोड से ३,४ मील हटकर बसा हुआ है। पिछले १२ वर्षों से यह सब प्रकार के रचनात्मक कार्यों का सदर मुकाम रहा है। यहाँ की अधिकाश जनता मूल-निवासियो की सन्तान है। ये लोग अपने साहस एव कर्तव्य-परायणता के लिए प्रसिद्ध है। इन्होने शान्ति-सेना का सगठन बड़ी मज़-बूती से किया था। एक दिन फौजियो के एक बडे जत्थे ने रात को गाँव पर हमला कर दिया। शान्ति-सेना के स्वयसेवक गाव के चारो ओर पहरा दे रहे थे। तिलक डेका उनका अगुआ था। उसने नियम के अनुसार झट तुरही बजा-कर गाँव के लोगो को फौज का सामना करने के लिए सावधान करना चाहा और अपनी तुरही की ओर हाथ बढाया। फौज के कप्तान ने अपना रिवाल्वर डेका की छाती पर लगा दिया और गरजकर कहा, 'बस रहने दे नौजवान, जीना चाहता है तो तुरही की ओर हाथ न बढ़ा। तिलक डेका को जान की अपेक्षा आन प्यारी थी। उसने गम्भीरतापूर्वक उत्तर दिया, 'कप्तान साहब चुप रहिये। मै इस प्रकार के शब्द नही सुनना चाहता। मुझे जो जिम्मेवारी सौंपी गई है उसे पूरा करूगा, चाहे आप मेरे सीने में गोली दाग दें,।' उसने झट तुरही ली और उसमे इतनी जोर से फूंक मारी कि सारा वायुमडल उसके गगन-भेदी स्वर से गुजायमान हो गया। उधर कप्तान ने अपना रिवाल्वर दबाया। धाय-धाय करती हुई गोली तिलक डेका के सीने मे से निकल गई। वह वीर वही गिर पड़ा और उसने सदा के लिए अपनी आंखें बन्द कर ली।

तुरही एव रिवाल्वर की आवाज रात्रि के उस सन्नाटे मे चारो ओर गूँज उठी। गाव के स्त्री-पुरुष, जो अपने स्वयमेवको के भरोसे सुख पूर्वक सो रहे थे। अचानक इस आवाज को सुनकर चौंक पडे। वे झट घटना-स्थल की ओर दौड पड़े और चारो ओर से फौजियो को घेर लिया। गौरव की बात तो यह थी कि गिरफ्तार होने या गोली खाने के लिए सबसे आगे स्त्रिया ही बढी। फौजी दमन पर तुले हुए थे ही। उन्होने गोली चलाना शुरू कर दिया। ५, ६ आदमी बुरी तरह से घायल हुए। लोग मार खाकर भी डटे रहे और उन्होने अपने नेता तिलक डेका के शव को उठा लिया। फौजियो ने गोली बरसाकर एव किर्चें भोककर काफी चेष्टा की कि लोग शव न ले जाने पाय, पर वे सफल न हुए। लोग जैसे-तैसे शव को ले ही आए। दूसरे दिन सुबह गाव के तीन सौ व्यक्ति गिरफ्तार कर लिये गये एव उनके साथ बहुत बुरा बर्ताव किया गया।

कामपुर में भी जनता की ओर से इन दिनो बडे शान्तिपूर्ण प्रदर्शन किये गये। गाव के स्त्री-पुरुष, लड़के-लड़कियाँ बड़ी सख्या मे स्टेशन पर जमा हो जाते और जब गाड़ी स्टेशन पर ठहरती तो 'अग्रेजो भारत छोड़ो' आदि राष्ट्रीय नारे लगाते। कई बार तो गाड़ी मे बैठे हुए फौजी लोग भी जनता के साथ 'गान्धीजी की जय' 'स्वाधीन भारत' आदि नारे लगाते थे।

एक बार एक सैनिक अफसर ने गाड़ी से नीचे उतरकर लोगो से राष्ट्रीय झडा छीनना चाहा, परन्तु लोगो के साहस के सामने उसकी एक न चली। पुलिस दारोगा कुछ सशस्त्र कास्टेबलो के साथ वही खड़ा था। सैनिक अफसर ने उसे जनता पर गोली चलाने का हुक्म दिया। दारोगा ने देश की आजादी के लिए आन्दोलन करने वालो पर गोली चलाने से इन्कार कर दिया, परन्तु वह बेचारा तीन दिन के अन्दर-अन्दर गिरफ्तार कर लिया गया।

शान्ति-सेना के सगठन से अधिकारी भयभीत हो गये थे। उनके मन में यह बात अच्छी तरह बैठ गई थी कि जब तक यह सगठन कायम है, आन्दोलन दबना कठिन है। अतएव उन्होने गाव-गाव मे घूमकर शान्ति-सेना के कैम्पों पर हमला करना शुरू कर दिया। एक स्थान पर ब्रिटिश कमाण्डर की अध्यक्षता में कुछ फौजियो ने शान्ति-सेना के बहुत से कर्मचारियों को गिरफ्तार कर लिया और कैम्प में आग लगा दी इतने में कमाण्डर ने लोगो को पीटने का हुक्म दिया। गिरफ्तार व्यक्तियो मे एक छोटा-सा लडका भी था। वह कमान्डर के इस हुक्म को सहन न कर सका। वह झट आगे बढा और कमान्डर को फटकारता हुआ बोला, 'आपको शर्म नही आती जो

निरपराध व्यक्तियों को पिटवाते है।' कमाण्डर के हृदय में बच्चे के ये शब्द तीर के समान लगे। वह आग-बबूला होकर बच्चे पर झपटा और उसे दोनों हाथो से पकड़ लिया। पहले तो उसने ५,७ ठोकरें बच्चे के लगाई और बाद मे उसे पास मे जलती हुई आग में फेंक दिया। पर जिसे ईश्वर बचाना चाहे उसे कौन मार सकता है। सयोगवश बच्चा लुढ़ककर एक तरफ गिर गया और पास मे खड़े हुए गाव के लोगो ने उसे उठा लिया।

बरहमपुर मे भी आन्दोलन का काफी जोर रहा। यद्यपि नेताओं की गिरफ्तारी के साथ ही पुलिस ने काग्रेस-आफिस, शान्ति-सेना कैम्प आदि पर कब्जा कर लिया था, पर इससे जनता के उत्साह मे कुछ कमी नही आई और उसने १६ सितम्बर को काग्रेस-आफिस के सामने एक दावत करने का निश्चय किया। बड़ी सख्या मे लोग इकट्ठे हुए। स्त्री, पुरुष बच्चे, सभी उम्र के लोग थे। कुछ राष्ट्रीय गाना गा रहे थे, कुछ तिरङ्गा झडा लिये घूम रहे थे तो कुछ दावत की तैयारी करने मे लगे हुए थे। अधिकारावर्ग को यह भी सहन न हुआ, चट पुलिस एव फौज के बड़े-बडे अफसर वहा आ धमके। कुछ लड़किया राष्ट्रीय झडे लिये घूम रही थी। अफसरो ने उनके हाथो मे से जबरन झडे छीन लिये। पर रतन फूकन नामक १५ वर्षीय लड़की ने अपने हाथ मे से पुलिस कमाण्डर को झडा नही छीनने दिया। कमाडर ने कुछ जबरदस्ती करनी चाही। रतन की मा पास मे खड़ी थी। वह कमाण्डर की इन हरकतो को सहन न कर सकी। उसने झट बास की एक छड़ी कमाण्डर के मुँह पर जमा दी। बस, फिर क्या था। सब सिपाही टूट पड़े। बेचारी बुढिया गोली से मार दी गई। यह दृश्य देखकर दावत में इकट्ठे लोग भी सचेत हो गए। वे खागीराम हजारी के नेतृत्व मे रतन को बचाने के लिये झपटे। पुलिस ने गोली चलाना प्रारम्भ कर दिया। परिणाम-स्वरूप थोगीराम नायक नामक एक २५ वर्षीय नौजवान शहीद हो गया और भी बहुत से घायल हुए। पर लोग गोली खाकर भी डटे रहे। अधिकारी लोग बार-बार उन्हे भाग जाने की आज्ञा दे रहे थे। पर उन्होने भागकर जान बचाने की अपेक्षा अपने साथियो के साथ मरना अधिक अच्छा समझा और पुलिस-अधिकारियो के विरोध करने पर भी उन्होने अपने मृत एव घायल साथियो को अपने अधिकार में कर लिया।

सूचना मिलने पर पुलिस-सुपरिन्टेण्डेण्ट और सिविल सर्जन घटनास्थल पर आ पहुचे। निहत्थी जनता शान्तिपूर्वक बैठी थी। अधिकारियो ने एक बार पुनः घायलो एवं मरे हुए व्यक्तियो को छीनने की चेष्टा की, पर जनता की दृढ़ता के सामने उनका प्रयत्न सफल न हुआ। जनता रात भर वही डटी

रही। सुबह बड़े धूम-धाम से शहीदो की अर्थी निकाली गई और विधिपूर्वक उनकी क्रिया की गई।

थोगीराम बोरा का बलिदान आजादी की लड़ाई के इतिहास में सदा अमर रहेगा। कहते है मरते समय उसके पास केवल एक पर्स, एक फाउन्टेन पेन तथा १० पैसे थे, जिनको वह कांग्रेस एवं स्वतन्त्र भारत के नाम पर दे गया। ऐसे वीर पुरुष की स्त्री भी वीर ही थी। थोगीराम की मृत्यु का समाचार जब उसकी स्त्री को मिला तो उसने बड़ी खुशी के साथ कहा, 'मुझे गर्व है कि मेरा पति देश की आजादी की लड़ाई में मारा गया और मुझे अपने आंसुओं द्वारा भारत माता के पैर धोने के लिए छोड गया।' क्या ससार के इतिहास मे ऐसे उदाहरण मिल सकते है ?

सरकारी विज्ञप्ति के अनुसार ८ नवम्बर सन् १९४२ की रात को नौगाव जगलात का बंगला जनता द्वारा जलाकर राख कर दिया गया। ९ एव १० नवम्बर को एक चाय की जमीदारी के कार्यालय से रेती, धातु काटने की आरी, गन्धक आदि उड़ाने की चेष्टा की गई।

सरकारी दमन भी जोरो से चला। रेलवे लाइन या पुल के पास से गजरने वाले निर्दोष राही भी गोली से उडा दिये जाते थे। २८ अगस्त की शाम को बेबेनिया पुल पर से दो ग्रामीण नौजवान गुजर रहे थे। पुल के नीचे छिपे हुए फौजियो ने उनको भी अपनी गोली का शिकार बनाया। इतना ही नही बेबेजिया गाव के असहाय निर्दोष स्त्री-पुरुषो एवं बच्चो पर आधी रात के समय अमानुषिक अत्याचार किये गए। दूसरे दिन गाव के ४०० स्त्री-पुरुषो तथा बच्चो को इकट्ठा करके सशस्त्र पुलिस की देख-रेख मे नौगांव थाने में ले जाया गया, जो ९ मील दूर है। इनमे एक ऐसी औरत भी थी जिसके तीन दिन पहले बच्चा हुआ था। बेचारी का बच्चा रास्ते में ही मर गया तथा उस प्रसूता स्त्री को भी बहुत दिन तक घोर बीमारी झेलनी पड़ी।

रोहा स्कूल मे निरपराध अध्यापको को बुरी तरह पीटा गया। स्कूल पर तीन-चार साल से राष्ट्रीय झंडा फहरा रहा था। उधर से गुजरते हुए एक यूरोपियन अफसर ने उन्हे झंडे को उतार लाने का हुक्म दिया, किन्तु अध्यापकों ने ऐसा करने से इकार कर दिया। परिणाम स्वरूप बेचारो पर बड़ी निर्दयतापूर्वक मार पड़ी।

दारांग जिला

इस जिले के आन्दोलन की यह विशेषता रही कि जनता गोली एवं लाठी का प्रहार सहकर भी पूर्ण अहिंसक रही। एकदम निहत्थी एवं शान्त

जनता ने पुलिस-अधिकारियो से थाने आदि खाली करने की मांग की, पर नौकरशाही के प्रतिनिधियो ने उसका जवाब नाना प्रकार के अमानुषिक प्रहारो से दिया और बाद मे लोगो को जेलो में ठूंस दिया। दूसरी खास बात यह है कि अन्य जिलो की भाँति यहां पर स्त्रियो ने पुरुषो की अपेक्षा अधिक बलिदान किया।

सर्वप्रथम हम गोहपुर को लेते है, क्योकि यहाँ पर अहिंसा शक्ति का जैसा प्रदर्शन हुआ है, उसकी दूसरी मिसाल मिलनी कठिन है। २२ सितम्बर की बात है, करीब ५०० आदमियो का जुलूस थाने पर तिरगा झडा फहराने के लिए चला। पुलिस के अत्याचारो की कहानी लोगो के कानो में पड़ चुकी थी। अतएव लगभग ५००० स्त्री-पुरुष नौजवानो के इस साहसपूर्ण कार्य को देखने के लिए थाने के पास इकट्ठे हो गये। जुलूस गाव की गलियो में होता हुआ थाने के सामने जा पहुंचा। थाने के आगे एक बहुत बड़ा तालाब है। इसलिए थाने में घुसने के लिए जुलूस दो हिस्सो में बट गया और तालाब के बायें और दाहिने दोनो तरफ से एक साथ थाने में घुसने लगा। सबसे आगे वीर कन्या कनकलता थी और उसके पीछे दो तीन नौजवान। जुलूस थाने के फाटक पर पहुचा। पुलिस दारोगा हाथ मे रिवाल्वर लिये अपने साथियो के साथ डटा खड़ा था। उसने कनकलता को थाने में घुसने से मना किया। वीर कन्या कनकलता ने गरजकर दारोगा से कहा, थाना प्रजा की वस्तु है। यदि थाने के कर्मचारी प्रजा के सेवक की भाति कार्य न करें तो प्रजा को अधिकार है कि वह थाने पर कब्जा कर ले और उन कर्मचारियो को निकाल बाहर करे।" दारोगा एक १४ वर्ष की लड़की से ऐसा मुह-तोड़ उत्तर सुनकर चुप हो गया। थोड़ी देर में उसने फिर हिम्मत करके कहा,'अबोध बच्ची बातें न बना। जहां है वही खड़ी रह। यदि कदम आगे बढाया तो गोली से भून दूंगा।'

कनकलता भला इससे कब डरने वाली थी। वह तो अपनी जान हथेली में लिये खड़ी थी। उसने अपने साथियो की ओर मुह फेरा और उन्हे हिम्मत दिलाती हुई बोली, ' भाइयो एवं बहनो, आओ देश की आजादी के लिए मृत्यु का आलिगन करें।' और फिर दारोगा की ओर मुह फेरकरके बोली, 'मै अपना कर्त्तव्य पूरा करूंगी, आप अपना करें।' इतना कहते-कहते उस वीर कन्या ने झट अपना पैर आगे बढ़ा दिया। उधर दारोगा ने तुरन्त अपना रिवाल्वर दबाया और देखते-देखते सनसनाती हुई गोली कनकलता के सीने से पार हो गई तथा कनकलता के पीछे खड़े युवक की खुली छाती पर लगी। पर पुलिस-अधिकारियो की रक्त-पिपासा इससे शान्त न हुई। उन्होंने बाकी जुलूस पर भी

अन्धा-धुन्ध गोलियों की वर्षा करना प्रारम्भ कर दिया।

इधर यह नर-संहार होरहा था, उधर स्वयसेवको का दल बड़ी हिम्मत के साथ आगे बढ़ता जा रहा था। अचानक जय-घोष हुआ। लोगों की दृष्टि झट ऊपर की ओर गई। देखा, थाने पर राष्ट्रीय झडा लहरा रहा है। जनता का बलिदान सफल हुआ।

सरकार का कहना है कि इस गोली-काण्ड में सिर्फ ६ व्यक्ति मारे गये। परन्तु दमन की भीषणता को देखते हुए भी गोपीनाथ बारदोलाई जैसे व्यक्तियों का मत है कि मृत्यु-संख्या कम-से-कम ६० तक अवश्य पहुच गई थी। गोहपुर में आज भी बहुत से ऐसे स्त्री-पुरुष है जिनके मुह, हाथ, छाती अथवा शरीर के किसी अन्य अग पर बने हुए गोली के निशान उस गौरवपूर्ण दिन की याद दिला देते है।

इसी दिन लगभग इसी समय जब कि गोहपुर में यह भंयकर नर-मेध हो रहा था, ढेकिया जुली की जनता ने पुलिस एवं फौज की बर्बरता का नंगा नाच देखा। इस दिन वहा पर कोई स्थानीय मेला था, अतएव १० हजार के करीब लोग थाने के आस-पास इकट्ठे हो गये थे जो कि बाजार के बिलकुल नजदीक पडता था। इतने मे ही बाजार की ओर से नवयुवकों का एक जत्था राष्ट्रीय झंडा लिये हुए थाने पर आ पहुंचा और उसने अधिकारियों से वही माग की जो गोहपुर निवासियों ने की थी। नवयुवको के नेता ने दारोगा को बड़े नम्र शब्दों मे कहा, 'आप हमारे देश भाई है। देश की आजादी के लिए आप सरकारी नौकरी से इस्तीफा दे दीजिए और हमारे साथ हो जाइये।' दारोगा भला यह बात कब मानने लगा। वह अपनी जगह पर अकड़ के साथ खड़ा रहा। सभी नौजवान बिलकुल शांत थे तथा झडो के अलावा उनके पास कुछ भी न था। वे थाने पर झंडा फहराने के लिए भीतर घुसने लगे। पुलिस-अधिकारियो ने इस पर गोली चलाना शुरू कर दिया। पर जिसके हृदय में लगन है उसे कौन रोक सकता है? गोलियों की वर्षा में भी एक युवक आगे बढा और जैसे-तैसे अपने शरीर को बचाता हुआ थाने की इमारत पर जा चढ़ा तथा पुलिस-अधिकारियो के देखते-देखते बड़ी शान से थाने पर राष्ट्रीय झडा फहरा दिया। पर दूसरे क्षण ही दारोगा के रिवाल्वर से निकली हुई गोली उसकी छाती में जा कर लगी और वह वीर लड़खडाता हुआ नीचे आ गिरा।

चारो ओर सन्नाटा छा गया। पुलिस के लोग गोलियो की वर्षा कर रहे थे। इतने में ही अधिकारियो का सकेत पाते ही थाने के पीछे पहले से

तैनात गुडे जनता पर टूट पड़े। उन भाड़े के टट्टुओ ने बिना कुछ सोचे समझे भीड़ पर लाठियो की बौछार कर दी। सैकड़ों आदमी घायल हुए, जिनमें बहुत से मेले के लिए इकट्ठे हुए लोग भी थे, जिनका जुलूस से कुछ सम्बन्ध न था। इन गुडो ने मजदूरो की निर्दोष स्त्रियो को भी बहुत दूर तक खदेड़ा तथा उनके साथ नाना भांति से बलात्कार किये। इस हत्याकांड में २० से अधिक जानें गईं, जिनमें से एक तेरह वर्ष की वीर बालिका तुलेश्वरी भी थी।

अभी यह नर-संहार समाप्त भी न हो पाया था कि शहर के बहुत से फौजी अपने कमान्डर के साथ वहां आ पहुचे। उन्होने कुछ भी दरयाफ्त करने का कष्ट न किया और मेले मे इकट्ठे हुए लोगो को कांग्रेस स्वयसेवक समझकर उन पर गोली चलाना शुरू कर दिया। १६ आदमी गोली से मर गये और बहुत से बुरी तरह घायल हुए। शहीद होने वालो में तीन स्त्रिया भी थी, जिनमें से एक गर्भवती थी।

इस घटना के बाद पुलिस ने २६ व्यक्तियो पर मुकदमा चलाया। सिर्फ तीन व्यक्ति कानून के मुताबिक दोषी निकले, बाकी सब कुछ सबूत न मिलने के कारण छोड़ दिये गए। सजा का हुक्म देते हुए मजिस्ट्रेट ने पुलिस के जनता पर अन्धाधुन्ध गोलियां चलाने के इस अमानुषिक कार्य को, जो अविवेकपूर्ण, कायरता से भरा हुआ था, अनियन्त्रित घोषित किया। अधिकारी लोग इस कलक को धोने की इच्छा से हाईकोर्ट तक पहुचे, पर उसने इस मामले में हस्तक्षेप करने से इन्कार कर दिया। अदालत का यह निष्पक्ष फैसला 'आसाम ट्रिब्यून', 'अमृत बाजार पत्रिका' एव 'हिन्दुस्तान स्टेंडर्ड' में आलोचना के साथ प्रकाशित हुआ। अधिकारियो ने उपरोक्त तीनो पत्रो पर भारत रक्षा नियमो की मातहत केस चला दिया। गोहपुर घटना मे एक व्यक्ति को सजा हुई। वहां पर भी मजिस्ट्रेट को कहना पड़ा कि जनता का प्रदर्शन पूर्ण रूप से अहिंसक था।

इस घटना की खबर जब तेजपुर पहुंची तो वहा के नेताओ ने पुलिस द्वारा जनता पर की गई इस ज्यादती के विरोध में २१ सितम्बर को एक सभा करने का निश्चय किया। पुलिस-अधिकारी भला इसे कैसे सहन करते उन्होंने २ बजे से ही शहर के प्राय. नाको पर राइफल एव किर्चो से सुसज्जित सिपाही तैनात कर दिए . कि लोग शहर में न आ सके। पुलिस के लाख प्रयत्न करने पर भी हजारो की तादाद मे जनता टाउन हाल में इकट्ठी हुई। लोग निहत्थे एव शान्त थे। सभा करने के अतिरिक्त उनकी और कुछ मशा न थी। पर अधिकारी सशस्त्र पुलिस को साथ लेकर सभा-स्थल पर जा पहुंचे और लोगों

को सभा भंग करने का हुकम दिया। जनता अपने स्थान पर डटी रही। इधर से अधिकारियो ने अन्धाधुन्ध मार-पीट प्रारम्भ कर दी। सैकडो व्यक्ति घायल हुए। कुछ ने अपनी जान बचाने के लिए भागने की चेष्टा की, पर पकड़े गए और बुरी तरह से पीटे गए।

२० सितम्बर को छोटिया एवं बहेला थानो पर हुई घटनाएं भी अपना एक विशेष स्थान रखती है। करीब ५००० व्यक्तियों ने, जिन में स्त्रियां भी काफी संख्या मे थी, छोटिया तथा बेहला थानो पर धावा किया और थानों की इमारतों पर राष्ट्रीय झंडा फहराने मे सफलता प्राप्त की। पुलिस-अधिकारी खडे देखते रहे। पर जनता के जोश के सामने कुछ बोल न सके। शाम को भीड अपनी सफलता पर खुशी मनाती हुई अपने घरो को चली गई। बाद में पुलिस ने लोगों के घरो पर आक्रमण किया और उन पर नाना प्रकारके अमानुषिक अत्याचार किए।

जुर्माना वसूल करने मे यहा पर भी नौगाव जैसे राक्षसी तरीके काम में लाये गये।

कामरूप

इस जिले मे भी आन्दोलन बहुत अशो में अहिंसात्मक रहा। मुक्तापुर गाव के प्रसिद्ध काग्रेस कार्यकर्ता श्री महेन्द्रनाथ डेका तथा उनके अन्य साथियों ने अपूर्व अहिंसात्मक बलिदान का परिचय दिया। उसका वर्णन अन्यत्र किया जा चुका है।

जिले के बारपटे सब डिवीजन मे बाजाली एक स्थान है जो बहुत घना बसा हुआ है। रचनात्मक कार्य का यह प्रधान केन्द्र है। अतएव स्वाभाविक रूप से ही यहा अहिंसात्मक प्रदर्शनो का जोर रहा। २१ सितम्बर को जोला, चौखुटी एव नित्यानन्द, इन तीन स्थानो पर एक साथ सभायें हुई। पिछले दोनो स्थानों में पुलिस ने किसी प्रकार का दखल न दिया। परिणाम-स्वरूप सभा शान्तिपूर्वक हो गई। परन्तु जोला मे प्रधान पुलिस अफसर ने सभा भग करने का हुक्म दिया। लोग कुछ देर तो डटे रहे, पर जब उन पर अधिक सख्ती की जाने लगी तो उन्होने सभा भंग कर दी। लोग चुपचाप अपने घरों को लौटने लगे। कुछ लोग आते समय सड़क के किनारे पेड के नीचे बैठ गये। पुलिस-अफसर थाने को लौटता हुआ वहाँ से निकला। उसने गरजकर लोगों को चले जाने को कहा। पर वे अपने स्थान पर बैठे रहे माना उन्होने उसके हुक्म को सुना ही न हो। अफ़सर ने झट अपना रिवाल्वर सम्भाला

और दो व्यक्तियो को गोली मार दी। इसके बाद पुलिस अफसर मस्ती के साथ आगे बढा। थोडी दूर पर उसे फिर कुछ आदमी सभा से लौटते हुए मिले। उसने पुन. गोला चलाई और कई मनुष्यों को घायल कर दिया।

पाठशाला नामक स्थान पर जनता ने पुलिस थाने पर आक्रमण किया और उसे दिन भर अपने अधिकार में रखा तथा बड़ी शान से उस पर राष्ट्रीय झंडा फहराया।

पुलिस एवं फौज के दमन की प्रतिक्रिया हुई। कई जगह लोगों ने सरकारी हवाई अड्डों पर आक्रमण किये। लोगो ने जो कुछ किया खुले आम किया, लुक-छिप कर चोरो की भाँति नही। २६ अगस्त को सोभाग हवाई अड्डे पर हुआ आक्रमण इसका ज्वलन्त उदाहरण है। आन्दोलन के पूर्व से ही यह हवाई अड्डा बन रहा था। ठेकेदारो का बहुत-सा सामान वहा पडा था। जनता की एक बड़ी भीड़ ने अड्डे पर आक्रमण कर दिया और जितना भी सामान था, सब में आग लगा दी। तीन एम० ई० एस० की लारियाँ भी खडी थी, उनको भी आग की भेंट कर दिया गया। इसके बाद जनता इन्स्पेक्शन बगलो एवं कुछ क्वार्टरो पर भी टूट पडी और उनमे आग लगा दी। चारो ओर से लपटें इतनी भयानकता से उठी कि १६ मील दूर बरपेटा में रहने वाले एस० डी० ओ० को अपने मकान से आग का पता लग गया। वह हडबडाकर घटनास्थल की ओर दौडा। परन्तु फेरी घाट पर पहुँचने से मालूम हुआ कि वहा न तो कोई नाव है; न कोई मल्लाह ही। उसने दूसरे रास्ते से जाने की कोशिश की। किन्तु जनता ने पहले से ही जितने भी सम्भव रास्ते थे उनको बन्द कर दिया था, ताकि पुलिस, फौज आदि कोई घटनास्थल पर न पहुँच सके। कई घटो तक आग जलती रही और सारा सामान जलकर खाक हो गया। इस घटना में करीब दो लाख रुपये के नुकसान का अनुमान लगाया जाता है।

सरकारी विज्ञप्ति के अनुसार नवम्बर मास मे जहा-तहा तोड-फोड की गई, जिसमें स्त्रियो का भी हाथ था। ७ नवम्बर की बात है। कामरूप में कुछ स्वय सेविकाओ ने महकमा तामीर की १२ गाडियो को रोक लिया। ८ और ९ की रात को उन्होने ठेके द्वारा फौज को पहुँचाये जाने वाले कुछ सामान पर छापा मारा और उसे जलाकर नष्ट कर दिया। इसी दिन बरपेटा हाई स्कूल जनता के क्रोध का शिकार बना और जलाकर भस्म कर दिया गया। १३ और १४ तारीख की रात को गोहाटी में सब डिप्टी कलेक्टर का दफ्तर तथा प्राइस कन्ट्रोल आफिस भी अग्नि देव की भेंट चढा दिये गए।

ग्वालपाड़ा जिला

ग्वालपाड़े में आन्दोलन का श्रीगणेश शान्तिपूर्ण प्रदर्शनों से हुआ। विद्यार्थियों का इन प्रदर्शनो में विशेष हाथ था। यद्यपि प्रदर्शन पूर्ण रूप से अहिंसात्मक थे, पर नौकरशाही ने प्रदर्शन करने वालों पर लाठी एवं किर्चो द्वारा प्रहार किया। २५ अगस्त की बात है, ग्वालपाड़ा मे २५ विद्यार्थियों एवं १५ अन्य व्यक्तियों का एक छोटा-सा जुलूस निकला। इन लोगो का उद्देश्य नेताओ की गिरफ्तारी पर विरोध प्रकट करना था। उनके पास राष्ट्रीय झडो के अतिरिक्त और कुछ न था। जुलूस थोडी दूर ही बढ़ने पाया था कि पुलिस ने लाठियों एव किर्चो से उस पर धावा बोल दिया। परिणामस्वरूप ९ व्यक्ति घायल हुए जिनमें से ५ को सख्त चोटे आई। ३ व्यक्ति अस्पताल भेजे गये, जिनमें से दो व्यक्ति चार महीने के बाद ठीक हुए। इससे अन्दाजा लगाया जा सकता है कि यह प्रहार कितने जोरो से किया गया था। इतना ही नही, अस्पताल मे भर्ती किये गये तीनो घायल व्यक्तियों पर बाद में १४४ धारा की मातहत हुक्म न मानने का जुर्म लगाकर केस चलाया गया। प्रदर्शन करने वालो मे से चार अन्य व्यक्ति भी गिरफ्तार कर लिये गये थे।

इस प्रकार शान्तिपूर्ण प्रदर्शन करने वाले निरपराध व्यक्तियों का खून बहाकर सरकार ने कुछ लोगों को उत्तेजित कर दिया। कुछ जोशीले व्यक्तियों ने जहा-तहा तोड-फोड का काम शुरू कर दिया। सरकारी विज्ञप्ति के अनुसार यह काम नवम्बर तक चलता रहा। २ और ३ नवम्बर की रात को एक गाव में दो बास के पुल जला दिये गये तथा दूसरे स्थान पर इंस्पेक्शन बगले को फूँकने को प्रयत्न किया गया। इसी प्रकार ५ नवम्बर को धूबड़ी के सेकेण्डरी स्कूल को तथा ११ नवम्बर को धूबडी से २८ मील दूर स्थित एक बास के पुल को जलाने की कोशिश की गई।

इस जिले में सामूहिक जुर्माना वसूल करने की कहानी बड़ी ही रोमाचकारी है। श्रीयुत आर० के० चौधरी द्वारा प्रान्तीय असेम्बली में पेश की गई तथा प्रधान मन्त्री द्वारा सच करार दी गई एक घटना को हम श्री चौधरी के शब्दो मे ही उद्धृत करते है जिससे पाठक पुलिस के अत्याचारो का अनुमान लगा लेगे।

"यह घटना कोकीरी नामक गाव की है। इस गाव के निधन राजबशी से सामूहिक जुर्माने के आठ रुपये वसूल करने के लिए एक कांस्टेबल को नियुक्त किया गया। निधन के पास नकद रुपये नही थे। इस पर कास्टेबल ने उसके बैलो की जोड़ी को खोल लिया। बैलों को लेकर जब वह चलने लगा

तो निधन ने बड़ी आरजू-मिन्नत की, क्योंकि उसके पास बस वही दो बैल थे। कान्स्टेबल उसे गाली देने लगा। बदले में निधन ने भी खरी-खोटी सुनाई। तब कान्स्टेबल ने उसे लाठी से पीटा। यह कहना सरासर गलत है कि निधन ने उस पर भाला चलाया। कांस्टेबल के शरीर पर भाले के आघात के कोई चिन्ह नही पाये गये। यह घटना दिन की है।

"रात में करीब ११ बजे एस० डा० ओ० दुधनाई से लौटा। उसे इस बात की खबर मिली। दो लारी सशस्त्र पुलिस और दो यूरोपियन अफसरों के साथ वह घटनास्थल पर पहुंचा। निधन अपने घर में था। दरवाजे बन्द थे और अन्दर रोशनी हो रही थी। उसे बाहर निकलने को कहा गया, लेकिन उसने बाहर आने से इन्कार कर दिया। इस पर उसका घर घेर लिया गया और एस० डी० ओ० ने गोली चलाने का हुक्म दिया। एक यूरोपियन अफसर ने गोली चलाई। छः बार गोलिया छोड़ी गईं। कुछ गोलियां अन्दर जाकर निधन की टिहुनी के पास लगी। वह गिर गया और खून की धार फूट निकली। एक गोली दीवार को छेदती हुई दूसरी ओर पहुंची और वहां खड़े सिपाही के जा लगी। वह सिपाही फौरन मर गया। इस पर मकान का दरवाजा तोड़कर सैनिक अन्दर घुस गये और निधन को किर्चें भोंक-भोक कर मार डाला, ठीक उसी तरह जैसे कि जगली सूअर को शिकार में मारा जाता है।"

पाठकों को यह जानकर ताज्जुब होगा कि ऐसे अमानुषिक अत्याचार करने वाले एस० डी० ओ० को बरखास्त करना तो दूर रहा, सरकार ने उसे एडीशनल डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट बना दिया। यह है कि ब्रिटिश साम्राज्यशाही के न्याय का नग्न नमूना।

: ७ :

युक्तप्रान्त में सन् बयालीस का विद्रोह

जनता एवं सरकार को हुई क्षति का विवरण

(१) सजाएँ— १५,१४२

नजरबन्द ५,३१७

सामूहिक जुर्माना ३४,९९,३८०–८–२

(कुल ५७९ स्थानों पर)

(२) गोली-काण्ड—

कितना जगह गोली चली	कितनी बार गोली चली	राउण्ड्स की सख्या	
६८	११६	रिवाल्वर	२६६
		मस्कट	१,५८७
		१२ बोर	१४९
		राइफल	३०१

मारे जाने वालो की संख्या १३३

सख्त घायल होने वालों की संख्या २२७

(३) पुलिस की हानि—

कितने थानो पर हमले किये गये १५

कितने थाने जला दिये गये ६

कितने कर्मचारी मारे गये १८

कितने कर्मचारी सख्त घायल हुए १२

नोट:—इसके अलावा १३ रिवाल्वर, ७५ मस्कट और अनगिनत कारतूसों पर कब्जा किया गया।

(४) डाक विभाग की हानि—

कितने डाकखानों पर हमले हुए ८७

कितने डाकखाने नष्ट किये गये ६

कितने लेटरबक्स नष्ट किये गये ७०

कितने डाकियो पर हमले हुए	५०
कितनी जगह टेलीग्राफ और टेलीफोन के तार काटे गये	३३७

(५) रेलवे विभाग की हानि—

कितने स्टेशन जलाये गये	१५
कितने स्टेशनो पर हमले हुए	७२
कितनी गाड़ियां गिराई गईं	१४
कितने कर्मचारी मारे गये	९
कितने कर्मचारी घायल हुए	१४

(७) विस्फोटक पदार्थों का प्रयोग—

कितनी जगह बम फटे	८०
फटने से पहले पकड़े गये बम केस	१५७

(८) तोड़-फोड़—

बिजली सप्लाई कम्पनियो मे	७ जगह
सड़कें तोड़ी गईं	८४ ,,
नहर और सिंचाई के साधनो में	४० ,,
अन्यत्र	३२७ ,,

सरकार की हानि	अन्य पार्टियो की हानि
लगभग ३,६३,३६६ रु०	१,०२, ७७८ रुपया .

संयुक्त प्रान्त ने कई आन्दोलनो का श्री गणेश किया है और प्राय. हर एक राष्ट्रीय आन्दोलन में वह सदैव आगे रहा है। सन् १८५७ का ग़दर भी यहीं से प्रारम्भ हुआ था। सन् १९३२ के लगानबन्दी आन्दोलन का श्रेय भी युक्त प्रान्त को ही है। सभी व्यक्तिगत व सामूहिक आन्दोलनों में युक्त प्रान्त से सबसे अधिक संख्या में लोग जेलो में गये। यह इस बात का प्रमाण है कि यहाँ के लोग राजनैतिक कामों में विशेष रस लेते है। यहां कई प्रमुख राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय नेता पैदा हुए। नेहरू और मालवीय यही की उपज है।

युक्त प्रान्त कृषि-प्रधान सूबा है। सन् १८५७ के पश्चात् ब्रिटिश साम्राज्यशाही ने अपने को अधिक सुदृढ़ बनाने के लिए युक्त प्रान्त में ज़मीदारी और ताल्लुकेदारी की प्रथा को स्थापित किया। फलस्वरूप गांवो की जनता दुहरी गुलामी में पिसने लगी। सन् १९२० में हिन्दुस्तान में जब गाधी की आंधी चली तो इसके वेग में युक्त प्रान्त के लाखों किसान उठे और उसके बाद आन्दोलन में ग्रामीणो ने प्रमुख भाग लिया। इस प्रकार युक्त प्रान्त में कांग्रेस आन्दोलन का प्रवाह विशेषत: गांवों की ओर ही अधिक रहा है। युक्त प्रान्त के

अधिकाश नेताओ ने स्वय अपनी कार्य-कुशलता, लगन व सचाई से अपना स्थान बनाया है।

८ अगस्त से पहले प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी ने युक्त प्रान्त के प्रमुख कार्य-कर्ताओ की बैठक बुलाई थी। उस समय प० जवाहरलाल नेहरू ने आने वाले सघर्ष की बाबत कुछ इशारा किया था। ९ अगस्त को बम्बई मे कांग्रेस नेताओ की गिरफ्तारी के पश्चात् युक्त प्रान्त की जनता व बचे-बचाये कांग्रेस नेताओ ने अपने को एक अजीब स्थिति में पाया। एक ओर नौकरशाही का तीव्र व भयकर प्रहार हो रहा था, दूसरी ओर युक्त प्रान्त के लोग कुछ करने के लिए उतारू थे। ९ अगस्त को शाम तक लगभग ५५ कांग्रेस कार्यकर्ता विभिन्न जिलो में गिरफ्तार किये जा चुके थे और सर्वत्र धड़ा-धड़ गिरफ्तारियो, जब्तियो, और सैनिक-प्रदर्शनो आदि का दौर-दौरा था। युक्त प्रान्त को इसका उपयुक्त प्रत्युत्तर देना था और वही उसने दिया।

आन्दोलन की दृष्टि से हम युक्त प्रान्त को पूर्वी और पश्चिमी दो हिस्सो मे बाट सकते है। पूर्वी हिस्से में आदोलन का पश्चिमी हिस्से की अपेक्षा कही अधिक जोर रहा। घनी बस्ती, यातायात के साधनो की कमी, शिक्षा की अधिकता और सरकारी प्रबन्ध की अपर्याप्तता आदि इसके कारण है। प्रगतिशील विचारों और पार्टियो के लिए यह उर्वर भाग है। यहा के लोग साहसी और उद्योग-शील है। क्राति के उपयुक्त सभी कारण यहाँ मौजूद थे। गाधीजी के 'करो या मरो' के नारे ने उनमें एक अजीब जान फूक दी थी। नेताओ की गिरफ्तारी ने मानो बारूद में चिनगारी लगा दी।

आन्दोलन का व्यापक रूप युक्त प्रान्त मे लम्बा न रहा। आरम्भ मे प्रायः हर जगह हड़तालें हुई, जुलूस निकाले गये और १४४ दफा को भग किया गया, पर आन्दोलन का यह रूप मुश्किल से एक सप्ताह रहा। उसके बाद फौरन ही युक्त प्रान्त के पूर्वी जिलों बलिया, जौनपुर, बस्ती, आजमगढ, फैजाबाद, सुल्तान-पुर, प्रतापगढ़, गोरखपुर, इलाहाबाद, बनारस, इत्यादि मे हजारो आदमी आन्दोलन के वेग मे उठे और उन्होने राज-सत्ता पर सामूहिक प्रहार प्रारम्भ किये। उन सबका ध्येय सरकारी मशीनरी को अस्त-व्यस्त करना था। इनका नेतृत्व मुख्यतः विद्यार्थियों ने किया जो देहातो में फैल गये। बनारस हिन्दू-विश्वविद्यालय, इलाहाबाद यूनिवर्सिटी तथा दूसरे इसी प्रकार के स्थान नेतृत्व के केन्द्र थे।

युक्त प्रान्त में तोड़-फोड़ का प्रोग्राम सर्व प्रथम १२ अगस्त से प्रारम्भ हुआ जब कि मुगलसराय स्टेशन पर पहली बार रेल के तार काटने की सूचना

मिली। १३ अगस्त से इलाहाबाद, बनारस, जौनपुर, आजमगढ़, बलिया आदि जिलों में तोड़-फोड़ के कार्य व्यापक रूप से होने लगे। १३ तारीख को शाहगज स्टेशन के निकट जौनपुर स्टेशन के पास एक गाड़ी गिराई गई। फिर आजमगढ़ जिले मे एक घटना सरायवीर के पास हुई। इस घटना की जांच करने से पता चला कि तोड़-फोड़ करने के लिए लोग विशेष प्रकार के औजारो का प्रयोग करते थे। इसके मजदूरों ने भी तोड़-फोड़ के कार्य में विद्यार्थियो का हाथ बटाया। इलाहाबाद जिले में मजदूरो ने सरकारी सम्पत्ति को हानि पहुचाने के काफी कार्य किए। इलाहाबाद और बनारस स्टेशन के बीच तथा उनके इर्द-गिर्द कितने ही मील तक गुरिल्ला दस्तों ने रेल-तार काटने के कार्य किए। १४ अगस्त को बनारस के विद्यार्थियो का एक दस्ता रेलवे इंजन पर कांग्रेस झडा लगाकर बलिया जिले मे गया। अब आन्दोलन गावो में फैलने लगा। सरकारी सस्थाओं, थानो, कचहरियों आदि पर सामूहिक प्रहार होने लगे और बनारस, गाजीपुर, बलिया के बीच आमदो-रफ्त के रास्ते व तार आदि बिलकुल बन्द हो गए। १५ अगस्त को विद्यार्थियो के इन दस्तो ने जौनपुर जिले में जन्घाई स्टेशन जला दिया। इन प्रहारो में सैकड़ो और हजारो आदमी शामिल थे।

दमन-नीति अपनाने में युक्त प्रान्त की सरकार ने सारी ब्रिटिश नौकरशाही का नेतृत्व किया। यहा पर हैलेटशाही का राज्य था। सन् १९४२ मे उसने आन्दोलन को कुचलने में क्रूरता की हद कर दी। हैलेट की अपनी एक विशेष टोली थी। नेदर सोल, होडी, मार्श स्मिथ, मूडी इत्यादि उनके मार्शल थे। 'खून और आतंक' हैलेटशाही का नारा था। सैकड़ों लोगो को पुलिस और फौज ने खुले आम बीच बाजारो में कोड़े लगाये। इसका उद्देश्य जनता के हृदय पर आतंक जमाना और ब्रिटिश राज्य की उखड़ती हुई शक्ति की पुनः छाप बिठाना था बिना अदालती आज्ञा प्राप्त किये और बिना उम्र व सेहत का कोई लिहाज बरतते हुए इस प्रकार के सैकड़ों काड किये गए। कोई भी आदमी जो खद्दर पहने दीख पड़ता था, पकड़ बुलाया जाता था और अपने हाथो गाधी टोपी जलवाई जाती थी और उसकी पूरी पिटाई की जाती थी। इस प्रकार की घटनाए पूर्वी तथा पश्चिमी जिलों मे काफी मात्रा मे हुई।

पूर्वी जिलों में गाँव-के-गाँव लूटे गये, उनमें आग लगाई गई, गाव वालो को घर से बाहर निकाला गया, उनकी सम्पत्ति लूटी गई और कही-कही तो स्त्रियों को सैनिको की पाशविक वृत्ति का शिकार बनना पड़ा। कांग्रेस वालों

के घर उनके सामने जलाये गए, बन्दूक की नोक के बल पर तुरन्त सामूहिक जुर्माने वसूल किये गए। इस लूट मे सरकार-परस्तों तथा कांग्रेस-जनो मे कोई भेद नही किया गया। सौदागर, जिमीदार तथा मध्यम श्रेणी के लोग इस लूट के शिकार बने। उसके फल स्वरूप जो क्षति हुई, उसका कोई अनुमान लगाना भी कठिन है।

बलिया

बलिया ने इस आन्दोलन के इतिहास मे अपना एक महत्त्वपूर्ण स्थान बनाया है; जिसको कि भावी सन्ताने गर्व से पढ़ेगी। राजनैतिक दृष्टि से यह जिला खूब जाग्रत है। सन् १९४२ के अगस्त महीने से पहले ही लोगों में असन्तोष की लहर फैली हुई थी। वे कांग्रेस कौमी सेवा दल, और कौमी रक्षक दल में सैकड़ों की तादाद मे शरीक हो रहे थे। बम्बई मे काग्रेस-नेताओं की गिरफ्तारी से जनता मे गहरा जोश फैला और वह कुछ करने या मरने के लिए कटिबद्ध हो गई।

विद्यार्थियो ने सर्व प्रथम आन्दोलन का श्रीगणेश किया। स्कूल कॉलेजों में एकाएक हड़तालें हो गईं। हजारो की तादाद में विद्यार्थियों को गिरफ्तार किया गया। १० अगस्त को सभायें हुईं, जुलूस निकाले गये और शहर मे घूम-घूम कर दूकानो तथा विशेष स्थानो को बन्द कराया गया। यह दिन शांति पूर्वक बीत गया। दूसरे दिन यानी ११ अगस्त को १५ हजार विद्यार्थियों का एक विशाल जुलूस जिला अदालत की ओर बढा और उसने वहां का काम बन्द कराना चाहा। वहां जुलूस के कुछ विद्यार्थी पकड़े गये जिससे विद्यार्थियो में और भी उत्तेजना फैल गई और उन्होने उससे भी बडा जुलूस निकालकर दफा १४४ तोड़ी और जिला अदालत के काम को रोकना चाहा। मिस्टर बयस, सब डिवीजनल आफिसर बलिया, इस बात की खबर पाते ही कि जुलूस अदालत की तरफ आ रहा है, सशस्त्र पुलिस लेकर आगे बढे और जुलूस को रेलवे क्रासिंग के पास रोका, जो कि स्कूल से आध मील की दूरी पर है और जो शहर और अदालत के अहाते के बीचों-बीच पड़ता है। जुलूस तो रुक गया पर भीड़ बढती गई। इसी बीच कुछ ईंट-पत्थर फेंके गये। इस पर मिस्टर बयस ने विद्यार्थियों पर लाठी-चार्ज का हुक्म दे दिया। फलस्वरूप १०० विद्यार्थी घायल हुए और एक विद्यार्थी बुरी तरह से घायल होने के कारण अस्पताल में जाकर मर गया। ५० विद्यार्थी पकड़े गये। मिस्टर बयस ने ऐसे विद्यार्थियों को भी गिरफ्तार किया और जमीन पर घसीटा जिनका जुलूस से कोई लगाव नही था। वे घर से पकड़कर लाये गए और

उन्हे सड़क पर पीटा गया। उन्ही दिनो लड़कियो ने भी कांग्रेस का झडा लेकर अदालत की ओर जाने की कोशिश की और डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट जे० निगम आई. सी. एस. और मिस्टर बयस की अदालत बन्द करने के प्रयत्न किये। जब कि लड़कियाँ इस तरह से अदालत बन्द कराने की कोशिश कर रही थी, विद्यार्थियो का एक जत्था पुलिस स्टेशन की तरफ गया जो शहर से लगा हुआ है और वहाँ पहुँचकर विद्यार्थियों ने आग लगा दी। विद्यार्थियो के इस गिरोह नें लौटते समय अदालत मे भी कुछ हगामे किये। कुछ लड़कियों को भी गिरफ्तार किया गया। जब दमन के समाचार जिले के भीतरी हिस्से में पहुँचे तो लोगो में बड़ा जोश फैला और रेल की पटरियो को हटाने, टेलीग्राफ के तारों को काटने, रेलवे स्टेशनो तथा पुलिस चौकियों मे आग लगाने के काम शुरू होगये। १४ और १६ अगस्त के बीच १३ रेलवे स्टेशन फरनीचर तथा रेकार्ड सहित जला दिये गए। ५ हज़ार से लेकर १५ हज़ार तक की तादाद मे जनता इसमें शामिल थी। १३ अगस्त को जनता ने सैंतवार पुलिस स्टेशन पर धावा बोल दिया। इमारत व सारे कागज़ात जला दिये गए और हथियारो पर कब्ज़ा कर लिया गया। पुलिस स्टेशन के आफीसर और समस्त पुलिस वालो ने जनता के सामने आत्म-समर्पण किया। इसके बाद जनता ने नरवर, सिकन्दरपुर, उन्नाव, गहरवार और हलदारपुर की पुलिस चौकियो पर कब्ज़ा कर लिया। १० अगस्त को जनता का बासडीह तहसील और पुलिस स्टेशन पर कब्ज़ा हो गया। यहाँ के भी सारे कागज़ात जला दिये गए। पुराने लोगो को ३ माह की तनख्वाह देकर अलग कर दिया गया और नये आफीसर नियुक्त किये गए।

१६ अगस्त को नवयुवको ने रसड़ा तहसील, खज़ाने और पुलिस स्टेशन पर धावा बोल दिया। अधिकारियो ने तुरन्त घुटने टेक दिये और राष्ट्रीय झडा इन इमारतो पर फहराने लगा। लोगो ने एक सरकारी खैरख्वाह के मकान के अहाते मे घुसकर बीज गोदाम को कब्जे मे करना चाहा; किन्तु कामयाबी नही मिली। चारो तरफ से घिरी हुई भीड़ पर निर्दयतापूर्वक गोलियाँ चलाई गईं। जिसकी तुलना जलियान वाला बाग से ही की जा सकती है। कितने ही व्यक्ति घटनास्थल पर मर गये और सैकड़ो घायल हुए।

१७ अगस्त को जनता की एक टुकड़ी थाने पर कांग्रेसी झडा लगाने गई। पुलिस सब इन्सपेक्टर ने कांग्रेस के प्रति अपनी वफ़ादारी दिखाने के लिए गांधी टोपी पहन ली और राष्ट्रीय नारे लगाये। जब उससे हथियार सौपने के लिए कहा गया तो उसने अगले रोज़ अर्थात् १८ अगस्त को हथियार

देने का वादा किया। १८ तारीख को जब २५-३० हजार की तादाद में जन-समूह पुलिस स्टेशन पर गया तो सब इन्सपेक्टर ने नेताओ को थाने के अहाते के अन्दर बुलाया और शेष जनता से बाहर रुकने तथा धैर्य व सन्तोष रखने की विनती की। जैसे ही नेता अहाते के अन्दर गये, दरवाजे बन्द कर लिये गए। पुलिस के सिपाही पहले हो से थाने की इमारत के ऊपर बन्दूकें लेकर पहुच चुके थे। थानेदार ने नेताओ से ऊपर जाने के लिए कहा और जब वे ऊपर जाने लगे तो उन्हे जीने में ही बन्द कर दिया गया। उधर लोगो पर गोली चलाने का हुक्म दे दिया गया। लोग अपने नेताओं को छोडकर जाने वाले नही थे अत उन्होने डटकर गोलियो का मुकाबिला किया। जब आगे के लोग गोली खाकर गिर पडे तो दूसरो ने उसकी जगह ले ली। कौशल्या कुमार नामक एक नवयुवक ने जब यह देखा कि थाने के ऊपर जो कांग्रेसी झडा फहरा रहा था उसे उतार लिया गया, तो वह भीड़ को चीरता हुआ थाने की छत पर चढने का प्रयत्न करने लगा। ऊपर से एक गोली दागी गई और वह बहादुर नवयुवक फौरन ही मृत्यु की गोद मे सो गया। इस प्रकार गोलियो की बौछारें साढे तीन बजे शाम से आठ बजे रात तक होती रही। अन्त में निहत्थी, धैर्यपूर्ण और अहिंसक जनता की ही जीत हुई। पुलिस का गोली-बारूद का सारा स्टाक समाप्त हुआ और सब इस्पेक्टर तथा थाने के अन्य कर्मचारियो ने आत्म-समर्पण किया। १९ आदमियो की घटनास्थल पर ही मृत्यु हुई और ४१ सख्त जख्मी हुए। फिर भी लोगों ने पुलिस आफिसर को नहीं मारा। हा, थाने में निस्सेन्देह आग लगा दी।

बलिया जिले मे. इस प्रकार आठ पुलिस-स्टेशन पूर्णतः जला दिये गए और बलिया कोतवाली और रसड़ा का थाना बुरी तरह बरबाद किये गए तथा उन पर कांग्रेसी झडा फहराया गया। इनमें से कुछ थानों को तो इतनी क्षति पहुंची कि उन्हे नये सिरे से बनवाया गया। इन आक्रमणो मे थानो से १७ बन्दूके छीनी गईं और बचे बचाए पुलिस स्टेशन भी हेडक्वार्टर पर आगये। सिकनार थाने के भागे हुए पुलिस आफिसर सुखपुरा में जनता द्वारा पकड़े गये और उनसे ५ बन्दूकें ले ली गईं। ऐसे ही फबना पुलिस स्टेशन से भी ८ बन्दूकें लोगो के हाथ लगी।

इस प्रकार १९ तारीख तक जिले की प्रायः सभी सरकारी संस्थाओं पर जब जनता का कब्जा हो गया तो एक विशाल जन-समूह जिला हेडक्वार्टर पर कब्जा करने के लिए डिस्ट्रिक्ट जेल के सामने इकट्ठा हुआ। जिले के प्रमुख सरकारी हमदर्द लोग भी जिला मजिस्ट्रेट के पास गये और उनसे कांग्रेस

नेताओं को छोडने की प्रार्थना की। जिला मजिस्ट्रेट ने बड़े धैर्य व होशियारी से काम लिया। वह कांग्रेस-नेताओ के पास जेल में गये और उनसे बातचीत करने के पश्चात् जिला कमेटी के प्रधान श्री चित्तू पांडे और अन्य कांग्रेस नेताओ को उन्होंने छोड़ दिया। जेल से बाहर आने के बाद नेताओं ने जनता को शान्त और अहिंसक रहने का सन्देश सुनाया। जेल से लगभग डेढ़-सौ कार्यकर्ता छूटे जिन्होने शहर में जाकर बाजार खुलवाया। निस्सन्देह कुछ ऐसे लोग भी थे जो अहिंसा की नीति में पूरी तरह विश्वास न रखते थे। अतः जिला मजिस्ट्रेट, मुन्सिफ और खजाना अफसर तथा फौजी भर्ती के अफसर के घरों पर हमले किये गए।

२० तारीख को सारे शहर के लोग इकट्ठे हुए और उन्होंने कांग्रेस-नेताओं से प्रार्थना की कि वह शहर में शान्ति स्थापित करायें और जनता को लुटेरों व बदमाशों के हाथो से बचाए। कांग्रेसी नेता शान्ति स्थापित करने के काम में जुट गये और उन्हे काफी सफलता मिली। लेकिन दूसरे दिन खबर मिली कि दो तीन सौ आदमियों का एक गिरोह देहात से शहर में आक्रमण करने के लिए आ रहा है। इस पर नेता घटना-स्थल पर पहुंचे और उन्हें अपने घरो को वापस जाने का आदेश दिया। इस प्रकार वे लोग फौरन ही अपने घरो को वापस चले गये। ठीक ऐसे ही समय जब कि एक ओर बाजार खुल गये थे, दूसरी ओर जनता में शान्ति से रहने की प्रवृत्ति पैदा हो गई थी, सैनिको का एक दस्ता ३ बजे शाम को शहर आया और उसने बिना किसी जरूरी आदेश के गोली चलाना शुरू कर दिया।

जनता की सरकार

१६ तारीख तक बलिया में जनता की स्वतन्त्र सरकार की स्थापना हुई और श्री चित्तू पांडे इसके प्रधान चुने गये। इसने शपथ खाई और २० तारीख को शहर के सार्वजनिक कार्यकर्त्ताओ की एक सभा हनुमानगज की कोठी पर हुई। उपस्थित जनता ने अपनी सरकार को चलाने के लिए हजारों रुपये चन्दे मे दिये। ब्रिटिश नौकरशाही के मुलाजिमो को नजरबन्द कर दिया गया और उनकी जगह पर नये ओहदेदार नियुक्त किये गये। नई सरकार का जनता पर गहरा प्रभाव पड़ा। कितने ही लोगो नें जिन्होने गोदाम घरो से, रेलवे स्टेशनो से व स्टीमर जहाजों से सामान उठाया था या लूटा था, उसे वापस करना प्रारम्भ कर दिया। नई सरकार ने एक तहकीकाती कमेटी भी बनाई और जनता से प्रार्थना की कि वह लूट का सारा माल सरकारी खजाने में जमा कर दे। इस

पर कितने ही लोगो ने जिनके पास लूट का सामान था सरकारी खजाने में दाखिल कर दिया। रिपोली सरकिल मे एक विधवा के ३००० रुपए के गहने चोरी चले गये थे और पुलिस उन चोरों का पता न लगा सकी थी। इस विधवा ने नई सरकार में अपनी अर्जी दाखिल की। नई सरकार ने चोरों का पता चला लिया और इस प्रकार बुढ़िया के गहने वापस मिल गये।

यद्यपि नई सरकार थोड़े ही दिनो तक कायम रही किन्तु इन दिनो में उसने न केवल जनता की रक्षा ही की, बल्कि सरकारी कर्मचारियों की भी देख-भाल की। किसी सरकारी कर्मचारी की जायदाद लूटी जाने या नष्ट की जाने की एक भी घटना नही मिलती। जब नई सरकार आई उस समय खजाने में डेढ़ लाख रुपए से ज्यादा था। उस रकम को किसी ने भी अपने निजी इस्तेमाल में लाने की बात स्वप्न में भी नही सोची।

पाशविक दमन

किंतु मार्श स्मिथ और नेदरसोल २२ अगस्त को फौज के साथ बलिया पहुचे और लूट मार करना आरम्भ कर दिया। इसके फलस्वरूप बहुत से लोग फौजी सैनिको की गोलियो के शिकार बने। लगभग १५० कांग्रेसियों के घर लूटे और जलाये गये और स्त्रियो और बच्चों को गांवो से बाहर निकाल दिया गया। कुछ स्त्रियो के सिर के बाल काट दिये गये और बहुतों के वस्त्राभूषण छीनकर पुराने कपडे पहनने के लिए विवश किया गया। बहुत से लोगों को बिना अन्न-पानी के घरो मे बन्द कर दिया गया। कितने ही लोग गावो के बीच पेडो में बाधे गये और उन्हे बडी निर्दयता से पीटा गया। बहुत से लोगों को जमीन पर पड़े थूक को चाटने पर विवश किया गया। उन्हें गन्दी-गन्दी गालियां दी गई। यह भी सुना जाता है कि किसी थाने में तो लोगो के मुह मे पेशाब तक डाला गया। कुछ लोग चौकीदारो को सलाम न करने पर पीटे गये। बहुत से आदमियो की सम्पत्ति लूट ली गई और नष्ट कर दी गई। लोगो को पीटने में लाठी, डडो, बन्दूको और जूतो का प्रयोग किया गया। यहा तक कि बंदूकों की किर्चो की नोको से भी छेदा गया।

कुछ रोमांचकारी कहानियां

बलिया की अनेक रोमांचकारी कहानियां है। किंतु उनका वर्णन छोड़ दिया गया है। यहाँ केवल कुछ ही उदाहरण दिये जाते है। ज्यों ही मिस्टर आर० एन० मार्श स्मिथ उस स्थान पर पहुचे, उन्होंने सिह इंजीनियरिंग वर्क्स लूटना शुरू कर दिया और उसका सारा सामान जला दिया। फिर बाबू शिव-

प्रसाद रईस की कोठी का नम्बर आया। मि० मार्श स्मिथ ने फौजियों को इस शानदार और सुन्दर कोठी के लूटने का हुक्म दिया। उसी समय मि० मार्श ने कहा—"ओह यह वही कोठी है जहा कि काग्रेस का बादशाह रहा करता था। मै इसको खाक मे मिला दूंगा।"

अब हिन्दू दूकानदारो की बारी आई। यद्यपि वे लोग हाथ जोडकर हर एक प्रकार से विश्वास दिला रहे थे कि हम लोगो ने काग्रेस आन्दोलन मे भाग नही लिया है। हमने लड़ाई मे काफी चन्दा दिया है और अब भी हर एक प्रकार से सरकार को सहायता देने के लिए तैयार है; किन्तु उनकी सुनवाई नही हुई। उन पर जुर्माना लगाया गया और उनसे तुरन्त वसूली का हुक्म दिया गया। एक मिनिट में जुर्माना वसूल कर लिया गया। इस प्रकार कि जो गवर्नमेंट के खैरख्वाह थे वे भी मि० मार्श और उनके सहकारियो की निर्दयता से न बच सके। बहुत से दूकानदार गिरफ्तार कर लिये गये और पीटे गये और नाना भाति से अपमानित किये गये। बाबू राजेन्द्रप्रसाद की कहानी से तो रोगटे खड़े हो जाते है। उन्हे पेड़ पर चढने का हुक्म दिया गया। वे बेचारे पेड़ पर चढना नही जानते थे। किन्तु एक कास्टेबिल ने उन्हे धक्का देकर जबरदस्ती पेड़ पर चढ़ाया। जब कि उनका शरीर पेड से खिसक रहा था, तो सिपाही नीचे से अपनी राइफल की नोक से कौच कर कहने लगा, 'खबरदार, नीचे मत उतरना' बेचारा वृद्ध किसी प्रकार पेड़ पर नही चढ सका और जमीन पर आ गिरा। आखिर उसे ७ वर्ष का कारावास दिया गया और सीखचो के भीतर बन्द रखा गया।

बलिया की लूट मे मि० मार्श का काफी हाथ रहा और अपने नमूने से उन्होंने पुलिस सिपाहियो के लिए भी नागरिको को लूटने का रास्ता खोल दिया। जब फौजी पुलिस किसी खास गाव मे पहुच जाती थी, तो वहा के डरे हुए ग्रमीण लोग अपनी स्त्रियो और बच्चो सहित, गिरफ्तारी और पीटे जाने के डर से, खेतो मे भाग जाया करते थे। जो लोग गांव में रह जाया करते थे, उन्हे तुरन्त गाव खाली करने को कहा जाता था। तब एक एक करके सब को लूटा जाता था। आवश्यक बहुमूल्य वस्तुएँ तो कब्जे में कर ली जाती और मामूली चीजें जला दी जाया करती थी। जब तक गांव में पुलिस रुकी रहती, किसी को लगाई हुई आग बुझाने का साहस नही होता था। जब पुलिस गाव छोड़कर चली जाती तब छिपे हुए ग्रामीण लोग गाव में लौटते। उस समय तक उनकी सारी सम्पदा जलकर खाक बन चुकती थी और उन बेचारो के लिए शोकाश्रु बहाने के अतिरिक्त और कुछ न रहा जाता था। यहां तक कि

हिन्दुओं के धार्मिक स्थान भी निर्दयी लुटेरों से नहीं बच सके। बलिया से ८ या ९ मील की दूरी पर एक गांव सुखपुरा है। यहां के महन्त श्री महुनावागिरी की दर्दनाक कहानी है। स्टेशन अफसर के साथ मजिस्ट्रेट ने इस गाव पर धावा बोला। महन्तजा का एक बहुत बड़ा हाथी मठ के फाटक पर खड़ा हुआ था। स्टेशन अफसर ने इस बेचारे बेगुनाह जानवर पर ६ गोलियां चलाई जिससे वह मर गया। पास ही खूबसूरत बैल बंधे हुए थे, वे भी मौत के घाट उतार दिए गये और एक घोड़ा भी गोली से घायल हो गया। इसके बाद मठ लूटने का हुक्म दिया गया। मठ की ऊची दीवारों पर सीढ़ियां लगाई गईं और फाटक के किवाड़ों पर कुल्हाड़े और हथौड़ चलने लगे। सन्दूक तोड़ डाले गये और उनका सामान जब्त कर लिया गया। बेचारे भयभीत महन्त और उनके चेले मठ के अन्दरूनी हिस्से में बड़ी मुश्किल से छिपकर बच सके। महन्तजी का केवल यही अपराध था कि उन्होंने मठ पर तिरंगा झण्डा फहराया था।

सुखपुरा गांव में चन्दीप्रसाद नामक का एक किसान अपने जानवरो को चारा देने जा रहा था मिस्टर मार्श स्मिथ ने उसे बुलाया और एक दो सवाल पूछने के बाद उसे चले जाने दिया। किन्तु उसी समय एक आदमी ने कहा कि वह तो कांग्रेसी है। तब उसे फिर से बुलाया गया और उससे पूछा गया। उसने कई मरतबा अपने इस कथन को दुहराया कि मैंने सन् १९२१ में कांग्रेस में भाग लिया था, किन्तु उसके बाद से मेरा कांग्रेस से कोई सरोकार नही रहा। किन्तु उसकी एक न सुनी गई। मार्श स्मिथ ने उससे कहा, उस तरफ घूमो। वह बेचारा ज्यो ही घूमा, पीछे से उसके धांय से गोली मार दी गई। इस प्रकार एक निरपराध प्राणी की हत्या से युक्तप्रान्त के सिविल डिफेंस के डाइरेक्टर महोदय ने अपने हाथ लाल किये।

बलिया ऐसी पाशविक घटनाओ से भरा पड़ा है। इनसे अच्छी तरह मालूम हो जाता है कि जनता की बढ़ी हुई जागृति को कुचलने मे ब्रिटिश नौकरशाही ने कैसी क्रूरता का प्रदर्शन किया था।

कुछ आंकड़े

बलिया शहर में दो बार और जिले में १५ जगह गोली चली, जिसके फल स्वरूप १२१ आदमी मारे गये और २५९ घायल हुए।

बलिया के एक दर्जन नागरिकों को २,९०,००० रुपये का नुकसान उठाना पड़ा।

बलिया जिले के ३० गाँवो में आग लगाई गई और २१५ घर जल गये।

लगभग १२ लाख रुपया सामूहिक जुर्माना किया गया, किन्तु वसूल २९ लाख से अधिक किया गया।

१९ अगस्त से लेकर करीब १,०८० व्यक्ति गिरफ्तार किये गय। उनमे से लगभग २५० व्यक्ति छोड़ दिये गये, किन्तु इसके पहले हर एक को २० से लेकर २५ बेंतो तक की मार दी गई। शेष लोगो को ५ से लेकर ७ वर्ष तक की सजायें दी गईं। साथ ही उनको बेत की सजा और १००० से लेकर २००० रुपये तक जुर्माना भी किया गया।

गाजीपुर

गाजीपुर बलिया का पड़ौसी जिला है। अतः वह उसका घटनाओ से अछूता न रह सका। राष्ट्र के नेताओ का गिरफ्तारी की खबर से जनता में जोश उमड़ पड़ा और वह अपना सर्वस्व बलिदान कर देने के लिए प्रस्तुत हो गई। नेताओं के अभाव मे नवयुवको ने स्वयं नेतृत्व का भार अपने ऊपर ले लिया।

सर्व प्रथम यातायात के साधन नष्ट करने की कोशिश की गई। लोगों ने तार काटना शुरू कर दिया। कही खम्भे उखाड़े जाने लगे तो कही डाकखाने खाक कर दिये गये। रेल के स्टेशनो मे चारों ओर धुए के बादल मंडराने लगे। रेलगाड़ियो पर कब्जा कर लिया गया। कई रेल के इंजिन नष्ट-भ्रष्ट कर दिये गये और लदी मालगाड़िया अस्त-व्यस्त कर दो गईं। बनारस के हवाई अड्डे पर आक्रमण कर दिया। सुना जाता है कि नन्दगंज स्टेशन पर लोगो को सैनिको का बड़ा गरम सामना करना पड़ा। सैनिको की बन्दूको से निहत्थी जनता पर लगातार गोलियो की बौछारे होती रही। किन्तु बहादुर नवयुवको ने तनिक भी मुह नही मोड़ा। अनुमान है कि लगभग ७०-८० नवयुवक इस स्थल पर अमर गति को प्राप्त हुए। घायलो की सख्या तो कई सौ बतलाई जाती है। इसी प्रकार सहात और जमानियां स्टेशन पर भी जनता गोलियों की शिकार बनी। वहाँ दो नौजवानों ने अपनी जीवन की आहुति दी।

राष्ट्रीय झण्डे फहराने का विशेष रूप से प्रयत्न किया गया। थानों और अन्य सरकारी इमारतो पर १५ अगस्त को गाजापुर नगर में विद्यार्थियों का शानदार जुलूस निकला। वे लोग कोतवाली पर झडा लगाना चाहते थे। किन्तु पुलिस ने भीड पर लाठी-चार्ज शुरू कर दिया। सादात के थाने में ज्यो ही जनता पहुंची त्यो ही उस पर गोलियो की बारिश शुरू हो गई। जोशीली भीड़ ने शान्ति के साथ गोलियां खाईं। किन्तु गोलियां खत्म हो जाने

पर थानेदार और सिपाही निःशस्त्र हो गए। उत्तेजित भीड़ ने थानेदार और सिपाहियो सहित थाना जला दिया। सैदपुर के तहसीलदार को जनता के सामने अपना सिर झुकाना पड़ा और कचहरी पर तिरङ्गा झंडा फहराने लगा।

मुहम्मदाबाद मे जनता को सैनिको से कड़ा मोर्चा लेना पड़ा। यहां एक ओर फौजी दनादन गोलियां बरसा रहे थे और दूसरी ओर निहत्थे भारत माता के सपूत 'अंग्रेजो भारत छोड़ो' के बुलन्द नारो से गोलियो का सामना कर रहे थे। ६ वीरो ने इसी नारे के साथ अपने प्राण छोड़े।

शेरपुर गाव गाजीपुर नगर से लगभग २० मील की दूरी पर है। शेरपुर वास्तव में शेरो का ही गाव है। यहाँ की जनता ने आन्दोलन में शेरों की भाति बहादुरी का परिचय दिया। १४ अगस्त को यहाँ की ग्रामीण जनता ने मुहम्मदाबाद के रेलवे स्टेशन और एक हवाई अड्डे पर हमला किया, जिसके फल स्वरूप उसे गोलियो का सामना करना पड़ा। फलस्वरूप भीड़ के नेता श्री यमुना गिरि घायल होकर बेहोश हो गए और गिरफ्तार कर लिये गये। इस खबर से गाव के लोगो मे सनसनी फैल गई और लोगो ने इकट्ठे होकर हवाई अड्डे पर अधिकार करने का बीड़ा उठाया। ठीक आधी रात को जब चारो ओर काली घटा छाई हुई थी। करीब ५०० वीरो के जत्थे ने अड्डे की ओर कूच किया। किन्तु अधिकारी डर से पहले ही उस स्थान को छोड़कर चले गये। शेरपुर गाव के एक डाक्टर साहब थे। तहसीलदार ने उन्हे झंडा फेंकने की आज्ञा दी, किन्तु उन्होने इसकी जरा भी परवाह न की। तब तहसीलदार ने गोली चलाई जो डाक्टर साहब की जाघ को चीरकर पार हो गई। दूसरी गोली उनके पेट से गुजरी। तहसीलदार की तीसरी गोली को डाक्टर साहब ने अपनी छाती में लिया और वे तिरङ्गा झडा हाथ मे लिये हुए जमीन पर गिर पडे।

गाजीपुर में १६,२० और २१ अगस्त को तीन दिन तक ब्रिटिश शासन का कोई चिह्न शेष नही बचा। काग्रेस कार्यकर्ताओ ने जनता के सहयोग से पंचायतें स्थापित की जिन्होने सफलता पूर्वक लोगो के जान माल की रक्षा की।

अन्य स्थाना की तरह से यहां भी अधिकारो कथित राजद्रोहियो तथा उनके सम्बन्धियों के प्रति बड़ी क्रूरता से पेश आये। बनारस के समीप रेलो का मार्ग नष्ट-भ्रष्ट हो जाने के कारण गोरो ने गोमती को नावो से पार किया तथा रास्ते में जितने भी गाव पड़े उन्हे लूटा, नष्ट किया और लोगो पर तरह-तरह के अत्याचार किये। रामपुर तथा शेरपुर में बड़ी क्रूरता दिखाई गई।

शेरपुर के रामशकरराय और शोभनाराम नामक व्यक्ति मौत के घाट उतार दिये गये। गोली चली, १२ घटे तक लूट हुई, स्त्रियो के शरीरों पर से बलपूर्वक गहने उतारे गये तथा उन पर और भी अत्याचार किये गए। श्रीमती राधिका देवी को एक कुए में फेंक दिया गया जहा उनकी मृत्यु हो गई। प्रायः ३ लाख रुपयो का नुकसान हुआ।

गमहार, करुयाबाद, सदन, नन्दगंज आदि गावों में भी ऐसा ही पाशविक नाटक खेला गया। गमहार को घेरकर बलोची सिपाहियो ने गोलिया चलाई। दूधनाथसिंह और दरोगासिंह शहीद होगये। गाव को लूटा गया। स्त्रियो के गहने छीन लिये गए। उन पर बलात्कार किए गए। गाव को एक लाख रुपए की क्षति पहुची।

२४ अगस्त को चार गोरे सिपाही तथा १५० अन्य सिपाही नन्दगज के थानेदार को लेकर एक गाव को घेरने चले। भारतीय सिपाही पीछे छोड दिये गए और गोरों ने इस गाव में घुसकर आग लगा दी, स्त्रियो के गहने बलपूर्वक छीनकर उनके पुरुषो के सामने ही उनके साथ बलात्कार किया तथा उन्हे पीटा और यह वह गांव था जो तोड-फोड करने वालो में सम्मिलित न हुआ था। उसी दिन, 'आज' पत्र के श्री विक्रमादित्यसिंह साइकिल से इलाके का दौरा कर रहे थे। वे नीदरसोल के सामने पकडकर लाये गए। उन्हे घन्टो तक क्रूरता के साथ पीटा गया और एक थाने में बन्द कर दिया गया, जिसमे तीस और ऐसे ही व्यक्ति बन्द थे जिनका अपराध केवल इतना था कि उनके सम्बन्धियो ने आन्दोलन में भाग लिया था।

राजनैतिक बन्दियो के साथ भयंकर दुर्व्यवहार हुए। उनका नगा करके दोपहर की चिलचिलाती धूप में लिटाया जाता था। उनके हाथ-पैर बाँध दिये जाते थे तथा फिर लात-घूसों से उसकी पूजा की जाती थी। एक दिन एक व्यक्ति बेहोश हो गया। होश में आने पर उसने पानी मागा किन्तु पानी के बजाय उसे पेशाव का एक प्याला दिया गया। जले पर नमक छिडकने के लिए राजबन्दियो को जेल मे यह बतलाया जाता था कि किस प्रकार उनकी स्त्रियो को घसीट-घसीट कर हजारो व्यक्तियों के सामने बेइज्जत किया जाता है और किस तरह उनके मकानो को जलाया जाता है।

हिटलरी उपायो से सामूहिक जुर्माना वसूल किया गया। भारी जुर्माने के अलावा लोगों के मकानो में आग लगा दी जाती थी। घर जल जाने पर जब वे जुर्माना न दे सकते थे तब उनके गाय-बैल तथा बचा-बचाया सामान नीलाम किया जाता था।

दमन के आंकड़े

इस जिले में १०० व्यक्तियो का नजरबन्द और ३००० को गिरफ्तार किया गया। लोगो को दो साल से लेकर पचास साल तक की सजायें दी गईं।

जिले में २० विभिन्न स्थानो पर गोली-काण्ड हुए, जिनमे १६७ व्यक्ति मरे और २३६ घायल हुए।

जिले में ७४ गाव अमानुषिक दमन के शिकार हुए। लोगो को लगभग ३२ लाख रुपये का नुकसान उठाना पडा। जिले में ३, २६, १६०६ रुपये ४ आ० ३ पा० सामूहिक जुर्माना किया गया।

आजमगढ़ जिला

नेताओ की गिरफ्तारी के विरोध स्वरूप जिले भर में स्थान-स्थान पर हड़तालें हुई तथा विशाल प्रदर्शन हुए। प्रदर्शनो में सभी वर्ग के लोगों ने खुले दिल से भाग लिया। जुलूसो का नेतृत्व विद्यार्थियो ने किया। इस प्रकार प्रारम्भिक काल मे जनता बिलकुल अहिंसक रही।

इस जिले मे आन्दोलन सच्चे अर्थ मे जन-आन्दोलन था, क्योंकि कुछ सरकारी कर्मचारियो को छोडकर जिले की शत प्रतिशत जनता की सहानुभूति आन्दोलन के साथ थी और दो लाख से अधिक जनता ने आन्दोलन मे सक्रिय भाग लिया।

१० अगस्त को आजमगढ के लोगो ने एक विशाल जुलूस निकाला। अधिकारी वर्ग सशस्त्र पुलिस के साथ जुलूस को रोकनें के लिए आ पहुँचा। मजिस्ट्रेट ने लोगो को कचहरी की ओर बढने से मना किया। किन्तु जब स्थिति बिगड़ती दिखाई दी तो उसने अपनी आज्ञा वापिस ले ली। जुलूस राष्ट्रीय नारे लगाता हुआ बडी शान से कर्बला मैदान में पहुचा और वहा पर एक सभा के रूप मे परिणत हो गया।

१५ अगस्त को फतहपुर आदि स्थानो के करीब एक हजार ग्रामीणो ने रामपुर चौकी पर धावा बोला और उसका सब सामान भस्म कर दिया। अधिकारी लोग पहले ही भय के मारे मधुबन को भाग गये थे। लोगो ने वहाँ के डाकखाने के सामान मे भी आग लगा दी। उस दिन डाकखाने में २५ मनी-आर्डर आये थे। लोगो ने उनके रुपये पोस्टमास्टर को सौप दिये और अपने सामने उन्हे बटवा दिया।

लोगो का उत्साह इस सफलता से और भी बढ गया। अत वे दूसरे

गावो की ओर बढे और बस्ती नामक गाव के कच्चे पोखरे पर जा पहुचे। संयोगवश वहां पहले से ही १० हजार किसान मौजूद थे जो बेलथरा स्टेशन से ६५० बोरे चीनी लूटकर लाये थे। सबने मिलकर खूब शर्बत पिया और फिर आगे बढे। गांव-गांव से ग्रामीणों की टोलियां आ-आकर उनमें मिलने लगी। इस प्रकार मधुबन पहुंचते-पहुंचते करीब-करीब ६०-६५ हजार आदमी जुलूस में इकट्ठे हो गए। जुलूस थाने के सामने जाकर खडा हो गया। जुलूस के अगुआ श्री रामवृक्ष चौबे, मगलदेव शास्त्री और सुन्दरदेव पाडे थाने में गए और अधिकारियों से आत्म-समर्पण करने और थाने पर राष्ट्रीय झंडा फहराने की माँग की। उनके इन्कार करने पर नेता लोग लौट आये और जुलूस थाने की ओर बढ़ा। अधिकारी पूरा तैयारी के साथ हमला करने के लिए तैयार थे। अतएव जब उन्होने अपार जन-समुद्र को उमडते देखा तो उस पर अन्धा-धुन्ध गोलियो की वर्षा शुरू कर दी। पर आजादी के मतवाले गोली खाकर भी आगे बढ़ते गये। कुछ लोगो ने आगे बढकर एक सिपाही के हाथ से बन्दूक छीन ली। इतने मे सूचना मिली कि बाहर से बहुत से सैनिक मशीनगन लेकर आ पहुचे हैं। अतएव लोगो ने वापिस लौटना ही उचित समझा। क्योंकि वहां डटे रहने पर हजारों आदमी व्यर्थ में अपनी जान से हाथ धो बैठते। इस प्रसंग पर लोगो ने जिस दृढता और वीरता का परिचय दिया, उसकी घटनास्थल पर मौजूद मजिस्ट्रेट श्री न्यूटन ने भी निजी तौर पर प्रशसा की। इस घटना द्वारा आजमगढ की जनता ने दिखा दिया कि वह देश की आजादी के लिए कितना बलिदान कर सकती है। प्राप्त आँकड़ो के अनुसार इस घटना में ३४ आदमी तो उसी समय मर गए और सैकड़ो घायल हुए। घायलों में से ४२ आदमी एक सप्ताह के भीतर शहीद हो गए। इस प्रकार कुल ७३ आदमियो के मरने की रिपोर्ट मिली है। किन्तु जिस भीषणता के साथ गोलियो की वर्षा की गई उसको देखते हुए यह अनुमान होता है कि कम-से-कम २००-३०० आदमियों की जानें अवश्य गई होंगी। रिपोर्ट न मिलने का कारण यह है कि सरकारी आतक से लोग इतने डर गये थे कि वे अपने परिवार वालो का नाम व पता बताने से हिचकते थे।

तरवा थाने की घटना भी उल्लेखनीय है। १४ अगस्त की बात है करीव ७-८ हजार आदमियो का एक झुड थाने पर झडा फहराने जा पहुचा। उसके नेता श्री तेजबहादुरसिंह अपने कुछ साथियो के साथ थानेदार के पास गए और जनता को आत्म-समर्पण करने को कहा। इतने में जनता ने पीछे से थाने पर हमला कर दिया और सिपाहियो को घेरकर उनसे बन्दूकें छीन ली।

बाद में पुलिस के सब हथियारों पर कब्जा कर लिया गया। पर एक पिस्तौल जो थानेदार की निजी थी थानेदार के कहने पर उसे वापिस कर दिया। कुछ लोग थाने के तमाम कागजात बाहर निकाल लाये और उन्हे अग्नि देवता की भेंट चढ़ा दिया। इस प्रकार थाने पर राष्ट्रीय झंडा फहराने लगा।

जनता ने इतने ही से सन्तोष नही किया। उसने बन्दी बनाये हुए अधिकारियो पर मुकदमा चलाने के लिए एक अदालत कायम की। न्यायाधीश गाव के एक बूढ़े सज्जन श्री जद्दूभर नायक बनाये गये। जब बन्दी के रूप में थानेदार उनके सामने लाया गया तो वह काप रहा था। श्री जद्दूभर उसे अभय देते हुए बोले, 'थानेदार भैया! तोहार कुछ न बिगरी।" उन्होंने थानेदार को इलाके से बाहर निकालने का हुक्म दे दिया। आज भी उस गांव के लोग जद्दूभर के इन शब्दो को दुहराकर उस दिन की याद किया करते हैं।

मऊ में भी १३ अगस्त तक शान्तिपूर्ण प्रदर्शन हुए। परन्तु जब १४ अगस्त को पुलिस ने विद्यार्थियो के एक जुलूस पर लाठी-चार्ज कर दिया तो जनता उत्तेजित हो उठी और उसने क्रोध में आकर नोटिफाइड एरिया कमेटी के दफ्तर को जलाकर खाक कर दिया। दूसरे दिन एक विशाल जन-समूह थाने पर अधिकार करने तथा उस पर झंडा फहराने के लिए चला। पुलिस अधिकारियों ने लोगों को आगे बढ़ने से रोका पर उन्होने उनकी यह आज्ञा मानने से इंकार कर दिया। बस, फिर क्या था। पुलिस वालो ने उन पर अधा-धुन्ध गोलियों की वर्षा करना शुरू कर दिया जिससे दो आदमी शहीद हुए और बहुत से घायल हुए।

महाराजगंज थाने पर लगभग चार हज़ार जनता ने आक्रमण किया। थानेदार उस समय वहाँ मौजूद नही था। नीचे के अधिकारियों ने थाने की सब तालियाँ जनता को दे दी और आत्म-समर्पण कर दिया। जनता ने थाने पर राष्ट्रीय झंडा फहरा दिया और जेल के सब बन्दी छोड़ दिए। काझा थाने में १८५७ के गदर के समय कुछ देशभक्तो की सम्पत्ति छीनकर एक अंग्रेज को पुरस्कार म दे दी गई थी। अब उस पर श्रीमती स्टरमर का कब्ज़ा है। ये स्वयं तो इग्लैण्ड में रहती है पर यहाँ देख-रेख के लिए उन्होने एक मैनेजर को नियुक्त कर रखा है। मैनेजर तथा उसके कर्मचारी लोगो पर तरह-तरह के अत्याचार करते थे। जनता को उन अत्याचारो का बदला लेने का अवसर मिल गया। वह भूखे शेर की भाँति स्टरमर इस्टेट के बगले पर टूट पड़ी और उसके समस्त सामान को लूट लिया।

अमिला के श्री अलगूराय शास्त्री की भावज की वीरता का उल्लेख

किए बिना यहाँ का वर्णन अधूरा ही रह जायगा। इस महिला ने जिस निर्भीकता एवं साहस का परिचय दिया वह स्त्री जाति के लिए गौरव का वस्तु है। एक दिन सशस्त्र सैनिक उनके मकान पर टूट पड़े और उन्होंने घर का सारा सामान आगन में लाकर इकट्ठा कर लिया। वे उसमे आग लगाना ही चाहते थे कि यह वीर महिला आगे बढी और सामान के ऊपर डटकर बैठ गई। इतना ही नही, उसने गरजकर अधिकारियो से कहा—"पहले मुझे फूको, पीछे सामान फूँकना।" अधिकारी एक स्त्री के मुँह से ऐसे निर्भीक वचन सुनकर हक्के-बक्के रह गए। उनकी हिम्मत नही हुई कि सामान में आग लगायें। सैनिकों ने कुछ सामान उठाया और जलाने की चेष्टा की। परन्तु उस वीर महिला ने उनके हाथ से सब सामान छीन लिया। बेचारे सैनिक अपना-सा मुँह लेकर चले गए।

जनता ने जहाँ-तहाँ तोड-फोड का काम भी किया। घोसी, रामपुर, दोहरी घाट, महाराजगज आदि सात डाकखानों पर हमला करके उनके सभी कागज़ात जला दिए। जिले भर में ७-८ जगह पक्की सड़कों के पुल भी तोड़ डाले। खुरहट, अमिला, पूलपुर आदि कई स्टेशनों पर आक्रमण किये गए और टिकट तथा अन्य कागज़ात फूंक डाले गए। आजमगढ के पास एक ट्रेन जिसमें फौज और माल था गिराई गई। रानी की सराय के पास एक सवारी गाड़ी के इजन को पत्थर मार-मार कर बेकाम कर दिया। दोहरीघाट से मऊ और मऊ से शाहगज के बीच अनेक स्थानो पर रेलवे लाइन उखाड डाली गई।

इस जिले की सरकारी दमन की कहानी बडी रोमांचकारी है। गाँवो को लूटना, आग लगाना, आदमियों को पकडकर बुरी तरह पीटना, स्त्रियो का लाकर थानों में रखना और उनके साथ बलात्कार करना आदि मनमाने अत्याचार हुए। इन काले कारनामो की स्थान-स्थान से रिपार्टें मिली है, परन्तु स्थानाभाव से उनका उल्लेख करना कठिन है। यहाँ कुछ खास-खास घटनाओ को दिया जाता है।

रानी की सराय में मेले के लिए इकट्ठे हुए निर्दोष व्यक्तियों पर फौज ने गोली चला दी। जुड़ावावर देवारा गाँव के कांग्रेस-कार्यकर्त्ता महादेवसिंह का घर जला दिया और दीवार खोदकर गिरा दी गई। फिर उन्हें पीटना शुरू किया। जब वे मार खाते-खाते बेहोश हो गए तो उन्हे बाँधकर पेड़ से लटकाया गया और उनके मुँह में पेशाब करवाया गया।

लूट और फूक का कुछ अन्दाज़ इससे लगाया जा सकता है कि अकेले श्री शिवबहादुरसिंह के ३२ हज़ार रुपये के आभूषण लूट लिये गये, २० हजार

रुपये के झाड़-फानूस मिट्टी मे मिला दिए गए और उनके महल सरीखे मकान को मिट्टी का तेल डालकर जला दिया गया। उनके आठ और दस वर्ष के दो बच्चो ने किसी कदर छत से कूदकर अपनी जान बचाई। मऊ के श्री राधा-रमण अग्रवाल को भी करीब एक लाख रुपये की हानि हुई।

रामनगर गाव मे २० गोरे चेत नामक हरिजन के घर मे घुस गए और उसकी नवयुवती स्त्री के साथ इतना भीषण बलात्कार किया कि वह बेचारी मर ही गई। इसी प्रकार मझा में भी कुछ गोरे सैनिक एक मकान मे घुस गए। घर की मालकिन अपनी दो छोटी लड़कियो के साथ खाना बना रही थी। इन अत्याचारियो ने उस अबला को पकड लिया और उसके साथ बुरी तरह बलात्कार किया।

यहां की राष्ट्रीय संस्थाये भी सरकारी दमन से अछूती न रही। नवादा गांव का स्वराज्य आश्रम जलाकर नष्ट कर दिया गया। इसी प्रकार दोहरी घाट मे हरिजन गुरुकुल, खद्दर भंडार के कपड़े, चर्खे आदि भी अग्नि देवता के भेट चढा दिये गए।

रानी की सराय मे फौजियों ने तफरीहन भी गोली चलाई, जिससे एक आदमी मारा गया। द्वन्दारा के पास एक गाव में एक खेत पर जाती हुई स्त्री पर गोली चलाई गई जा उसकी गोद के डेढ वर्ष के बालक को लगी और वह तत्काल ही मर गया।

जेलो में भी राजनैतिक बन्दियो के साथ बड़ा दुर्व्यवहार किया गया। उनको न तो रहने के लिए पूरा स्थान दिया जाता था, न पूरा खाना और न बीमार पड़ने पर पूरी दवाईयां ही। इतना ही नही साधारण कैदियों की भाति उन्हें बुरी तरह पीटा भी जाता था।

पटबध ग्राम के आस पास के लोगो ने आन्दोलन मे काफी हिस्सा लिया। २३ अगस्त को वहां पर एक विशाल जन-समूह इकट्ठा हुआ। इतने मे एक फौजी लारी उधर से आ निकली। लोगों ने लारी को चारों ओर से घेर लिया। सैनिको की हिम्मत टूट गई और उन्होने लोगो से कहा—

"हम आपको किसी प्रकार की हानि पहुंचाने नही आये हैं। हम वापिस जाते हैं, आप लोग भी चले जायं।" लोगो ने कहा—"पहले आप लोग जायं तब हम हटेंगे" जब भीड़ वापिस जाने लगी तो इन विश्वास घाती सैनिको ने उस पर पीछे से गोली चलाना शुरू किया जिससे ३ आदमी मारे गए और काफी संख्या में घायल हुए। इसी प्रकार अतरौलिया में भी करीब ५ हजार जनता ने पुनः विरोध प्रदर्शन किया। वहां पर भी गोली चली और कई आदमी मारे

गए। नवम्बर में अचानक एक दिन रात को जनता की एक बड़ी भीड़ ने खुरहट स्टेशन पर आक्रमण किया और उसे काफी नुकसान पहुंचाया।

इस जिले में ३८० व्यक्ति नजरबंद किये गये। लोगों पर १,०३,६४५ रु० २ आ० ६ पा० सामूहिक जुर्माना किया गया। १०५ मकान जला दिये गये। लूट और अग्नि-दाह के फलस्वरूप लोगों को ३,५२,००० रु० के लगभग हानि पहुंची।

बनारस जिला

बनारस भारत का अत्यन्त प्राचीन नगर है। यह प्राचीन भोजपुर का एक हिस्सा है, जहां के लोगों की धमनियों में आज भी वीरता एवं स्वतंत्रता की भावना का पवित्र खौलता हुआ खून जोश मार रहा है। जब-जब देश की आजादी की लड़ाई प्रारम्भ हुई तब-तब यहां निवासियों ने अजब शौर्य एवं शक्ति का परिचय दिया है। सन् १९४२ में भी जब देश ने 'अंग्रेजो भारत छोड़ो' नारे के साथ खुले विद्रोह का शंखनाद किया तो बनारस जिले के लोगों ने भी प्राणों की बाजी लगा दी थी।

आन्दोलन का श्रीगणेश नेताओं की गिरफ्तारी पर हड़ताल से हुआ। हिन्दू विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों का एक जुलूस यूनीवर्सिटी से चलकर दशाश्वमेध घाट पर आया और वहां से कांग्रेस के अन्य कार्यकर्ताओं के साथ टाउन हाल पहुँचा, और वहां वह सभा के रूप में परिणत होगया। विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डाक्टर के०एन०गैरोला इसके सभापति थे। जनता ने सरकारी संस्थाओं पर राष्ट्रीय झंडा फहराने का निश्चय किया। शहर के प्रायः सभी मोहल्लों से जुलूस निकले। उधर विश्वविद्यालय से विद्यार्थियों का एक बड़ा जुलूस आ पहुँचा। इस प्रकार दोनों जुलूस सम्मिलित होकर फौजदारी अदालत पर राष्ट्रीय झंडा फहराने के लिए बढ़ने लगे। पुलिस अधिकारी पहले से ही अदालत के अहाते में जमा थे। उन्होंने जुलूस को अदालत के सामने ही रोक दिया। एक उच्च अधिकारी ने भीड़ को तितर बितर जाने के लिए कहा, किन्तु जब उसने ऐसा करने से इन्कार किया तो लाठी-प्रहार का हुक्म दे दिया। मि०डीजडेल ने सर्व प्रथम निर्दोष तथा शांत जनता पर प्रहार किया। फिर तो देखते-देखते लाठियों की वर्षा होने लगी। जनता बहुत देर तक डटी रही, पर आखिर उसे तितर-बितर होना ही पड़ा। इस लाठी-चार्ज की खबर जब शहर एवं जिले में पहुँची तो लोग बड़े क्षुब्ध हो गए।

दूसरे दिन सारे शहर में छोटे-छोटे जत्थों में लोग नारे लगाते हुए घूमने लगे। उधर विश्वविद्यालय से विद्यार्थियों का एक बड़ा जुलूस सरकारी

इमारतो पर झंडा फहराने के लिए चला। प्रत्येक विद्यार्थी में एक अजीब उत्साह दिखाई देता था। किसी को भी अपनी जान की परवाह न थी। आज वे नौकरशाही को दिखा देना चाहते थे कि भारत के नौजवान देश की आज़ादी के लिए क्या-क्या बलिदान कर सकते हैं। जुलूस फौजदारी अदालत पर जा पहुँचा वहां पर सशस्त्र सिपाही तैनात थे, पर किसी की हिम्मत न हुई कि जुलूस पर गोली चलाने का हुक्म दे। नौजवान अदालत की इमारत पर चढ गए और उन्होंने बड़ी शान से उस पर तिरंगा झडा फहरा दिया। झंडा हवा के साथ अठखेलियाँ करने लगा। जनता ने जय घोष किया और वह दीवानी अदालत पर झंडा फहराने के लिए बढ़ी। अधिकारियों ने इमारत पर चढनें के सभी रास्ते बन्द कर दिए थे, अतएव वे निश्चिन्त खड़े थे। किंतु एक दुबला-पतला-स छात्र अपनी जान-जोखम मे डालकर खड़ी दीवार पर निकली हुई ईंटों के सहारे इमारत के शिखर पर पहुँच गया। उसने तुरन्त राष्ट्रीय झंडा लिया और उसे पताका-दड पर बाध दिया। झडें को लहराता देखकर जनता के हर्ष का ठिकाना न रहा और उसने खूब जयघोष किया। इसी दिन छात्राओं ने भी अपना एक जुलूस निकाला और खादी-भंडार को पुलिस के अधिकार में से छीन लिया।

इन सफलताओ से लोगो का साहस बढ़ गया। ११ एवं १२ ता० को फिर जलूस निकाले गये, पर अधिकारा लोग इस समय तक अच्छी तरह तैयार हो गये थे। उन्होने जुलूस पर गोलियों एव लाठियो की बौछार करना प्रारम्भ कर दिया, जिससे अनेक वीर घायल हुए और मारे गए। लोगों का जोश उस दमन से दबा नही। १३ ता० को दशाश्वमेध घाट से जुलूस निकालकर टाउन हाल मे सभा करने का निश्चय किया। लोग जूलूस की तैयारी लगे में हुए थे कि अचानक मजिस्ट्रेट सशस्त्र पुलिस को लेकर वहां आ पहुंचा और लाठी-चार्ज का हुकम दे दिया। धड़ाधड़ लाठिया बरसने लगी, जिससे बहुत से व्यक्ति घायल हुए। घायल होने वालो मे जुलूस के सयोजक श्री विन्ध्येश्वरी पाठक और रमाकान्त मिश्र भी थे। लोग सत्याग्रही के रूप में बीच सडक पर बैठ गए। पुलिस ने जनता पर पत्थर चलांना शुरू किया। उसके जवाब मे कोई पत्थर इधर से भी फेंके गये। पुलिस ने गोलिया चला दी। २६ राउंड गोलियां चलाई गईं। बासों आदमी मारे गए और सैक्ड़ों घायल हुए।

पुलिस के दमन ने लोगों को और भी तोड़-फोड़ के लिए प्रेरित किया। परिणाम स्वरूप बनारस शहर के तार एवं टेलीफोन के तमाम खम्बे उखाड़ डाले गये और तार तोड डाले गये, जिससे काफी अरसे तक टेलीफोन का व्यवहार बन्द रहा। बनारस से लखनऊ तथा बनारस, इलाहाबाद, गया और पटना जाने

वाला रेल्वे लाइनें उखाड़ डाली गईं। ई० आई० आर० के अनेक स्टेशन लूट-कर जला दिये गये और जो रकम हाथ आई वह गाँव के लोगों में बाँट दी गई। ग्राड ट्रक रोड में स्थान-स्थान पर गड्ढे खोद दिये, तथा बडे-बडे पेड़ काटकर डाल दिये। राजवाड़ी और इबतपुर के हवाई अड्डे नष्ट कर दिये गये। स्थान-स्थान पर रेलवे-गोदाम, पोस्ट-आफिस एव पुलिस-थाने लूट लिये गये और बहुतों को आग की भेंट चढा दिया गया। पुलिस चौकियो एव अन्य सरकारी इमारतो पर राष्ट्रीय झडे फहराने लगे। एक-दो स्थानों पर तो पुलिस के सब इन्सपैक्टरो ने भी अपने हाथसे झडे फहराये।

१६ अगस्त के गोली-काण्ड ने लोगों को सचेत कर दिया कि शहर में अब अधिक प्रदर्शन करना शक्ति का अपव्यय है। अत. करीब एक हजार छात्र जिले भर में फैल गये। बनारस के ये विद्यार्थी गोरखपुर जिले के देवरिया स्थान तक जा पहुचे और वहाँ के विद्यार्थियो को रेलवे स्टेशन पर हमला करने के लिए उत्तेजित किया। १४ तारीख का विद्यार्थियो का एक झुण्ड बलिया पहुँचा और वहाँ पर उसने आन्दोलन की आग भड़काई। गाड़ी पर विद्यार्थियो का पहले से ही कब्जा हो चुका था, अतएव जिस गाड़ी में विद्यार्थी लोग बलिया गये उसके इंजिन पर कांग्रेस का झंडा लहरा रहा था। धानापुर की बात है कि करीब ५ हजार किसान राष्ट्रीय झडा फहराने के लिए थाने पर पहुँचे और उन्होंने बड़े नम्र शब्दों मे थानेदार से झडा फहराने की अनुमति माँगी। थाने-दार जनता की इस माँग को सुनकर आग-बबूला हो गया और उसने कास्टेबलो को बाजार लूटने का हुक्म दे दिया। जनता इससे घबराई नही। वह थाने के सामने डटी रही। इस पर थानेदार ने गोली चलाने का हुक्म दे दिया। मदान्ध सैनिक शात जनता पर अंधाधुन्ध गोलियो की वर्षा करने लगे।

इस प्रकार एक ओर तो बाजार लूटा जा रहा था और दूसरी ओर लोगो को गोलियो से भूना जा रहा था। इस दोहरी मार से लोग आपे से बाहर हो गये और पुलिस-अधिकारियो पर टूट पड़े। फलत: थानेदार और दो कास्टेबल मारे गए। कुछ युवक थाने का सामान बाहर निकाल लाये और मृतकों के शव उसमे रखकर जला दिये।

सैयद रजा बाजार मे २८ तारीख को कांग्रेस के प्रसिद्ध कार्यकर्ता श्री जगतनारायण दुबे की अध्यक्षता में जनता ने एक बड़ा जलूस निकाला। बाजार की सडकों एवं गलियों में से होता हुआ जलूस रामलीला मैदान की ओर बढा, किन्तु अचानक बिना कुछ चेतावनी दिये सैनिको ने जलूस को चारो ओर से घेर लिया और लोगों पर गोलियो की वर्षा करने लगे। परिणाम-स्वरूप श्री

जगतनारायण दुबे एवं १५ अन्य व्यक्तियों के चोटें आई। अब पं० चन्द्रिका नायक नामक एक साहसी युवक ने जुलूस का नेतृत्व अपने हाथ में लिया। जुलूस बाजार के दक्षिणी में हिस्से में से होता हुआ बसाह पुलिस-स्टेशन से करीब आध मील दूर जा पहुंचा। अचानक सामने के पुलिस थाने से गोलियां बरसने लगीं। सैनिक लोग थाने की छतों पर छिपे हुए थे और वही से गोलियां चला रहे थे। रह-रह कर करीब दो घंटे तक गोलियां चलती रही। जब गोलियां बरसती तो लोग जमीन पर लेट जाते और बन्द होती, तो उठ खड़े होते और थाने की ओर बढने लगते। इस प्रकार होते-होते दिन छिप गया और पुलिस वालों को गोली चलाना बन्द करना पड़ा। गोली चलाना बन्द करके सैनिक लोग घायलों को हथियाने के लिए जनता की ओर बढे। किन्तु जनता पहले से ही सचेत थी। उसने पहले से ही अपने घायल साथियों को, जिनकी सख्या ४०-५० थी, अपने अधिकार मे कर लिया था। इस प्रकार एक भी घायल व्यक्ति पुलिस वालो के हाथ में न पडा और जनता अपने सब साथियों को लेकर अपने घरो को चली गई। पुलिस वाले आस-पास के गाँवों में घायलों की तलाश में घूमने लगे और लोगो पर भाँति-भाँति के अत्याचार करने लगे। जब एक भी घायल व्यक्ति उनके हाथ न लगा तो उन्होंने देहात वालों के घर जला दिये लोगो को पकड़ कर बुरी तरह से पीटा और थाने में बन्द कर दिया गया तथा डरा-धमकाकर उनसे रुपया वसूल किया। सैयद बाजार के कुछ दुकानदार तथा कुछ दूसरे लोग गाँव छोडकर दूसरे स्थानों पर चले गये।

विश्वविद्यालय पर फौजी कब्ज़ा

सरकारी दमन-चक्र जिले भर में बड़ी भयानकता से चल रहा था। एक बड़ी सशस्त्र फौज ने विश्वविद्यालय पर धावा बोल दिया और वह वहाँ के अनेक छात्रोवासों पर टूट पड़ी। हजारो की तादाद मे विद्यार्थियो को अपने कमरें खाली करने पड़े। यहाँ तक कि लड़कियों के होस्टल को भी जबर्दस्ती खाली करवाया गया। लड़कियों को अपना सामान तक साथ न ले जाने दिया गया। महामना मालवीय जी और वाइस चान्सलर सर राधाकृष्णन् के निवास स्थानों पर भी फौज का कड़ा पहरा लग गया था। इस प्रकार विद्या का यह विशाल उद्यान एक छावनी के रूप में परिणत हो गया था।

सैयद राजा के गांव में स्त्रियों पर गोली चलाई गई तथा उन्हें हवालात में बन्द रखा गया। कई अन्य स्थानों पर पर स्त्रियों को केश पकड़कर घसीटा गया तथा सरे-आम नंगा करके पीटा गया। जिन स्त्रियों के साथ ऐसे अपमानजनक कार्य हुए हैं वे इसकी बड़ी दर्दनाक कहानी सुनाती है।

गाँवो पर जुर्माने की भारी रकम लगाई गई तथा उनको वसूल करने मे बड़ी निर्दयता से काम लिया गया। एक गाँव में कुछ फौजी जुर्माना वसूल करने के लिए एक किसान के घर पहुँचे। किसान के पास फूटी कौड़ी न थी। इसके लिए उसने कुछ दिन की मुहलत मागी। पर मुहलत देना तो दूर रहा, फौजियो ने उसके डेढ वर्ष के बच्चे को पकड लिया और उसे माँ-बाप की आँखों के सामने आग मे जला दिया। कितना कारुणिक था वह दृश्य, जब वह गरीब किसान एवं उसकी स्त्री हृदय पर पत्थर रखकर अपने नन्हे-से सुकुमार बच्चे को अपनी आँखो के सामने आग में जलता हुआ देख रहे थे।

संयुक्त प्रान्त के तत्कालीन गवर्नर मॉरिस हैलेट के सलाहकार मार्श स्मिथ और नेदरसोल ने बनारस जिले की शान्त, असहाय एव निरीह जनता के खून से होली खेली। इन आततताइयो ने फौज को हुक्म देकर गांव-के-गांव जलवा डाले तथा गरीब लोगो के रुपये, पैसे, गहने, यहाँ तक कि अनाज एव पहनने के कपड़े भी लुटवा दिये। स्त्री-पुरुषों को भाँति-भाँति से अपमानित किया गया तथा उन्हे घोर यातनायें दी गईं।

इस जिले मे ३१० व्यक्ति नज़रबन्द किये गये और ५६३ को दण्डित किया गया। ११७ निर्वासित कर दिये गये। ४०-५० व्यक्तियो को फासी की सजा दी गई। २३ स्थानो पर गोलियाँ चली जिसके फलस्वरूप १८ मरे और ८५ घायल हुए। जिले मे २,२४,०२२ रु० ६ आना ५ पाई सामूहिक जुर्माना किया गया।

इलाहाबाद

इलाहाबाद भारतवर्ष का एक ऐतिहासिक नगर है। वर्तमान समय में यहां बड़े-बड़े नेता और राजनीति के विद्वान् हुए है। यही स्वराज्य-भवन है जिसमें अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी का मुख्य कार्यालय स्थापित है। इस कारण यहां राजनैतिक चेतना विशेष रूप से है।

नवी अगस्त को नेताओं की गिरफ्तारी का समाचार पहुंचते ही सारे शहर में सनसनी फैल गई। सभी लोगों ने अपना काम-काज बन्द कर दिया। इसी दिन स्थानीय कार्यकर्त्ता बन्दी बना लिए गए और कांग्रेस कमेटियों के कार्यालयों की तलाशी ली गई और उनमें सरकारी ताले लगा दिये गये। विद्यार्थी जोश से भरे हुए थे। शाम को विद्यार्थियो का आधा मील लम्बा जुलूस शहर के कोने-कोने में घूमा। १० अगस्त को पुरुषोत्तमदास पार्क और मुहम्मदअली पार्क में विराट सभाएं शान्ति के साथ सम्पन्न हुईं।

ता० ११ अगस्त को स्थानीय विश्वविद्यालय से छात्र-छात्राओं का एक

जुलूस निकला जो पिछले दानों दिनों के जुलूस से बढा-चढा था। जुलूस के आगे लडकियां चल रहीं थी। राष्ट्रीय नारों से गगन गूंज रहा था। धीरे-धीरे जुलूस भा होस्टल तक ही पहुंच पाया था कि सामने से एक सशस्त्र पुलिस की टुकड़ी आ पहुची और उसने जुलूस को आगे बढ़ने से रोक लिया। पुलिस अफसर ने इस अवसर पर तीन बार लाठी चलाने का हुक्म दिया, किंतु सिपाहियो ने लाठी-चार्ज नही किया।

११ अगस्त को विश्वविद्यालय के यूनियन हाल में एक विराट सभा हुई। उसमें यह निश्चय हुआ कि १२ अगस्त को दो रास्तों से दो प्रथम जुलूस निकाले जायं और मुहम्मदअली पार्क में एक सभा की जाय। निश्चित प्रोग्राम के अनुसार १२ अगस्त को शानदार जुलूस निकले। गवर्नमेंट हाउस के पास से जाने वाले जुलूस का नेतृत्व तीन लडकियां कर रही थी। वे श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित, जस्टिस मुल्ला और एक पुलिस अफसर की लडकियां थी। जुलूस पूरा तरह शान्त था, फिर भी जिला मजिस्ट्रेट ने मौके पर गोली चलाने का हुक्म दे दिया। गोलियो की वर्षा होने लगी।। तीनो वीर बालाओ ने बड़े साहस से गोलियों का सामना किया, किंतु बाद में वे घायल होकर भूमि पर गिर पड़ी। सारा जुलूस वही रुक गया। बाद में राजघराने का एक विद्यार्थी आगे बढ़ा और छाती खोलकर बोल उठा, "लड़कियो पर क्या गोली चलाते हो ? मुझे निशाना बनाओ।" उसकी खुली छाती ने गोली का आलिंगन किया और उस वीर ने आजादी के इस यज्ञ में अपने प्राणो की आहुति दे दी। विद्यार्थियों ने उसके रक्त से अपने रुमाल भिगोकर आजादी के लिए कुर्बान हो जाने की दृढ प्रतिज्ञा की।

दूसरे जुलूस के नेता श्री यदुवीरसिंह थे। लगभग बारह बजे जुलूस कचहरी पहुंचा। सामने पुलिस तैयार खडी थी। ज्यो ही जुलूस कुछ और आगे बढा, पुलिस वालों ने कंकड़ बरसाना शुरू कर दिया और लडकियों के हाथ से झंडा छीनने की चेष्टा की। लडकियां एक साथ झंडे को पकडकर खड़ी हो गईं। वे घिसटती जा रही थी, किंतु झंडा नही छोड रही थी। इतने में अचानक लाठियां बरसने लगी। जुलूस के लोग रूमाल के इशारे से लेट जाते थे और फिर उसी के इशारों के आगे बढ़ते जाते थे। उधर घुडसवार पीछे से डंडे चला रहे थे। इतने में बन्दूक की धायं-धायं आवाज के साथ ही किसी ने कहा, 'विदा। इन्कलाव, जिन्दा बाद।' .... 'वह भारत का लाल रक्त-स्नान कर स्वतंत्रता देवी की आराधना कर रहा ।।पागल की तरह पूरी टोली उमड़ पड़ी। उसके रक्त में रूमाल भिगोया गया और उसी में तिरंगा।

उसी के मस्तक पर तिलक लगाए गए। और गोलियों की बौछार में भी बढ़ना जारी रहा। एक पर एक घायल गिर रहे थे, फिर भी लोग वीरतापूर्वक बढ़ते जा रहे थे। लड़कियो ने घुडसवारो के घोडों की लगाम थाम ली। आखिर अधिकारियो को हार माननी पड़ी और जुलूस को अपनी इच्छानुसार जाने के लिए अनुमति दे दी गई। यह एक महान् विजय थी और इसका सम्पूर्ण श्रेय था शहीद पद्मधर को। लोग विद्यार्थियों के जुलूस मे शामिल होते जा रहे थे। जुलूस पर लाठी-चार्ज किया गया। थोडी देर के लिए जुलूस भंग हो गया। किंतु फिर जवाहर-चौक में जुलूस निकला। पुलिस वालो की लाठियां खाते हुए भी लोग आगे बढते जा रहे थे। आगे एक दूसरा जुलूस आ मिला और लोगो ने कोतवाली के सामने पहुंचकर अपने बचाव के लिए भरे हुए ठेलो और लकडी के तख्तो की सहायता मे सडक पर एक दीवार खडी कर ली थी। बलूची सैनिकों का एक जत्था आ रहा था। लोगों ने उस पर पत्थर फेंकना शुरू कर दिया। बाद में पुलिस सार्जेन्ट पुलिस सैनिको के साथ आया और भीड पर गोली चलाने का हुक्म दे दिया। जुलूस के नायक राजन् की छाती में गोली लगी और उसी समय वह जमीन पर लेट गया। इससे लोग भागने लगे। रमेश मालवीय से यह सहन न हुआ। वह आगे बढ़ा और लोगों को भागने से रोकने लगा। सार्जेन्ट ने झट अपना रिवाल्वर दबाया और धायं-धायं करती हुई गोली रमेश की छाती के आर-पार हो गई। वह भी गिर गया और वही वीरगति को प्राप्त हुआ। उधर सिपाहियो ने भागते हुए लोगों पर गोली चलाई, जिससे कुछ मरे और बहुत से घायल हुए।

इसके बाद तो लाठी और गोली-काण्डों का तांता बंध गया। मरने वालों की संख्या सैकड़ों तक पहुंच गई। सारा शहर गोरी फौज के नियंत्रण में दे दिया गया। फिर भी विद्यार्थियों के जुलूस निकलते रहे। तार काटे गये और मोटर लारियां जला दी गईं। किंतु उनमें बैठे लोगों, ड्राइवर आदि की पूरे तौर से रक्षा की गई।

१३ अगस्त को नवयुवकों ने हवाई अड्डे पर आक्रमण किया और उसे काफी क्षति पहुंचाई। शहर के डाकखाने लूट लिये गये और जला दिये गये। रामबाग में पुलिस वालों को जनता के सामने आत्म-समर्पण करना पड़ा। लगभग एक दर्जन फौजी लारियां फूंक दी गईं। इस प्रकार तीन दिन तक ब्रिटिश शासन का नामो-निशान मिटा दिया गया। विश्वविद्यालय के सैकड़ों छात्र देहातो में और अन्य प्रान्तों के कालेजों एवं स्कूलों में आजादी का पैगाम लेकर पहुंच गये। स्थान-स्थान पर स्टेशन जला दिये गये। थानों पर कब्जा

कर लिया गया तथा सरकारी स्थानों को हानि पहुचाई गई। इलाहाबाद, बनारस, जौनपुर, मिर्जापुर, आजमगढ आदि इलाकों में यातायात के साधनो की बेहद हानि पहुचाई गई, जिससे कुछ गाड़ियों का आना-जाना बन्द हो गया।

अन्य स्थानो की भाँति इस जिले के दमन की कहानी भी हृदय-विदारक है। पुलिस और फौजवालों ने सैकडों निरपराध व्यक्तियों को अपनी गोली का शिकार बनाया। ता० १२ को पी० सी० बनर्जी होस्टल के पास कुछ विद्यार्थी बाते कर रहे थे, इतने मे उधर से एक फौजी लारी गुजरी। उन लोगो ने एक छात्र के ऊपर गोली चलाई, किन्तु वह बच गया और गोली पास में एक घास-वाले के लगी जिससे वह वही मर गया। मुरारीमोहन भट्टाचार्य नाम के एक व्यक्ति जान्सनगंज से आ रहे थे। एक सिपाही की सनसनाती गोली उनके लगी और वह वही गिर गये। फिर सभलकर ज्यो ही वह उठे, उनके शरीर से दूसरी गोली पार कर गई और वह वही सदा के लिए सो गए। जो गान्धी टोपी लगाये चलता था, पुलिस वाले उसे पकड़ लेते और उसे टोपी नाली में फेकने, उस पर थूकने तथा पेशाब करने का हुक्म देते थे। एक वीर नवयुवक दशरथलाल जायसवाल गान्धी टोपी की इस बेइज्जती की बात सुनकर जान-बूझकर गान्धी टोपी पहन कर मुट्ठीगज चौराहे की ओर चला। पुल पर कुछ सैनिको ने जायसवाल को रोका और टोपी पर पेशाब आदि करने के लिए कहा। उसके ऐसा न करने पर उसे गोली से उडा देने की धमकी दी। उस वीर के उनकी धमकी की कुछ भी परवाह न थी। एक पुलिस वाले ने उस पर प्रहार किया जिससे वह नीचे गिर गया। इसी अवस्था में एक सनिक के रिवाल्वर से निकली हुई गोली धाय-धाय करती हुई जायसवाल के पेट से आर-पार हो गई और खून की धारा फूट पड़ी। युवक ने साहस कर एक हाथ से घाव को दबाया और दूसरे से सिर पर लगी हुई गान्धी टोपी को जीवन एव मृत्यु के बीच मे पडे हुए इस वीर को अब भी गान्धी टोपी की मान-रक्षा का ध्यान था। उसके घाव से खून की धारा बह रही थी। किन्तु युवक ने हिम्मत की और उठकर जाने लगा। उसी समय सैनिकों की एक गोली उसकी गर्दन पर लगी और दूसरी उसकी रान को चीरती हुई चली गई तथा पास से गुजरते हुए एक धोबी को लगी। बेचारा धोबी फौरन मर गया। किन्तु उस वीर का बाल-बाका न हुआ। इस जिले के कण्डिया नामक स्थान में कुछ विद्यार्थियो को पेड पर लटकाकर गोली चलाई गई थी।

डिप्टी कमिश्नर की कुर्बानी

इस प्रकार के अमानुषिक अत्याचार विद्यार्थियों के ऊपर रात-दिन

हो रहे थे एक दिन एक मुसलमान डिप्टी कमिश्नर एक घटनास्थल पर पहुचे। सरकार के निर्दयतापूर्ण अत्याचारों से उनका हृदय पसीज उठा और उन्होंने तुरन्त अपने पद से इस्तीफा दे दिया। इस प्रकार उन्होंने अपनी आत्मा की पुकार सुनी और अपने को हमेशा के लिए विदेशी राज की गुलामी से मुक्त कर लिया।

इस जिले में ५८१ व्यक्ति गिरफ्तार हुए और ४५८ को सजायें दी गईं, दो स्थानो पर गोला चली। ६३,०३८ रु० सामूहिक जुर्माना किया गया।

जौनपुर

दस अगस्त के प्रभात ने नेताओ की गिरफ्तारी का समाचार जिले भर मे पहुचा दिया। इस पर लोगो में चौगुना जोश पैदा हो गया। नवयुवको की कौंसिल में यह तय हुआ कि जिले भर मे राष्ट्रीय सरकार स्थापित की जाय। अलग-अलग महकमे बनाये गये और योग्यतानुसार एक-एक महकमा सौंपा गया। एक महकमे का काम यातायात के साधनों को नष्ट करना और दूसरे का जगह-जगह सभायें करके मालगुजारी आदि बन्द करा देना था। सर्व प्रथम यातायात के साधनो को नष्ट करने के लिए प्रस्ताव पास किया गया। १३ अगस्त को एक व्यक्ति शहर के बाहर पकड़ा गया और उसने डर के मारे नवयुवकों की तैयारियों का सब हाल बता दिया फलस्वरूप पुलिस ने उसके बताये हुए गुप्त स्थान पर छापा मारा और जो कुछ भी सामान इकट्ठा किया गया था, सब ले गई। वहा से पुलिस लौट रही थी। रास्ते में सेई नदी के बरगद के बड़े पुल को तोड़ा जा रहा था। पुलिस ने गोली चलाना शुरू कर दिया, किन्तु घायल होकर भी लोगो ने कोई परवाह नही की और पुल के टुकडे-टुकडे करके ही दम लिया। धनियामऊ के पुल पर एक अंग्रेज इंसपैक्टर ने एक वीर विद्यार्थी को गोली से उडा दिया। बाद मे इन्सपैक्टर महोदय को अपनी करतूत का फल मिला। उन पर लाठी-प्रहार हुआ और वह चल बसे।

कही-कही जनता ने बड़े-बड़े पेड़ों को काटकर बहुत-सी सड़को को बन्द कर दिया था। जिले के प्रायः सभी स्टेशन व डाकखाने जला दिये गये। पर किसी की जान नही ली गई। डाकखानों के रुपये आदि लूट लिये गये। रेलवे लाइन उखाडकर फेक दी गई तथा तार और खम्भे काट डाले गये। इस प्रकार यातायात के सभी साधन नष्ट करके ब्रिटिश सत्ता को पगु बना दिया गया।

सुजानगज के थाने पर थानेदार व चौकीदार को गिरफ्तार कर लिया गया और कारतूस, राइफलें आदि छीन ली गईं। थाने पर तिरगा झडा फहराने लगा। उसी रात थानेदार ने कप्तान की धमकी से डरकर आत्म-हत्या

कर ली। मढ़ली तहसील पर भी झंडा फहराया गया। उसी समय और पुलिस आ पहुंची गोली चली और एक नवयुवक शहीद हुआ। बदलापुर थाने पर आक्रमण हुआ। वहां भी गोली चली। एक आदमी थाने के अन्दर बन्द करके बुरी तरह पीटा गया।

यहा के गावों में नवयुवको ने गुप्तचर नियुक्त कर लिए थे, जो पुलिस के आने-जाने की खबरें एक गाव से दूसरे गांव में दिया करते थे। नवयुवको ने पुलिस के दात खट्टे कर दिये। किन्तु फौज की मदद से पुलिस जगह-जगह लूट मचाने व अत्याचार करने लगी। तब जनता ने इन देश-द्रोहियों का पूरा बहिष्कार किया। इस पर वहुत से पटवारी और चौकीदारों ने इस्तीफा दे दिया। नवयुवकों ने गांव-गांव मे वैतनिक फौजी चौकिया बनाईं। इस प्रकार कई महीने तक जनता की आजाद सरकार नौकरशाही ताकतो से मुकाबला करती रही।

बहुत से नवयुवक पुलिस के पंजे मे न फसे थे। उनको पकड़ने के लिए पुलिस बुरी तरह परेशान थी। गाव-गाव में पुलिस चक्कर काट रही थी। लोग निर्दयता से पीटे जा रहे थे। कहते है कि एक अफसर ने राय अम्बिका-प्रसादसिंह पर बड़ी निर्दयता के साथ अत्याचार किया। उनकी सम्पत्ति नष्ट कर दी गई। उनका हाथी थाने में भूख से मार डाला गया। खेतो की तैयार फसलें जला दी गईं। मकान को तहस-नहस कर दिया और उसी स्थान पर पुलिस-चौकी बनाई गई। सुरेश का सब माल लूट लिया गया और मकान जला दिया गया। उनके पिता को, जो एक फूस की झोपड़ी में रहते थे, उसे भी जलवा दिया। यहा के लगभग १५ क्रांतिकारी सैनिक शहीद हुए।

जौनपुर जिले में बधवा, दानगज और जलालपुर ये तीन स्थान ऐति-हासिक बन गए है। इन तीन जगहों पर जनता ने अत्याचारी पुलिस और फौजियो के साथ जी-जान से मोर्चा लिया। इन स्थानो में पुलिस ने जो अत्याचार किए है उनका वर्णन सुनने से रोगटे खड़े हो जाते है। हम यहाँ के तीन वीर नौजवान श्री राय अम्बिकाप्रसादसिंह, प० राजाराम मिश्र और दलसिंगारसिंह के अतुलनीय शौर्य का उल्लेख किए बिना नही रह सकते। श्री राय अम्बिकाप्रसादसिंह के नेतृत्व में आजाद फौज सरकारी फौज से मुकाबिला करती थी। एक सघर्ष मे दोनों दलों के दो-दो व्यक्ति काम आए। पं० राजाराम मिश्र के दल का काम पुलिस को लूट-मार से रोकना था। श्री दलसिंगारसिंह ग्राम-सैनिको का सगठन और पंचायतों की स्थापना आदि काम करते थे।

जौनपुर जिले के दमन का कुछ परिचय पाठको को उपर्युक्त घटनाओं

से मिल गया होगा। यहाँ पर हम 'समाज' में प्रकाशित श्री बलजीतसिंह के लेख का एक अंश उद्धृत कर रहे हैं:

"आग पर सेंकना, मुर्गे बनाना, उलटी टांग कर कोड़े लगाना, औरतो का नगी करके पीटना, उनके गुह्यांगों में मिर्चें भरना, लाल मिर्चो की धूनी देना, पेडो पर बांधकर पीटना, एवं नंगे बदन सड़कों पर घसीटना साधारण घटनाये थी। बाप के सामने बेटी की इज्जत ली गई और माँ के सामने बेटे को बॉधकर पीटा गया। खुले आम औरतें नंगी करके पीटीं गईं और मनमाने तौर पर घसीट कर उनकी बेइज्जती की गई। इसके अलावा एक ऐसी सजा निकाली गई थी जिसके द्वारा आदमी को सीधा पैर फैलाकर बिठा दिया जाता था। दो आदमी दोनो हाथो को सीधा फैलाते थे। एक आदमी उसका सिर पकड़ कर घुटनो के सहारे सीधा बैठा रहता था। दो आदमी उनके दोनो पैर बलपूर्वक पीछे की ओर घुमा देते थे जिससे गुदा और मूत्रेन्द्रिय से खून निकल आता था और इस प्रकार वह या तो मर जाता था या उसका जीवन सदा के लिए नष्ट हो जाता था।"

इस जिले मे ४ जगह गोली चली और लगभग १५ आदमी मारे गये। १, ५५, ११८ रु० ३ आ० १० पा० सामूहिक जुर्माना किया गया।

गोरखपुर

नौ अगस्त के बाद जिले के प्रायः सभी प्रमुख नेता नजरबंद बनाकर जेलो में ठूंस दिये गये। फलस्वरूप २६ अगस्त को जनता ने एक बड़े जुलूस के द्वारा गहरा विरोध प्रदर्शित किया। मदरिया के प्राइमरी स्कूल की किताबे बाहर फेंक दी गईं। नये गाव की सडक की पुलिया तोड़ डाली गई। गोला कस्बे मे एक विराट जुलूस निकाला गया। थाने और डाकखाने पर तिरंगा झंडा लहराया गया। गगहा के मार्ग में मिलन वाली एक पुलिया तोड़ डाली गई। डाकखाने के तार काट डाले गये। बेहली मे तार का एक खम्भा गिरा दिया गया। उसका बाजार के डाकखाने का एक लेटर बक्स चकनाचूर कर दिया गया। कुछ सिपाहियों ने इस अवसर पर श्री रामअधारसिंह को पकड़ लिया। उत्तेजित भीड ने चौकीदार का साफा छीन लिया। सिपाही भयभीत होकर भाग निकला। इसकी खबर सरकारी अधिकारियो को जब मिली तब वे लोग गारद के साथ निकटस्थ गांव के गुडो को लेकर उसका बाजार में आ धमके। कस्बे के प्रायः सारी दुकाने लूट ली गईं।

इसके बाद गाँवों में छापे मारना शुरू कर दिया गया। बथुवा गांव

लूटा गया। श्री लालसा पाड़े को पीटा गया और उनका घर लूट लिया गया। बाद में उन्हें जेल भेज दिया गया। सुना जाता है कि उनकी तीन दिन की प्रसूता पतोहू घर से बाहर निकाल दी गई। खोपापार पर हमला हुआ। गांव के मुखिया प० रामलखन पाडे और उनके दोनो लडको को बेत और बन्दूक के कुन्दों से पीट-पीट कर बेहोश कर दिया गया। हिन्दी साहित्य विद्यालय की इमारत मे आग लगा दी गई। प० रामबली मिश्र की धर्मपत्नी श्रीमती कैलाशवती देवी को केश पकड़कर घर से बाहर निकाल दिया गया। उन्हे नंगी कर देने का हुक्म दिया गया और उनकी साड़ी फाड़ डाली गई। मकान लूट लिया गया और बाद में गिरा दिया गया। विद्यालय के लड़को को पीटा गया और उनके कपड़े छीन लिये गए। इस लूट में गांव का लगभग ४० हजार का नुकसान हुआ। इसके अतिरिक्त अन्य कई गाव लूटे गए। प्रसिद्ध कार्यकर्ता रामलखन शुक्ल, ककरही को गिरफ्तार कर लिया गया। उनका घर जला दिया गया, जिसमे १११९४ रुपए का नुकसान हुआ। गोपालपुर लूटा गया और वहां के घर जला दिये गए। मदरिया के रामअलखसिह का सामान लूटा और जलाया गया। श्री रामअलख और बलराम को पचास-पचास रुपए जुर्माना और १०-१० बेंत की सजा दी गई।

२८ अगस्त को तहसीलदार, कानूनगो, कुर्कअमीन आदि ने सदल-बल सामूहिक जुर्माना वसूल करने के लिए सिसई गाव पर छापा मारा। ३०० रु० जर्माना किया गया था। लोगों ने देने से इन्कार कर दिया तो जूतो की ठोंकरो से जुर्माना वसूल किया जाने लगा। २-३ आदमियो के ऊपर खूब मार पड़ी। गांव के लोग यह अत्याचार न सह सके और सरकारी कर्मचारियो को कसकर ठीक किया। थोड़ी देर मे बलूची फौज वहा आ पहुची और गांव को घेर लिया। ग्रामीण जनता ने बुद्धिमानी से काम लिया और तुरन्त गाव खाली कर दिया। इस मौके पर श्री राधापदजी मुख्तार ने गोली खाने के लिए अपना सीना खोल दिया था किन्तु उन्हे गोली चलाने का साहस न हुआ। लगभग ३० आदमियो को बन्दी बनाया गया और दो-साल का कठोर कारावास दिया गया। इसके पहले उन्हे बेंतों से खूब पीटा गया। बीसो मकान जला दिये गए और सामान लूट लिया गया। मशीनगन लगाकर लोगो को डराया-धमकाया गया। फौजियो ने यहां की बहुत-सी स्त्रियों का सतीत्व नष्ट किया।

दाऊघाट गांव मे २९ अगस्त को कप्तान मूर सिपाहियो के साथ आ धमके। उन्होंने पं० गोपीनाथ मिश्र को पकड़कर ४००० रु० जुर्माना मांगा और उनके दरवाजे तोड़कर घर में घुस गए। स्त्रियो के करुण-क्रदन से

गांव के लोग एकत्र हो गए। फजानमिया और रामलखन तेली को गोली से उड़ा दिया गया।

१८ अगस्त को भाटपार की जनता को पुलिस की गोलिया खानी पड़ी। फलस्वरूप लालचन्द और सरवन नोनिया मारे गये। १९ अगस्त को यहां का बाजार लूटा गया। यहा का गांधी आश्रम जला दिया गया।

मालपुरी गांव में २० अगस्त को आग लगाई गई। लगभग एक सौ आदमियों को बांध दिया गया और उन्हे बुरी तरह से पीटकर एक गड्ढे मे डाल दिया गया। घरो का सामान लूट लिया गया। बहुत से लोग जेल मे बन्द कर दिये गए।

लोगों की हानि के कुछ अंक इस प्रकार हैं :—

खोपापार गाव मे हुआ नुकसान	४०,००० रुपया
मदरिया के समीपवर्ती गावो	
पर सामूहिक जुर्माना	१,००० रुपया
उसवा, दुधरा, अमोडा आदि गावो मे लूट	५०,००० रुपया
और माल की बरबादी	२५ मन गेहूं, चावल, घी
खोपापार तहसील में जलाये गए घर	१२
नष्ट की गई छतो की सख्या	१०३
लूटे गए घरो की सख्या	७६
सजाए	८० आदमी
नुकसान	२,३४,९७९ रुपये के लगभग।
कुल सामूहिक जुर्माना	२७,९१,७०५

पश्चिमी जिलों में आन्दोलन

पश्चिमी जिलो मे आन्दोलन का जोर उतना अधिक नही रहा। फिर भी कानपुर, लखनऊ, आगरा, पीलीभीत, खीरी, मेरठ, बिजनौर, मुरादाबाद, हरिद्वार आदि में जनता ने उल्लेखनीय भाग लिया। इसके अलावा प्रत्येक जिले के वड़े-वडे शहरो व कस्वो मे भी प्रदर्शन हुए।

कानपुर

यहा ९ अगस्त को जनता के एक विशाल समूह ने कांग्रेस ऑफिस पर, जिस पर पुलिस का कब्जा हो चुका था, उसे पुन. प्राप्त करने के लिए आक्रमण किया। डाकखानों की लारियों और उन सब कारो पर भी, जिनको यूरोपियन ड्राइवर चला रहे थे, आक्रमण किये गए। दस तारीख की शाम तक शहर में

तीन पुलिस चौकियों पर सामूहिक आक्रमण हुए। पुलिस ने हर जगह गोलियां चलाकर उत्तर दिया। सरकार ने जनता पर आतंक जमाने के लिए आर्डिनेन्स लागू करके फौरन जुर्माने वसूल करने शुरू कर दिये।

कितने ही दिनों तक सरकारी इमारतों, स्कूलों आदि पर आक्रमण जारी रहे। जब आन्दोलन का बाह्य रूप धीमा पड़ने लगा तो छोटे-छोटे दस्तों द्वारा डाकखानो व अन्य सरकारी संस्थाओं पर इक्के-दुक्के हमले होते रहे और आखिर मे आन्दोलन ने तोड़-फोड का गुप्त रूप धारण कर लिया। सारे कालेज के विद्यार्थियों ने स्कूल व कालेजों में हड़ताल रखी और डेढ़ महीने तक यह हड़ताल जारा रही। निस्सन्देह मजदूरों ने आन्दोलन मे उतना हिस्सा नही लिया जितना कि उनसे आशा थी। मजदूरो पर उन दिनो कम्युनिस्टों का अधिक असर था। आन्दोलन के सम्बन्ध मे २०३ व्यक्ति नजरवन्द हुए और ३९४ दण्डित किये गए। १,९९,२५० रु० सामूहिक जुर्माना किया गया।

लखनऊ

९ अगस्त को सवेरे ही स्थानीय नेता पकड़ लिये गए। विरोधस्वरूप शहर मे हड़ताले हुईं और जुलूस निकाले गए। विद्यार्थियों का जुलूसों मे अधिक भाग रहा। लखनऊ यूनिवर्सिटी के विद्यार्थियों पर ११ अगस्त को जब वे यूनिवर्सिटी और शहर के बीच का गोमती पुल पार कर रहे थे, पुलिस ने गोलिया चलाईं। पुल के दूसरी ओर शहर की जनता का एक विशाल समूह इकट्ठा हो गया था जिसे भयंकर लाठी-चार्ज द्वारा तितर-बितर किया गया। जनता ने लखनऊ रेलवे स्टेशन के आफिस, डाकखाने इत्यादि पर भी आक्रमण किये। यहा लड़कियों के जुलूस ने बहुत बहादुरी दिखाई। जब लाठी-चार्ज हुआ तो लड़कियां बैठी रही, घायल हुईं, पर कदम पीछे नही हटाया, यह देखकर लोगों ने पुलिस पर ईंट-पत्थर बरसाये। इसके जवाव में पुलिस ने काफी गोलियां बरसाईं। इस प्रकार शहर मे काफी अशान्ति रही। स्टेशन आफिस जलाये गए। कालेज आदि बन्द रहे। पुलिस के नौ सिपाहियो ने लाठी-चार्ज करने से इन्कार कर दिया। इस पर वे गिरफ्तार कर लिये गए। लोगों पर ५५,८३२ रु० सामूहिक जुर्माना किया गया।

आगरा

श्रीकृष्णदत्त पालीवाल, प्रधान प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी पहले ही पकड़ लिये गए थे। एक वहुत बड़ा आम जलसा हुआ; जुलूस निकला; जिसे पुलिस ने रोका। जुलूस लाठी-प्रहारों के बावजूद भी आगे बढ़ता गया। पुलिस ने थाने से गोली चलाई। तीन दिन तक नवयुवकों और पुलिस मे मुठभेड़ होती रही।

विद्यार्थियों ने स्कूल कालेज छोड़कर विरोध-प्रदर्शन मे सामूहिक रूप से भाग लिया। पहले सप्ताह मे ही एक हजार के लगभग कार्यकर्ता पकड़ लिये गए आन्दोलन का बाह्य रूप पाच-सात दिन बाद धीमा पड़ गया। पर तोड़-फोड़ के कार्यों ने उग्र-रूप धारण कर लिया। शहर के आस-पास तक टेलीग्राफ तथा टेलीफोन के तार बड़ी मात्रा मे काटे गए। ई० आई० आर० के कई स्टेशनो को भी जलाया गया। बी० बी० एण्ड सी० आई० की मालगाड़ियो को गिरा दिया गया, जिनमे से दो के इजन तो बिल्कुल टूट गए और चार को काफी क्षति पहुची। एक जत्थे ने इनकम टैक्स आफिसर को धमकाया। २०० आदमियो के एक जत्थे ने चदौला स्टेशन पर आक्रमण किया। पुलिस ने गोली चलाई। पांच मरे और ३५ घायल हुए। आगरे मे १०० के लगभग जख्मी हुए। मालदारो से पुलिस ने मनमाना रुपया वसूल किया। जिन्होने देने से इन्कार किया, उन्हे जेल भेजने की धमकी दी गई। विद्यार्थियो का आन्दोलन मे बड़ा भाग रहा। उन्होने कालेज तथा अदालतो पर पिकेटिंग किया और लड़कियो ने भी इसमे काफी भाग लिया।

कई थानो मे आग लगाई गई। २२ सितम्बर को गवर्नमेंट कपड़ा फैक्टरी में भी आग लगा दी गई। अक्तूबर से आन्दोलन ने गुप्त रूप धारण किया। दिसम्बर १९४२ मे आगरा षड्यन्त्र केस चलाया गया। जिले में १५५ नजरबन्द किये और १००० व्यक्ति गिरफ्तार किये गए। ६८,१९५ रु० सामूहिक जुर्माना किया गया।

मथुरा

प्रारम्भ मे हडताल हुई और जुलूस निकला। १८ तारीख तक सारे कार्यकर्त्ता पकड़ लिये गए। जुलूस पर लाठी-चार्ज हुआ। रेल व तार को काफी नुकसान पहुचाया गया। परखम स्टेशन के पास एक इजिन गिरा दिया गया। छोटे-छोटे बच्चो को पुलिस वालो ने खदेड़कर एक अहाते में घेर लिया और उन्हे बुरी तरह से मारना-पीटना शुरू कर दिया। आसपास के रहने वालो ने ऊपर की मजिलो से रस्सिया डालकर उन्हे खीच लिया। लोगो पर ४६,७०० रु० सामूहिक जुर्माना किया गया।

वृन्दावन

जनता ने जुलूस निकाला, जिस पर पुलिस ने लाठियां चलाईं और अन्त मे गोलियां चली। २० से अधिक आदमी लाठी से घायल हुए और ६ आदमी गोलियो से जख्मी हुए।

अलीगढ़

आंशिक हड़ताल हुई। धर्म समाज कालिज के विद्यार्थियों ने जुलूस निकाला और पुलिस ने लाठी-चार्ज किया। आठ या दस वर्ष के कई बच्चे मर गए। जिले मे ४५० गिरफ्तारियां हुईं। अतरौली कस्बे में एक आदमी को गिरफ्तारी के समय पुलिस ने गाली-गलौज करना शुरू कर दिया। गिरफ्तार होने वाले भाई को गुस्सा आया और उसने पुलिस को बांस मारा। इस पर पुलिस के दारोगा ने बगल से पिस्तौल मारी जो आर-पार निकल गई और वह वही पर मर गया। दूसरे भाई के भी गोली लगी, जिससे वह घायल हो गया। पुलिस लाश को अपने साथ ले गई। यहा पर गोली के दस फायर हुए। एक रेल के पुल को काफी क्षति पहुचाई गई। जिले मे २० से अधिक स्थानो पर तार काटे गये। ई० आई० आर० रेलवे के पत्ती, हाथरस, सलेमपुर आदि स्टेशनो पर आक्रमण किये गये। हरदुआगज का डाकखाना भी जला दिया गया।

८५०० रु० सामूहिक जुर्माना किया गया।

मुरादाबाद

११ अगस्त को ३५-४० हजार आदमियों का एक विशाल जुलूस, जिसमें हिन्दू, मुसलमान दोनों सम्मिलित थे, निकला और थाने तथा कचहरियों की ओर बढने लगा। पुलिस ने इस पर गोली चलाई और अन्त मे फौज को बुलाया गया। फलस्वरूप लगभग १५ व्यक्ति मरे और ५० घायल हुए। १२ ता० को जनता ने रेलवे स्टेशन और बुकिंग आफिस पर आक्रमण किये। यहां ४७ व्यक्ति गिरफ्तार हुए और ३६ को सजायें हुईं। १७,३६७ रु० सामूहिक जुर्माना किया गया।

बिजनौर

६ अगस्त को पुलिस ने स्थानीय जिला कांग्रेस कमेटी के दफ्तर पर धावा बोला और सारा सामान उठा ले गई। बिजनौर के प्रायः सभी कांग्रेस-जन बन्दी बना लिये गए। गांवों में भी लोग ढूंढ-ढूंढ कर पकड़े जा रहे थे। १२ ता० को धामपुर में विद्यार्थियो का एक जुलूस निकला। रास्ते में पड़ने वाले सरकारी स्थानों, तहसील और थानों पर राष्ट्रीय झंडा फहराया गया। डाकखानों को जलाया गया। स्टेशन पर पहुंचकर वहां के टेलीफोन के तार आदि काट डाले गए। १३-१४ अगस्त को चान्दपुर हाई स्कूल के विद्यार्थियों और वहां के नागरिकों का सम्मिलित जुलूस निकला। १३ अगस्त को हाईस्कूल पर झंडा लगाया गया। १४ ता० को भी जुलूस निकला और रेलवे स्टेशन के

शीशे तोड़े गए। १६ अगस्त को नूरपुर थाने के अनेक ग्रामों की जनता का एक विशाल जुलूस निकला। भीड़ ने फेजपुर और गोहावर के नलदार कुएं, पी० डबल्यू०डी० के बगले और रतनगढ़ पोस्ट ऑफिस को तोड़-फोड़ डाला। नूरपुर थाने की पुलिस पहले से बन्दूको से सुसज्जित खड़ी थी। जुलूस अभी कस्बे तक न पहुच पाया था कि पुलिस ने लाठी-चार्ज करना शुरू कर दिया, किन्तु जुलूस बढ़ता ही गया। थाने के पास से गुजरने पर जुलूस पर धड़ाधड़ गोली चलने लगी। एक व्यक्ति घटनास्थल पर ही अमर-गति को प्राप्त हुआ और एक बाद में जेल मे मर गया। लगभग १० व्यक्ति लाठी-चार्ज से घायल हुए।

१७ अगस्त से ११ नवम्बर सन् १९४२ तक जिले की घटनाओं की सूची इस प्रकार है.—

(१) प्रान्तीय रोड अखेड़ा के पास काट दी गई। हल्दौर कस्बे मे जुलूस पर गोली चली जिसमें ६ आदमी घायल हुए। (२) श्यामपुर थाने का एक सिपाही लापता होगया। (३) जाहनगर के पास मोटर जलाया गया। (४) लाम्बा खेडा गांव के पास तार काटे गए। (५) कासमपुर गढ का पुल तोड़ा गया। (६) नगीना हाई स्कूल का रिकार्ड जला दिया गया। (७) दारानगर मेला में जुलूस निकला और विभिन्न स्थानो के तार काटे गए।

(१) फीनाग्राम में ८० गोरखे सैनिको ने लोगो को पीटा और उनके घरों को तबाह किया। (२) गोहावर मे पुलिस ने लूटमार की और स्त्रियों के आभूषण उतार लिये गए। (३) गोपालपुर गांव लूटा गया। (४) ढेलीग्राम के साथ खेत की फसल भी लूट ली गई। एक आदमी को पीटते-पीटते बेहोश कर दिया गया। (५) अंथाई अहीर में एक घर लूटा गया। (६) अखेडा और मनकुआ गांवों मे पुलिस ने लोगों को लूटा। (७) श्यामर में पुलिस ने बुरी तरह लूट मचाई और लगभग ८० मवेशी ले गई, जिन्हें ७०० रुपए मे नीलाम कर दिया गया।

इस जिले में २१ नजरबन्द हुए, ६२ गिरफ्तार किये गए और १०७ दण्डित किये गए। ६ व्यक्ति गोली से मरे और १० घायल हुए। ३०,८०० रु० सामूहिक जुर्माना किया गया।

गढ़वाल

अन्य स्थानों की भांति यहां भी छात्रों का आन्दोलन में प्रमुख हाथ रहा। उनका एक शानदार जुलूस निकला। उनके साथ कुछ नागरिक भी सम्मिलित थे। जुलूस में सरकारी नौकरों के लड़के भी शामिल थे। जुलूस का

नेतृत्व एक रायबहादुर महोदय के पुत्र कर रहे थे। डिप्टी कमिश्नर ने जुलूस पर गोली चलाने की आज्ञा दे दी थी, किंतु उसे वापस लेना पड़ा, कारण, लोगों ने कहा कि वे सब सरकारी कर्मचारी, जिनके लडके जुलूस में सम्मिलित हैं, सरकार के खिलाफ हो जायंगे। अन्त में नवयुवकों ने अदालत पर झंडा फहरा दिया। स्थानीय प्रमुख कार्यकर्त्ता बन्दी बन चुके थे। किंतु मंडलो के कार्यकर्त्ताओं की गिरफ्तारी में पुलिस को कठिनाई पेश आई। अतः बाद मे जगह-जगह उनकी गिरफ्तारी के लिए फौज की सहायता की मांग की गई।

आन्दोलन-काल मे जनता की स्थान-स्थान पर अदालतें खोली गईं। आजादी के सग्राम के रंगरूट तैयार करने के लिए शिक्षण-शिविर कायम हुए। पुरानी सरकार का कारोबार बिलकुल बन्द कर दिया गया। देहातो के प्राइमरी स्कूल बन्द हो गए थे, विद्यार्थी नई सरकार के कामो में हाथ बटाने लगे थे। उन्होंने बाल-सेना का सगठन किया। स्वयंसेवक एक स्थान से दूसरे स्थानो में जाकर जनता को देश की घटनाओं से परिचित कराते थे। झूठी सरकारी अफवाहो को दबाते और पुलिस की भावी कार्रवाइयो से जनता को आगाह करते थे। जिले मे एक-आध जगह गोली भी चलाई गई। चार आदमी मरे और ७ घायल हुए।

इस जिले में पुलिस जनता को दबाने मे प्राय: असफल रही और उसे जगह-जगह फौजियो से सहायता लेनी पडी। किंतु हिंदुस्तानी फौज भी अपने भाइयों पर अमानुषिक दमन करने के लिए बड़ी मुश्किल से तैयार हो सकी। अतः हिंदुस्तानी फौज की हर एक टुकड़ी मे कुछ गोरे आफिसर रखे गए और उन्हें दमन करने के लिए बाध्य किया गया। फौजी छिपे हुए कांग्रेस के कर्मचारियों के घर जाते थे और उनके घर वालों के साथ अमानुषिक अत्याचार करते थे। घर वालों के साथ मार-पीट की जाती थी। उन्हें घर से बाहर निकाल दिया जाता था। बाद में उनका माल लूट लिया जाता था। फौजियों ने कांग्रेस कार्यकर्त्ताओं के अलावा सर्वसाधारण नागरिकों को भी अपने ऐसे ही अत्याचारों का शिकार बनाया। ५,६५९ रु० सामूहिक जुर्माना किया गया।

अल्मोड़ा

९ अगस्त '४२ को, पं० गोविन्दवल्लभ पत और अल्मोड़ा जिले के नेता पं० हरगाविन्द पत एम० एल० ए० व सभापति जिला काग्रेस कमेटी, गिरफ्तार कर लिये गए। दूसरे नेता प० मदनमोहन उपाध्याय की गिरफ्तारी का वारण्ट जारी हुआ। पुलिस ने उन्हे पकड़ने के लिए सारी ताकत लगा दी, किन्तु जनता के विशेष संगठन के कारण वह उन्हें न पकड़ सकी। बाद में उन्होंने स्वयं अपने

को पुलिस को सौंप दिया। किन्तु लोग झुण्ड-के-झुण्ड उन्हे छुडानें को निकल पड़े। पुलिस डर गई और उसनें उपाध्याय जी को मुक्त कर दिया। सरकार ने बाद में उन्हें जिन्दा या मरा गिरफ्तार कर लाने वाले को दो हजार रुपया इनाम देनें की घोषणा की। एक स्पेशल अंग्रेज आफिसर ५० खुफिया पुलिस वालों के साथ लखनऊ से भेजा गया, किन्तु वह भी नही पकड़ सका। इसी तरह यहां के अन्य कई प्रमुख नेताओ को पुलिस नही पकड़ सकी।

सरकारी कर्मचारियों के लिए आन्दोलन को काबू मे करना एक टेढ़ी खीर थी। देहाती जनता इतनी संगठित थी कि सरकारी कर्मचारियों को किसी बात में सहयोग नही मिलता था। यहां तक कि उनको कही-कही खाना मिलना भी मुश्किल हो गया। पूरनचन्द जोशी नामक पुलिस के एक सिपाही को एक साल की कड़ी सज़ा दी गई, क्योकि उसने अफसरों से कह दिया था कि मैं देहातों की ड्यूटी तभी बजा सकता हूं जब कि सरकार मेरे खानें का वहां प्रबन्ध करे।

सरकार ने सैकडों की तादाद मे गोरी फौजें गांवो में भेजी। उन्हें पूरी सतर्कता से काम लेना पड़ता था। दो गोरे फौजी बन्दूक लेकर आगे चलते थे और कुछ दूर तक जाकर पिछली फौज को रास्ता खतरनाक न होने की झंडी देते, तब फौज आगे बढ़ती थी। नवयुवकों को इकट्ठा करने के लिए यहा एक रणसिंगा बाजा काम में लाया जाता था।

अधिकारियो को यह खबर मिली कि उपाध्यायजी कुछ कार्यकर्ताओ के साथ सल्ट इलाके में है। यह सुनकर जॉन साहब एक सौ हथियारबन्द पुलिस के साथ ५ सितम्बर को खुमाड़ू गांव में आ धमके। उनको देखते ही नवयुवकों का रणसिंगा बजा। 'अंग्रेजो हिन्दुस्तान छोड़ो' का नारा बुलन्द हुआ। इस पर दनादन गोलियां चलने लगी। कारतूस खतम होने पर जॉन साहब ने अपनी रिवाल्वर से गोलियां चलाना शुरू कर दिया, जिससे ४ व्यक्ति शहीद हुए और ११ सख्त घायल। जनता उस समय बहुत उत्तेजित थी, किन्तु अपने नेताओं के आदेशानुसार ऐसी परिस्थिति में भी वह अहिंसक ही रही। एक वृद्ध ने गुस्से में लाठी अवश्य चलाई, किन्तु एक कांग्रेसी ने लाठी अपने हाथ में रोक ली, जिससे उसका हाथ टूट गया।

देघाट में हजारों की तादाद में लोगों की भीड़ जमा थी। नेता लोग भाषण दे रहे थे। पुलिसवाले बाजार के एक मकान में छिप कर बैठ गए और भाषण सुनने के बाद ज्योंही जनता वहां से जाने लगी तो पुलिसवालो ने मकान की खिड़की से गोली चलाना शुरू कर दिया।

अल्मोड़ा शहर मे विद्यार्थियो के जुलूस पर लाठी प्रहार किया गया। विद्यार्थी हवालात में रखे गए और तेल के भिगोये हुए बेंतों से पीटे गये। एस० डी० ओ० पुलिस जत्थे के साथ देहाती इलाके में गये और देहातियो पर तरह-तरह के जुल्म किये । ६०० कांग्रेस-कार्यकर्ताओं को पकड़ लिया गया।

ता० २ सितम्बर को डिप्टी कमिश्नर ने गोरी पल्टन को लेकर गांधी आश्रम घेर लिया। ९८ व्यक्तियों को गिरफ्तार किया और ३६ कमरो के सील-मोहर लगादी।

सालम इलाके मे गोरी फौज ने गोली चलाई जिससे दो आदमी मर गए। इसके बाद जाट फौज ने अनेक अत्याचार किये। घरों में आग लगादी और फसल बरबाद कर दी।

इस जिले मे ६५० व्यक्ति गिरफ्तार हुए। ६५ व्यक्तियो को १३ से २८ साल तक की सजाये दी गईं। लगभग ८० व्यक्ति नजरबन्द किये गए। ५३, ८५० रु० सामूहिक जुर्माना किया गया।

एक अंग्रेज महिला ने अपना नाम सरला बहन रखा। उन्होने सोलह महीने तक पीड़ितों की अकथनीय सेवा की। इस पर उन देवी को ३ मास की सजा हुई थी।

इन प्रधान-विविध जिलो के अतिरिक्त बाकी स्थानो पर नेताओ की गिरफ्तारी के विरोध में हड़ताले की गईं, जुलूस निकाले गए तथा विशाल सभाए करके 'भारत छोडो' प्रस्ताव को दुहराया गया। इसके अलावा निम्न स्थानो का और विशेष वर्णन नही मिला है। हाँ, सामूहिक जुर्मानो एवं गिरफ्तारियों की रिपोर्ट प्राप्त हुई है जिसे पाठको की जानकारी के लिए हम नीचे देते है—

स्थान	गिरफ्तार	सजाएँ	नजरबन्द	सामूहिक जुर्माना
देहरादून	—	—	—	१,००० रुपये
सहारनपुर	—	—	—	५४,६७३ ,,
मुजफ्फर नगर	४६	४४	६	६,००० ,,
मेरठ	२४८	२४८	३५९	१,६७,४३२
बुलन्दशहर	१३७	१७०	६७	३२,२५८–२–३
मैनपुरी	२३२	३७	१९	२१,२०० रु०
एटा	—	—	—	३,५६०–५–४
बरेली	—	—	१८८	७,७१२ रु०

स्थान	गिरफ्तार	सजाएँ	नजरबन्द	सामूहिक जुर्माना
बदायूं	८	४	११	४,५०० ,,
शाहजहाँपुर	—	—	—	१,२२९ ,,
पीलीभीत	१२७	८३	७	—
फर्रुखाबाद	—	—	—	११,५७५ ,,
इटावा	४४	१४	१९	८६,३३६–४–०
फतेहपुर	४३	२६	१२	१८,७५० रु०
बांदा	—	—	—	२,००० ,,
हमीरपुर	१३	१३	२७	१,८५० ,,
झांसी	४१	३६	१०	३,८५० ,,
जालौन	—	—	—	२,६०५ ,,
मिर्जापुर	—	—	—गोली चली	१०,१९० ,,
बस्ती	१४६	८६	१९३ गोली चली	४,४५० ,,
नैनीताल	१९	८	२८	२२,७११–२–१
उन्नाव	२८	२२	१७९	५,७५० रु०
रायबरेली	—	—	—	३,३०० रु०
सीतापुर	११७	७९	४७ गोली चली	—
हरदोई	१०७	६४	११२ गोली चली	६,६७२ रु०
खेड़ी	६७	४१	१७	३८,३२३ ,,
फैजाबाद	४३	१४	४०	२६,६५० ,,
बहराइच	४२	८७	६	—
सुल्तानपुर	—	—	—	७०० रु०
प्रतापगढ़	—	—	—	१२,४५० रु०
बाराबंकी	८३	५३	२५	७,५०० रु०

: ८ :

बंगाल प्रान्त में खुला विद्रोह

जन-प्रयास और दमन के आंकड़े

आन्दोलन के पहले नजरबन्दो की संख्या	२,०००
गिरफ्तारिया	७,८७८
सजाएं	३५८
हड़तालें	११४
सभाए	१६८
जुलूस	२२२
लाठी-प्रहार	६८ बार
गोली चली	४४ बार और १६ जगह
अश्रु गैस का प्रयोग	११ बार
बरबाद तथा क्षतिग्रस्त डाकखाने	११८ से अधिक
बरबाद तथा क्षतिग्रस्त यूनियन बोर्ड	५७ से अधिक
बरबाद तथा क्षति ग्रस्त कर्ज समझौता बोर्ड	२१
बरबाद पचायत यूनियने	२०
बरबाद तथा क्षतिग्रस्त डाक बगले	१४
सरकारी इमारतों पर झंडे फहराये गए	२०
थानों की संख्या जिन पर हमले किये गए और जिन्हे बरबाद और क्षतिग्रस्त किया गया	११
नशीली वस्तुओं की दूकानें बरबाद तथा क्षतिग्रस्त की गई	२६
गैर् कांग्रेसी संस्थाओं की गुप्त सभाएं	२१
सरकारी नौकरों के इस्तीफे	११७
सरकारी नौकर मुअत्तल किये गए	२६९९
अदालतों तथा स्टेशनों आदि पर पिकेटिंग	३२ जगह
अदालतों पर् हमले	६

मजदूरो की हड़तालें	४०
ट्रामों को जलाया तथा बरबाद किया गया	१८
टेलीफोन के तार काटे गए	६९ हलको के
रेल गाडियो को गिराया तथा पटड़ियो को उखाड़ा गया	१६ जगहों पर
पुल तथा पुलिया बरबाद किये गए	३०
रेलवे और स्टीमर स्टेशनों पर हमले	१४
सामूहिक जुर्माना	८५,००० रुपया
छीने गए घरो की संख्या	८
छीने गए सरकारी स्थान	३३
दूसरी सरकारी जगहें जहाँ हमले किये गए और क्षति पहुचाई गई	३०
खास महल आफिस बरबाद किये गए	६
सब रजिस्ट्री आफिस बरबाद किये गए	४
जमीदारी कचहरिया बरबाद की गईं	१८
सरकारी हथियारो पर कब्जा	२ तलवारें १३ बन्दूकें
कांग्रेस दफ्तर जिनमें ताले लगा दिये गए	१६

बंगाल का विद्रोह

बगाल प्रांत गगा के निचले भाग तथा गंगा और ब्रह्मपुत्र नदियों के डेल्टे म बसा हुआ है। उत्तर में इसके हिमालय है और दक्षिण में बंगाल की खाडी। जलवायु समशीतोष्ण है। यहां पर नील, जूट, अफीम, चावल, कपास, चाय, आदि वस्तुए पैदा होती है। कोयले तथा तांबे की भी यहां पर खानें है। औद्योगिक दृष्टि से यह प्रांत काफी उन्नतिशील है। शिक्षा प्रचार में भी बगाल बढा-चढा है। यहां कलकत्ता विश्वविद्यालय के अलावा सैकड़ों स्कूल और कालेज है। बंगाल का ब्रह्मपुत्र वाला मैदान काफी उपजाऊ है और आबपाशी के लिए सैकड़ों नहरें यहा सड़कों की भांति बनी हुई है। बगाल के दक्षिणी-पश्चिमी भाग में काफी मात्रा में जगल है।

इस प्रान्त में लगभग ५३ प्रतिशत मुसलमान और ४३ प्रतिशत हिन्दू रहते हैं। इनकी भाषा बगला है और यह देखने, बोलने तथा रहन-सहन में सब एक ही जाति के मालूम देते है। बगाल में २८ जिले हैं।

बगाल कृषि प्रधान प्रान्त है। यहां की जनता गावो में घनी बसी हुई। यहां के लोग स्वभावतः भावुक और कुशाग्र बुद्धि होते है। किसी भी अप्रिय

घटना का विरोध वे तीव्रता पूर्वक करते है। उनमें दल बनाने व टुकड़ियो मे कार्य करने की प्रवृत्ति है। इन सब बातो का वहां के आन्दोलन पर गहरा असर पड़ा है।

बंगाल को राष्ट्रीयता का पिता तथा आतक-कारीषड्यत्रो का घर कहते है। सन् १९३० से पहले बंगाल प्रान्त हर राष्ट्रीय आन्दोलन में सबसे आगे रहा है। लेकिन इसके पश्चात् दुर्भाग्य से बगाल की राजनीति ने पलटा खाया। कुछ तो नेताओ के आपसी सघर्षो के कारण और कुछ बढ़ते हुए मुस्लिम लीग के प्रभाव के कारण बगाल स्वाधीनता के लिए होने वाले सामूहिक आन्दोलनो मे पिछड़ता गया। सन् १९३२,४० व ४२ के आन्दोलनो में बगाल अपने पुराने नाम को कायम न रख सका। सन् १९४२ के आन्दोलन की गति-विधि इतनी व्यापक व शक्ति-शाली न रहा, उसके हमारे विचार से निम्न-लिखित कारण है :—

१. बगाल में काग्रेसी नेतृत्व अधिकाशत. उच्च-श्रेणी के जमीदारो और खाते-पीते मध्यम श्रेणी के लोगो के हाथ में है। इन लोगों का जनता के साथ इतना गहरा सम्बन्ध नही है कि जनता उन्हे अपनी आशाओ व आकाक्षाओ का केन्द्र समझ सके।

२. बंगाल के लोगों का किसी एक नेतृत्व में पूर्णतः विश्वास नही है। वह स्वभावत. षड्यन्त्रो तथा आतककारी प्रयत्नों की सराहना करते है। उनका गान्धीजी की विचार-धारा तथा सामूहिक विद्रोह की कला में दृढ विश्वास नही है। इस कारण बगाल मे कोई भी सुसंगठन व सुदृढ नेतृत्व स्थापित नही हो पाया है।

३. बगाल में पिछले कुछ सालो से मुस्लिम लीग का प्रभाव बहुत बढ़ गया है, जिसके कारण प्रान्त की अधिकाश मुस्लिम जनता काग्रेस-आन्दोलन को अपनी आकाक्षाओ के विरुद्ध समझने लगी है।

४. प्रान्त की आबादी इस प्रकार बसी हुई है कि पश्चिम के दो डिवीजनो में हिन्दुओ की आबादी अधिक है और पूर्व की दो कमिश्नरियो में मुसलमानो की। आबादा के इस विभाजन के कारण आन्दोलन का जोर मुख्यतः दो डिवीजनो तक ही रहा जहा पर कि हिन्दुओं की आबादी अधिक है।

५. बंगाल मे आन्दोलन मिदनापुर में अधिक हुआ, क्योकि यह काफी जागृत जिला है और यहा के लोगो को युद्ध के कारण अनेक कष्ट हो रहे थे। ब्रिटिश साम्राज्यशाही ने कन्टाई से लेकर राची तक अपनी पहली रक्षा पंक्तियां बनाई थी और लोगो को विश्वास था कि जापानी लोग कन्टाई के बन्दर पर

उतरेंगे। सुन्दरबन ने भौगोलिक दृष्टि से आन्दोलन को काफी मदद दी। वीरभूमि, जलपाईगुरी और अतराई के इलाको में आन्दोलन का जोर रहा। इन इलाकों में गान्धीजी के रचनात्मक कार्यक्रम के प्रोग्राम भी हो रहे थे। पूर्वी इलाके मे आन्दोलन का रूप नोआखली, और त्रिपुरा जिलों मे अधिक रहा। इन जिलो में जमैयतुल-उलेमा का भी काफी प्रभाव है। पश्चिमी बगाल के उत्तरी भाग मे मालदा ताल्लुके मे आन्दोलन की गतिविधि अधिक व्यापक रही। यहां के किसानो मे कांग्रेस नेताओ का काफी प्रभाव था।

मिदनापुर

मिदनापुर ने बगाल प्रान्त के नाम को सारे भारत मे उज्ज्वल बना दिया। यहां के लोगों ने दोनों प्रकार की विपत्तियो का साहस और बहादुरा से मकाबला किया और अपने सघर्ष को सफलतापूर्वक जारी रखा। यह कहना अत्युक्तिपूर्ण न होगा कि मिदनापुर के लोगो ने अपना आजाद प्रजातंत्र कायम किया। उन्होंने एक ओर नौकरशाही ढाचे को सगठित रूप से अस्त-व्यस्त किया और दूसरी ओर ग्रामीण राज्य की स्थापना की। उन्होने आक्रमणात्मक तथा रक्षात्मक दोनो ही प्रकार की लड़ाइया लडी। मिदनापुर में आन्दोलन का उग्र व व्यापक रूप तामलुक और कन्टाई सबडिवीजन मे रहा। यही इलाके है जहा युद्ध-काल मे लोगो पर अनेक प्रकार की कठिनाइयां पडी। राची-कन्टाई एयर लाइन बनने के कारण इस इलाके म हर पाच मील पर हवाई जहाजों के अड्डे बनाये गए। उनके लिए जनता की जमीने छीनी गईं और किसानों को बेदखल किया गया। फौज के लिए उपयोग की सारी सामग्रिया सबसे पहले ले ली जाती थी। आमदोरफ्त के समस्त साधन जैसे मोटर, नौकाए इत्यादि सरकारी कार्य के लिए ले लिये गए। इन इलाकों में जनता पर तरह-तरह के प्रतिबन्ध लगा दिये गए। वह इधर-उधर आसानी से जा नही सकती थी। एक ओर दुर्भिक्ष की आशंका आये दिन बढती जा रही थी। दूसरी ओर किसीभी क्षण जापानियों केकन्टाई पर उतरने की आशका थी। जनता दो पाटों के बीच पिस रही थी। फिर भी नौकरशाही ने कठोर नीति अपना रखी थी। जनता को जबरदस्ती युद्ध-बाँड बेचे जाते थे। अतः जनता मे भारी असन्तोष फैला हुआ था। गाधीजी के 'अग्रेजो भारत छोड़ो' नारे ने उसमे एक नया जीवन फूंक दिया।

९ अगस्त से पहले मिदनापुर जिले के नेता अपना संगठित सरकार चलाने की कल्पना कर रहे थे और उसके लिए काफी स्वयसेवको की भरती भी कर ली थी। उन्हे न जापानियो से आशा थी और न अंग्रेजो से। इसी

कारण वह स्वय अपने पैरो पर खड़े होकर दोनो का मुकाबला करने की योजना सोच रहे थे। उनका विश्वास था कि यदि ऐसा कुछ न किया गया तो जापानी-आक्रमण के समय सारे इलाके में अव्यवस्था फैल जायगी।

बम्बई में नेताओ की गिरफ्तारी की मिदनापुर जिले मे काफी व्यापक व उग्र प्रतिक्रिया हुई। हड़ताल, जुलूस, विरोध-प्रदर्शन जिले भर में शुरू हो गये। अपने को आजाद समझने तथा अपनी सरकार के मातहत रहने की घोषणा की गई। सरकारी अदालतो और दफ्तरो के सामने प्रदर्शन होते थे और उनमें स्वतंत्रता की यह घोषणा की जाती थी। महिषादल थाने के सामने एक घोषणा की गई, जिसमे अग्रेजो के विरुद्ध लड़ाई का ऐलान किया गया। तामलुक सब डिवीजन के डिप्टी कमिश्नर पुलिस के साथ हथियारो से सुसज्जित होकर घटनास्थल पर पहुचे। उन्होंने गोलियां चलाने का हुक्म दिया। पर सिपाहियो ने गोलिया चलाने से साफ इन्कार कर दिया और डिप्टी कमिश्नर जनता को थाना सौप कर वापस लौट गये। यह इस प्रकार की पहली घटना थी। यहा के लोगो ने अपने अखबार व छापेखाने स्थापित किये। इतना ही नही, डाक को इधर-उधर भेजने तथा बंटवाने का प्रबन्ध भी जनता ने स्वयं ही किया।

इस जिले के आन्दोलन की दूसरी मुख्य बात यह है कि यद्यपि गावो और कस्बो मे पुलिस ने बडी बेदर्दी के साथ गोलियां चलाईं तथा गांवों में आग लगाई और सम्पत्ति को लूटा, स्त्रियो के सतीत्व को नष्ट किया, पर फिर भी एक भी मिसाल इस बात की नही मिलती कि जनता ने किसी सरकारी नौकर को कत्ल किया हो। हा, उन्हे गिरफ्तार अवश्य किया और उनसे नई सरकार के प्रति वफादार रहने का वादा कराया। जिन लोगो को जेल मे रखा गया, उनके साथ बहुत अच्छा व्यवहार किया गया।

तामलुक और कंटाई के तूफानी केन्द्र

नेताओं की गिरफ्तारी के पश्चात् मिदनापुर जिले के इन दो सब डिवीजनो मे ऐसा कोई भी गाव न होगा जहा पर जुलूस न निकाले गए हो और जलसे न हुए हों। सारे स्कूल व कालेज बन्द हो गए। अदालतों और डाकखानों पर पिकेटिंग हुईं। टोपो की होलियां जलाई गईं। आन्दोलन का यह पहला दौर था। दूसरे दौर में जनता ने सरकारी राजसत्ता के चिह्नो पर कब्जा करने की कोशिश की। जिले भर में डाकखानो की सामग्री जला दी गई और २० से ३० यूनियन बोर्डों की इमारतो को भी क्षति पहुचाई गई। कर्जा बोर्डों

पचायतें कायम की। ६६ दस्तावेजो की रजिस्ट्री हुई, २९०७ मुकदमे दायर हुए और १६८१ फैसले हुए। २५१ स्थानो की तलाशिया ली गईं और २७८ व्यक्ति गिरफ्तार किये गए और बाद में छोड़ दिये गए। ५४३ व्यक्तियों पर ३३,९३७ रु० १५ आना जुर्माना किया गया। १६३ अन्य सजाए दी गईं।

३१५४ सार्वजनिक और ५०१४ बन्द स्थानो में सभाए हुईं।

२९,२३३ रु० ७ आ० ३ पा० नकद और ४९,६१२ रु० वस्तुओ के रूप में इस प्रकार कुल ७८,८४५ रु० ७ आ० ३ पा० सहायता-कार्यो पर खर्च किया गया।

१. नई सरकार ने दुश्मन के वे कैम्प जिनका चलाना मुश्किल था और जिनको लम्बे काल तक कब्जे मे नही रक्खा जा सकता था, अस्त-व्यस्त कर दिये।

२. ब्रिटिश सरकार के नौकरो के साथ जिन्हे गिरफ्तार किया गया, अच्छा बर्ताव किया गया और उन्हे किराया देकर अपने घर वापस जाने दिया गया।

३. छीने हुए हथियारो का प्रयोग नही किया गया, बल्कि उनको जमा रक्खा गया।

४. २८-९-४२ की रात मे दुश्मन के ९० प्रतिशत आमदोरफ्त के रास्तो—पुल आदि को और तार तथा बेतार के सारे साधनो को अस्त-व्यस्त कर दिया गया।

५. १७-१०-४२ से सब डिवीजन मे जनता की सरकार की स्थापना हुई। यहा के लोगो को विश्वास था कि इस तरह ारत के अन्य भागो में भी छोटी छोटी अन्य सरकारे कायम होगी और वे सब एक राष्ट्रीय फेडरेशन मे सम्मिलित हो कर राष्ट्रीय सरकार की स्थापना करेगी। इस सरकार का विधान प्रजातंत्री था। केवल युद्ध-काल के कारण लोगो ने एक सर्वाधिकारी नियत कर दिया था। सब डिवीजन कटाई ने अपना पहला सर्वाधिकारी मुकर्रर किया। उसे अपना उत्तराधिकारी नियुक्त करने का अधिकार था। इस प्रकार इस सब डिवीजन ने चार सर्वाधिकारियो की नामजदगी की। चौथे और अन्तिम सर्वाधिकारी ने बाद महात्मा गाधी के हुक्म से आत्मसमर्पण कर दिया। इस सर्वाधिकारी की मदद करने के लिए एक मन्त्रि-मडल था और इसके सदस्यो के पास अलग-अलग महकमे थे—जैसे शिक्षा, न्याय, अर्थ व सहायता आदि। इसी प्रकार कौमी हुकूमतो के मुखतलिफ थाने स्थापित हो गए। यूनियन पचायतें भी बन गईं।

६ इस सब डवीजन और हाईकोर्ट मे जितने पुराने मुकदमे पडे हुए थे, उनको प्रजातन्त्र की अदालत ने अपने हाथो में लिया।

७, इस अदालत ने कुछ लोगों को सजाएं भी दी और जो जुर्माना वसूल किया, उसे सहायता के कामो मे लगा दिया।

८. इस सब डिवीजन मे कितने ही जुलूस निकाले गए जिनमे साधारणतः दो हजार से १० हजार तक लोग शरीक हुए। इनमे सब जातियो के लोग सम्मिलित होते थे। २९ सितम्बर सन् १९४२ को ४० हजार का एक विशाल समूह इकट्ठा हुआ और उसने थाने पर आक्रमण करने की योजना की।

९. कभी इस इलाके के कुछ भागो में हडतालें की जाती थी तो दूसरे भागो मे कोई अन्य सामूहिक प्रयत्न किया जाता था। इस प्रकार आन्दोलन को निरन्तर जारी रक्खा गया। इस सब डिवीजन में जितने भी विद्यार्थी थे उन्होंने अपने इम्तहानो की कुछ भी परवाह न करते हुए आन्दोलन मे हिस्सा लिया।

१० जरूरतमन्द लोगो को कपडा, दवा, दूध तथा जरूरत की चीजे यथासम्भव सरकार की तरफ से बाटी गईं। सन् १९४२ के तूफान मे कितने ही लोगो की मृत्यु हुई। इस सरकार ने उन लाशो को जलवाया जो इधर-उधर बुरी तरह मे पडी हुई थी। लोगो के खोए हुए जानवरों को ढुढवाया तथा सडको पर गिरे हुए पेड़ों को उठवाया।

११. जब काग्रेस कार्यकर्त्ता जेलों से छूटे तो उन्होने अकाल के समय १॥ लाख के करीब रुपया लोगों के सहायतार्थ बाटा।

स्वतत्र सरकार की स्थापना का स्वाभाविक नतीजा यही होना था कि ब्रिटिश नौकरशाही अपनी पूरी ताकत से दमन करती। अत. मिदनापुर जिले के अन्दर जिस प्रकार अत्याचार हुए उनके सामने कुछ जर्मनो ने अपने विजित देशो मे जो किया, वह फीका दीख पड़ता है। अश्रु गैस छोड़ी गई, उसके पश्चात् लाठियो का दौर चला और अत मे गोलियो की बौछारे हुईं। जमीन और आसमान दोनो पर से निहत्थी जनता पर मशीनगनो से हमले हुए। तलाशी के समय आदमियो और औरतो दोनो को निर्दयता के साथ पीटा गया। बच्चे भी अछूते न बच पाए। घरो को जलाया गया और स्त्रियो का सतीत्व नष्ट किया गया। इन सब अत्याचारो का एक ही अभिप्राय था कि जनता के हृदय मे आतक बैठा दिया जाय और उन्हे अपनी स्वतन्त्र सरकार बनाने का मजा चखाया जाय। पर मिदनापुर के बहादुर लोगो ने सब कुछ सहन किया और सघर्ष को जारी रखा।

विद्युत-वाहिनी सेना

विद्युत वाहिनी सेना का निर्माण सर्वप्रथम महिषादल में हुआ। पीछे वह तामलुक तथा नन्दीग्राम मे भी संगठित की गई। प्रत्येक विद्युतवाहिनी में एक जनरल कमांडिंग आफिसर तथा एक कमांडेंट रहते थे। यह निम्नलिखित भागो में विभक्त थी:—१ युद्ध शाखा। २ समाचार शाखा। ३. सहायता शाखा। सहायता विभाग में पूर्ण शिक्षित डाक्टर, कंपाउडर, सवारी ढोने तथा सेवा-सुश्रूषा करने वाले लोग थे। सरकार की ओर से प्रकाशित एक पुस्तिका मे इस सम्बन्ध में कहा गया है:—

"बंगाल सूबे के मिदनापुर जिले मे विद्रोहियो के कार्यकलाप से प्रकट होता था कि उनके कार्य पूर्वनिश्चित योजना के अनुसार चल रहे थे। उनके पीछे गम्भीर चिन्तन तथा दीर्घदृष्टि नजर आती थी। चेतावनी भेजने के उनके तरीके सर्वथा मौलिक थे। किसी बात को फैलाने तथा किसी गुप्त योजना को कार्यान्वित करने के उनके ढग स्पष्टत पूर्व निश्चित सकेतो के अनुसार थे।"

राष्ट्रीय सरकार विद्युत वाहिनी को राष्ट्रीय सेना समझती थी। उनकी निम्नलिखित शाखाए पीछे खुली :—

१. गुरिल्ला विभाग, २. बहनो की सेवा तथा ३. शान्ति कानून विभाग। इस अन्तिम विभाग ने मशहूर डाकुओ तथा चोरों को गिरफ्तार किया, जो उत्पात मचाने के लिए स्वतन्त्र छोड दिये गए थे। इन डकैतो और चोरो के मामले राष्ट्रीय सरकार के समक्ष उपस्थित किये गए और कानून के अनुसार उनको दड मिला।

सब डिवीजन के प्रसिद्ध नेता श्री सतीशचन्द्र समस्त ताम्रलिप्त राष्ट्रीय सरकार के प्रथम सर्वाधिकारी थे। इनके नेतृत्व मे राष्ट्रीय सरकार काफी लोकप्रिय हो गई। दूसरे सर्वाधिकारी थे श्री अजेयकुमार मुखर्जी, श्री सतीशचन्द्र साहू और श्री वरदाकात कुटी।

मिदनापुर के जिले के लोगो को प्रकृति तथा सरकार—दोनो का प्रकोप झेलना पडा। एक ओर प्रकृति की ओर से भयकर तूफान आया जिसने चारो तरफ बरबादी और तबाही मचा दी और दूसरी ओर सरकार ने लोगो की मुसीबत को बढाया। बगाल गवर्नर ने बगाल असेम्बली मे 'डिनायल पालिसी' की घोषणा की। इस के अनुसार हजारो नावें और साइकिले जो लोगो के पास थी, सरकार ने छीन ली। भारत रक्षा नियमों का मनमाना प्रयोग किया गया। जिसे चाहा उसे जेल मे ठूंस दिया, जहां चाहा, वहां युद्ध प्रयास म बाधा डालने के नाम पर सामूहिक जुर्माने किए व गोलिया चलाई

ब्रिटिश सरकार के काले कृत्य

तामलुक सब डिवीजन में २२ स्थानो पर २५ बार गोलियाँ चली, जिससे ४४ आदमी मारे गए, १९९ सख्त घायल हुए और १४२ को साधारण चोटें आईं।

६३ स्त्रियो पर बलात्कार किया गया, ३१ स्त्रियो पर बलात्कार करने की चेष्टाएं की गईं, जिन्हे गाव वालो ने बीच मे पड़कर विफल किया तथा १५० स्त्रियो को अन्य तरीको से अपमानित किया गया।

२२६ आदमियों को चोटें आईं, १८५६ व्यक्ति गिरफ्तार किये गए, ५०७६ गैर कानूनी तौर पर नजरबन्द किये गए, ९ व्यक्ति भारत रक्षा नियमो के मातहत नजर बन्द किये गये।

४०१ स्पेशल पुलिस के सिपाही नियुक्त किये गए।

१२४ घरो को पेट्रोल और मिट्टी का तेल छिड़क कर जला दिया गया, जिससे १,३६,५०० रुपये की सम्पत्ति नष्ट हुई। ४९ घर तोड़-फोड़ डाले गए और १०४४ घर लूट लिये गए, जिसके फलस्वरूप २,१०,८७१० रुपए की हानि हुई। २७ घरो पर कब्जा कर लिया गया। १३,७३० तलाशिया ली गईं। ५९ परिवारों का सामान कुर्क किया गया, जिसकी कीमत २५,३६५ रुपया होती है।

४१ गाँवों पर १,६०,००० रुपया सामूहिक जुर्माना किया गया।

१९ संस्थाओ को गैर कानूनी करार दिया गया।

भयानक तूफान

मालूम पड़ता है प्रकृति ने सरकारी दमन को मिदनापुर के लोगो के लिए काफी नहीं समझा और उसकी भयकरता को बढ़ाने के लिए अपना रौद्र-रूप दिखाया। १६ अक्तूबर को बगाल की खाड़ी से एक तूफान उठा जो ४६० मील फी मिनट की गति से सारे जिले पर छागया। भयानक बारिश हुई और समुद्र मे प्रलयकारी ज्वार-भाटा आया। आमतौर पर पूर्वी बगाल और विशेषतः मिदनापुर के लोगो पर मुसीबत का पहाड़ टूट पड़ा। ब्रिटिश प्लेटून के कन्टाई स्थित कमान्डैंट का कहना है कि कन्टाई में जो तबाही हुई वह तबतक की तबाही से १० गुना बढ कर थी। पेड-के-पेड़ उड़ते हुए दिखाई पड़ रहे थे। आदमियो और जानवरो की मुसीबत का कोई ठिकाना न था। ८० प्रतिशत घर धराशयी हो गए और इस इलाके के ७५ प्रतिशत जानवर नष्ट हो गए। इस विपत्ति की कई दिनो तक अखबारो में कोई सूचना ही नही दी गई। लगभग ३ नवम्बर को दुनिया ने इस का कुछ हाल जान पाया। सरकार ने

पीडितो को राहत देने की जो नीति अपनाई, उसने जले पर नमक छिड़कने का काम किया। ऐसा प्रतीत होता था कि सरकार इस विपत्ति के समय जनता से आन्दोलन का बदला लेना चाहती है। मिदनापुर के कलेक्टर और सब डिवीजनल अफसर का खुले शब्दो में कहना था कि लोगो को किसी प्रकार की सहायता न देनी चाहिए और न सरकारी कमेटी ही बनानी चाहिए। जिला मजिस्ट्रेट ने बगाल के चीफ सेक्रेटरी की तरफ से सूचना दी कि मिदनापुर जिले में कोई भी आदमी, जो पीड़ितो को सहायता देना चाहे, न आने दिया जाय। इतना ही नही, यदि नाविकोंने डूबते हुए लोगो की सहायता करने का प्रयत्न किया तो उन्हें बुरी तरह से धमकाया गया। सरकारी नौकरो को अपनी मनमानी करने का काफी मौका मिला। जो गाए दूध देती थी उनको फौज के लिए जबरन छीन लिया गया। जो चावल जनता के पास मौजूद था, वह ले लिया गया। एक ओर आदमी मर रहे थे, दूसरी ओर युद्ध-प्रयास के नाम पर उनकी सामग्री छीनी जा रही थी। यह सब जुल्म जनता पर केवल इसलिए किया गया कि उसने अपनी आजादी की आकाक्षा का प्रदर्शन किया था।

कन्टाई में गोलीकाण्ड

कन्टाई के इलाके मे कितने ही गोलीकाण्ड हुए। लाठीचार्ज तो रोजाना की घटनाएं थी। लगभग १३ जगह गोलीकाण्ड हुए जिनमें ७५ आदमी मरे और २१० से अधिक जख्मी हुए। कुछ गोलीकांण्डों का विवरण यहां दिया जाता है—

(१) २२-९-४२ को सबडिवीजनल अफसर सैनिक पुलिस के साथ महीशगोट पहुचे और आसपास के कितने ही घरों को घेर लिया और वहा के लोगो को सड़क पर कार्य करने के लिए विवश किया। कुछ लोगो ने जब यह बेगार करने से इनकार किया तो ओवरसियर ने उनसे वादा किया कि उन्हें मजदूरी के पैसे दिये जायगे। इस पर लोग सड़कों पर काम करने लगे। उसके कुछ देर बाद जबरदस्त बारिश हुई और पुलिस के सिपाहियों ने घरो में जबरदस्ती घुसकर शरण पाने के प्रयत्न किये। सब डिवीजनल अफसर को जब यह पता चला कि गाववाले मजदूरी के पैसे मागते है तो उसने लोगों को पीटना शुरू कर दिया। लोगों ने उत्तेजित होकर कुछ ईंट-पत्थर फेंके होंगे। इस पर पुलिस ने ३० राउण्ड गोलियां चलाईं जिसके कारण २४ आदमी घायल हुए। पुलिस ३ जख्मी आदमियों को महीशगोट से कन्टाई तक पैरों के बल घसीटकर ले गई। इसमें से दो आदमी अस्पताल जाते ही मर गए।

(२) २७-९-४२ को पुलिसकप्तान और सब डिवीजनल अफसर ने

एक फौजी जत्थे के साथ बैलवाली कैम्प पर आक्रमण किया। कैम्प के सारे सामान को जला दिया। इसके बाद पुलिस ने यही तरीका अन्यत्र भी अख्तियार किया। पर जनता के समूह ने इसका मुकाबला किया। समूह पर गोलियां चलाई गईं, जिसके कारण ३ आदमी वहा पर मर गए और १४ आदमी बुरी तरह से घायल हुए। पुलिस जब लूट मचा रही थी तो जनता के एक दूसरे समूह ने उसका मुकाबला किया। उसपर गोलियाँ चलाई गईं और ११ आदमी मरे तथा ७ घायल हुए।

(३) २९-९-४२ को लगभग ५ हजार आदमियों के जुलूस ने भगवानपुर थाने पर आक्रमण कर दिया। थाने का केवल एक ही रास्ता था। पुलिस ने थाने से गोलियो की बौछारें प्रारम्भ कर दी। १६ आदमी घटनास्थल पर ही मर गए। २० बुरी तरह से घायल हुए। मिमलोवरी स्कूल का हेड पडित, जो एक घायल को पानी पिला रहा था, गोली से मार दिया गया।

(४) १-१०-४२ को दोपहर को जिला मजिस्ट्रेट और सब डिवीजनल अफसर सैनिक-पुलिस के एक जत्थे को साथ लेकर मरिसादा स्थान की ओर रवाना हुए। रास्ते में उन्हे जो कोई भी मिला उसे मजबूर किया कि वह उनके साथ टूटी हुई सड़क की मरम्मत करने के लिए चले। इस तरह जबरदस्ती मार-पीटकर कुछ लोगों को पुलिस लारियो में भरकर ले जाया गया। मरम्मत का यह कार्य करते हुए रात हो गई। जिला मजिस्ट्रेट ने रोशनी के लिए नई बनी हुई मरिसदा स्कूल की इमारत को जलवा दिया। रात को पुलिस के चले जाने के बाद लोगों ने मरम्मत किये हुए रास्ते को फिर तोड-फोड डाला। अगले दिन पुलिस के एक जत्थे ने जब रास्ते को पहले की तरह टूटा हुआ देखा तो उसके क्रोध का ठिकाना न रहा। उसने वहा के २५ मकानो मे उसी समय आग लगादी और निरपराध लोगो को भी बडी बेरहमी से पीटा। टूटे हुए रास्ते की फिर से मरम्मत करवाई गई। वहा से यह जत्था जब भदनतगढ पहुंचा तो उसने वहा पर इकट्ठी जनता पर गोलियां चलाई जिससे २ आदमियों की मृत्यु हुई। उनमें से एक तो वही घटनास्थल पर मर गया।

(५) पटासपुर पुलिस थाने में ३-१०-४२ को एस० डी० ओ०, एस० पी० और सरकिल आफिसर फौज और पुलिस के सैनिकों के एक जत्थे के साथ थाने पर पहुंचे। रास्ते में उन्हे आठ हजार आदमियों का एक विशाल समूह मिला। इस जत्थे ने समूह को तितर-बितर करने के लिए गोलिया चलाईं, जिसके परिणाम स्वरूप एक व्यक्ति की मृत्यु हो गई।

(६) ८-१०-४२ को एस० डी० ओ० पुलिस के एक जत्थे के साथ

तिपरापाड़ा पहुंचा और बाँध पर इकट्ठे हुए कुछ लोगों पर टॉमीगन से गोलियां चलाईं, जिससे एक व्यक्ति की मृत्यु हुई और ९ घायल हुए।

इस तरह की बेशुमार घटनाएं इस इलाके में जगह-जगह पर हुईं। कुछ मिसालें ही ऊपर दी गई है।

इस प्रकार बराबर गोलियां चलाने पर भी जब लोग न दबे और अहिंसक विद्रोहियो ने सूटाहेरा थाने पर कब्जा कर लिया, तो हवाई जहाज से जनता की भीड़ पर बम फेंके गए। फिर भी थाने पर पहले ही की भांति जनता का कब्जा कायम रहा।

जनता पर आतंक जमाने के लिए जिला अधिकारियो ने बहुत ही घृणित रीति से लूटने और आग लगाने की नीति को अपनाया। सिर्फ कांग्रेस कार्यकर्ताओं के ही मकान नही जलाए गए, बल्कि निर्दोष गाँव वालों के मकान तथा स्कूल भी जलाये गए। किसी ने स्वप्न में भी न सोचा था कि सरकार जिले की जनता की आजादी की भावनाओं को दबाने के लिए इस प्रकार के अत्याचार करेगी। डा० श्यामाप्रसाद मुखर्जी ने, जो उस समय बंगाल सरकार के मंत्री थे, बंगाल सरकार को अपने एक पत्र में लिखा था कि बंगाल सरकार की इस आशय की विज्ञप्ति के बावजूद कि शान्ति व व्यवस्था के संरक्षक सरकारी कर्मचारियो द्वारा मकानों के जलायेजाने की सरकारी नीति नहीं है, मेरे पास इस बात के काफी सुबूत हैं कि इस पर अमल नहीं किया गया।

१६ अक्तूबर के भयंकर तूफान की बरबादी के १५ दिन के बाद तक इस इलाके के कुछ हिस्सों में लूट और आग की कितनी ही घटनाएं हुईं।

इस के अलावा स्थानीय मुस्लिम जनता को अपने हिन्दू पड़ौसियों के घरों को लूटने और आग लगाने के काम में सहायता देने के लिए प्रोत्साहित किया गया। सरकार ने मुसलमानों को हर प्रकार की सहायता देने का ही विश्वास नहीं दिलाया, वरन सब दमनकारी कानूनो के पंजों से उन्हें बरी कर दिया। दमन से बचने के लिए उनको इस बात का आदेश दिया कि वे अपने मकानों पर झंडे लगा लें।

कंटाई के कुछ आंकड़े

कटाई सब डिवीजन में २२८ स्त्रियों के साथ बलात्कार किया गया या बलात्कार करने की चेष्टा की गई। १० हिन्दू स्त्रियों को गुण्डों के हवाले कर दिया गया। ९६५ घर जलाये गए, जिससे ५, ४१, ४३१, रुपये की हानि हुई। २०५९ घर लूटे गये, फलस्वरूप २,५५, २४६ रुपए की हानि हुई। १२, ६८१ व्यक्ति गिरफ्तार किये गए, ६७२ को सजायें दी गईं। ६,६८५ लठियों के प्रहार

से घायल हुए। ३०,००० रुपए सामूहिक जुर्माना किया गया। ४३८ स्पेशल कान्स्टेबल नियुक्त किये गए।

स्त्रियों के साथ बलात्कार

जिले में शान्ति व व्यवस्था कायम करने के लिए जो तरीके अख्तियार किये गए, पुराने जमाने के जंगली को भी मात करते है। ब्रिटिश साम्राज्यवाद के दलालो ने बाजारों, चौराहो और रास्तों में मनादी करा दी कि यदि देश की आजादी के लिए लड़ने वालों को उन्हे न सौप दिया गया और लडाई बन्द न की गई तो लोगों की औरतों के साथ बाजारो म बड़े पैमाने पर बलात्कार किया जायगा। यह सिर्फ कोरी धमकी नही थी, बल्कि वस्तुतः बहुत बड़ी सख्या में औरतों पर पाशविक हमले किये गए।

१-९-४२ को महीपादल थाने के तीन गाव मसूरिया, दिहीमसूरिया और चंडीपुर को ६ हजार फौजी सिपाहियो द्वारा घेर लिया गया। गांव के मर्द, औरत और बच्चे बडी बेरहमी से पीटे गए और उनके घरो को लूटा तथा जलाया गया। इन राक्षसो को इतने पर ही सन्तोष नही हुआ, बल्कि ४६ औरतो के साथ बलात्कार भी किये। यही नही, हर औरत के साथ दो, तीन और चार सिपाहियों तक ने बलात्कार किया और कई औरतें तो बेहोश तक हो गईं।

ऊपर की मिसाल इस प्रकार की कितनी ही घटनाओं म से एक है। यह सब घटनाएं सरकारी छानबीन द्वारा पुष्ट हो चुकी है, परन्तु फिर भी उन्हे दबा दिया गया है। मेरे पास ७२ औरतो के पते और उनके बयान मौजूद है। उनमें से कुछ बयान नीचे दिये जाते हैः—

(१) "मै श्रीमती सिन्धुबाल मैती, अधरचन्द मैती की स्त्री हूं और चन्डीपुर ग्राम, महिपादल थाने जिला मिदनापुर की रहने वाली हू। मेरी अवस्था १९ वर्ष की है। मै एक बच्चे की मा हू। ९-१-४३ को ९॥ बजे सुबह नलिनी राहा कुछ फौजी सिपाहियों को लेकर मेरे मकान पर आया। कुछ सिपाही मेरे पति को जबरदस्ती पकड कर ले गये और इस प्रकार घर में मै बिल्कुल अकेली रह गई। नलिनी राहा मेरे पास आया और जबर्दस्ती मेरे साथ बलात्कार किया। मैं बेहोश हो गई..................।

"यह मेरे साथ दूसरा बलात्कार था"

इससे पहले इस स्त्री के साथ २७-१०-४२ को बलात्कार किया गया था। दूसरे बलात्कार के बाद जो जख्म आये, उससे आहत होकर यह स्त्री ९ दिन बाद ही मर गई।

(२) "मै श्रीमती क्षूदी पडित, हरीपद पंडित की स्त्री हूं और चंडीपुर गाव, थाना महिषादल, जिला मिदनापुर की रहने वाली हूं। मेरी आयु २४ वर्ष है और मेरे तीन बच्चे है। ६–१–४३ की सुबह नलिनी राहा कुछ सिपाहियो के साथ मेरे मकान पर आया और कुछ सिपाही जबरदस्ती मेरे पति को पकड़ कर लेगये। नलिनी राहा के हुक्म से दो सिपाहियों ने मुझे पकड़कर मेरे मुह में कपड़ा ठूस दिया। मेरे शोर मचाने की कोशिश करने पर मुझे सिपाहियो और नलिनी राहा ने गोली मार देने की धमकी दी। दो आदमियो ने मेरे साथ बलात्कार किया। मै बेहोश हो गई। जब मै होश मे आई तो मेरे पति मेरे पास थे। उनके जख्मो से खून टपक रहा था। . ...।"

यह स्त्री बलात्कार के समय गर्भवती थी।

(३) मै श्रीमती सुहानी दास, मनमथनाथ दास की स्त्री तथा चडीपुर गाव, थाना महिषादल, जिला मिदनापुर की रहने वाली हूं। मेरी आयु ३० वर्ष की है। मेरे एक बच्चा है। ९-१-३३ की दोपहर को नलिनी राहा कुछ फौजियो के साथ हमारे मकान पर आया। कुछ लोग मेरे पति को जबरदस्ती पकड़ कर ले गए। मै भी पिछले दरवाजे से भागकर बांसो की झाड़ियो की तरफ जा रही थी। मुझे पीछे से दो सिपाही जबरदस्ती पकड़कर मेरे मकान पर ले आए। उन्होने मुझे बन्दूको के कुन्दो से मारा और जमीन पर गिरा दिया मेरे मुह को कपडे से बन्द कर दिया। फिर कई आदमियो ने लगातार मेरे साथ बलात्कार किया। परिणामस्वरूप मै बेहोश हो गई।"

अगर गाव के मर्द और औरतें मिलकर इस पाशविक अत्याचार का मुकाबिला न करते तो ऐसे बलात्कारो की तादाद बहुत अधिक होती। कुछ औरतो ने तो इन मानव शरीरधारी जानवरो को छुरे दिखाकर उनसे अपने सतीत्वकी रक्षा की।

इस प्रकार की घटनाओ मे औरतो के गाल काटने, उनके कपड़े उतारकर नंगा करने, उनकी छातियां काट लेने तथा निर्दयता के साथ उनको पीटने तथा घायल अवस्था में उन्हे घसीटने की घटनाए शामिल है।

लोगो पर अन्धाधुन्ध सामूहिक जुर्माने किये गये। अपराधी और निरपराध के बीच कोई भेद नही किया गया। प्रायः हिन्दुओ को ही सामूहिक जुर्मानो का शिकार बनाया गया।

इसके अलावा लोगों पर कई प्रकार के अत्याचार किए गए। छोटे-छोटे बच्चो को उठाकर फेंक देने और गायो को मकानो के अन्दर ही जला देने के काफ़ी उदाहरण मिलते है। एक बच्चे के ऊपर जूते पहनकर चलने से

उसका पैर टूट गया। कुछ लोगों को नंगा कर उनके चूतड़ों में डंडे ठूंसे गये। एक लड़के को नंगा करके कास्टिक सोड़े और चूने के पानी का घोल तैयार करके उसकी मूत्रेन्द्रिय पर लगाया गया। कहने का अर्थ यह है कि मिदनापुर जिले में अत्याचार करने में पाशविकता और बर्बरता को भी लज्जित कर दिया गया।

बैलूर घाट सब डिवीजन

इस सब डिवीजन में स्थानीय कांग्रेस कमेटी के मन्त्री श्री सरोजरजन चटर्जी ने आन्दोलन की शुरुआत के लिए १३ सितम्बर का दिन नियत किया, १३ सितम्बर की रात को स्थानीय कांग्रेस-नेताओं के नेतृत्व में गाव वालों के १०० से अधिक जत्थे बैलूर घाट में इकट्ठे कर लिये गए। इनमें से कुछ ३० मील से भी अधिक की दूरी से आकर बैलूर घाट कस्बे से ३ मील की दूरी पर अतिराई नदी के पश्चिमी घाट के किनारे डंगीघाट पर इकट्ठे हो गए। प्रातः-काल लगभग ५ हजार व्यक्ति जमा थे उन्होंने नदी को पार किया और नदी के पूर्वी घाट पर तिरंगे झंडे का अभिवादन किया। लगभग ७ बजे सब लोग कस्बे की तरफ 'वन्दे मातरम' और 'करेंगे या मरेंगे' के नारे लगाते हुए चल दिये। रास्ते में नदी के पूर्वी घाट के अन्य गावों के लोग भी शामिल होते गये और उनकी सख्या ७ हजार के लगभग हो गई। जुलूस बैलूर घाट कस्बे के बाजारों में होता हुआ खजाने पर पहुचा। जुलूस के नेता ने खजाने के पहरे-दारों तथा कर्मचारियों को इस्तीफा देकर जनता के आन्दोलन में शामिल हो जाने को कहा। इसके पश्चात् वे लोग कस्बे के स्थानीय सरकारी तथा अर्ध-सरकारी दफ्तरों पर आक्रमण करने के लिए चले। इनमें सब रजिस्ट्री दफ्तर डाकघर, सिविल कोर्ट बिल्डिंग, कोआपरेटिव बैंक, बंगाल आसाम रेलवे का आऊट एजेन्सी दफ्तर, जूट इंस्पेक्टर आफ़िस, अंग्रेजी शराब की दूकानें, कृषि-विभाग के दफ्तर तथा बीज गोदाम, सहायक जूट इंस्पेक्टर आफिस, और यूनियन बोर्ड आफिस आदि स्थान थे। सब रजिस्ट्री दफ्तर को आग लगाकर राख कर दिया गया, सिविल कोर्ट को भी आग से काफी नुकसान पहुँचा। कोआपरेटिव बैंक बिल्डिंग को भी आग से हानि हुई। टेलीग्राफ के तार काट दिये गये तथा तारघर की मशीनों को तोड़ डाला गया। दूसरे दफ्तरों के कागजात तथा फरनीचर आदि को भी नुकसान पहुँचाया गया। इसके पश्चात् सारा जुलूस शान्ति के साथ कस्बे से लौट गया। इसमें न किसी व्यक्ति को चोट पहुंचाई गई और न किसी व्यक्तिगत जायदाद को नुकसान ही पहुँचाया गया।

नदी के दूसरी ओर गवर्नमेंट के बहुत से धान के गोदाम थे, उन्हें जुलूस

वालो ने लूट लिया । जिला मजिस्ट्रेट वहां पर हथियारो से सुसज्जित सिपाहियों को लेकर पहुचे, लेकिन जनता के खिलाफ कोई कार्रवाई किये बिना ही वापस लौट गए । जन-समूह के कुछ आदमी सिमलताल नामक स्थान पर पहुंचे और वहां से भी धान लूटकर ले गए ।

जिला मजिस्ट्रेट को सूचना मिली कि अगले दिन थापन थाने पर जनता का आक्रमण होगा । अतः १५ तारीख की सुबह हथियारों से सुसज्जित सिपाहियो को लेकर वह थापन पहुचे । उधर प्रायः तीन सौ राजपूत, मुसलमान और सथाल धान की निकासी को रोकने के लिए तीलाघाट की ओर चले। इन दिनों प्राय गाव के सब आदमी धान को बाहर भेजने के खिलाफ थे, क्योकि वहां पर धान की कमी थी । जिला मजिस्ट्रेट भी थापन से हथियारबन्द सिपाहियो और इजारदार को लेकर वहा पहुचे । पुलिस ने जनता पर गोली चलाई । किंतु उससे कोई क्षति नही पहुची और जनता शान्तिपूर्वक वापस चली गई । जिला मजिस्ट्रेट ने ६ दर्शको को गिरफ्तार किया जो वहा पर घूम रहे थे । जनता का समूह मदनहार की तरफ चला और वहा हजारदार की दूकान को लूटा, क्योकि उसने जिला मजिस्ट्रेट को मदद दी थी ।

२२-९-४२ की आधी रात के समय पुलिस के एक जत्थे ने जिसके पास बन्दूके भी थी, चौकीदार और दफंदारो को साथ लेकर मुरदंगा में फूलचन्द मडंल के मकान पर छापा मारा । उन के विषय में यह कहा जाता था कि वह और उनके साथी बैलूरघाट की घटना में थे । पुलिस वालो ने मकान का दरवाजा तोड़ डाला और अन्दर घस गए और जिस कमरे में फूलचन्द अपनी स्त्री और बच्चो के साथ सो रहे थे वहा जाकर श्री फूलचन्द की बेइज्जती की और उनका सामान लूट लिया । श्री फूलचन्द के शोर मचाने पर गाँव की जनता उनके मकान की ओर दौड पडी । इस पर पुलिस ने जनता पर गोली चलाई । पर जनता के उमडते हुए जन-समूह को देखकर पुलिस वाले भाग गए । जो बाकी बचे, जनता ने उन्हे पकड़ लिया और रस्सियां से बाध दिया । दूसरे दिन जब पुलिस के गिरफ्तारशुदा सिपाहियों ने छोड देने की प्रार्थना की, तब जनता ने गाँव में एक सभा की और उसमें यह तय पाया कि यदि वे लोग काग्रेस के प्रतिज्ञापत्र पर हस्ताक्षर कर दें और इस बात का विश्वास दिला दें कि सरकारी नौकरियाँ छोड़ देंगे तो उन्हे छोड दिया जायगा । बिचारे पुलिस वालों ने फौरन ही काग्रेस के प्रतिज्ञापत्र पर हस्ताक्षर कर दिए । जनता ने फौरन ही उनको छोड़ दिया, पश्चात् उनको भोजन कराया और इस प्रकार वे 'बन्देमातरम्' का गान गाते हुए तथा गान्धीजी की जय के नारो के साथ विदा किये गए ।

२४।९।४२ को पुलिस इस्पेक्टर और सब इंस्पेक्टर हथियारबन्द पुलिस जत्थे के साथ मुरदगा एक पुलिस के जत्थे को बचाने के लिए गए। रास्ते में उन्होंने मुरदगा से दो मील की दूरी पर दो गाव वालों को गिरफ्तार कर लिया जो श्री फूलचन्द मडल के औषधालय से दवा लेकर आ रहे थे। उनके रिश्तेदार उनको छुड़ाने के लिए पुलिस इस्पेक्टर के पास गए, परन्तु उसने उन्हे डांट-फटकार दिया। धीरे-धीरे वहा लगभग सौ आदमी इकट्ठे हो गए। बातचीत चल ही रही थी कि पुलिस ने जनता पर गोलिया चलानी शुरू कर दी। बन्दूको की आवाज सुनकर लगभग पाच छः सौ आदमी जमा हो गए। जनता पकड़े हुए आदमियो को छोडने के लिए चिल्लाने लगी। सथालो ने पुलिस पर धनुष-बाण से आक्रमण कर दिया। इस पर पुलिस वालो ने गिरफ्तार शुदा आदमियो को तो छोड दिया और भीड़ पर अन्धा-धुन्ध गोली चलाते हुए थापन की तरफ भागे। पुलिस के कथनानुसार ६६ बाल गोलियो और १० बम गोलियो का प्रयोग किया। बहुत से आदमी घायल हुए और तीन आदमी घटनास्थल पर मारे गए।

यह बात ध्यान देने योग्य है कि सब स्थानो पर कांग्रेस कार्यकर्त्ताओ ने अहिंसात्मक नीति का पूर्णत पालन किया। यहां तक कि पोलियाला हाट पर जहा कि पुलिस के अत्याचार सीमा को पहुच चुके थे, गांव के कार्यकर्त्ताओ ने घुटनों के बल बैठकर पुलिस की गोलियो का स्वागत किया। मेलकुरी के रहने वाले एक ७० वर्ष के बूढे श्री आधार मडल ने सर्व प्रथम अपने सीने पर गोली का स्वागत किया।

१४ सितम्बर को दोपहर के बाद जब जनता का जुलूस लौट चुका था, जिला मजिस्ट्रेट तथा डी० एस० पी० अपने हथियारबन्द स्टाफ तथा दिजापुर सदर से गोरखा फौज लेकर बेलूरघाट पहुचे। उनके आते ही गिरफ्तारियाँ शुरू हो गई। ३० आदमी गिरफ्तार किये गए जिनमे तीन मुसलमान भी थे। १७ सितम्बर की सुबह को बड़े तडके फौज की सहायता से तलाशिया शुरू की गई। जिला मजिस्ट्रेट और एस० पी० स्वयं इस कार्य में हाथ बटा रहे थे। तलाशी लेते समय बरतन, प्याले, प्लेट, फरनीचर, सन्दूक, अलमारी आदि लोगो का सामान तोड़-फोड़ दिया गया। इसके बाद उतरी बगाल और ढाका से पुलिस के जत्थे-के-जत्थे आने शुरू हो गए। इस प्रकार तैयार होकर जिला मजिस्ट्रेट और एस० पी० इलाके के अन्दर गए। मुरदगा नामक गाव उनका विशेष निशाना बना। ढाका की ईस्टर्न फ्रंटियर रायफल, नामक टुकड़ी एक अंग्रेज अफसर की अध्यक्षता मे मुरदगा भेज दी गई। उसकी सहायता के लिए

पुलिस भी थी। वहा के कुल ४२ मकान या तो धराशायी कर दिए गए या तोड़-फोड़ डाले गए। मकान के रहने वाले आस-पास के जगलो में भाग गये। इस तोड़-फोड़ के बाद जिला मजिस्ट्रेट और एस० पी० ने आस-पास के मुसलमानो की एक सभा की और उन लोगो को भड़काया कि वे मुरदंगा गाव के आदमियो का सामान लूट लें और स्त्रियों का सतीत्व नष्ट करे। अग्रेज आफीसर की मेहरबानी से स्त्रियो का सतीत्व तो भ्रष्ट होने से बच गया, परन्तु अफसर के चले जाने के बाद जिला मजिस्ट्रेट और एस० पी० ने १५७ मुसलमानो को इकट्ठा किया। उनकी मदद से गांव लूट लिया गया। ३ दिन तक लूट का सामान जैसे धान, चावल, फरनीचर, बर्तन, छतो के खपरैल, जेवर, रुपया-पैसा कपडा आदि बराबर गाड़ियो से ढुलता रहा। एक ओर यह अन्धाधुन्ध लूट चल रही थी, दूसरी ओर गिरफ्तारिया भी जारी थी।

२ अक्टूबर सन् ४२ को मुसलमानों का गिरोह दिखाई दिया जिसका नेतृत्व एस० डी० ओ० खुद हाथ में रिवाल्वर लिए हुए कर रहे थे। और जो जिला मजिस्ट्रेट की आज्ञा के विरुद्ध लाठी और भालो से सुसज्जित था। इस जुलूस ने हिन्दुओ के बहुत से धान के गोदामो को लूट लिया। इनमे सबसे बड़ा गोदाम श्रीयुत तिकोरीशाह का था, जिसमे १५०७ मन धान था।

बैलूरघाट के २९ हिन्दुओ पर ७५ हजार रुपया सामूहिक जुर्माना किया गया। एक-एक आदमी पर दस-दस हजार तक जुर्माना किया गया। केवल एक मुसलमान को छोड दिया गया, हालाँकि उसका लड़का बैलूरघाट की घटना के सम्बन्ध में गिरफ्तार किया गया था। यह ध्यान देने की बात है कि बैलूरघाट से अधिक-से-अधिक १५ हजार रुपए का नुकसान हुआ था। इस नुकसान को बहुत बढा-चढाकर दिखाया गया। इसके अलावा अलग-अलग व्यक्तियो से बिना किसी कानून-कायदे के, रुपया वसूल किया गया।

कलकत्ता

कलकत्ता बंगाल प्रान्त की राजधानी है। यह भारत का सबसे बड़ा नगर है। इसमे एक ओर जहा अनेक दर्शनीय इमारतें और भव्य अट्टालिकाये है, वहा कच्ची झोपड़िया उनमे रहने वालो की दरिद्रता का प्रदर्शन करती है। शिक्षा और उद्योग-धन्धो तथा व्यापार-व्यवसाय का केन्द्र होने के कारण कलकत्ता में राजनैतिक चेतना विशेष रूप से पाई जाती है। इसलिए जब सन् १९४२ का विद्रोह शुरू हुआ तो कलकत्ते में हड़तालें हुई और बडे-बडे जुलूस निकले। बड़ी सख्या में जनता शामिल हुई। अनेक मर्तबा जनता पर लाठीचार्ज किया गया। अश्रु-गैस का प्रयोग भी किया गया। १३, १४ और १६

अगस्त को गोलियां चली। सरकार के कथनानुसार इन गोली-काण्डों में ३९ मरे और १५ घायल हुए। हताहतों की यह संख्या सर्वथा ग़लत है। एक अमरीकन संवाददाता के कथनानुसार १०० आदमी तो केवल १४ अगस्त को ही गोली के शिकार बन गए थे। विद्यार्थियों ने आन्दोलन मे अच्छा हिस्सा लिया। स्कूल कालेज लम्बे अर्से तक बन्द रहे। इन्ही दिनो टेलीफोन के तार काटे गए तथा ट्रामो का आवागमन रोक दिया गया। फौजी लारियाँ लूट ली गईं और जला दी गईं। डाकखाने बरबाद किये गए तथा लेटर बक्स तोड़े गए। काशीपुर की तीन जूट मिलो में हड़ताल हो गई। मोटर ड्राइवरो ने भी काम बन्द कर दिया। आनन्दपुर मैटल वर्क्स तथा डन्डन एलुमोनियम वर्क्स ने भी कुछ दिनो के लिए काम बन्द कर दिया।

बंगाल प्रान्तीय काग्रेस कमेटी ग़ैर कानूनी करार दी गई। बंगाल सिविल प्रोवेशन कमेटी के कागजात जब्त कर लिये गए तथा काग्रेस सिविल डिफेंस बोर्ड आफिस की खिड़कियो को तोड़ डाला गया। शक्ति प्रेम की तीन मशीनो को क्षति पहुंचाई गई, टाइप इधर-उधर फेंक दिये गए, पानी के पाइप तोड़ दिये गये और प्रेस पर कब्जा कर लिया गया। बहुत-सी दुकान भी पुलिस वालों ने लूटी। गोलिया इस तरह अन्धाधुन्ध चलाईं कि एक सात वर्ष का बच्चा जो अपने मकान के बरामदे मे टहल रहा था, तथा एक दूकानदार उनका निशाना बना। बहुत से आदमी घायल हुए जिनमे एक प्रेस का संवाददाता भी था। ६५ वर्ष के एक बुड्ढे को संगान की नोक द्वारा गन्दगी साफ करने के लिए विवश किया गया। अक्तूबर से दिसम्बर तक १५८ गिरफ्तारिया की गईं जिनमे २० स्त्रिया भी थी। ९ दिसम्बर सन् १९४२ को स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष में जुलूस निकाला गया जिसको पुलिस ने तितर-बितर कर दिया। अखिल भारतीय चर्खा संघ की दूकान तथा अखिल भारतीय ग्राम उद्योग संघ के गोदाम पर पुलिस ने कब्जा कर लिया।

१६ अक्तूबर को क्रान्तिकारियो ने विलिंगडन हवाई स्टेशन और धर्मतल्ला स्टेशन पर मोटरों मे आग लगा दी तथा ८-१२-४२ को नीमतल्ला म दूकानदारो पर विस्फोट बमो का प्रयोग किया गया। ६-१२-४२ को बालीगंज आदि स्थानो पर दूकानदारो को रोक लिया। चार आदमियों ने सियालदा मे ड्राइवर से चाबी छीनकर बस को स्टार्ट कर दिया और स्वयं नीचे उतर गये। यह बस कालेज स्ट्रीट के पास किसी दूसरी कार से जाकर टकरा गई। गरियाहट्टा में एक कार जला दी गई। ५-१०-४२ को ट्रेन का एक फर्स्ट क्लास का डिब्बा, जो सियालदा से गुलुई जा रहा था, नष्ट कर दिया गया ५-१२-४२ को १९ आद-

मियों ने बी० एन० आर० के बुसकुरिया स्टेशन पर बमों का प्रयोग किया तथा स्टेशन के सब कागजात जला दिये। ३०-१०-४२ को बहू बाजार में एक एक्साइज की दूकान पर बम फेंका गया। २१-१२-४२ को भवानीपुर में विदेशी शराब की दूकान पर बम फेंके गये। २१-१२-४२ को कुछ बम स्टाक-एक्सचेंज पर फूटे।

मुरशिदाबाद

बलदगा और नाजीनगर के बीच टेलीग्राफ के तार काट दिये गए। अजीमगंज सिटी रेलवे स्टेशन पर आक्रमण किया गया तथा उसे क्षति पहुंचाई गई। इसी प्रकार की घटना को बेलडेग्स स्टेशन पर हुई। रामवारा, पटिकाबेरी और रुकनपुरा के डाकखाने जला दिये गए। पटकाबेरी मे टेलीग्राफ के दफ्तर को नष्ट कर दिया गया। एक गाजे की दूकान को भी बरबाद कर दिया गया। नासीपुर के बुकिंग दफ्तर को नष्ट कर दिया गया। कासिम बाजार से दहरनपुर जाने वाली गाड़ी का एक सेकेंड क्लास का डिब्बा जला दिया गया। दरहनपुर सिलटेकनो को जला दिया गया। जगीपुर म्युनिसिपल हाउस को नष्ट कर दिया गया। राजगज और सैदाबाद के बीच लेटरबक्स जला दिये गए।

गकर के एक कांग्रेस-कार्यकर्त्ता की सब चल सम्पत्ति जब्त कर ली गई। ९ सितम्बर को जुलूस मे सम्मिलित लगभग ६० व्यक्तियो को हरीशमपुर में गिरफ्तार किया गया और जगल मे ले जाकर छोड़ दिया गया। बरहपुर के मकान के निवासियो को जिसमे स्त्रियाँ भी थी, घायल किया गया। बलगा मे ५,००० रु० सामूहिक जुर्माना किया गया।

नदिया

गिरफ्तारिया - ९८

रामाघाट टेलीग्राफ और टेलीफोन के तार काट दिये गए। पलासी और कुश्तियाँ में भी टेलीग्राफ के तार काट दिए गए। कृष्णनगर रेलवे स्टेशन के लैम्प तोड़ दिये गए। कृष्णनगर की लोकल ट्रेन के चार फस्ट क्लास तथा सैकेंड क्लास के डिब्बे जला दिये गए। इसी गाड़ी का एक फर्स्ट क्लास का डिब्बा बाद मे और जला दिया गया। मुरगचा रेलवे स्टेशन पर आक्रमण किया गया। और उसके सब कागजात जला दिये गए। रामनाघाट इवेकुएशन रिलीफ सेन्टर की छतें जलाकर राख कर दी गई। कृष्ण नगर के एक जुलूस पर तथा एक सभा पर लाठी-चार्ज किया गया जिसमें बहुत से आदमियो को चोटें आईं। नवद्वीप के सात कमिश्नरो ने स्तीफे दे दिए।

ढाका

कई दिनो तक ढाका में तथा जिले के अन्य स्थानो में हडतालें रही

बहुत-सी सभाये हुईं तथा जुलूस निकाले गये। विद्यार्थियो ने स्कूल कालज छोड दिए। ढाकेश्वरी चिरजन. तथा लक्ष्मीनारायण काटन मिल में हड़ताले की गईं। नारियागंज की सिविल तथा क्रिमिनल कचहरियों पर पिकेटिंग की गईं। ढाका सेन्टर व अखिल भारतीय चर्खा सघ और रायपुर के अखिल भारतीय चर्खा संघ पर कब्जा कर लिया गया।

ढाका की सड़कें रोक दी गईं। दयागज मे रेल रोक ली गईं और रेलवे के सामान को क्षति पहुंचाई गई। ढाका—नरियागंज की लाइन की पटरिया उखाड़ दी गईं तथा दोनों शहरो के बीच कुछ दिन के लिए आमदोरफ्त के साधन नष्ट कर दिये गए। कन्दरिया रेलवे स्टेशन पर आक्रमण किया गया और वहा के कागज़ात जला दिये गए और स्टेशन जाने वाली सड़क को रोक दिया गया। ढाका के टेलीग्राफ तार काट दिये गए और टेलीफोन स्विच बोर्ड मे आग लगा दी गई। अरमीनी टोला के टेलीफोन के स्विचबोर्ड को जला दिया गया। साइकलो के रजिस्ट्रेशन नम्बर हटा दिए गए और मुशिया गज मे टेलीग्राफ के तारो को काट दिया गया। ओटपारा तथा केनिंगसन तार काट दिये गए।

ढाका के एक भूसा गोदाम को, जिसमे फौज के लिए भूसा इकट्ठा किया गया था, नष्ट कर दिया गया। दोलिया की नहर मे एक मोटर फेक दी गई और फौज तथा जल-सेना के गोदाम को क्षति पहुंचाई गई। ढाका में एक ए० आर० पी० की इमारत को नष्ट कर दिया गया। मुसिफ की कचहरी पर आक्रमण किया गया और कागजात जला दिये गए। फौज के लिए जमा किए हुए भूसे मे आग लगा दी गई तथा गवर्नमेन्ट के कताई के कारखाने में चर्खी और सूत आदि को क्षति पहुचाई गई। ढाका के कालेजिएट स्कूल के कागजात जला दिये गए और साइस के यंत्रो को क्षति पहुचाई गई। सी० आई० डी० इन्स्पेक्टर के मकान पर, एस० आई० के मकान पर, बैरक्स पर, काजीताला पर, ढाका के कोतवाली थानो पर, सुतरापुर के एस० आई० के क्वार्टर पर, गन्धरिया हवलदार के क्वार्टर पर, ढाका के नरेगंदी थाने पर, जोनरुन रोड के एक रेस्टरां पर बम विस्फोट हुए।

१३ अगस्त को सखारी बाजार मे कई जगह गोलियां चली, जिससे एक मरा, कई घायल, मुसिफ की अदालत के सामने दो सिपाही घायल, ६ बार गोलियाँ चली, बहुत से घायल हुए, एक मरा। १५ अगस्त को सादरघाट पर एक मरा। अग्रेडहेड मे एक मरा, ७ घायल जिनमे तीन मरे। १५ सितम्बर तालटोला मे तीन मरे और एक घायल। २२ सितम्बर को नवाबगंज मे ५ बार

गोली चलीं जिससे दो मरे और ६ घायल हुए। एक सिपाही फौरन ही मर गया और एक बाद मे मरा।

तिपरा

गिरफ्तारियां १७०, जिनमे १६ स्त्रिया भी सम्मिलित थी।

तिपरा म्युनिसिपैलिटी को गवर्नमेन्ट ने अपने हाथ में ले लिया। चान्द-पुर मे दो ए० आर०-पी० पोस्ट नष्ट कर दिय गए। कोमोइल इनकम टैक्स दफ्तर पर आक्रमण किया गया तथा इब्राहीमपुर डेट सेटिलमेन्ट बोर्ड और नर-सिह पोस्ट आफिस आदि के भी कागजात जला दिये गए। इब्राहीम यूनियन बोर्ड और बुरचंगा पोस्ट आफिस के कागजात जला दिये गए। राजपुर पोस्ट आफिस मे भी यही नाटक खेला गया। पगमर, लक्ष्मी और लमाई के बीच टेलीग्राफ के तार काट दिये गए। कालीताला आर दुर्गापुरा पोस्ट आफिस भी नष्ट कर दिया गया। खेरा पोस्ट आफिस का एक लेटर बाक्स गायब कर दिया गया। दुर्गापुर यूनियन बोर्ड, आफिस को नष्ट कर दिया गया। १४ नवम्बर को पुलिस स्टेशन चान्दाग्राम के निलाखी फौजी हवाई अड्डे को भी नष्ट कर दिया गया। इस जगह की जनता पर छ: सौ रुपया सामूहिक जुर्माना किया गया।

सिलहट

२५ अगस्त से १५ सितम्बर तक ६९७ मुख्तार और वकीलों ने अपना काम बन्द कर दिया। इसके पश्चात् दो हज़ार मुहर्रिरो ने भी मुख्तारो और वकीलों का साथ दिया। ३१ अगस्त को सिलहट के पोस्ट तथा इनकम टैक्स आफिस और इक्जीक्यूटिव इंजीनियरिंग आफिस पर आक्रमण किया गया और उसके काग़ज़ात जला दिये गए। सुभानगज की कचहरी में भी ऐसा ही किया गया। कुलोरा थाने और विश्वनाथ थाने मे मय सब इन्स्पेक्टर के मकान के तथा बेनी बाज़ार के पोस्ट आफिस में आग लगा दी गई। कितनी ही जगह के लेटरबक्स भी जला दिये गए। टेलीग्राफ के तार काट दिये गए। तार के खम्बे गिरा दिए गए। सिलहट रेलवे प्लेटफार्म पर एक पेट्रोल का तथा दूसरा फौज के लिए खाद्य-पदार्थो से भरा रेल का डिब्बा जला दिया गया। एक गोरे सिपाही को भी जो वहाँ पर तैनात था जला दिया गया। रेलवे पटरियो के हट जाने से ९ डिब्बे गिर पड़े। फौज के लिए जमा भूसे में और एक बाँस के पुल में आग लगा दी गई। तमाम जिले में 'भारत छोड़ो' आदि के २० हज़ार इश्तहार बाँटे गए। लगभग १०० मौलवी जनता में हिन्दू-मुस्लिम एकता का प्रचार करने के लिए नियुक्त किये गए। इस कार्य मे सिलहट की जमैयतुल-

उलमा काफी हाथ बटा रही थी। ६० स्वराज्य पंचायतें स्थापित की गई। इन पचायतो मे सब आपसी झगड़े और मुकदमे तय होते थे।

फरीदपुर

पलास से बुदरानगर तक सब टेलीग्राफ के तार काट दिए गए। बसन्तपुर रेलवे स्टेशन नष्ट कर दिया गया। राधागज और बीजापुर के स्टेशन पर आक्रमण किया गया और वहा के कागज़ात जला दिए। मंगा मे कुछ आफिसरो ने मुसलमानो को काग्रेस कार्यकर्त्ताओ के खिलाफ भड़का कर हिन्दुओ के मकान लुटवा दिए। बोलीताला के पास दादाई रेलवे स्टेशन के कुछ भाग में आग लगा दी गई। जिलास्कूल फरीदपुर के हेड मास्टर के आफिस मे आग लगा दी गई तथा सेटिलमेन्ट आफिस के कागज़ात भी जला दिये गए।

मेमनसिंह

गिरफ्तारियाँ. १४१

मेमनसिंह के टेलीग्राफ के तार काट दिये गए। रेल की पटरी उखाड दी गई तथा नीलगज में रेल के स्लीपर जला दिये गए। नेत्रकोण के रेलवे टेलीग्राफ के तार काट दिये गए। किशोरीगज मे भी ऐसा ही किया गया। नीलगज डाकखाने के डाक के थैले छीन लिये गए। एक एक्साइज़ की दूकान पर कब्जा कर लिया गया और मेमनसिंह में भूसे के गोदाम मे आग लगा दी गई। सेल्स टैक्स तथा इनकम टैक्स के दफ्तरो पर भी आक्रमण किया गया। तागिल सिविल कोर्ट तथा सब इस्पेक्टर के मकान मे आग लगा दी गई। रायर बाजार तथा अथरबरी के बाजार लूट लिये गए। म्यूनिसिपल बोर्ड आठ कमिश्नरो ने इस्तीफे दे दिए और कई वकीलो ने अपनी वकालत बन्द कर दी।

रायर बाज़ार के सरकारी बाज़ार की लूट के परिणामस्वरूप जब पुलिस ने गोलियाँ चलाईं तो तीन आदमी मारे गये तथा अथराबरी बाज़ार की लूट के सिलसिले में पुलिस की अधाधुन्ध गोलियो से सौ आदमी घायल हुए।

राजशाही

नौगाव पोस्ट आफिस जला दिया गया और बोलिया थाने पर आक्रमण किया गया। एक चावल के गोदाम में आग लगा दी गई। अबादपुर सरकारी बाज़ार तथा गजलीबाज़ार लूट लिये गए। कासिबवरी पर आक्रमण किया गया।

राजेश म्युनिसिपैलिटी के ७ कमिश्नरो ने इस्तीफा दे दिया।

दीनापुर

बैलूरघाट मे टेलीग्राफ के तार काटे गये । यूनियन बोर्ड, सिविल कोर्ट, बहुत सी एक्ससाइज की दूकानें, सब रजिस्ट्री आफिस, सेंट्रल कोआपरेटिव बैंक आदि स्थान जला दिये गए तथा नष्ट कर दिये गए ।

नोट :—इसका विस्तृत वर्णन एक दूसरे स्थान पर दिया गया है । वहा की रहने वाली जनता ने सब रजिस्ट्रार पर एक हजार रुपया तथा ऑनरेरी मस्जिस्ट्रेट पर दो सौ रुपया जुर्माना किया ।

रंगपुर

पारवतीपुर-कठियार रेलवे की पटरियां उखाड़ दी गईं जिससे कि एक रेलगाडी उलट गई । पारवतीपुर में मीलो तक रेल की पटरिया उखाड़ दी गई । स्टेशन पर आक्रमण किया गया और सिलीपर जला दिये गए । रंगिया-पुर स्टेशन की इमारत तथा क्वार्टर मय सामान के जला दिए गए और दो जोड़ी रेल की पटरिया उखाड़ दी गई । माईहाटे पर चौथाई मील रेल की पटरी उखाड दी गई । सहसपुर से चन्दाई कोना तक तथा धूपचासी तथा सर-पुर के टेलीग्राफ के तार काट दिये गए । मोलपुर परे की रेलवे स्टेशन पर फर्स्ट तथा सेकेंड क्लास के डिब्बे जला दिये गए ।

जलपाईगुरी

कुमार ग्रामदुआर पोस्ट आफिस और तहसील आफिस पर हुए आक्रमण के सिलसिले मे मारवाड़ियो की बन्दूको का लाइसेन्स जब्त कर लिया गया ।

दारजिलिंग

गिरफ्तारिया ४६

८ सितम्बर को सिलीगुरी मे गोलीकाड हुए ।

बर्दमान

गिरफ्तारिया . १७४ सामूहिक जुर्माना ४५,५००

कालस रेलवे स्टेशन और जमालुरगज रेलवे स्टेशन, जमालपुर की देशी शराब-और गाजे की दूकाने, बमनी की देशी शराब तथा एक्साइज की दूकानें, कलना सिविलकोर्ट, बेगराई इवेकुएशन के दो मकान तथा बर्दवान का डाक बंगला, ज[illegible] थाने के कागजात और सामान, सागरी के इवेकुएशन कैम्प की सो[illegible] लिये, कुसुमग्राम का डाक बंगला, बकापुर का डी० एस० आफिस और उकरिद डी० एस० बी० आफिस आदि को लूट लिया गया, नष्ट

कर दिया गया अथवा जलाकर खाक कर दिया गया। जमालपुर मे एक बन्दूक पकड़ी गई। वंकपुरी और उरीद यूनियनबोर्डो के दफ्तरो तथा मल्दानागर और सेठपुर की एक्साइज़ की दूकानो और कनीपुर मे देशी शराव की दूकानो को जला दिया गया।

६।१०।४२ को गुसखुरा रेलवे स्टेशन के पास एक अंग्रेज टामी ने एक किसान को गोली से मार दिया जो कि सीर लेने जा रहा था।

हावड़ा

वन्तरा के टेलीफोन और बिजली के तार काटे गए और हावड़ा बस-घाट के ट्राम रोक दिये गए। बेमगची और बेवघचिया रेलवे स्टेशनो पर टेलीग्राफके तारो को कई जगह से काट दिया गया। कोलवरी में ट्रमट्रोली नष्ट कर दी गई और पचनताली सड़क रोक दी गई। शानपुर पोस्ट आफिस थ्रूस्टरोड पोस्ट आफिस तथा जिगार पोस्ट आफिस के कागज़ात स्टैम्प सहित जला दिये गए।

भौसागर रेलवे लाईन की पटरियां उखाड़दी गईं और यह कोशिश की गई कि वृन्दावन पुर की बी० डी० रेलवे की पटरिया उखाड़ दी जाय। कन्जाकुर और मनोवर यूनियन वोर्डो के कागजात, रशनावाद यूनियन बोर्ड आफिस, विलिसतोर का डाक वगला, चन्द्र और अलुनी के मिलिट्री आवज़र-वेशन कैम्प और कचकी वायुदर्शक यंत्र, विशनपुर हवाई अड्डे की दो छत, सोना मुखी, चन्द्रा और गगाजल हाटी में एक्साइज की दूकान तथा सेलवोनी, केदामधाटी और कनोहापुर आदि जगहो में एक्साइज़ की दूकाने, दोबीपुर, तोतालचिटी, ज्योडा, विनू, करासाल, सिलमपुर, विवरद का वनूनिया आदि जगहो में एक्साइज़ की दूकानें, बेनुनिया का डाक वगला और अकुई का डाक का थैला आदि जला दिये गए, नष्ट कर दिये गए अथवा लूट लिये गए।

२१ अगस्त को उलूवरिया में एक सभा पर गोली चलाई गई।

हावड़ा की जूट मिल और अनेक कम्पनियो में हड़तालें हुईं।

विठूर और वादलनरियापुर की यूनियन बोर्डो को सरकार ने अपने हाथ में ले लिया।

हुगली

गिरफ्तारिया : ५६५

कई जगह टेलीग्राफ के तार काट दिए गए। [illegible]टिन एन्ड को० तथा एन्ड को रेलवे के चम्पादगा और सोमडा और हेवा[illegible] बीच रेल की पटरियां उखाड़ दी गईं जिससे दो दिन तक रेलो का चलना वन्द होगया।

ई० आई० आर० की कुछ लाइनो पर के लकड़ी के तख्ते आदि हटा दिये गए। दो डिब्बे बिलकुल जला दिये गए और कई रेल के डिब्बो को बड़ी क्षति पहुचाई गई। स्टेशनो पर लैम्प तोड़ दिये गए और पटरिया उखाड़ दी गई। वोनेही-कटवा के तीन पुल तोड़ दिये गए । आरामबाग खासमहल और वालीखास महल के दफ्तर जिसमे जिले के सब खास महलो के कागजात रखे थे, नष्ट कर दिये गए ।

शिरोफुल के बाजार से सिपाहियो के लिए खाने का जो सामान जा रहा था, रोक दिया गया। चान्दीताल और भंडरीहाटी तथा कमर पुकारी में इवक्रुएशन कम्प और कुली का मिलिट्री आबजरवेशन पास्ट नष्ट कर दिये गए।

बांदा गज कृष्णनगर तथा गोहाटी, आरामबाग, परसराम, पुरसराम-पुर की एक्साइज की दूकानों का समस्त सामान जला दिया गया। कुमारपुकार और अहमदपुर के डाकबंगले को सब सामान सहित नष्ट कर दिया गया। देवखादा और धनियाकांदा पोस्ट आफिस जला दिया गया। पटुल पोस्ट आफिस भी बरबाद कर दिया गया। १६ वार टेलीग्राफ के तार काटे गए। अनेक स्थानो पर डाक के थैले नष्ट कर दिये गए ।

बेंची मे यूनियन बोर्ड के कागजात और आफिस को नष्ट कर दिया गया। इसी प्रकार लगभग एक दर्जन यूनियन बोर्डों के कागजात जला दिये गए। एक दर्जन से अधिक स्थानो के पोस्ट आफिसो को बडी क्षति पहुचाई गई और उनके कागजात नष्ट कर दिये गए ।

हुगली जिला कांग्रेस कमेटी आफिस, सिरामपुर और एक प्रमुख कांग्रेस कार्यकर्त्ता के मकान पर, जिनको गवर्नमेंट ने अपने अधिकार में कर लिया था, जनता ने पुन कब्जा कर लिया। आरामबाग की पुलिस ने वारो दगल के सागर कुटीर, कांग्रेस कैम्प में ताला लगा दिया था। जुलूस ने तालों को तोड़ दिया और अपनी राष्ट्रीय सस्था पर कब्जा कर लिया। एक लारी, को जिसमें चावल भरा हुआ था, जनता ने गंगा कटवा रोड पर पकड़ लिया।

नयापुर के ४० मकान-मालिकों को पुलिस ने बहुत अपमानित किया तथा ३५ को बडी बेरहमी के साथ पीटा ।

कई म्युनिसिपल कमेटियो के सदस्यो ने इस्तीफे दे दिये। यूनियन बोर्डों के सदस्यो ने भी इस्तीफे दे दिये।

३०-१०-४२ को जनता ने चम्पाडांगा बाजार पर आक्रमण किया। कुछ सामान लूट लिया और कुछ नष्ट कर दिया। सूचना मिलने पर फौरन ही वहां पुलिस आई और उसने जन-समूह पर गोली चलाना शुरू कर दिया जिससे तीन व्यक्ति मारे गए तथा बहुत से जख्मी हुए ।

: ६ :

मद्रास में विद्रोह

मद्रास प्रान्त में दक्षिण भारतीय प्रायद्वीप का करीब-करीब सारा ही दक्षिणी हिस्सा शामिल है और देशी रियासतो को छोडकर इसका क्षेत्रफल १,२४,३६३ वर्गमील है। काफी अर्से से इस प्रान्त की जनसंख्या लगातार बढ रही है। इसमें करीब ८८ प्रतिशत हिन्दू, ७ प्रतिशत मुसलमान तथा ३८ प्रतिशत ईसाई है। अन्य जातियो की तादाद बहुत थोड़ी है। आबादी का ज्यादातर हिस्सा द्राविड़ नस्ल का है और यहां द्राविड़ भाषाएँ ही बोली जाती है। करीब १,९०,००,००० आदमी तामिल बोलते है और १,८०,००,००० आदमी तैलगू। कुल आबादी मे से करीब ४० प्रतिशत मलयालम। इस प्रकार हम देखते हैं कि मद्रास प्रान्त में न केवल बहुत सी भाषाएँ प्रचलित है, बल्कि वहां अनेक जातियाँ भी बसी हुई है। इस कारण प्रान्त में तरह-तरह की सामाजिक और आर्थिक समस्याएँ पैदा हो गई है। यहां दो भिन्न संस्कृतियो का सम्मिश्रण हुआ और उसके फलस्वरूप एक नई संस्कृति पैदा हुई। द्राविड़ो की प्राचीन संस्कृति ने आर्य-संस्कृति की बहुत-सी बातो को अपना लिया है, लेकिन उसमें अपनी विशेषताए काफी मात्रा में मौजूद है। हम बिना किसी सकोच के यह कह सकते हैं कि संस्कृति के मामले मे मद्रास सारे हिन्दुस्तान का अगुआ है।

इस प्रान्त के लोग आम तौर पर हमेशा हुकूमत के वफादार रहे हैं। गोरखों के समान ही मद्रासियों ने अंग्रेजी सरकार को मदद दी है; किन्तु मद्रासियों को हम दुनिया के नागरिक भी कह सकते हैं। उनमें प्रान्तीयता की संकुचित भावनाएँ नहीं पाई जाती। यही कारण है कि मद्रासी लोग दुनिया के हर हिस्से में फैले हुए है। वे कही भी अपने-आपको अजनबी-सा महसूस नही करते तथा अपने को सभी प्रकार की परिस्थितियों के अनुकूल बना लेते है। वे पक्के व्यक्तिवादी होते है। भावना-प्रधान होने के बजाय वे बुद्धिवादी अधिक है। यह उनका बडा गुण है, क्योकि इसकी वजह से उनमें अपने विचारो और विश्वासो के लिए लड़ने की ताकत, हिम्मत और दृढता आती है। जब कभी राष्ट्र ने आजादी की लड़ाई शुरू की है, मद्रास ने उसमें काफी शानदार हिस्सा

लिया है। समय-समय पर उन्होने अग्रेजी हुकूमत को काफी जोर का धक्का पहुंचाया है।

कांग्रेस के नेताओ की गिरफ्तारी की ख़बर पहुंचते ही सारे मद्रास प्रात मे तहलका मच गया। लोगो के दिल रोष से भर गये। लेकिन मद्रासी उतावले नहा होते, अहिंसा के सिद्धान्त पर बड़ी दृढ़ता के साथ वे टिके रहे। जगह-जगह हड़तालें की गई और जुलूस निकाले गए और जनता ने बड़ी हिम्मत के साथ शान्तिपूर्ण तरीके से अपना विरोध प्रदर्शित किया। अवश्य ही कुछ जोशीले नौजवानो ने लूट और विध्वस के काम भी कई जगह कर डाले।

अन्य सूबो की तरह मद्रास मे भी नौकरशाही ने कठोर दमन-चक्र चलाया। रामनद और देवकोट मे निरपराध जनता पर नृशस अत्याचार किए गए। मलाबार की पुलिस ने इस दिशा में खूब नाम कमाया। शायद इसीलिए सूबे में अनेक स्थानो पर आन्दोलन का दमन करने के लिए उसे भेजा गया।

आज़ाद ख़यालात के बहुत-से न्यायाधीशो ने पुलिस की ज्यादतियो की कठोर शब्दो मे निन्दा की। चित्तूर के डिस्ट्रिक्ट तथा सेशनजज ने भारत-रक्षा नियम ५६ के मातहत जारी किया। मजिस्ट्रेट का हुक्म नाजायज़ करार दिया। इसी प्रकार हाईकोर्ट के जजो ने उन बहुत-से आदमियो को रिहा कर दिया जिनको स्थानीय अधिकारियो ने झूठ-मूठ गिरफ्तार कर लिया था। मदुरा के डिस्ट्रिक्ट जज ने १३ मार्च १९४३ को सिटी मजिस्ट्रेट के ८ महीने की सख्त सज़ा के हुक्म को रद्द करके श्री के० एस० संकरन को रिहा कर दिया। ऐसे और भी अनेक उदाहरण दिए जा सकते है। इनसे पता चलता है कि नौकरशाही ने उन दिनो अपने अधिकारो का मनमाना दुरुपयोग किया। लेकिन आज़ादी की दीवानी जनता भला ऐसे जुल्मों से कभी दब सकती थी? बावजूद सब अत्याचारो के उसने हिम्मत न हारी और लगातार कई महीनो तक भी आज़ादी की बहादुराना लडाई को जारी रखा।

मद्रास प्रान्त को कांग्रेस-विधान मे तीन भागो मे विभाजित किया गया है। उसके अनुसार आन्ध्र, केरल और तामिलनाड अलग प्रान्त माने जाते है। सन् १९४२ के विद्रोह मे इन प्रान्तों ने क्या हिस्सा लिया, इसका अलग-अलग विवरण आगे दिया जाता है।

आंध्र

आध्र के लोग स्वभाव से ही बड़े स्वतत्रता-प्रिय और देश-भक्त है। यहाँ के किसानो के दिलो में अपनी मातृभूमि के प्रति विशेष अनुराग है। दूसरे आंध्र के कांग्रेसी कार्यकर्त्ता सगठन-कार्य में बहुत कुशल है, उन्होने सारी जनता

को कांग्रेस तथा महात्मा गांधी की पुकार पर सब कुछ बलिदान कर देने का तैयार किया है। उन दिनों शत्रु के आक्रमण का खतरा भी आंध्र वालों के लिए कम न था। १९४२ की अप्रैल के शुरू मे ही कोकनाडा और विजगापट्टम जापानी बमबारी के शिकार बने। खतरे की उस घडी में सरकारी अफसरो तथा राव बहादुरों और खाँ साहिबो का सारा मजमा जनता को अरक्षित और असहाय अवस्था में छोड़कर भाग खड़ा हुआ था। जनता ने उस समय यह साफ तौर पर महसूस किया कि केवल राष्ट्रीय सरकार ही शत्रु के आक्रमणो से अपनी रक्षा का इन्तजाम कर सकती है। इस कारण भी अगस्त-आन्दोलन सारे आध्र प्रान्त में बड़े जोरों के साथ चला।

यू० पी० की हैलेट सरकार का तरह मद्रास की रूथरफोर्ड हुकूमत भी दमन की जबरदस्त हामी थी। वह आजादी की माँग करने वाले हिन्दुस्तानियो को कुचल डालना चाहती थी। सारे मद्रास में भयकर दमन का बोल-बाला रहा, हालाकि सर टॉमस रूथरफोर्ड के बिहार चले जाने की वजह से वहाँ युक्तप्रान्त जैसे नृशस और पाशविक जुल्म शायद न हो सके। किंतु दमन अपना मकसद पूरा न कर सका। जनता का उत्साह और जोश दिन-पर-दिन बढता गया। किसानो, मजदूरो, विद्यार्थियो, महिलाओं आदि सभी ने देश की पुकार पर अपनी बहादुराना लड़ाई जारी रखी। आंध्र के वीर सपूतो और देवियो की साहस-भरी कहानी अगस्त सन् ४२ की अनेक अमर घटनाओ में अपना खास स्थान रखती है। यद्यपि आंध्रमे डा० पट्टाभिसीतारामैयाको छोड़कर कोई चोटी का नेता नही है। किन्तु, जैसा कि पहले लिखा जा चुका है, आंध्रके कांग्रेस-कार्यकर्त्ता सगठन-शक्ति और आपसी सहयोग के लिए सारे देश में प्रसिद्ध हैं। गतूर जिले के निदबरोलू स्थान में प्रो० रगा का 'समर स्कूल' है, जो हर साल कम-से-कम २०० उत्साही नौजवानो को देश की आजादी की लडाई के लिए मैदानेजग में भेजता है। आध्रमें किसानो का जबरदस्त संगठन है। यही कारण है कि बम्बई में देश के पूज्य नेताओ के गिरफ्तार होते ही आध्र में वह विशाल तूफान उठा जिसने नौकरशाही को जड़से हिला दिया। अनेक दिन तक, बल्कि यो कहिए, कई महीनो तक, जनता के उस जोशीले आन्दोलन की बदौलत सूबे के कई हिस्सों में अग्रेजी सत्ता चूर-चूर होकर बिलकुल खत्म हो गई।

आध्रमें विशाल जलूस निकाले गए, जगह-जगह ग्राम सभाएँ हुईं और तरह-तरह के जोशीले प्रदर्शन हुए। किंतु जब समझाने-बुझाने के लिए कोई नेता बाहर नही रहा तो कुछ हिस्सो मे दमन का जवाब जनता ने हिंसात्मक

तरीकों से दिया। मि० चर्चिल यूरोप में शत्रु के युद्ध-प्रयत्नो को तहस-नहस कर डालने को भडका रहे थे। जनता ने अपने देश के अन्दर ठीक वही काम शुरू कर दिया। फौजी भर्ती का विरोध किया गया, करबन्दी आन्दोलन चलाया गया और हुकूमत द्वारा लगाई पाबन्दियो को खुले रूप में तोड़ा गया। इसके अलावा टेलीग्राफ और टेलीफोन के तार काट डाले गए, रेलवे स्टेशनों को फूंक दिया गया; पटरियाँ उखाड़ डाली गईं, तथा डाकखानों, आरामगृहों आदि में भी आग लगा दी गई। तीन महीनों की सरगर्मियों के बाद तोड़-फोड़ की कार्रवाइयाँ धीमी पड गईं। सन् १९४३ में पिकेटिंग का बोल-बाला रहा। खुशी की बात यह है कि कोई सरकारी अफसर या जनता का आदमी हिंसा का शिकार नही हुआ।

कोकनाडा, राजामुन्डी, भीमावरम् आदि शहरों में कई दिनो तक पुलिस राज्य रहा। गिरफ्तारियो तथा तमाम नागरिक अधिकारों के दमन का बोल-बाला रहा। बैजवाड़ा तथा अन्य कई स्थानो पर शान्ति कायम रखने तथा रेलवे लाइनो की रक्षा करने के लिए फौज बुला ली गई। सरकार ने नए-नए आर्डिनेंस जारी किए तथा खास अदालतें कायम कीं। भीमावरम सचमुच आंध्र का 'चीमूर' बन गया। ७० आदमियो पर सामूहिक हिंसा का अभियोग लगाया गया जिनमें १६ को फाँसी की सज़ा दी गई। लेकिन ज़ुल्मों का प्रहार जनता की ताकत और भावनाओ को नही कुचल सका। अनेक होनहार सपूत देश के लिए अपने प्राणों पर खेल गए। ऐलोर के श्री डी० नारायण विराजू जेल के सख्त जीवन के फलस्वरूप अपना सारा स्वास्थ्य ही खो बैठे। रिहाई के समय वे बिलकुल मृत्यु-शय्या पर ही थे और हफ्ते भर के अन्दर ही संसार से चल बसे। २१ आदमी पुलिस की अंधा-धुंध गोलियो के शिकार हुए तथा १३७ व्यक्तियो के कोडे लगाए गए, जिनमें से कइयो को तो ४६ कोड़ों तक का प्रहार बर्दाश्त करना पड़ा। लोगों पर ९ लाख से ऊपर सामूहिक जुर्माना थोपा गया।

आन्ध्र में तोड-फोड़ के काम व्यापक रूप में हुए। १७ से अधिक रेलवे स्टेशन फूंक दिए गये। कई स्थानों पर रेल की पटरियाँ उखाड दी गईं। किन्तु इससे किसी की जान का नुकसान नही हुआ। मद्रास और बैजवाड़ा के बीच करीब हफ्ते भर तक तथा नरसापुर और नीड़दबोल के बीच करीब दस-बारह रोज तक गाड़ी बन्द रही। अकीडू और भीमावरम के बीच खुले तौर से करीब १ मील तक पटरी भी उखाड़ डाली गई थी। फौजी गाड़ियाँ भी गिराई गईं। तार काटने का काम सभी ज़िलो में करीब १५०० जगह हुआ। ऐलोर में आम सभा में पहले नोटिस देकर स्वय सेवको ने तार काटे। कई जगह डाक-

घर आरामगृह तथा पुलिस के रेकार्ड आदि फूंक दिए गए। भीमावरम् में सब-रजिस्ट्रार का दफ्तर, पुलिस लाइन, तथा डी० एस० पी० का दफ्तर जला दिया गया तथा तनकू में डिस्ट्रिक्ट मुन्सिफ कोर्ट के रेकार्ड जलाए गए। गतूर जिले के अगाल हालुके में कनुपर्ती के नमक क्षेत्र पर हमला बोला गया। अनंत में सरकारी कालिज की लेबोरेटरी में आग लगा दी गई जिससे करीब ५००००) रु० का नुकसान हुआ।

आजादी के इस जग में आन्ध्र के विद्यार्थियो ने बड़े उत्साह के साथ हिस्सा लिया। करीब-करीब सभी कालेजो में मुकम्मिल हड़ताल रखी गई। कई जगह तो लगातार महीनो तक सस्थाए बन्द कर देनी पड़ी। १०० से ऊपर विद्यार्थियो ने कालेजो का हमेशा के लिए बहिष्कार कर दिया।

पश्चिमी गोदावरी और गतूर के जिलों में आन्दोलन का जोर सबसे अधिक रहा। गतूर में प्रतिबन्धो के बावजूद हड़ताल, जुलूस और सभाओ का आयोजन किया गया तथा कचहरी, थाने आदि सरकारी इमारतो पर हमले किये गए। मुन्सफी, पुलिस-स्टेशन और तमाम सरकारी दफ्तरो पर जनता का कब्जा हो गया। १२ अगस्त को देहाती इलाके में सरकारी हुकूमत का बिलकुल खातमा ही हो गया और वहाँ राष्ट्रीय सरकार कायम करने की कोशिशे की गईं।

जनता के विशाल समूह ने बयात तालुक के सदर मुकाम और सबोर्डिनेट जज के दफ्तर पर कब्जा कर लिया, लेकिन जल्दी ही रिजर्व पुलिस बुला ली गई और उसने इन मुकामो को वापस छीन लिया।

आध्र यूनिवर्सिटी के पदवी दान-समारोह के मौके पर गवर्नर खुद गन्तूर आने वाले थे। इस सिलसिले में सावधानी के तौर पर पुलिस ने १० दिसम्बर की रात को ही जनता के खास-खास नेताओ को गिरफ्तार कर लिया था। लेकिन जनता की भावना इस प्रकार दबने वाली नहीं थी। उसने तिनवेली-गन्तूर रेलवे लाइन को कई जगह से उखाड़ डाला, जिससे गवर्नर को मजबूर होकर बजवाड़ा गन्तूर लाइन से आना पड़ा। जगह-जगह काले झडे लगाए गए। स्टेशन पर यूनिवर्सिटी में भी काले झंडो का प्रदर्शन किया गया। ट्रावणकोर की महारानी को इस अवसर पर भाषण देने के लिए खास अनुरोध करके बुलाया गया था, लेकिन गवर्नर का जैसा स्वागत हुआ, उसको देखते हुए ऐन मौके पर महारानी का प्रोग्राम बदल दिया गया। वाइस चान्सलर ने ही महारानी का भाषण पढकर सुनाया। इससे नौजवानो में भारी रोष फैल गया। गन्तूर की कुछ फौजी इमारतें तथा राष्ट्रीय युद्ध मोर्चे का कुछ

हिस्सा लागो ने जलाकर खाक कर डाला। आन्ध्र के लोगो पर ५॥ लाख रुपए से भी ज्यादा सामूहिक जुर्माना थोपा गया। इसका तीन चौथाई हिस्सा अकेले गन्तूर जिले पर पड़ा।

पश्चिम गोदावरी के जिलो मे ४५५ लोगो को गिरफ्तार किया गया। उनमें से १०० को तो रिहा कर दिया गया, ४५ नजरबन्द रहे तथा ३१० को सजाएँ मिली। कम्युनिस्टो की संख्या दण्डितों में २० तथा नजरबन्दों मे ६ थी। दो व्यक्तियों ने जेल में और ४ ने जेल से बाहर अपने प्राणो की आहुति दी। २ फरार हो गए। करीब ४० मनुष्यो के बेंतें लगी जिनमें से कइयों को तो ४६ प्रहार तक सहने पडे। एक हरिजन विद्यार्थी कोडो की मार से बेहोश होकर गिर पडा। ८६५०) रु० व्यक्तिगत और २६४५००) रु० सामूहिक जुर्माना किया गया। ६ रेलवे स्टेशन, ५ सरकारी दफ्तर, १ शराब की भट्टी तथा १ जमींदार का थाना फूंक दिए गए।

ऐलोर में कई स्थानो पर खुले आम आध्र सरकुलर पढा गया। टेलीग्राफ और टेलीफोन के तार काट डाले गए, दफा १४४ और ५६ को बेधडक तोडा गया तथा फौज की हजार कोशिशों के बावजूद राष्ट्रीय झडा फहराया गया। भीमावरम् मे रेवेन्यू डिवीजनल ऑफिस पर तिरंगा लहराया गया और अफसर को झडे की सलामी देने तथा जनता के साथ आम जुलूस मे शामिल होने को मजबूर किया गया।

नेताओ की गिरफ्तारी के खिलाफ प्रदर्शन करने के लिए देहातियो के एक मजमे ने रेवेन्यू डिवीजनल ऑफिस को घेर लिया और पुलिस की धमकियों के बावजूद वहाँ से हटने से इन्कार कर दिया। पुलिस ने गोलियाँ चलाईं और ४ होनहार सपूतो ने हँसते-हँसते अपने प्राणो की आहुति दे दी। बहुत से लोग घायल हो गए। जिस डाक्टर ने उनका इलाज करके अपना नैतिक फर्ज अदा करने की हिम्मत की, उस पर अदालत मे मुकदमा चलाया गया।

अनेको कस्बो मे मुकम्मिल हड़ताल रखी गई और विद्यार्थियो ने स्कूल कालेजो से मुँह मोड लिया। ऐलोर मे हडतालियो को गिरफ्तार करके ५०) रु० हरेक पर जुर्माना किया गया। विद्यार्थियों ने जजीरें खीच-खीच कर गाडियो का चलना मुश्किल कर दिया, जिसके फल स्वरूप उन्हे बेंतों और जुर्माने की सजा भुगतनी पडी।

पलाकल म्यूनिसपैलिटी तथा डिस्ट्रिक्ट बोर्ड ने 'भारत छोडो' के समर्थन में प्रस्ताव पास किए। उनके खिलाफ नोकरशाही ने काफी सख्त क़दम उठाए।

कवूर सब-जेल में ४ सत्यग्रहियो को बड़ी बेरहमी के साथ पीटा गया तथा एक अन्य सत्याग्रही पर जेल से बाहर लाठी के निर्दय प्रहार किए गए। करीब २ महीने तक पुलिस ने भीमावरम् तालुक के अनेक गाँवों पर हमले बोले और देहातियों के साथ पाशविक मार-पीट की।

आन्ध्र में १३० व्यक्ति नजरबन्द किये गए और १७०० को सजायें दी गईं। तीन जगह गोली-काण्ड हुए, जिनमें २१ आदमी मरे। १३७ व्यक्तियों को कोडों की सजा दी गई। ८ लाख से अधिक रुपया सामूहिक जुर्माना किया गया। १५०० जगह तार काटे गये, १८ रेलवे स्टेशन जलाये गये और ७ जगह रेल की पटरियाँ उखाड़ी गईं। १० जगह पुलिस के रेकार्ड और डाकखाने आदि जलाये गये।

: १० :

केरल भी पीछे न रहा

केरल प्रान्त मे मलाबार जिला, कनाडा जिले का दक्षिणी भाग तथा कोचीन एव त्रावनकोर की रियासतें—ये चार प्रदेश सम्मिलित है। केरल प्रान्त को श्री शकराचार्य जैसे ससार प्रसिद्ध धार्मिक तत्त्वज्ञ, श्री नारायण गुरु जैसे समाज-सुधारक तथा सर सी० सकरन नायर जैसे महान् राजनैतिक कार्य-कर्त्ता को जन्म देने का सौभाग्य प्राप्त है। यह प्रान्त सदा से ही राजनीतिक आन्दोलनों में आगे रहा है। सन् १९२१ के असहयोग और खिलाफत आन्दोलन के समय यहा छ महीने तक ब्रिटिश हुकूमत का प्रभाव नष्ट-प्राय हो गया था। मलाबार के दक्षिणी जिले मे तो सरकारी शासन एकदम पगु बन गया था। मोपलो ने अपनी स्वतन्त्र सरकार कायम कर ली थी। यही कारण है कि जब सन् १९४२ मे आन्दोलन का बिगुल बजा तो यहा के निवासियो ने प्राणो की बाजी लगाकर ब्रिटिश हुकूमत को उखाड फेंकने मे सहयोग दिया।

बम्बई में नेताओ की गिरफ्तारी के साथ ही इस प्रान्त के प्रसिद्ध काग्रेस कार्य-कर्त्ताओ पर भी सरकार का प्रहार हुआ और ६ घटे के अन्दर-अन्दर सर्व श्री केलप्पन, के माधव मेनन तथा के० ए० दामोदर मेनन आदि मुख्य-मुख्य नेता गिरफ्तार करके जेल के सीखचो मे डाल दिये गये। नौकर शाही के इस प्रहार के विरुद्ध लोगो ने हड़ताल, जुलूस, सभा आदि के रूप मे अपना विरोध प्रदर्शित किया। स्कूलो एव कालेजो मे काफी अर्से तक हडताल चलती रही स्थान-स्थान पर बड़े-बड़े प्रदर्शन किये गये। प्रत्येक मुख्य काग्रेस-कार्यकर्त्ता और विद्यार्थी नेता पहले १० दिन के अन्दर-अन्दर गिरफ्तार कर लिये गये।

बहुत से स्थानो पर हजारो की सख्या मे लोगों ने स्थानीय अदालतो और रजिष्ट्री आफिसो पर धावा बोला जिससे अधिकारियो को बाध्य होकर काम बन्द कर देना पड़ा। कुसम ब्राण्ड तालुका इस प्रकार प्रदर्शनो का प्रधान केन्द्र था। पयोली में करीब एक हजार व्यापारियो की भीड़ ने मुन्सफी, पुलिस थाने तथा सब मजिस्ट्रेट के ऑफिस पर हमला किया और उन्हे बन्द करवा

दिया। इसके बाद भीड़ जाकोली गाँव की ओर बढी और वहाँ जाकर सभा के रूप में परिणत हो गई। सभा की कार्रवाई समाप्त होने पर लोग घर जाने लगे तो पुलिस ने उन पर छापा मारा और १७ व्यक्तियो को गिरफ्तार कर लिया। इससे लोगो का उत्साह और भी बढ़ गया और उन्होने दूने जोश मे सभाए करना तथा जुलूस निकालना प्रारम्भ कर दिया। पुलिस ने बार-बार लाठी-चार्ज किया जिससे सैकडो व्यक्ति सख्त घायल हुए। लोगो ने सरकारी अदालतो पर पिकेटिंग की और उन्हे बन्द करवा दिया। उत्तरी मलाबार कोर्ट तालीचरी की सबोर्डीनेट जज की अदालत तथा पयोली, कालीकट, पालघाट आदि स्थानो की मुन्सफियाँ काफी समय तक बिलकुल बन्द रही तथा सरकारी शासन पगु बन गया।

चेमनचरी की छोटी अदालत पर हमला किया गया तथा उसकी इमारत को ताड़-फोड़ दिया गया और सारा रेकार्ड जलाकर नष्ट कर दिया गया। कलाई के सरकारी लकडी के गोले मे आग लगा दी गई। जिससे हजारो रुपये का सामान जलकर भस्म हो गया। तालीचरी अदालत मे एक विस्फोट हुआ जिससे इमारत का कुछ हिस्सा नष्ट हो गया। कनोडा के सब-पोस्ट आफिस पर बम फेंका गया, जिससे मकान को काफी क्षति पहुँची और दिवालो के पत्थर ६३४ वर्ग गज में फैल गये गवर्नमेन्ट हाई स्कूल का शेड, जिसमे कुछ क्लासे लगती थी, फूंक दिया गया। करीब आध मील तक के टेलीग्राम के तार बिलकुल नष्ट कर दिये गये जिससे तारो का आना-जाना कुछ समय तक बन्द रहा।

कोटायन मे पाच देहाती पटेल-आफिसो के रेकार्ड जला दिये गये। कुथुपरम्बा के पास एक छोटो अदालत का दफ्तर भी अग्नि देवता के भेंट चढा दिया गया। तालीचरी और माही के बीच मे एक रेलवे पुल बम से उडा दिया गया।

माही और नादपुरम् लाइन के रेलवे-स्टेशनो को जलाने का प्रयत्न किया गया तथा कुछ स्टेशनो के कागज-पत्र जला भी दिये गये। माही के मुकाली स्थान का नमक डिपो तोड़-फोड़ कर नष्ट कर दिया गया। माही एव नादपुरम् सड़क के एक रेलवे पुल पर विस्फोट हुआ जिससे उसकी दीवारो एव खम्भो को बहुत क्षति पहुँची। नादपुरम् की मुन्सफी में भी बम फटा।

कालीकट और कलाई के बीच मे एक रेलवे पुल पर विस्फोट हुआ, किन्तु अधिक क्षति न हो सकी। २१ अगस्त की रात को यूरोपियन गोलफ क्लब का मकान तथा कालीकट के पास मयारम्बा का मोटर-शेड जला दिये गये।

मन्चारी के पास एक सड़क का पुल बम से उडा दिया गया। हाईकोक मेमोरियल मोपला विद्रोह स्मारक को जलाने की कोशिश की गई, जिससे काफी क्षति पहुँची।

उत्तरी मालाबार के चिमननचेरी स्थान मे जनता की भीड़ ने रेलवे स्टेशन एव सब रजिस्ट्री आफिस पर हमला किया और उसे जलाकर भस्म कर दिया। मलाबार के कई जिलो में टेलीग्राफ तथा टेलीफोन के तार काटने का काम तो रोजमर्रा की चीज बन गई थी। कनानोर के पास पल्लीकुन्नू स्थान पर विस्फोट हुआ जिससे वहाँ का डाकखाना बिलकुल तहस-नहस हो गया। कुछ रेलवे स्टेशनो तथा पुलों को भी तोडा-फोडा गया।

एक दिन की बात है कि गवर्नर काननोर कालीकट जा रहे थे। लोगो ने चम्बल स्थान के पास रास्ते में भयकर आग लगा दी जिससे गवर्नर की स्पेशल कार आग न बढ पाई और उन्हे बाध्य होकर रात चम्बल में ही बितानी पडी। इसी प्रकार एक बार इरनाकुलम में गवर्नर का भाषण होने वाला था। सभा के लिए एक विशाल पण्डाल बनाया गया था। उत्तेजित जनता इसे सहन न कर सकी और गवर्नर के आने के कुछ मिनट पहले वह पण्डाल पर टूट पड़ी तथा उसमे चारो तरफ आग लगा दी। गवर्नर महोदय को निराश लौट जाना पडा।

पुलिस अधा-धुध लोगो को जेल मे ठूँस रही थी। किन्तु सरकारी दमन से लोगो का उत्साह मद होने की अपेक्षा और भी बढ़ रहा था। यही कारण है कि दमन के बावजूद लोग नेताओं की जयतियो आदि उत्सव बड़े समारोह से मनाते थे। १९४२ में गाँधी-जयन्ती के दिन कालेजो, स्कूलो एव बाजारो मे इतनी जोर की हडताल रही कि चारो ओर बिलकुल सुनसान छा गया। उस समय के वातावरण को देखकर यह अच्छी तरह से अनुमान लगाया जा सकता था कि जनता कितनी क्षुब्ध है। जब नेताओ की गिरफ्तारी की खबर पहुँची तो गणपति हाईस्कूल तथा दो कालेजो के विद्यार्थी बाहर आगये और अपने विद्यालयो के सामने प्रदर्शन करने लगे। शिक्षा-अधिकारियो के समझाने-बुझाने और पुलिस की लाठी-चार्ज की धमकियो का भी उन पर कोई असर नही हुआ।

कोलनगड़े के विद्यार्थियो ने तो काफी बहादुरी का परिचय दिया। जब पुलिस वाले रिवाल्वर निकालकर खडे हो गये तो भी विद्यार्थी भयभीत न हुए, प्रत्युत उनमे से कुछ उत्साही एव जोशीले विद्यार्थी आगे आये और एक अहिंसक सिपाही की भाँति उन्होने अपने कुर्ते हाथों से फाड़कर अपनी खुली छाती को रिवाल्वर के आगे कर दिया।

पुलिस के दमन की कहानी सुनकर बाईपुर की जनता उत्तेजित हो गई तथा उसने नदी मे खड़े हुए कुछ मोटर बोटो एव देहाती नावो को जला दिया।

तालीचरी सेशन कोर्ट मे एक विस्फोट हुआ जिससे कोर्ट की इमारत को काफी क्षति पहुची।

फिरोक के कुछ व्यक्तियों ने रेलवे-पुल पर तीन बम रख दिये। गाडी की धड़धड़ाहट से दो बम स्वतः ही पटरी से नीचे गिर गये। तीसरा गाड़ी के नीचे आने से फटा, किंतु उससे कुछ नुकसान न हो सका।

सरकार का दमन-चक्र बड़ी उग्रता से चला। लोगों को पीटना, उनके घर जला देना, उनसे मनमाने पैसे वसूल करना, उनकी बहन-बेटियो को बेइज्जत करना, आदि तरह-तरह के अत्याचार हुए। लोगो ने सरकारी दमन का काफी अर्से तक मुकाबला किया, किंतु मुख्य-मुख्य कार्यकर्त्ताओ के जेल भेज दिये जाने से आन्दोलन का बाह्यरूप बहुत अशो तक धीमा पड़ गया। किंतु क्रांति की आग लोगो के हृदयों मे अन्त तक धधकती रही।

एक ओर तो लोग सरकारी दमन की चक्की मे पिस रहे थे, तो दूसरी ओर अकाल अपनी भयावनी आखो से समूचे प्रदेश को घूरने लगा। बर्मा के पतन के साथ यहा की भोजन-समस्या विकट हो गई; क्योकि वहा से आने वाला चावल बन्द हो गया। लोग भूखो मरने लगे। सरकार ने लोगो की सहायता करने में कुछ उपेक्षा दिखाई। किंतु काग्रेस-कार्यकर्त्ताओ ने ग्राम-सेवा-संघो का पुनरुद्धार किया, उन्होंने अन्य प्रान्तो से भी अन्न प्राप्त करने की कोशिश की। किंतु सरकार का पूरा सहयोग न मिलने के कारण अन्न प्राप्त करने एव प्राप्त किये हुए अन्न को लाने में पूरी सफलता नही मिल सकी। परिणामस्वरूप काफी लोग भूखो मरने लगे तथा काल के अनिवार्य साथी हैजे एव चेचक ने लोगो को धर दबाया। सरकारी विज्ञप्ति के अनुसार भूख एव बीमारी से करीब ४० हजार व्यक्तियो की जाने गईं।

मुख्य-मुख्य काग्रेस नेता जेलो मे बन्द थे, अतएव सहायता-कार्य जितना हो सकता था उतना नही हो पाया। फिर भी अन्य प्रान्तो के कार्यकर्त्ताओ के सहयोग से 'कोलेरा रिलीफ कमेटी' स्थापित की गई। अखिल भारतीय हरिजन सेवक सघ के प्रधान श्री ठक्कर बापा एव श्रीमती कमलादेवी ने अकाल एवं बीमारी से आक्रान्त प्रदेशो का निरीक्षण किया। उधर श्री के० बी० गोपाल मेनन तथा श्रीमती जी० सुशीला ने काग्रेस स्वय सेवको की सहायता से उपचार का कार्य प्रारम्भ किया। कमेटी की ओर से विभिन्न स्थानो पर १२०

सहायता-केन्द्र स्थापित किये गये। इन केन्द्रो में कुल मिलाकर १२,१९२ मरीजों का इलाज हुआ, जिसमे ९,४१२ व्यक्ति ठीक हुए। महामारी एव अकाल के कारण बहुत से घर बरबाद हो गये, जिससे छोटे-छोटे अनाथ बच्चे सड़कों पर घूमने लगे। ग्राम-सेवा-संघ ने इनकी रक्षा का भार अपने हाथों में लिया और भारत सेवक समिति के स्वर्गीय श्रीयुत बी० आर० नैयर की सहायता एवं सहयोग से कई स्थानों पर अनाथालय खोले। आज भी उस प्रदेश में चार अनाथालय काम कर रहे हैं।

सहायता-कार्य के साथ-साथ कमेटी ने रचनात्मक कार्यक्रम को भा पूरे तौर से अपनाया। उसने 'देशीय महिला समाज' की सहायता से २० स्थानो पर कताई के केन्द्र स्थापित किये। इसी प्रकार दूसरे कार्य भी प्रारम्भ हुए। पर सरकार इन रचनात्मक कार्यों को भी सहन न कर सकी। उसने ग्राम-सेवा-सघ के मुख्य-मुख्य स्वयंसेवक गिरफ्तार करके नजरबन्द कर दिये गये, सघ के दफ्तरो पर से झडे एवं साइनबोर्ड जब्त कर लिये गये तथा सघ की बैठक को गैरकानूनी घोषित कर दिया गया। इतना ही नही, सघ के प्राय: सभी दफ्तरो की तलाशियां ली गईं और खास-खास कागज जब्त कर लिये गये।

अकाल एवं महामारी के बावजूद भी लाग लगातार सभाएं करते रहे। सरकारी पाबन्दी को तोडकर लागो ने कालाकट एवं बदगड़ा में विशाल सभाएं की। पुलिस ने लाठी-चार्ज किया, पर लोग कार्रवाई खत्म करके ही हटे। गाधीजी ने जब जेल में उपवास किया तो यहा के कुछ स्वय सेवक पैदल पूना की ओर चल पड़े। थोड़ी दूर जाने के बाद ही पुलिस ने उन्हे गिरफ्तार कर लिया और जेल के सीकचो मे बन्द कर दिया।

शात एव अहिंसक प्रदर्शनो पर अंधा-धुध लाठी-चार्ज किये गये। तोड़-फोड़ के कामो मे भाग लेने वाले व्यक्तियों का पता लगाने में बड़ी सख्ती एव बर्बरता से काम लिया गया। निर्दोष व्यक्ति बिना वारण्ट के गिरफ्तार कर लिये जाते थे तथा जेल में उनके साथ बड़ा अनुचित व्यवहार किया जाता जाता था। प्रधान नेताओ को भी खाने, पीने, पहनने, सोने आदि की पूरी सुविधाये नही थी, फिर बेचारे छोटे कार्य-कर्त्ताओ का तो जिक्र ही क्या? पुलिस वाले अपनी इच्छानुसार रात को लोगो के घरो में घुस जाते थे और उनकी तलाशी लेते थे। इस प्रान्त की पुलिस झूठे केस बनाकर निर्दोष लोगों को फाँसने के निंदनीय कार्य में भी पीछे न रही। नारायनन के मुख्य काग्रेस नेताओ एवं कार्यकर्त्ताओ को पुलिसवालो ने तालीचरी षड्यन्त्र केस मे फँसा लिया। उन पर उत्तरी मलाबार के तोड़-फोड़ के कामो का अभियोग लगाया गया।

परिणाम स्वरूप ब्रालन नामक व्यक्ति को १० वर्ष की तथा ५ अन्य व्यक्तियो को ७-७ वर्ष की सजाए हुई। इसी प्रकार डाक्टर के० वी० मेनन आदि को कम्युनिस्टो की सहायता से कीझारियर बम केस फँसाया गया। फलत डाक्टर महोदय एव उनके १०-१५ साथियो को ७ से १० वर्ष तक की सख्त सजायें दी गई। केरल प्रान्त की जनता को इस आन्दोलन में दो पार्टियो के विरुद्ध लडना पडा—एक अंग्रेजी सरकार और दूसरी कम्युनिस्ट पार्टी। कम्युनिस्टो ने अपने 'जन-युद्ध' नारे के साथ राष्ट्रीय आन्दोलन-कर्ताओ के विरुद्ध हरेक सम्भव तरीके से पुलिस की मदद की। तालीचरी की घटना है कि वहाँ के हाई स्कूल में हेड-मास्टर ने एक विद्यार्थी को 'महात्मा गाधी की जय' का नारा लगाने के अप-राध में जूते से पीटा। विद्यार्थियो ने इसके विरोध में हडताल कर दी। कम्यु-निस्टो ने विद्यार्थियो का पक्ष लेने के बजाय अधिकारियो की सहायता की।

इस प्रकार सरकार ने इस आन्दोलन के सिलसिले में ७३० व्यक्तियो को विभिन्न प्रकार की सजाएँ दी तथा ३३ को नजरबन्द रखा। देश की आजादी की लडाई मे शहीद होने का सर्व प्रथम सौभाग्य श्री नवीनचन्द ईश्वरलाल सराफ को प्राप्त हुआ। यह १९ वर्षीय छात्र था और कालीकट के जमोरिन कालेज की इंटरमीजियेट कक्षा में अध्ययन कर रहा था। वह विद्यार्थियों का नेतृत्व कर रहा था। अत इस पर केस चला और उसे ७५) रु० जुर्माना या तीन महीना कैद की सजा दी गई। लड़के की गरीब माता जैसे-तैसे रुपये जुटाकर अदालत मे पहुँची, परन्तु वीर लड़के ने जुर्माना देकर छूटने के बजाय जेल जाना अधिक ठीक समझा। उसने कहा, 'माँ, यदि तुम जुर्माना अदा करोगी तो मुझे जिन्दा न पाओगी।' जुर्माना अदा न करने के कारण लडके को ३ माह के लिए अलीपुरम् जेल में भेज दिया गया। जेल में अस्वच्छ भोजन एव रहने सहने आदि की तकलीफ के कारण कुछ ही दिनों के बाद वह बीमार पड गया। डाक्टरो ने उसके इलाज में लापरवाही दिखाई। और एक महीने की बीमारी के बाद यह रिपोर्ट दी कि उसे मलेरिया नहीं, टाइफाइड है। अब उसकी हालत बहुत ही शोचनीय हो गई और अधिकारियो को बंदियों और बाहर वालो नें काफी दबाया तो अन्त में मेडिकल अफसर ने उसे बेलारी हैडक्वार्टर के अस्पताल में भेज दिया। दुर्भाग्य से वहाँ पर भी उसका ठीक उपचार नहीं हुआ और इस प्रकार छूटने की अवधि के चार दिन पूर्व—३१ दिसम्बर १९४२ को वह वीर अपनी बूढ़ी माँ एवं भारत-माता को बिलखती हुई छोड़ बन्दी की हालत में ही इस संसार से विदा होगया। आज नवीन इस संसार मे नही है, किन्तु उसका बलिदान सदियो तक

देश के बच्चो में अपनी मातृ-भूमि की आन के लिए प्राण-न्योछावर करने की पवित्र भावना जाग्रत करता रहेगा।

इसी प्रकार श्री कोम्बीकुट्टी मेनन तथा कुन्शीरमन ने भी जेल मे ही तिल-तिलकर अपने प्राण गवा दिये, किन्तु मातृभूमि की आन पर किसी प्रकार का धब्बा नही आने दिया। केरल प्रान्तीय काग्रेस कमेटी के भूतपूर्व सभापति सर आई० एस० प्रभू भी जेल मे बड़े बीमार रहे। जब वे स्वास्थ्य की खराबी के कारण छोड़े गये तो बिलकुल अस्थि-पञ्जर बने हुए थे। छूटने के कुछ ही दिन बाद उनकी मृत्यु हो गई। प्रसिद्ध काग्रेस कार्यकर्त्ता सर पी० के० कुन्शीशकर मेनन की मृत्यु भी इसी प्रकार हुई।

त्रावणकोर की सरकार ने शुरू से ही बड़ी सख्ती से काम लिया। अभी तक जो रिपोर्ट मिल सकी है उसके अनुसार यहाँ पर कुल एक सौ व्यक्तियो को विभिन्न समय के लिए जेल हुई।

कोचीन रियासत की जनता ने भी बड़ी दृढ़ता के साथ 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव का समर्थन किया। त्रिपुर एव एरना कुलम (कोचीन) के विद्यार्थियो ने उल्लेखनीय भाग लिया। पुलिस ने भी यहाँ खूब जोरो से दमन किया। उसने छात्राओ तक को स्कूल के अदर घुसकर पीटा। इस इलाके में कुल १५ व्यक्तियो को जेल की सजा हुई।

तामिलनाड

तामिलनाड के निवासियो की प्रकृति आन्ध्र निवासियो की प्रकृति से बिलकुल भिन्न है। उनकी बुद्धि तीव्र है। वे प्रत्येक वस्तु को तर्क की कसौटी पर कसकर ग्रहण करते है। तामिलनाड की सस्कृति उच्च कोटि की है तथा उनका अतीत बहुत उज्ज्वल है। तामिलनाड के निवासी एक प्रधान नेता के पीछे जीवन देने वाले है। महात्मा गान्धी के प्रति विशेष श्रद्धा होने के कारण रचनात्मक कार्य-क्रम की ओर इनका खास झुकाव है। एक सच्चे राष्ट्रीय सैनिक की भांति यहा के निवासियो ने सदा से ही देश की आजादी की लड़ाई में हिस्सा बटाया है। तामिलनाडो अपनी शक्ति को एक स्थान पर केन्द्रित करके आगे बढते है' अतएव १९४२ मे अन्य स्थानो की अपेक्षा यहाँ आन्दोलन अधिक सफल रहा। मद्रास, तजोर, त्रिचनापल्ली, कुम्बाकनम एवं मदुरा आदि कई स्थानो पर आन्दोलन की गति बहुत तीव्र एव सुव्यवस्थित रही। आन्दोलन का रूप पूर्ण रूप से अहिंसक रहा।

नेताओ की गिरफ्तारी का समाचार पाकर तामिलनाडी तिलमिला

उठे। ६ अगस्त से समूचे प्रान्त में आम हड़ताल प्रारम्भ हो गई। स्थान-स्थान पर विशाल जुलूस निकाले गय, बड़ी-बड़ी सभायें की गईं तथा अन्य तरीको से विरोध प्रदर्शित किया गया। कई स्थानो पर शांतिपूर्ण प्रदर्शनो पर पुलिस ने लाठी-चार्ज किया तथा अश्रु-गैस छोड़ी। किन्तु लोगो का साहस कम नही हुआ। इस प्रकार समूचे तामिलनाड मे अंग्रेज-विरोधी लहर प्रवाहित हो उठी।

अन्य प्रान्तो की भाँति तामिलनाड के विद्यार्थियो ने भी आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया। लाठी खाने या गिरफ्तार होने मे सबसे आगे विद्यार्थी हा थे। विद्यार्थियो ने तोड-फोड़ के कार्यो मे भी भाग लिया, किन्तु अधिकाश में उनके कार्य महात्मा गाधीजी की नीति के अनुसार थे। नेताओ की गिरफ्तारी की सूचना पाते ही मद्रास के सभी विद्यार्थी विद्यालयो से बाहर निकल आये। मेडिकल एव इजीनियरिंग कालेजो तथा अन्य कालेजों के होस्टलो पर झण्डे फहराये गये। एक दो होस्टलों के अधिकारियों ने जबरन झण्डे उतार लिये। विद्यार्थी इस अपमान को सहन न कर सके। वे होस्टल छोड़कर बाहर निकल आये। स्कूलो में क़रीब एक-डेढ सप्ताह हड़ताल रही। विद्यार्थियो के जुलूसो पर बुरी तरह से लाठी-चार्ज किये गये तथा २ सितम्बर को लोयल्ला कालेज के दो विद्यार्थियों को बेतों एव कोड़ो से भी पीटा गया। एक इजीनियरिंग कालेज के विद्यार्थी, जिन्होने अभी तक हड़ताल मे भाग नही लिया था, इस घटना से उत्तेजित होकर आन्दोलन की आग मे कूद पड़े। जब लाठी-चार्ज से सरकार को सफलता न मिली तो उसने एक हिदायत जारी की कि अमुक तारीख तक जो विद्यार्थी अपनी कक्षाओ में हाजिर न होगे उनका नाम काट दिया जायेगा। किन्तु एक भी विद्यार्थी स्कूल मे उपस्थित न हुआ। परिणाम-स्वरूप अधिकारियो को कुछ समय के लिए स्कूल एव कालेज बन्द कर देने पड़े। आन्दोलन में भाग लेने के कारण विद्यार्थी गिरफ्तार करके जेल के सीखचो में बन्द किये गये।

तामिलनाड के मजदूर भी देश की आज़ादी की इस लडाई मे पीछे न रहे। हज़ारो मजदूरों ने भी आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया मद्रास मिल्स हड़ताल के कारण बन्द कर देनी पडी। इसी प्रकार बकिंघम कर्नाटक मिल्स, जो विदेशियों के हाथ मे थी तथा जिसमें युद्ध के लिये खाकी कपडा तैयार होता था, काफी अर्से तक बन्द रही। इससे सरकार के युद्ध-प्रयास में काफी क्षति पहुँची।

प्रान्त की अन्य औद्योगिक मिलो एव फैक्टरियो मे भी काफी अर्से तक हड़तालें चलती रहीं। कोयम्बटूर ऐसी हड़तालो का प्रधान अड्डा था।

रेलवे कर्मचारियो नें भी हडताल में भाग लिया। जिससे बहुत-सी 'थ्रू' गाड़ियाँ बन्द होगईं। मद्रास से कलकत्ता जाने वाली गाड़ी करीब २ सप्ताह तक बन्द रही। बैजवाडा के पास हडताल करने वालो ने "गैङ्गमैनो" की सहायता से लगभग २० मील की पटरी बिलकुल उखाड़ कर फेंक दी।

जिलों में आन्दोलन

त्रिची जिला—इस जिले में दो स्थानों पर रेल-गाड़ियां गिराई गईं—एक त्रिची-इरोड लाइन पर करूर के पास तथा दूसरी त्रिची-मदुरा लाइन पर त्रिची स्टेशन से थोडी दूर। रेल के स्लीपरो तथा पटरियो को हटाने का कार्य तो बहुत स्थानो पर और काफी अर्से तक हुआ। तोड़-फोड़ के इन कार्यों को रोकनें के लिए मद्रास से जाने वाली प्रत्येक गाड़ी में दो डिब्बे सशस्त्र सिपाहियो से भरे हुए जाते थे। यही नही, स्थानीय सरकार नें गाँवो के अफसरो को यह हिदायत दे दी थी कि वे रात-दिन गाँव वालों को रेल की पटरियो की निगरानी रखने के लिए तैनात रखे। मनीयाची जकशन से जाने वाली सब ब्रांच लाइनें उखाड़ दी गईं। अधिकारी गाँव वालो को पकड़-पकड कर पहरा देने के लिए तैनात करते, किन्तु इससे कुछ लाभ नही हुआ। आखिर १०० पंजाबी सैनिकों को घटनास्थल पर तैनात किया गया, तब तोड-फोड़ का काम रुका। मन्नारगुड़ी स्टशन पर जनता की एक भीड ने हमला किया और उसमें आग लगा दी। जब स्टेशन जल रहा था तो निदमंगलम् से एक गाड़ी वहा पहुँची। भीड़ ने गाड़ी को घेर लिया और अधिकारियों को गाड़ी वापस निदमंगलम् लेजाने के लिये बाध्य किया।

रामनद जिला—तिरूवदनी इस जिले का सदर मुकाम है। अतएव जिले के लोगो ने यह निश्चय किया कि तिरूवदनी की ओर प्रस्थान किया जाय और रास्ते में अंग्रेजी सरकार का जो भी चिह्न दिखाई दे उसे या तो नष्ट कर दिया जाय या अपने अधिकार मे कर लिया जाय। लोगों ने पुलिस सब-इन्सपेक्टर के पास भी हुक्म भेजा कि जनता का राज्य कायम होचुका है, अत: उसे जनता के सामने आत्म-समर्पण कर देना चाहिए। इन्सपेक्टर लोगों के उत्साह को जानता था। इसलिए उसने समझ लिया कि लोगों की माँग का विरोध करना खतरे से खाली नहीं। परिणाम स्वरूप उसने अपने सब कर्मचारियों को आज्ञा दे दी कि सरकारी वर्दी उतार कर फैंक दे और किसी सुरक्षित स्थान में जाकर छिप जायं। सबने वैसा ही किया। परिणाम स्वरूप पुलिस स्टेशन बिलकुल खाली हो गया और लोगों को उस पर अधिकार करने मे कुछ भी अड़चनें न हुईं। लोगों ने थाने की सब चीजें अपने अधिकार में कर ली, सब

जेल तोड़कर कैदियों को बाहर निकाल लिया तथा बाद में तमाम सरकारी दफ्तरों में आग लगा दी।

इस घटना से लोगों का उत्साह बढ़ गया और वे बडे जोश के साथ तोड़-फोड़ के कामों में जुट गये। यातायात के सब साधन नष्ट कर दिये गये। सड़कें तोड़ डाली गईं। संयोगवश एक ब्रांच रोड तोड़ने से बच गई। फौज वाले उस रोड से काफी मात्रा मे शहर के अन्दर आ धमके। पुलिस वाले जो अब तक डर के मारे छिप गये थे, फौज की सहायता पाकर मैदान में आ खड़े हुए। फौज एवं पुलिस वालों ने लोगो पर अधाधुध अत्याचार किये। स्त्रियों के साथ बलात्कार किया गया, लोगो के घर लूट लिये गये तथा गाँव के गाँव जलाकर नष्ट कर दिये गये। लोग अंधा-धुंध जेल के अन्दर ठूंस दिये गये तथा उनको बुरी तरह से पीटा गया।

कोयम्बटूर ज़िला—इस ज़िले के लोग पुलिस की ज्यादतियो का हाल सुनकर उत्तेजित हो उठे और उन्होने शहर के एक प्रसिद्ध हवाई अड्डे को जलाकर नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। पुलिस एव फौज काफी संख्या मे घटना-स्थल पर पहुँच गई और आस-पास के २२ गाँवों को खतरे का स्थान घोषित कर बाहर वालो को अन्दर नही घुसने दिया। इस प्रकार चारो ओर से रास्ता रोककर मलाबार की स्पेशल पुलिस ने तरह-तरह के अत्याचार किये। गावो के तमाम पुरुषो को गिरफ्तार करके एक अत्यन्त तंग स्थान में बन्द कर दिया, जहां पर कि लोगों को एक दूसरे मे बिलकुल चिपककर खड़ा रहना पड़ा। इस दर्दनाक स्थिति मे लोगो को एक सप्ताह से ज्यादा वक्त न बिताना पड़ा। बन्दियो के भोजन का प्रबन्ध सरकार ने स्वय करने के बजाय उनके घर वालो से करवाया बदियो का बाहर से आया हुआ भोजन तक चुरा लिया जाता था। सम्पन्न घरों को रात में हमला करके लूटा गया। जिस स्थान पर लोगों को बन्दी बनाकर रखा गया था, वह मजिस्ट्रेट के कैम्प के सामने ३६-४० गज की दूरी पर ही था। किन्तु अपनी आँखो के सामने लोगो पर अत्याचार होते देखकर भी कानून के उस ठेकेदार ने कुछ कार्रवाई नही की।

तंजौर जिला—१४ अगस्त १९४२ को मद्रास सरकार द्वारा प्रकाशित एक प्रेस नोट के अनुसार १३ अगस्त को इस जिले के तीरुवाड़ी स्थान पर जनता की एक बड़ी भीड ने डिस्ट्रिक्ट मुन्सिफ-कोर्ट तथा सब-रजिस्ट्रार आफिस पर धावा किया और तिजोरियाँ तोडकर सब रुपये-पैसे लूट लिये। उसने दूसरे आफिसों में भी तोड़-फोड की तथा कुछ जरूरी कागजात जला दिये।

आन्दोलन के तूफानी केन्द्र

कोयम्बटूर—कोयम्बटूर का इलाका अपने उद्योग और व्यवसायो की बदौलत 'मद्रास प्रान्त का अहमदाबाद' कहलाता है। यहाँ करीब ४० मिले, कई बड़े-बड़े आटोमोबाइल वर्कशाप, दो टैकनिकल इन्स्टीटयूट तथा एक इंजीनियरिंग कालेज है। ६ अगस्त को सारे शहर मे मुकम्मिल हड़ताल रही और एक विराट सभा का आयोजन किया गया। पोदनूर से सिगनालूर जाती हुई एक मालगाड़ी गिरा दी गई जिसमे गोला-बारूद भरा हुआ था। कोयम्बटूर के फौजी हवाई अड्डे को फूंककर राख कर दिया गया। अनेक शराब की दुकानें जला दी गईं तथा कचहरियो पर पिकेटिंग का जोर रहा।

मद्रास—देशप्रिय नेताओ की गिरफ्तारी की सनसनीखेज़ खबर सारे मद्रास शहर में बिजली की तरह दौड गई। मुकम्मिल हडताल के अलावा लम्बे-लम्बे जुलूस निकले; जिसमे विद्यार्थी और मज़दूर भारी तादाद मे शरीक हुए। ११ अगस्त को चेतपुर मे कॉलेज के विद्यार्थियो के जुलूस पर लाठी-चार्ज किया गया, जिसमें कई नौजवानो के चोटे आईं। उत्तेजित भीड़ ने ईंट और पत्थरो से एक सब इन्स्पेक्टर तथा ४ कान्स्टेबलो की मरम्मत कर डाली। १२ ता० को टेक्नोलोजी स्कूल के जुलूस पर भी ब्रोडवे में लाठी-चार्ज किया गया। जनता ने रेलवे स्टेशनो पर हमला बोल दिया, तार काट डाले, रेकार्ड जला दिए, पटरियाँ उखाड़ दी तथा स्टेशनो को फूंक दिया।

मदुरा—आर्य सस्कृति के पुराने केन्द्र में जगह-जगह जुलूस और प्रदर्शनो का बोल-बाला रहा। ११ ता० को जिला मजिस्ट्रेट की मौजूदगी में आन्दोलनकारियो की पुलिस से मुठभेड हो गई, जिसमे ३ व्यक्ति धराशायी हो गए, १२ सख्त घायल हुए तथा २२ के हल्की चोटें आईं।

कुम्बकोनम—१६ अगस्त को सुबह ७ बजे करीब १०००० की भीड ने विराट् जुलूस निकाल कर दफा १४४ को खुले तौर पर तोडा। उत्तेजित भीड ने ईंट-पत्थर फेंके, जिससे कुछ जिला एवं पुलिस अधिकारियो के चोटें आईं। लाठी-चार्ज तथा गोलियों के १६ राउण्ड दागे जाने पर भी जनता टस-से-मस न हुई।

विध्वंस के अन्य कार्य—सूबे में कम-से-कम १०० जगहो पर रेलवे-स्टेशनो और पुलिस-स्टेशनो को फूंका गया। जगह-जगह पटरियाँ उखाडी गईं तथा टेलीग्राफ और टेलीफोन के तार काटे गए। मलाबार-कोचीन एक्सप्रेस को तिरपुर में पूरे हफ्ते भर तक पड़े रहना पड़ा। कोयम्बटूर से करीब

९ मील दूर एक घाटी मे फौजी कैम्प को गहरा नुकसान पहुँचाया गया। लोगों की भीड़ पहाड़ी पर जमा हो गई और पत्थरों की वर्षा करने लगी। २०० टैंक जलकर बरबाद हो गए तथा और भी काफी सामान नष्ट कर दिया गया। फौज ने भी २०-३० मनुष्यो को गोली का शिकार बनाया। देहाती इलाकों में भी सामूहिक रूप से विध्वंस और विनाश के काम किये गए। कोयम्बटूर से करीब २० मील की दूरी पर सभी सरकारी दफ्तर फूंक दिएगए। रामनद मे स्टेशन जलाए गए तथा पटरियाँ उखाडी गईं। दिसम्बर के महीने मे कचहरी के अन्दर बमों का विस्फोट होते-होते बचा। ऐसे ही एक रोज मद्रास हाईकोर्ट के गालियारे में भी एक बम ऐन मौके पर फटने से बचा।

दमन—सरकारी और रेलवे की जायदाद को नुकसान पहुँचाने के अपराध में मनागगट्टी गाँव पर ५०,०००)रु०, त्रिवेली (जि० तंजौर) २० ०००) रु०, करायकुमी ५०,०००) रु० और पुलंकुरीची (जि० रामनद) पर ५०००) रु० सामूहिक जुर्माना किया गया। दफा १४४ तथा भारत रक्षा नियम ५६ और ३६ का पुलिस ने जिस मनमाने ढग से इस्तेमाल किया उसकी हाई कोर्ट जजों तथा सेशन जजो ने बडी सख्त आलोचना की। छोटे-छोटे अपराधों के लिए बूढो, बालको और स्त्रियों तक के साथ भयकर मार-पीट की गई। गांधी-जयन्ती का कार्यक्रम रोक देने के लिए झूठ-मूठ हवाई हमले की खतरे की घंटी का भी इस्तेमाल किया गया।

मदुरा में कर्फ्यू तोड़ने वाले अनेक व्यक्तियो को एक दम गोली से उड़ा दिया गया। एक आदमी जो अपनी बीमार पत्नी के लिए दवा लेने किसी डाक्टर के यहाँ जा रहा था गोली का शिकार हो गया। इस समाचार का सुनकर बीमार पत्नी भी चल बसी।

देवकोटा-काण्ड—नौकरशाही से देवकोटा में जो जुल्म ढाये वे रौंगटे खड़े करने वाले हे। हिन्दुस्तान के बिलकुल दक्षिणी किनारे पर स्थित इस कस्बे में तथा आस-पास के देहातों में पूरे अगस्त और सितम्बर के महीनों में मार-पीट, लूट, स्त्रियो के अपमान आदि अत्याचारों का बाजार गर्म रहा। मलाबार पुलिस और ब्रिटिश फौज ने लोगो की जिन्दगी दुश्वार बना दी। खद्दर पहनना तक भारी जुर्म समझा जाने लगा तथा प्रतिष्ठित घराने के भले व्यक्तियों को भी तरह-तरह के अपशब्द सुनने पड़े और मार-पीट तक सहनी पड़ी। बहुत से नौजवानों को हवालात मे भी सख्त वेदनाएं भुगतनी पडी। कइयों के तो नाखून भी उखाड़ डाले गये।

मशहूर सरस्वती पुस्तकालय का सारा सामान पुलिस लूट कर ले गई।

कुछ गुडों के साथ वे एक शादी के उत्सव में जा घुसे। दूल्हे के साथ मार-पीट की और रग में भग कर डाला। बचारा, भोली-भाली ग्रामीण जनता सब कुछ छोड-छाड़ कर जंगलो में भाग जाने को मजबूर हुई।

जुल्म और अत्याचारो के जो बयानात मिले है उन्हे सुनकर कोई भी इन्सान अपने-आपको काबू मे नही रख सकता। दिन-दहाडे स्त्री जाति का भयंकर अपमान किया गया। २५ अगस्त को आंधीकयल मे श्री कायूब मुदालियर की धर्मपत्नी का पुलिस ने घोर अपमान करने का घोर पाप किया। २६ अगस्त को जब श्री गोपाल केशवन तलाश न किये जा सके, तो उनकी असहाय स्त्री को खौफनाक यातनाओ का शिकार बनाया गया। १३ सितम्बर को विलंक्तूर गांव से श्री मुलीरुलेपा सरवई की स्त्री तथा ३ अन्य औरतो को बस में बैठाकर सब-जेल ले आये। उन्हे नग्न अवस्था मे पेड से जकड दिया गया और ४ गोरे सार्जेन्टो ने तथा पुलिस मैनो ने वह निर्लज्ज और वहशियाना काण्ड रचा कि बेचारी असहाय महिलाओ ने अपने सिर पेड़ से दे मारे और नौकरशाही को अभिशाप देती हुई इस दुनिया से चल बसी। उनके शव के साथ भी न जाने क्या-क्या किया गया? अगले ही रोज श्री मुथीरुलेपा सरवई भी जिनकी उम्र ५५ साल थी, पुलिस की गोली के शिकार बना दिये गए। और भी अनेक निरपराध लोगो के मकान जला कर खाक कर दिये गए। १५ सितम्बर को श्री नगादी नायक सताये गए और आखिर मे कत्ल कर दिये गए।

२९ अगस्त को थिरुकदनाग्र में श्री रामास्वामी सरवई का मकान फूंक दिया गया और उनके वहां न मिलनें पर उनके दोनो लडको को गिरफ्तार कर लिया गया। इसी प्रकार और भी कई व्यक्तियो के मकान और धान के भंडार जलाकर नष्ट कर दिये गए। वेनीयर गाव के लोगो को भी ऐसी ही विपत्तियो का सामना करना पड़ा। धान के तीन सौ बोरे लूट लिये गये तथा बाकी के अग्नि देवता के भेंट चढा दिये गए। एक व्यक्ति के खेत, जो इस समय बर्मा में था, लूट लिये गए तथा जला दिये गए। उसके पशु भी गोली के शिकार हुए। गांव की पांच स्त्रियों के साथ बलात्कार किया गया। अथनगुडी स्थान पर तीन व्यक्तियों को पुलिस वालो ने हाथ-पांव बाध कर जूतों से खूब पीटा तथा उनके मुंह में जबरन पेशाब किया। कवायूकुडी मोनाई आदि कई गांवों के प्रायः घर और धान के भण्डार या तो लूट लिये गये या जला दिये गए। कराईकुडी पुलिस स्टेशन पर प्रति दिन सैकडों व्यक्ति गिरफ्तार करके लाये जाते थे तथा उन्हें बुरी तरह तकलीफ दी जाती थी। देवकोटा शहर में एक मोहल्ले के व्यक्तियो को जबरदस्ती उनके घरों से निकाल कर बाहर कर दिया गया।

बेचारों को कुछ भी सामान साथ नही ले जाने दिया गया। उन्हें कितनी मुसीबतें सहनी पड़ी होंगी इसका सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है।

मदुरा की पुलिस ने सत्याग्रहियो को तकलीफ देने का एक नया राक्षसी तरीका निकाला। वह सत्याग्रहियो को गिरफ्तार करके शहर से मीलों बाहर जंगल में ले जाती थी। वहां उनके शरीर में निर्दयतापूर्वक गरमी बढाई जाती थी तथा बेहोशी की हालत में उनके तमाम कपड़े जला कर उन्हे बिलकुल नंगा करके छोड दिया जाता था।

: ११ :

उड़ीसा प्रान्त

उडीसा १ अप्रैल सन् १९३६ से एक पृथक् प्रान्त बनाया गया है। यह नवीन प्रान्त उन भागो के मिश्रण से बना है जहा पर उडिया भाषी लोग बहुतायत से रहते है । उडिया लोगो में देशभक्ति की भावना विशेष रूप से पाई जाती है। इनका अपनी सस्कृति एव भाषा के प्रति विशेष अनुराग है। अतएव जब कभी भी उडिया भाषी प्रदेश को बाटने का प्रयत्न किया गया है तो उड़िया लोगो ने उसका तीव्र विरोध किया है। उनका कहना है कि आजकल उड़ीसा कहलाने वाले प्रदेश मे उनके पूर्वजो का महाभारत-काल में उत्कल साम्राज्य के नाम से एक विस्तृत राज्य कायम था।

उडिया लोगों में आन्ध्र-निवासियो की तमाम खूबिया तथा बंगालियो की सारी कमिया एक साथ पाई जाती है। इस प्रकार उनमें दो परस्पर विरोधी सांस्कृतिक भावनाओ का मिश्रण हुआ है, जिसका प्रान्त के और विशेष कर बालासोर के उत्तरी जिलो तथा गजम के दक्षिणी जिलो के राजनैतिक एव सामाजिक जीवन पर काफी प्रभाव पडा है । प्रान्त मे परम्परागत जमीदारो की सख्या काफी है, जिन्होने अग्रेजों के साथ मिलकर जनता का खूब शोषण किया है। यहा पर किसान सगठनों का भी ज़ोर है। अतः १९२२ से यहा कई बार जमीदार-विरोधी आन्दोलन चले है।

उड़ीसा के पूर्वी समुद्र-तट पर अप्रैल सन् १९४२ मे जापान ने कई ब्रिटिश जहाज डुबो दिए। इससे जापान के आक्रमण का भय बहुत अधिक बढ गया। सरकार ने अपना सदर मुकाम कटक से उठाकर भीतर की ओर १६० मील दूर सम्भलपुर में बदल दिया। यही नही, उसने यातायात एव आवागमन के सभी साधनों को अपने हाथ में ले लिया। साइकिलो एव देहाती नावो पर भी उसका अधिकार हो गया। उसने यह हुक्म जारी किया कि समुद्री तट के स्थानो का तमाम धान एव चावल तट से २० मील भीतर भेज दिया जाय। इस प्रकार नित्य नई मुसीबतो के कारण अग्रेजी सरकार के प्रति लोगो के हृदय

में तीव्र कटुता के भाव उत्पन्न हो गए। कांग्रेस नेताओं ने समुद्री तट के देहातों का दौरा किया और लोगों की रक्षा के लिए जगह-जगह चुने हुए स्वयंसेवक तैनात कर दिये। उनका काम लोगों की हर तरह से मदद करना था। किन्तु सरकार को यह सहन नहीं हुआ। उसने उनके काम में हस्तक्षेप करना शुरू कर दिया। फलस्वरूप सहायता कार्य बन्द कर देना पडा।

इतनें मे ९ अगस्त को बम्बई में राष्ट्रीय नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया। समूचे प्रान्त में एक साथ क्रान्ति की आग भडक उठी। चारो ओर से आवाज आने लगी, "अंग्रेज सरकार न केवल विदेशी शक्ति से हमारी रक्षा करने मे असमर्थ है, बल्कि वह महात्मा गाधी, पं० जवाहर लाल नेहरू आदि राष्ट्र के नेताओं को देश की आजादी की मांग करने पर गिरफ्तार कर जेल के सीखचो में बन्द करने का तैयार है। अतएव ऐसी सरकार को, जो लोगों की स्वतन्त्रता का अपहरण करने में जरा भी आगा-पीछा नही सोचती, जितनी जल्दी उखाडकर फेंक दिया जाय उतना ही अच्छा है।" इस प्रकार प्रान्त के लोग अंग्रेजी सरकार को मटिया-मेट कर देने में जी-जान से लग गए।

उडीसा में आन्दोलन का रूप सुव्यवस्थित नही रहा। जो कुछ लोगों ने किया वह इधर-उधर बिखरे हुए रूप मे ही। अन्य प्रान्तो की भांति यहाँ भी आन्दोलन का श्रीगणेश हड़तालो एव सभाओ के रूप मे हुआ। बाद मे लोगों ने संगठित तथा असगठित रूप मे सरकारी इमारतो पर कब्जा करने का प्रयत्न भी किया। किन्तु आन्दोलन अधिक नही चल सका, क्योंकि प्रधान-प्रधान नेता गिरफ्तार करके जेलो में बन्द कर दिये गए थे।

इस प्रान्त के जमीदारों का खास तौर पर विरोध किया गया। जनता सदियो से जमीदारों द्वारा पिसती आ रही थी। अतएव उसने इस आन्दोलन से लाभ उठाया और वह जमीदारी प्रथा के तमाम बन्धनों को तोड फेकने के लिए प्रस्तुत हो गई। जमीदार लोगों ने मुस्लिम गुंडों से सहायता ली। सरकार भी अपने पिट्ठुओ की मदद करने से भला कब चूकती? उसने मुसलमानों को सामूहिक जुर्माना देने से मुक्त कर दिया। कई स्थानो में सरकार ने भी मुस्लिम गुंडों को आन्दोलन-कर्ताओं को कुचलने एवं उन पर आतंक का साम्राज्य स्थापित करने के लिए प्रोत्साहित किया।

यों तो समूचे प्रांत मे आन्दोलन का दौर-दौरा रहा, किन्तु बालासोर, कटक और कोरापुर जिले इसके प्रधान केन्द्र थे। कोरापुर की प्राय: शत-प्रतिशत जनता ने, बालासोर के तीन-चौथाई व्यक्तियों ने तथा कटक के आधे लोगो ने आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया।

अन्य स्थानो की भांति उडीसा के विद्यार्थियो ने भी देश की आजादी की इस लडाई में प्राणो की बाजी लगा दी । उनके त्याग एव बलिदान का पता इसी से लग सकता है कि आन्दोलन-काल मे प्रकाशित होने वाली प्रत्येक सरकारी विज्ञप्ति में आन्दोलन को "अधिकारियो के प्रति विद्यार्थियो का विद्रोह" नाम दिया जाता था । जनता को आन्दोलन-सम्बन्धी शिक्षा देने, हड़ताल करवाने, विरोध-सभाओं का सगठन करने तथा सरकारी शासन को पगु बनाने के लिए आतकपूर्ण कार्य करने वाले ये विद्यार्थी ही थे । विद्यार्थियो की इन सरगरमियो का यह प्रभाव पड़ा कि अधिकारियो को शिक्षा सस्थाए काफी अरसे तक बन्द कर देनी पड़ी । विद्यार्थियो ने पब्लिक सस्थाओ पर भी अधिकार जमाने का प्रयत्न किया । कई स्थानो पर तो उन्हे इस कार्य मे बड़ी सफलता मिली । उन्होने सरकारी अफसरो को इस्तीफे देने के लिए भी प्रेरित किया । उडीसा की छात्राओ ने भी अपने भाइयों के साथ कन्धे-से-कन्धा मिलाकर इस आन्दोलन में भाग लिया । कटक जिले के रावनशा गर्ल्स कालेज की छात्राओ का विशेष रूप से उल्लेख करना पड़ेगा ।

उडीसा की स्त्रियो ने भी देश की आजादी की इस लडाई में पुरुषो से किसी प्रकार कम भाग नही लिया । एरम की बात है कि पुलिस ने प्रदर्शनकर्ताओ पर गोलिया चलाई । उस समय करीब २०० की सख्या मे स्त्रिया आगे बढी और गोलियो की बौछार में पुलिस के सामने जा खडी हुई । उन्होने आजादी के पैगाम को मोहल्ले-मोहल्ले मे पहुचाया तथा धान छिपाकर रखने वाले व्यक्तियो को अपना अन्न गरीब लोगो को बाट डालने के लिए प्ररित किया । ग्राम पचायत के पुलिस अधिकारी को भी अपने तमाम कागजात सौप देने के लिए मजबूर किया ।

काग्रेस-मिनिस्टरी के इस्तीफा देने के बाद उड़ीसा में पार्ला की मेडी के महाराजा की अध्यक्षता मे दूसरा मिनिस्टरी कायम हो गई थी । अतएव गवर्नर को अन्य प्रान्तो की भाति खुलकर खलन का अधिक अवसर प्राप्त नही हो सका । यहां के लोगो ने अन्य स्थानो की अपेक्षा अधिक उत्तेजना एव प्रतिहिसा से काम लिया, किन्तु इतना होते हुए भी यहाँ दमन-चक्र की गति कुछ धीमी रही; इसके कई कारण थे । जापानी आक्रमण का भय मूर्तिमान होकर समूचे प्रान्त को निगल रहा था । अतएव प्रान्तीय सरकार का ध्यान इस तात्कालिक खतरे की ओर लगा हुआ था और वह किसी जन-आन्दोलन का मुकावला करने के लिए तैयार नही थी । फिर भी अन्य स्थानो की भाँति यहाँ भी आन्दोलन में भाग लेने वालो पर गोलिया चलाई गई तथा लाठी-चार्ज किये गए जिससे

काफी लोग मारे गए तथा सैकड़ो बुरी तरह से घायल हुए। बहुत से गाव लूट लिये गए तथा जलाकर नष्ट कर दिये गए। स्त्रियों पर बलात्कार भी हुए। साधारण जनता को भाँति-भाँति की यातनाए दी गईं। नेता लोग पकड़कर जेलो में ठूँस दिये गए। उनकी सम्पत्ति जब्त कर ली गई। रचनात्मक कार्य करने वाली सस्थाओ—जैसे खादी आश्रम आदि पर भी कब्जा कर लिया गया एव बहुत से गावो पर सामूहिक जुर्माना लगाया गया।

उड़ीसा में ६ बार गोली-काण्ड हुए और २५ जगह लाठी-चार्ज हुए। ७६ आदमी जान से मारे गए और २२४३ घायल हुए। कुल १,१६००० रुपया सामूहिक जुर्माना किया गया।

अब हम उड़ीसा के आन्दोलन पर जिले वार प्रकाश डालेगे।

कोरापट

सन् १९३५ के विधान से कोरापट मे दो अमली कायम हो गई है। सम्पूर्ण जिले मे जयपुर के महाराजा की जमीदारी है, किन्तु साथ मे अग्रेजी सरकार का भी आधिपत्य है। अतएव इसका शासन बहुत ही अव्यवस्थित है, जिससे यहां की जनता को बड़ी मुसीबतो का सामना करना पड़ता है। जमीदार महोदय २० लाख रुपये की आमदना मे से पेशकश के रूप मे सरकार को केवल १६ हजार रुपए देते है।

नेताओ की गिरफ्तारी की खबर पाते ही कोरापट की जनता क्षुब्ध हो उठी। विरोध-स्वरूप जिले भर मे स्थान-स्थान पर हड़ताले की गईं तथा जुलूस निकाले गए और सजाएं दी गईं। लोगो ने उत्तेजना में आकर तोड़-फोड़ करना प्रारम्भ कर दिया। टेलीफोन एवं टेलीग्राफ के तार काट डाले गए। रेल की पटरिया उखाड़कर फेक दी गईं। बहुत से स्थानो पर सरक्षित जगलो के पेड़ काट डाले गए। रेल के स्लीपर नष्ट कर दिये गए। पुल तोड़-फोड डाले गए। इंस्पेक्शन बगले तथा फॉरेस्ट डिपार्टमेन्ट के अधीन अन्य इमारते जलाकर खाक कर दी गईं। पुलिस थानो पर धावा किया गया तथा सरकारी रेकार्ड फूक दिये गए। स्कूलो, कालेजो एव शराब की भट्टियो पर पिकेटिंग किया गया।

२८ अगस्त की बात है कि प्रान्त के प्रसिद्ध कार्यकर्त्ता श्री लक्ष्मण नायक के नेतृत्व में करीब २००० व्यक्ति मल्कनगिरि तालुका के मठीली गाँव मे पहुंचे। उन्होने गाव वालो के सहयोग से एक विशाल सभा की। श्री नायक महोदय ने अपने भाषण में लोगो को अग्रेजी सरकार से असहयोग करने के लिए उकसाया। पुलिस घटनास्थल पर मौजूद थी। पुलिस इस्पेक्टर श्री

नायक को गिरफ्तार करके थाने की ओर ले जाने लगा। लोग अपने नेता के पीछे-पीछे थाने की ओर जाने लगे। थाने पर पहुंचने पर अधिकारियो ने लोगो को अपने घर लौट जाने की आज्ञा दी। किंतु आजादी के दीवाने बड़ी मस्ती के साथ राष्ट्रीय नारे लगाते रहे। इस पर पुलिस वालो ने बिना किसी पूर्व सूचना के गोली बरसाना शुरू कर दिया। परिणामस्वरूप ६ व्यक्ति मारे गए तथा बहुत से घायल हुए। पुलिस वालो की रक्त-पिपासा इतने से ही शान्त नही हुई और उन्होने बन्दी हालत मे ही श्री नायक पर किर्चो एव भालो से वार किया। कई अन्य व्यक्तियो पर भी ऐसे ही प्रहार किये गए। पर इतना होने पर भी लोगो ने बड़े साहस से काम लिया। उन्होने जैसे-तैसे अपने-आपको पुलिस वालो के चगुल से बचा लिया और इस प्रकार एक भी व्यक्ति गिरफ्तार नही किया जा सका। इस भिड़न्त मे जयपुर स्टेट का एक फॉरेस्ट गार्ड, जो उस समय शराब के नशे मे चूर था, भीड़ की भाग-दौड़ के कारण पुलिस स्टेशन के पास बहने वाली नहर मे जा गिरा। सयोगवश पुलिस द्वारा चलाई गई लाठियो से उसका सिर पहले से ही जख्मी हो चुका था। अतएव नहर मे गिरते ही उसके प्राण-पखेरू उड़ गए और मृत शरीर पानी पर तैरने लगा।

इस घटना के ८ या १० दिन के बाद कलक्टर और पुलिस सुपरिन्टेन्डेट उसी गाव मे पहुचे और काग्रेसियो एव उनसे सहानुभूति रखने वाले व्यक्तियो पर झूठे केस बनाये गए। श्री नायक तथा उनके साथियो पर फॉरेस्ट गार्ड की हत्या का अभियोग लगाकर केस चलाया गया। श्री नायक को फाँसी की सजा तथा उनके १० साथियो को आजन्म कारावास का हुक्म सुनाया गया। इस पर हाईकोर्ट मे अपील की गई। वहा श्री नायक और उनके साथी बिलकुल निर्दोष सिद्ध हुए और सजाए रद्द कर दी गईं।

आन्दोलन के प्रारम्भ के दिनो की बात है कि ६-७ हजार व्यक्तियो का एक जुलूस श्री माधव प्रधानी और दूसरे काग्रेस कार्यकर्त्ताओ के नेतृत्व मे दबू-ग्राम की ओर जा रहा था। जुलूस जब पप्पाडहाडी नदी के सकरे पुल पर पहुंचा ता पुलिस वालों के दो दल, जो वहा पहले से ही तैयार थे, लोगो पर टूट पड़े और एक साथ लाठियो एव गोलियो की बौछार करने लगे। परिणाम-स्वरूप १९ व्यक्ति शहीद हुए और सौ से अधिक के बुरी तरह चोटे आईं। १४० व्यक्तियो को पुलिस गिरफ्तार करके ले गई और कइयो पर षड्यन्त्र-केस चलाया।

जेल में भी राजनैतिक बन्दियो के साथ बड़ा पैशाचिक व्यवहार किया

गया। बन्दियो पर लाठिया एव गोलिया चलाई गई। कोरापट जेल में करीब ५० राजनैतिक बन्दी पिंजड़ो मे ही भून दिये गए। बहुत से बन्दियो को एक अत्यन्त छोटी अन्धेरी कोठरी मे ठूस दिया गया; जिससे कई दम घुटने के कारण मर गए। तीन व्यक्तियो को टांगे बाँध कर पेड़ से लटका दिया और बेंतो और लाठियो से बुरी तरह पीटा। इस प्रकार हम देखते है कि नौकर-शाही ने अत्याचार करने में नाजियो को भी कोसो पीछे छोड़ दिया था।

इस जिले मे १९७० व्यक्ति गिरफ्तार किये गए और ५६० दण्डित किये गए। नजरबन्दों की सख्या ११ थी। २ जगह गोली-काण्ड और २४ जगह लाठी-चार्ज हुए। २८ आदमी मारे गए और २१४७ सख्त घायल हुए। अदालतों मे ११,२०० रु० जुर्माना किया गया, जिसमे से ९३७१ रु० वसूल किया गया। ९००० की सम्पत्ति जब्त की गई, पुलिस ने ४ घर जला दिये। जिले मे स्त्रियों के साथ १२ बलात्कार की घटनाए हुई।

बालासार

इस जिले मे आन्दोलन की गति काफी तीव्र रही। करीब तीन चौथाई जनता ने आन्दोलन मे सक्रिय भाग लिया। नेताओ की गिरफ्तारी की सूचना पाते ही स्कूलो एव कालेजो के विद्यार्थी बाहर निकल आये। परिणाम-स्वरूप अधिकारियो को काफी अर्से तक विद्यालय बन्द कर देने पडे। शहरो एव गाँवों मे भी हड़ताले चलती रही। बड़े-बडे जुलूस निकाले गए। शराब की भट्टियो और अदालतों पर पिकेटिंग किया गया। इस जिले के आन्दोलन की यह विशेषता थीं कि लोगों ने अंग्रेजी सरकार के साथ-साथ उसके पिट्ठू जमीदारो का भी विरोध किया। किन्तु जमीदारो ने आन्दोलन को कुचलने के लिए भाड़े के टट्टू मुस्लिम गुण्डो से काम लिया।

इस जिले में सितम्बर के पिछले दिनों मे आन्दोलन खूब जोरो से चला। स्थान-स्थान पर तार काटे गए, सरकारी संस्थाओ पर धावा बोला गया, सरकारी बंगले फूंक दिये गए तथा कितने ही पुल तोड-फोड डाले गए। कई स्थानो पर लोगो ने सरकारी कर्मचारियो एवं जमीदारो के विरुद्ध बल-प्रयोग भी किया। धामनगर और खडिया थानो की हद मे इस प्रकार के काड अधिक हुए। बालासोर के सब डिवीजनल-ऑफिसर की अदालत में ६ व्यक्ति घुस गए और अधिकारियो के देखते-देखते सरकारी रेकार्ड नष्ट कर डाले गए। चौकीदारो की वर्दियो को भी अग्नि देवता की भेंट चढा दिया गया।

श्री मुरलीधर पंडा के नेतृत्व मे एक गिरोह इस प्रकार के कामो मे बड़ी तत्परता से भाग ले रहा था। इस गिरोह के लोग खल्लमखुल्ला सरकारी

कर्मचारियो पर हमले करते थे तथा महाजनो को अपना धान का स्टाक, जो उन्होने छिपाकर रख रखा था, भूखे लोगो को बाँटने के लिए बाध्य करते थे। पुलिस वालो की एक मजबूत पार्टी श्री मुरलीधर और उनके सहयोगियो को गिरफ्तार करने पहुँची। २२ सितम्बर की सुबह कटगाही स्थान पर उसका मुरलीधर तथा उनके ४ हजार साथियो से आमना-सामना हुआ। श्री मुरलीधर के साथी पुलिस वालो के हमला करने के पहले ही उन पर टूट पड़े। सब-इन्स्पेक्टर और कुछ कान्स्टेबल बुरी तरह से घायल हुए। पुलिस ने ३५ राउड गोली चलाई जिससे जनता के ६ व्यक्ति मारे गये और पाच बुरी तरह से घायल हुए। घायलों में से २ व्यक्तियो ने अस्पताल मे प्राण त्याग दिए। इस घटना से सरकार दमन पर तुल गई और उसने सशस्त्र पुलिस एवं फौज को बुला लिया। श्री मुरलीधर ने देखा कि यदि मै गिरफ्तार न हुआ तो सरकार मेरे लिए गाव वालों को परेशान करेगी। अतएव गाव वालो को बचाने के लिए उन्होने अपने-आपको पुलिस के हाथो सौप दिया।

२३ सितम्बर को खड़िया पुलिस स्टेशन पर जनता की एक भीड ने हमला किया और अपने प्रसिद्ध क्रान्तिकारी कार्यकर्त्ता को, जिसे पुलिस ने गिरफ्तार कर रखा था, छुड़ा लिया। जनता एव पुलिस की इस भिड़न्त मे पुलिस के कुछ कर्मचारी घायल हुए। २५ तारीख को पुलिस का एक दल २३ तारीख को हमला करने वाली भीड़ के नेताओ को पकडने के लिए आया। लोगो को जब इसकी सूचना मिली तो वे पांच सौ की तादाद में खैड़ाडीह स्थान पर इकट्ठे हो गये। उन्होने पुलिस अधिकारियो को साफ कह दिया कि हम अपने नेताओ को गिरफ्तार नही होने देंगे। यहां लोगों ने पुलिस वालों को चारो ओर से घेर लिया, किंतु उन्होंने गोली खाकर जैसे-तैसे अपनी जान बचाई।

आन्दोलनकर्त्ताओ की एक भीड ने एराम के जमीदार के मालगादाम को घेर लिया। जमीदार ने पुलिस से सहायता की प्रार्थना की। २८ सितम्बर को वासुदेवपूर के थाने से पुलिस अधिकारी १८ सशस्त्र कास्टेवलो के साथ एराम के लिए रवाना हुए। चौकादारों के पास सिपाहियो के थैले थे, जिनमे उनका सब सामान था। भीड ने चौकीदारो पर हमला किया और हथियारों से भरे थैलों को छीन लिया सिपाहियो ने भीड से थैले छीनने की कोशिश कीं। भीड़ मे उस समय करीब चार-पांच हजार व्यक्ति थे। पुलिस वालो की संख्या इसके साम्ने विलकुल नगण्य थी। अतएव भीड़ ने बड़ी आसानी से पुलिस वालो को एक खुले मैदान में घेर लिया। किंतु पुलिस वालो ने गोली चलाई और जैसे-तैसे स्थानीय जमीदार के एक निकटवर्ती पक्के मकान में शरण ली।

रात अधिक हो जाने के कारण लोग भी अपने घरों को चले गये। दूसरे दिन घटनास्थल पर १५ लाशे मिली। भीड रात को ही अपने तमाम घायल एव अनेक मरे हुए साथियो को उठा ले गई थी। अतएव यह बताना कठिन है कि इस घटना में कितने व्यक्तियों की जाने गईं तथा कितने बुरी तरह घायल हुए। हा, सरकारी रिपोर्ट मे बताया गया है कि २५-३० व्यक्ति मारे गये तथा ४०-५० घायल हुए।

दामनगर मे पुलिस ने बिलकुल शान्त एव निर्दोष व्यक्तियों की एक भीड़ पर गोली चलाई, जिससे ८ व्यक्ति मारे गये तथा ४० घायल हुए। ४० व्यक्ति गिरफ्तार भी किये गए। इस घटना के प्रसग में श्री कल्लीमहालिक का नाम विशेष उल्लेखनीय है। यह वह वीर था जिसने देश की आजादी के लिए सबसे आगे बढकर गोली खाई थी। उसके मुह पर तीन घातक गोलिया लगी थी।

सरकारी कर्मचारी जापानी आक्रमण के भय से काप रहे थे। नित्य नई अफवाहो के कारण उनका खाना-पीना सब छूट गया था। एक दिन की बात है कि कुछ नटखट व्यक्तियो ने अधिकारियो को चकमा देने की नीयत से विवाह के मौके पर कुछ विस्फोटक पदार्थ छोड़े। आफिसरो ने सोचा जापानी बम फटा है, बेचारा पुलिस सुपरिन्टेन्डेंट भय के मारे थर-थर कापने लगा। उसने तुरन्त अपनी यूरोपीय पोशाक उतार कर फेंक दी और धोती-कुर्ता पहन लिया। इतने पर भी उसका भय शान्त न हुआ। उसने डाक विभाग के एक अफसर के साथ एक नाव किराये पर ली और वैतरणी नदी के इस पार आ गया। अन्त मे कुछ काग्रेस वालो ने उन्हे समझा-बुझाकर वापस भेजा।

बालासौर जिले में ३०० से अधिक व्यक्ति गिरफ्तार किये गए और २५० नजरबन्द। ३ जगह गोली-काड हुए। ४२ आदमी मरे २७० घायल हुए। ६००० रु० सामूहिक जुर्माना किया गया।

कटक

कटक उड़ीसा प्रान्त का सदर मुकाम है। प्रान्त की राजधानी भी यहा है। अतएव यहां की जनता में राजनीतिक जागृति विशेष रूप से है। अखिल भारतीय नेताओ की गिरफ्तारी के साथ कटक जिले के नेता भी गिरफ्तार करके जेल में बन्द कर दिये गए तो यहा की जनता भी अन्य स्थानो की भाति क्षुब्ध हो उठी और उसने अपने विरोध को विभिन्न रूपो मे प्रकट करना शुरू कर दिया। जिले भर मे हड़तालों का तांता बध गया और स्थान-स्थान पर विरोध-सभाये की जाने लगी।

अन्य स्थानों की भांति यहां के विद्यार्थियो ने भी आजादी की इस लड़ाई में उत्साहपूर्वक भाग लिया। कटक शहर के तमाम हाई स्कूलो तथा कालेजो के छात्र एव छात्राओं ने अपनी पढ़ाई का त्याग कर दिया और आन्दोलन मे जुट गये। परिणाम-स्वरूप अधिकारियों को स्कूल और कालेज काफी अर्से तक बन्द रखने पड़े। सरकारी शासन को पंगु बनाने के लिए इन विद्यार्थियो ने सरकारी अफसरो को अपनी नौकरी से इस्तीफा देने के लिए बाध्य किया। खेनशा कालेज के एक क्लर्क ने सरकारी नौकरी से इस्तीफा दे दिया और आन्दोलन में शरीक हो गया। इस कालेज की हड़ताल तुड़वाने के लिए अधिकारियो ने काफी प्रयत्न किया, किंतु कुछ सफलता न हुई। उन्होने छात्राओ को यह धमकी दी कि यदि तीन दिन के अन्दर वे कालेज में हाजिर न होगी तो उनका नाम काट दिया जायगा तथा फीस आदि की माफी की रियायतें बद कर दी जायगी। किंतु आजादी की दीवानी लडकियों पर अधिकारियों की इस चेतावनी का कुछ भी असर न हुआ। कुछ उत्तेजित लड़कियो ने कालेज के दफ्तर पर हमला किया और तमाम कागजात जला डाले।

विद्यार्थियों की हड़ताल की यह खूबी थी कि मुसलमानो ने भी अपने हिन्दू भाइयो के साथ इसमे पूरा भाग लिया। कटक का मुस्लिम हाई स्कूल बहुत दिनो तक बन्द रहा।

नवयुवको द्वारा उत्तेजना पाकर लोगो ने पुलिस-थानो और अन्य सरकारी संस्थाओ पर आक्रमण करना शुरू कर दिया। बहुत-सी सरकारी इमारते जला दी गईं, जिनमे अरसमा का डाकखाना, इन्सपैक्शन हाउस, जगतसिंहपुर की तहसील तथा सहौरा का रैस्ट हाउस, रेवेन्यू दफ्तर और सिपाहियो के बेरक विशेष उल्लेखनीय है। स्थान-स्थान पर टेलीग्राफ और टेलीफोन के तार काट डाले गये। ८ सितम्बर को कटक के जनरल हास्पिटल पर धावा किया गया और चौकीदारो की वर्दियो को फूक दिया गया। १६ अगस्त की बात है कि कुछ कान्स्टेबल राजनैतिक बन्दियो को जयपुर सब डिवीजन ले जा रहे थे। ३ हजार नवयुवकों के एक झुड ने पुलिस वालो को रोक लिया। पुलिस के कुछ आदमी जख्मी हुए। उधर मजिस्ट्रेट ने गोली चलाने का हुक्म दे दिया। २८ राउड गोली चली जिससे १ व्यक्ति मारा गया तथा १२ घायल हुए।

पुलिस का दमन-चक्र काफी तीव्र रहा। श्री गोपबन्धुदास, आचार्य हरिहर आदि जिले के सभी प्रमुख कांग्रेस-कार्यकर्त्ता गिरफ्तार कर लिये गए। तमाम कांग्रेस संस्थाये गैरकानूनी करार दे दी गईं। कांग्रेस-दफ्तरों को पुलिस ने मोहर चपड़ी लगाकर अपने कब्जे मे कर लिया। मुख्य-मुख्य कांग्रेसियो के घरो

की तलाशिया ली गई तथा उनकी सब सम्पत्ति जब्त कर ली गई। १० अगस्त से ही कटक शहर में १४४ धारा लगा दी गई। भोलानन्द बाल सेवाश्रम जबरन बन्द करवा दिया गया। गाधी-आश्रम के मैनेजर गिरफ्तार कर लिये गए और रहुना साधना-कुटीर को सरकार ने अपन कब्जे में कर लिया। एरसमा और तिरतोल थानो के बहुत-से गावो में क्रमशः पाच हजार और तीन हजार रुपया सामूहिक जुर्माना लगाया गया। गवर्नर के स्पेशल आर्डर के मुताबिक इन गावों की मुस्लिम जनता जुर्माना देने से बरी कर दी गई। यही नही, सरकार ने मुसलमानो को आन्दोलनकारियो के विरुद्ध खड़ा करने के भी प्रयत्न किये।

पुरी

पुरी के सस्कृत कालेज और देलाग थाने के विद्यार्थियो ने आन्दोलन में प्रमुख भाग लिया। पुरी कालेज के २५० विद्यार्थियो में से सिर्फ ६ विद्यार्थी कालेज मे उपस्थित हुए; इन ६ ने भी बाद मे हड़ताल मे भाग लिया। इस प्रकार कई सप्ताह तक कालेज बिलकुल बन्द रहा। पुरी के एडवर्ड हाईस्कूल आदि दूसरे विद्यालयो में भी काफी अर्से तक हडताले चलती रही। १७ अगस्त को विद्यार्थियो ने एक विशाल सभा की जिसमें अग्रेजी सरकार की कडी आलोचना की गई।

पुरी की जनता अन्य जिलो की अपेक्षा कुछ शान्त रही। सरकारी इमारतो पर इक्के-दुक्के ही हमले हुए। १६ सितम्बर को ५०० व्यक्तियो की एक सभा हुई। यह निश्चय किया गया कि नीमपाडा के सरकारी कर्मचारियो को इस्तीफा देने के लिए बाध्य किया जाय। लोग थाने पर पहुंचे और उन्होंने बलपूर्वक उस पर कब्जा करने का प्रयत्न किया। उन्होने पुलिस-कर्मचारियों पर ईंट और पत्थर फेंके जिससे कुछ व्यक्ति घायल हुए। पुलिस ने इस पर ११ राउड गोलियां चलाईं, जिससे जनता का एक व्यक्ति मारा गया और ११ घायल हुए।

गंजम

इस जिले की जनता अन्त तक शान्त रही। उसने अपना विरोध शान्तिपूर्ण एव सगठित तरीको से जाहिर किया। पारला की मेड़ी के महाराजा-कालेज के छात्रों ने अपनी कक्षाओ का बहिष्कार कर दिया। पुलिस ने ६ विद्यार्थियो को गिरफ्तार किया। १४ अगस्त को इस इलाके के वार-बोर्ड के मेम्बरों ने इस्तीफा दे दिया। १५ तारीख को छत्रपुर हाईस्कूल के ५०० विद्यार्थियो ने हड़ताल की।

मठीली में करीब एक हजार व्यक्तियो की भीड़ ने शराब की भट्टी पर हमला किया। इसके बाद उसने स्टेट आफिस पर धावा किया। मैजिस्ट्रेट ने लोगो को काफी चेतावनी दी, किन्तु उन्होने उनकी एक भी न सुनी। वे वहा से थाने की ओर झपटे। उन्होने अधिकारियो को धमकी दी कि या तो थाना खाली कर दीजिये नही तो हम इसे नष्ट कर देगे। अधिकारियो ने लोगों की बात मानने से इन्कार कर दिया। इससे लोग उत्तेजित हो गये और वे अधिकारियो पर टूट पड़े। कई पुलिस कास्टेबलों को चोटे आई। मजिस्ट्रेट के आर्डर से गोली चलाई गई। १८ राउड गोली चली, ४ व्यक्ति मारे गये और ३ जख्मी हुए।

सम्भलपुर

गजम जिले की भाति यहा की जनता ने भी अपना रोष शान्तिपूर्ण तरीके से प्रदर्शित किया। अतएव कोई घातक घटना नही घटी। कई व्यक्ति गिरफ्तार कर लिये गए। पुलिस ने कांग्रेस दफ्तर पर छापा मारा और उस पर मोहर चपडी लगा दी। वह दफ्तर की साइक्लोस्टाइल मशीन भी उठा ले गई।

: १२ :

मध्यप्रान्त का कौशल

बगाल तथा बम्बई प्रान्त के बीच के एक बृहत् त्रिभुजाकार भू-भाग को मध्यप्रान्त और बरार कहते है। इसका कुल क्षेत्रफल १,३१,५५७ वर्गमील और जन सख्या १६,८२२,५८४ है। काग्रेस ने भाषा के आधार पर सूबे को तीन भागों में विभाजित कर दिया है। इनमें एक महाकौशल, दूसरा मराठी मध्यप्रान्त और तीसरा विदर्भ कहलाता है।

और स्थानों की तरह इस प्रान्त में भी नेताओ की गिरफ्तारियों पर जुलूसो तथा अंग्रेज-विरोधी प्रदर्शनो से आन्दोलन शुरू हुआ। पुलिस के अत्याचारो के बावजूद लोग अहिंसात्मक रहे। बहुत कम स्थानों पर हिंसात्मक कार्य हुए। लोगो ने गुरिला ढग की लड़ाई लड़ी और गुप्त रूप से काम किया। इस सूबे के लोगो ने सन् १९४२ के आन्दोलन में चाहे कुछ भी किया हो, आष्टी और चिमूर के रहने वालो के कार्य कभी भी नही भुलाए जा सकते। नागपुर के १८ वर्षीय बालम शंकर को, जो सबसे पहले फाँसी पर चढ़ा, हमारा इतिहास सदा पूजेगा।

आष्टी और चिमूर आदि स्थानों में जो अत्याचार हुए, उनकी खुद सरकार के न्यायालयों को निन्दा करनी पडी। सब डिवीजनल मजिस्ट्रेट ने अपने फैसले मे लिखा कि पुलिस ने वे कार्य किये है जो उसे न करने चाहिए थे और जिन्हे करने का उसे कोई अधिकार न था। हाईकोर्ट के जज ने चिमूर केस में कहा कि चिमूर के रहने वालों ने कोई ऐसा शोचनीय कार्य नही किया। हा, जो अत्याचार सरकार ने वहा किये उनके लिए उसे पूर्ण रूप से कभी दण्ड नही मिला और न उसकी निन्दा ही हुई। जज ने कहा कि उसे दुःखपूर्वक यह कहना पड़ता है कि जब सरकिल इन्स्पेक्टर को मारा गया तब जनता उसके अत्याचारो से अत्यन्त दुखी थी। चिमूर और आष्टी में स्त्रियो तक को अपमानित और बेइज्जत किया गया। इसके विरोध मे प्रोफेसर भसाली ने अनशन किया और सरकार के सामने अत्याचारों की जाँच करवाने की माँग पेश की।

वायसराय की कौंसिल के तत्कालीन सदस्य श्री अणे इस मामले मे बीच में पड़े थे।

अन्य सूबों के विद्यार्थियो की तरह यहाँ पर भी विद्यार्थियों ने आन्दोलन में प्रमुख भाग लिया। जुलूस निकाले, थानो और कचहरियों पर तिरंगे झंडे फहराए, आन्दोलन के इश्तिहार बाँटे और गाँवो में 'करो या मरो' का संदेश दिया। नागपुर यूनिवर्सिटी तथा सेकसरिया कॉमर्स कालेज वर्धा के विद्यार्थियों ने आन्दोलन में प्रमुख भाग लिया।

नेताओं की गिरफ्तारियो के बाद सूबे के कितने ही स्थानो में कठोरता और भयानकता का राज्य हो गया। कार्यकर्त्ता जेलो में सड़ते रहे और उनके मुकदमे भी पेश न किये गए। सूबे के बहुत से भागो में आवागमन पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया। जनता की ओर से कही हिंसा हुई तो वह केवल अचानक बिना किसी पूर्ण योजना के। इसके विरुद्ध सरकार ने व्यवस्थापूर्वक अत्याचार किये। आदमी अन्धाधुन्ध गिरफ्तार कर लिये गए। स्त्रियो पर बलात्कार हुए। गाँव के गाँव जला दिये गए। भारी सामूहिक जुर्माने हुए। जो लोग सामूहिक जुर्माने न दे सके उन पर घोर अत्याचार किये गए तथा उनका सब कुछ छीन लिया गया।

मध्यप्रान्त में खुले विद्रोह के सिलसिले में ३२२६ व्यक्ति नजरबन्द किये गए और ५०१० व्यक्तियो को सजायें दी गईं। ३० जगह गोली-काण्ड हुए, जिनमें ३४५ व्यक्ति मारे गये और करीब १६० सख्त घायल हुए। २,१८,१०० रु० सामूहिक जुर्माना किया गया। जनता ने ६२ सरकारी इमारतों पर हमले किये।

मराठी मध्य प्रान्त

नागपुर प्रान्त के अन्तर्गत मध्यप्रान्त के भंडारा, नागपुर, वर्धा तथा चांदा ये चार जिले आते है। इन चारो जिलो के लोगों की मुख्य भाषा मराठी है। अब हम इन जिलों में हुए आन्दोलन का पृथक्-पृथक् वर्णन करते है।

भण्डारा जिला

इस जिले मे ९ अगस्त से ही आम हड़ताल प्रारम्भ हो गई जो १४ अगस्त तक चलती रही। १४ तारीख को झंडा अभिवादन के बाद चौधरी ताँबाजी नायक तथा चार अन्य व्यक्ति गिरफ्तार कर लिये गए। पुलिस ने प्रदर्शन-कर्ताओ पर गोली चलाई जिससे जनता भी उत्तेजित हो गई और उसने गोली का जवाब पत्थरो एवं ईंटो से दिया। इस घटना में ६ व्यक्ति मारे गए

तथा २५, ३० घायल हुए। उत्तेजित जनता ने टेलीफोन एवं टेलीग्राफ के तार काट डाले तथा सरकारी इमारतों पर धावे किये। १५ ता० को तुमसर में १४४ धारा लगा दी गई और अधिकारियो ने कांग्रेस-दफ्तर तथा कार्यकर्त्ताओ के मकानों की तलाशी ली।

भंडारा में १४ अगस्त का नेताओं की गिरफ्तारी के विरोध में श्री प्रभावती के सभापतित्व में एक विशाल सभा हुई। लोग पूर्ण रूप से अहिंसात्मक एव शान्त थे, परन्तु अधिकारियो ने गोली चलाई जिससे २ व्यक्ति मारे गए। पास में खडी हुई एक गाय भी मारी गई दूसरे दिन विद्यार्थियों ने एक बडा जुलूस निकाला और इस प्रकार पुलिस के अत्याचारो के प्रति अपनी हार्दिक घृणा प्रकट की।

मुहारा की जनता ने भी हडताल, जूलूस एव सभा आदि करके अपना विरोध प्रदर्शित किया। कुछ उत्तेजित लोगो ने एक पुलिसमैन को अपने क्रोध का शिकार बनाया।

सिरोहा में ९ अगस्त को एक आम सभा की गई तथा दूसरे दिन से सब स्कूल कालेज बन्द हो गये। आन्दोलन के विषय में लोगो को हिदायतें देने के लिये कई प्रकार के बुलेटिन बांटे गए। २० ता० को पुलिस अधिकारियो ने कांग्रेस दफ्तर पर धावा किया और उस पर मोहर चपडी लगा दी। प्रसिद्ध कांग्रेस कार्यकर्ता शेर मोहम्मद भाई को गिरफ्तार कर लिया गया। कर्मवीर चौक में राष्ट्रीय झडे का अपमान किया गया तथा उसे जलाकर नष्ट कर दिया गया। कांग्रेस के कार्यकर्ता गिरफ्तार किये गए और उन्हे अपमानित किया गया।

गोदिया मे आन्दोलन का श्रीगणेश हडताल से हुआ। एक बडा जुलूस निकाला गया। गान्धीजी का सन्देश लोगों को पढकर सुनाया गया। १० अगस्त को सर्व श्री केशवराव इन्जल, पन्नालाल दुबे, सुखदेव अग्रवाल, आदि सभी मुख्य-मुख्य कांग्रेस कार्यकर्ता गिरफ्तार कर लिये गए। पुलिस ने कांग्रेस दफ्तर पर धावा किया और उसमें ताला लगा दिया। शाम को जनता की एक सभा हुई जिसमें १७ व्यक्ति गिरफ्तार कर लिये गए। इसके बाद चार दिन तक लगातार बडे-बडे जुलूस निकाले गए। शहर के मुख्य-मुख्य स्थानों पर कांग्रेस के पोस्टर चिपकाये गए। आन्दोलन को कुचलने के लिए फौज की सहायता भी ली गई। इस आन्दोलन में यहाँ के २९३ व्यक्तियों को सजाएं हुईं तथा १९४ व्यक्ति नजरबन्द किए गए। १५००) रु० सामूहिक जुर्माना किया गया।

नागपुर जिला

तालुका—१२ अगस्त को कई स्थानों पर सभाए हुईं, जिनमे कांग्रेस

का आदेश पढकर सुनाया गया । १५ ता० को केलोथ में रेलवे पटरी उखाड़ डाली गई तथा स्टेशन जलाकर भस्म कर दिया गया । पुलिस वालो ने गांव-गाव में घूम-घूमकर लोगो को मारा-पीटा और उन्हें विभिन्न तरीकों से अप-मानित किया तथा स्त्रियों को बेइज्जत किया ।

खाया—यहा की जनता ने पोस्ट आफिस, थाना, रेवेन्यू दफ्तर आदि सरकारी महकमो पर धावा बोला और उनके सब रेकार्ड अग्निदेवता की भेंट चढा दिए । म्युनिसिपल दफ्तर तथा रेन्जर आफिस को भी काफी क्षति पहुं-चाई । रेल की पटरियां उखाड़कर फेंक दी गई तथा तार काट डाले गए । पुल तोड-फोड़ दिये गए । यूरोपियनों के बंगले तहस-नहस कर दिये गए । परि-णामस्वरूप फौजियो ने दुकानें लूट ली । बच्चों एव स्त्रियो तक को भाँति-भाँति का असहनीय यातनायें दी गई तथा लोगों से १० हजार रुपये सामूहिक जुर्माने के रूप मे बड़ी निर्दयता से वसूल किये गए ।

शाबेनर—रेलवे स्टेशन, रेलवे वर्कशाप तथा किरोसिन आयल डिपो का तमाम फर्नीचर लूट लिया गया एवं डाक बंगलो को जलाकर नष्ट कर दिया गया । दो व्यक्ति बुरी तरह से घायल हुए एक-दो स्थानो पर लोगो का बेंतो से पीटा गया ।

अमरेड़ ताल्लुका—६ और १० अगस्त को पुलिस-अधिकारियों ने कांग्रेस-आफिस तथा हिन्दुस्तान रेड आर्मी के दफ्तर की तलाशियां ली तथा शहर के कई प्रसिद्ध व्यक्ति गिरफ्तार कर लिये । जनता ने भी उत्तेजित होकर पंचगाव का डाक बगला और कांजी हाउस जला डाला । बेला थाना में सरकारी मुलाजिमो का बहिष्कार किया गया तथा पोस्ट आफिस और थाने के सब रेकार्ड भस्म कर दिए । फौजियों से बन्दूके छीन ली । रेवेन्यू दफ्तर फूंक दिया । समूचे अम-रेड़ ताल्लुके के मे ११ व्यक्ति गिरफ्तार किये गए तथा एक हजार रुपया सामूहिक जुर्माना वसूल किया गया ।

रामलेट ताल्लुका—इस इलाके मे जनता का जोश अधिक रहा । रेलवे स्टेशन जला दिया गया, इंजन नष्ट-भ्रष्ट कर दिया गया, पुलिस वालों को खद्दर महनने के लिए बाध्य किया गया तथा कचहरी पर बड़ी शान से राष्ट्रीय झंडा फहराया गया । फौजदारी के तमाम रेकार्ड जला दिये गए । तहसील पर धावा किया गया । खजानो लूट लियो गया और १० लाख ७० हजार रुपये लोगो के हाथ लगे । १६ अगस्त को आन्दोलन को कुचलने के लिए काफी संख्या में फौज वहां पहुची और उसने गाव को चारो ओर से घेर लिया । आम जनता को बेतों का शिकार बनाया गया । स्त्रियाँ बेइज्जती के डर से घर से बाहर

न निकल सकी। १७५ व्यक्ति गिरफ्तार किए तथा ३० हजार रुपया सामूहिक जुर्माना वसूल किया गया। जेल की सख्तियोके कारण एक व्यक्ति बन्दी अवस्था में ही मर गया।

थरसा, गरेगाँव, चिचडा मनुघा एवं महातुला के पटवारी एवं रेवेन्यू आफिस तथा ग्रामपचायत के सब रेकार्ड नष्ट कर दिये गए। इन स्थानों के प्रमुख-प्रमुख कार्यकर्ता गिरफ्तार कर लिये गए। मउद्दा मे जनता नें पुलिस थाने पग हमला किया और उसे जलाकर नष्ट कर दिया हिन्दुस्तान रेड आर्मी के नेताओं ने एक पुलिस कास्टेबल को पकड लिया तथा कई अन्य कास्टेबलो को गोली का शिकार बनाया। यही नही, उन्होने ८० कारतूस, कुछ पुलिस-वर्दियां तथा बहुत-सा हथकड़ियां भी पुलिस थाने से छीनकर अपने अधिकार मे कर ला।

गुमगांव ताल्लुका——१३ अगस्त को स्थानीय काग्रेस कमेटी के उप सभापति एवं मत्री गिरपतार कर लिये गए। जनता के ३००० व्यक्तियों ने अपनें नेताओं को छुडाने के लिए पुलिस-थाने पर हमला बोल दिया। दारोगा डर के मारे थाना छोडकर भाग निकला, किन्तु थाने के दो कांस्टेबल बुरी तरह घायल हुए। लोगो का विचार किसी सरकारी कर्मचारी को हानि पहुँचानें का न था। अतएव उन्होंने दोनो कांस्टेवलों का बडी तत्परता से इलाज करवाया और ठीक होने पर उन्हे पुनः थानें मे भेज दिया। शहर के पोस्ट आफिस और कांजी हाउस भी जनता के क्रोध के शिकार बने और जलाकर नष्ट कर दिये गए। हिंगना म जनता को आन्दोलन सम्बन्धी हिदायतें देने के उद्देश्य से स्थान-स्थान पर पोस्टर चिपकाए गए।

बडौदा में पटवारी दफ्तर के कागजात जला दिये गए तथा पुल तोड़ डाला गया। लोगों ने मिलिटरी की लारियों पर हमला करके उन्हे लूट लिया। खरसौली में दारोगा को बुरी तरह पीटा गया तथा उसे अपनी सरकारी वर्दी उतार फेकने के लिए बाध्य किया गया। ताल्लुका में जनता पर गोली चलाई, जिससे एक व्यक्ति मारा गया। समूचे ताल्लुके में १६० व्यक्तियों को सजाएं हुई तथा १३ व्यक्ति नजरबन्द किये गए। सामूहिक जुर्माने के रूप में लोगों से ५००० रुपया वसूल किया गया।

नागपुर शहर——सन् १९४२ के आन्दोलन में नागपुर शहर ने अपना एक इतिहास बनाया है। यहां के लोगों ने अभूतपूर्व उत्साह का परिचय दिया। ९ और १० अगस्त को बडी-वडी सभाए हुई जिनमें आज़ादी की लड़ाई को जी-जान से आगे बढाने की प्रतिज्ञा की गई। स्वयं मध्य प्रान्त के गवर्नर के ही शब्दो मे नागपुर पर ७२ घण्टे तक जनता का राज्य रहा।

११ अगस्त को हिन्दू महासभा के तत्त्वावधान म व्यंकटेश थियेटर मे एक विशाल सभा हुई जिसमे स्कूलो, कालेजो एवं मिलो मे हड़ताल चालू रखने का निर्णय किया गया। १२ अगस्त को विद्यार्थियो का एक विशाल जुलूस निकला जो शहर की प्रसिद्ध-प्रसिद्ध सड़कों पर से होता हुआ अदालत पहुंचा और लोगो को काम बन्द करने के लिए बाध्य किया। अदालत पर झंडा लहराया गया। पुलिस ने प्रदर्शन-कर्त्ताओ पर गोलिया चलाई तथा अश्रु-गैस का प्रयोग किया। दो व्यक्तियो के सख्त चोटे आई। मामूली घायल होने वालो की सख्या तो अनगिनत थी।

नागपुर का जनरल पोस्ट आफिस जला दिया गया। गवर्नमेंट के राशन के गोदाम तथा कपडे के स्टाक लूट लिये गए। प्रायः सभी सरकारी इमारतों पर धावा बोला गया। ख़ज़ाने लूट लिये गए। बिजली के बल्व तोड़ दिये गए। टेलीफोन तथा टेलीग्राफ के तार काट दिये गए। शराब की भट्टिया तथा फायर ब्रिगेड जलाकर नष्ट कर दिये गए। शहर के सभी पुलिस-स्टेशन या तो जला दिये गए या उन पर अधिकार कर लिया गया।

१४ अगस्त को शहर भर मे करफ्यू आर्डर लगा दिया गया। फौजियो के जत्थे शहर में चक्कर लगाने लगे और जो भी व्यक्ति, दोषी हो या निर्दोष, दिखाई पड़ता था गोली से उडा दिया जाता था। जो कौतूहलवश अपने मकानों की खिडकियो से झाकते थे वे भी फौजियो द्वारा गोली के शिकार बना दिये जाते थे। वास्तव में फौजियो ने नागपुर की निर्दोष जनता के खून से जी भरकर फाग खेला। लोगो के घरों में जबरन घुस जाते थे, उनका सामान लूट लेते थे तथा उनकी बहन-बेटियों को बेइज्जत करते थे। बडे-बडे घरो के लोगों से जबर्दस्ती गन्दी नालियो को साफ करवाया गया। नवाबपुरा सर्किल के श्रीशंकर कुनबी को बिना किसी कुसूर के फांसी पर लटका दिया गया। इस इलाके में कुल ३२ आदमी गोली के शिकार हुए, तीन सौ से ज्यादा घायल हुए तथा करीब एक हज़ार गिरफ्तार किये गए, जिनमे से बहुत से मुंह मागी घूस मिलने पर छोड़ दिये गए।

लोगों ने झंडा सत्याग्रह प्रारम्भ किया। वे राष्ट्रीय झडा लेकर शहर में प्रदर्शन करने लगे। पुलिस वाले उन पर लाठी चलाते थे तथा प्रधान-प्रधान व्यक्तियों को जेल में ठूंस देते थे। किन्तु फिर भी लोगो का उत्साह कम नही हुआ और यह सत्याग्रह कई दिनों तक चलता रहा।

नागपुर शहर में अनगिनत वार गोलियाँ चली और अनुमान किया

जाता है कि कुल ३०० व्यक्ति मारे गये होंगे। १५३ व्यक्ति नजरबन्द और १९४ दण्डित किये गए।

वर्धा जिला

वर्धा भारत की गैर सरकारी राजधानी है, क्योंकि इसी के पास सेवाग्राम में भारत के कर्णधार महात्मा गाधी रहते है। महात्मा गाधी की गिरफ्तारी की खबर पाते ही वर्धा के लोग अधीर हो उठे। पर वे पूर्णरूप से शान्त रहे और उन्होंने कोई तोड़-फोड नही की। जब श्री दीनदयाल चूडीवाले बम्बई से लौटे तो लोग यह सुनने के लिए कि महात्मा जी ने भारत छोडो प्रस्ताव पर क्या-क्या हिदायते दी है, हजारो की सख्या मे गान्धी चौक में इकट्ठे हो गए। श्री दीनदयाल अपना भाषण दे ही रहे थे कि पुलिस सभा-स्थल पर आ धमकी और उसने एकत्रित जनता को आज्ञा दी कि या तो वह तुरन्त शान्तिपूर्वक तितर-बितर हो जाय वरना उस पर लाठी-चार्ज किया जायगा तथा गोलियां चलाई जायंगी। जनता ने पुलिस की इस धमकी का जवाव 'भारत छोड़ो' तथा 'इन्क्लाब जिन्दाबाद' के गगन-भेदी नारो से दिया। इतना ही नही लोगों ने एक स्वर से कहा। 'हम पूर्णरूप से स्वतत्र है, हम ब्रिटिश शासन को नही मानते। पुलिस हमारे कार्यों मे विघ्न डालने वाली कौन होती है?, पुलिस ने गोली चला दी, जिसके परिणाम-स्वरूप जंगलू नामक एक २८ वर्षीय नवयुवक शहीद हुआ और बहुत से व्यक्ति घायल हुए। लोग पुलिस की मार खाकर भी पूर्ण रूप से अहिंसक बने रहे। वर्धा वापिस लौटने पर महात्मा गाधी उस स्थान पर गये जहां जंगलू का दाह-सस्कार किया गया था और उन्होंने बड़ी श्रद्धा एवं भक्ति के साथ उसकी चिता पर पूजा के फूल चढाए।

श्री विनोवा भावे, दादा धर्माधिकारी, किशोरीलाल मशरूवाला, दीनदयाल चूडीवाला आदि प्रधान कांग्रेस-कार्यकर्ता गिरफ्तार कर लिये गए। किन्तु विद्यार्थियों ने स्थान-स्थान पर दीवारो पर उत्साहवर्द्धक बातें लिखी तथा छपे हुए बुलेटिन घरों में जा-जाकर लोगो को देने लगे। परिणाम-स्वरूप 'करो या मरो' का सन्देश हर व्यक्ति के पास पहुच गया। अधिकारियों ने जनता के बढते हुए जोश को कुचलने के लिए समूचे प्रदेश मे १४४ धारा लगा दी तथा वर्धा शहर को फौज के अधिकार में सौंप दिया। जो भी व्यक्ति, चाहे वह दोषी हो या निर्दोषी, अपने घर से निकलता था तो बुरी तरह से पीटा जाता था। एक दिन की बात है कि लाठियो से सुसज्जित सिपाहियो की एक लारी वर्धा पहुंची। पुलिस के आतंक से समूचा शहर श्मशान-सा बना

हुआ था। कुछ व्यक्ति जो ज़रूरी कामों से इधर-उधर जा रहे थे पुलिस वालो के द्वारा पकड़ लिये गए और राक्षसी तरीके से पीटे गए। उनमें से कई बेहोश भी हो गए।

देवली—यहा पर भी लोगो ने नेताओं की गिरफ्तारी के विरोध मे जुलूस निकाला। पुलिस वालो ने उस पर लाठी-चार्ज किया। जनता उत्तेजित हो गई और उसने पोस्ट आफिस जला दिया तथा थाने पर धावा बोल दिया जिससे कुछ कास्टेबल घायल हुए। शहर से उठी हुई क्राति की आग शीघ्र ही पौनार, बारबरी, बरुवर, सरगना आदि स्थानो पर भी फैल गई और लोगो ने स्थानीय डाकखानो एव थानो एव थानो के रेकार्ड भस्म कर दिये तथा लेटर बक्स तोड-फोड़ डाले। बारबरी में एक रेलगाड़ी को गिराने का प्रयत्न किया गया, किन्तु वह सफल न होसका। देवली इलाके से सामूहिक जुर्माने के रूप मे ४ हजार रुपये वसूल किये गए।

हिंगनघाट—इस इलाके के विद्यार्थियों ने भी जनना के साथ मिलकर नेताओ की गिरफ्तारी के विरोध मे बडे-बड़े जुलूस निकाले, सभाए की तथा अन्य प्रकार के प्रदर्शन किये। यहा पर कुल १२ व्यक्ति गिरफ्तार किये गए।

आरवी तालुका—१० अगस्त को एक विशाल जुलूस निकाला गया तथा आम हड़ताल रखी गई। पुलिस वालो ने काग्रेस के दफ्तर पर ताला लगा दिया। १६ मुख्य कार्यकर्त्ताओ को गिरफ्तार कर लिया तथा कुछ व्यक्तियो को बेंतो से पीटा।

आष्टी—१२ अगस्त को जब आष्टी के लोगो को नेताओ का गिरफ्तारी का समाचार मिला तो वे एक बड़ा जुलूस बनाकर थाने पर राष्ट्रीय झडा फहराने के लिए गए। जुलूस के आगे-आगे महिलाएं थी। पुलिस-अधिकारियो ने जुलूस को थाने के सामने रोका, किन्तु जब लोग बराबर आगे बढते गये तो उन्होंने लाठी एव गोलियो की वर्षा करनी शुरू कर दी। बहुत से स्त्री-पुरुष घायल हुए। कुछ नवयुवक स्त्रियों पर अमानुषिक ढग से मार पड़ते देखकर चुप न रह सके। उनका खून खौलने लगा तथा उनके हृदय मे प्रतिहिंसा की ज्वाला धधक उठी। वे आगे बढ़े और प्राणो की बाजी लगाकर पुलिस वालो पर टूट पड़े। इस मुठभेड में पुलिस के ५ व्यक्ति, जिनमे एक रामनाथ मिश्र नामक सब इन्स्पेक्टर भी था, मारे गए। शेष पुलिस वाले भाग खड़े हुए और थाने पर जनता का अधिकार हो गया। नवयुवको ने बड़ी शान से थाने पर राष्ट्रीय झडा फहराया। इस घटना में जनता के भी ६ व्यक्ति काम आए।

जब उच्च अधिकारियो को इस घटना की सूचना मिली तो उन्होने

आधी रात को सशस्त्र ब्रिटिश सैनिको को आष्टी भेजा। उन्होने आते ही लोगो को अधाधुन्ध मारा-पीटा। दिन में उन्हे चिलचिलाती धूप मे खड़ा किया तथा बहुतो को वही गोली से उड़ा दिया। बेचारो को न तो खाने के लिए कुछ दिया गया और न पीने के लिए ही। इस प्रकार वे एक तरफ से तो धूप, प्यास एव भूख से परेशान रहे तथा दूसरी ओर गोलियो के शिकार हुए। सनिको को इतने पर भी सन्तोष नही हुआ। उन्होने सब लोगो को इकट्ठा करके एक छोटी-सी कोठरी मे बन्द कर दिया, ठीक वैसे ही जैसे पशुओ को किसी बाड़े मे बन्द किया जाता है। इस अवस्था मे बेचारो को एक माह तक रखा गया। लोगो की स्त्रियो एव बहनो व बेटियो के साथ बलात्कार भी किया गया। बाहरवालो को गाव वालों की मदद करने एवं उनके साथ सहानुभूति दिखाने तक की इजाजत नही दी गई। बन्दियो पर मुकदमा चलाया गया और उनमे से ६ को फासा की सजा का हुक्म हुआ। इससे सम्पूर्ण देश मे तहलका मच गया और स्थान-स्थान से फासी की सजा के विरोध में आवाज उठाई गई। लोगो के अनवरत परिश्रम का यह फल हुआ कि चार व्यक्तियों को फासी के स्थान पर आजीवन कारावास का दड दिया गया। अन्त मे दो व्यक्तियों को फासी पर लटका दिया गया।

वर्धा जिले में १३७ व्यक्ति नजरबन्द और ४३४ दण्डित हुए। ३ जगह गोली चली, जिससे ७ व्यक्ति मरे और २० घायल हुए। ४०,००० रु० जुर्माना किया गया।

चांदा जिला—नेताओ पर किये गए प्रहार की खबर जब यहा वालो को मिली तो सम्पूर्ण जिले में एक साथ विरोध-प्रदर्शन किया जाने लगा। स्थान-स्थान पर सभाए हुईं तथा जुलूस निकाले गए जिनमे 'अग्रेजो, भारत छोड़ो' की माग की गई। लोगो मे एक अजीब जोश दिखाई पड़ता था। प्रदर्शन का कार्य प्रायः कचहरी, थानों एव अन्य सरकारी इमारतो के सामने किया गया। अरमोहा, चिरोली, देवसरा, बरोरा, चिकनी, चादा आदि स्थानो पर सरकारी रेकार्ड जलाने का प्रयत्न किया गया। सरकार ने आन्दोलन की गति रोकने के लिए मुख्य-मुख्य व्यक्तियो को गिरफ्तार कर लिया, प्रदर्शन करने वालो को बुरी तरह से पीटा गया, गाव लूट लिये गए तथा जला दिये गए। और स्त्रियो की इज्जत लूटी गई।

चिमूर—चादा जिले का यह कस्बा सारे देश मे प्रसिद्ध हो चुका है। यहाँ की जन-सख्या केवल ६००० है। नेताओ की गिरफ्तारी की सूचना पाते ही यहा पर भी ११ अगस्त से शान्तिपूर्ण प्रदर्शन किये जाने लगे। १३ अगस्त को

नागपंचमी के दिन नगर भर में प्रभात फेरी निकाली गई, जिसमें ४०० स्त्रियां एव १०० बच्चो ने भाग लिया। प्रभात-फेरी का कार्यक्रम पूर्ण रूप से नियंत्रित एवं अहिंसक था। फिर भी अधिकारियो ने नगर के सभी नाके बन्द कर दिये और पभात फेरी को रोक कर उस पर गोला चला दी। लोग सब-के-सब एक सच्चे अहिंसक सैनिक की भांति अपनी जान मोह छोडकर गोलियो की बौछार मे वही बैठ गए। परन्तु गोली चलनी बन्द न हुई। कुछ औरतें तथा बच्चे वही मारे गए। यह देख जनता पागल हो गई और पुलिस पर टूट पड़ी। पुलिस के पाच व्यक्ति वही मर गए और शेष भाग गए। पुल आदि तोड दिए और पेड़ गिरा कर सडकें बन्द कर दी। फौज के पहुंचने के पहले ही गाव के बहुत से आदमी गाव छोडकर चले गए।

१९ ता० की अरोरा के स्टेशन पर २०० सशस्त्र गोरे सिपाहियो तथा ५० हिन्दुस्तानी सिपाहियो की टुकड़िया मोटरो सहित एक स्पेशल ट्रेन से उतरी। चिमूर वहा से तीस मील है। जिला मजिस्टेट जब चिमूर पहुँचा तब क्रोध से पागल हो रहा था। बेचारे गाँव वाले डरकर अपने-अपने घरो मे छिप गए और दरवाजे बन्द कर लिए। सड़कें सूनी पड़ी थी। जिला मजिस्ट्रेट ने सशस्त्र फौज लेकर पहले गाव के बड़े-बड़े लोगो के घरो मे बलपूर्वक प्रवेश किया। उनको बाहर निकाला गया और पीटा गया। बुड्ढो और बच्चो को छोडकर सब गिरफ्तार कर लिये गए। कुल १२८ गिरफ्तारिया हुईं। फिर गाँववालो से कहा गया कि वे अपने फौजी महमानो को खाना खिलाए। जो गिरफ्तार हो गए थे उनके गोदाम तोड लिये गए। फिर लूट शुरू हुई। तेल घी, चावल, आटा, बरतन आदि सभी चीजो पर हाथ साफ किया गया। सिल्क की साड़िया जला दी गई। या हिन्दुस्तानी सिपाहियो को दे दी गई। गोरो ने लोगो के हारमोनियम से मनोरजन किया। बलात्कार भी हुए, परन्तु अधिकतर स्त्रियो ने एक जगह एकत्र होकर अपनी रक्षा की। गर्भवती तथा ऋतुमती स्त्रियो के साथ भी बलात्कार किये गए और उन्हे रक्त से लथपथ छोड दिया। गया। एक निर्धन की झोंपड़ी मे अकेली स्त्री पर तो बलात्कार की हद ही कर दी गई। एक छोटी लड़की का गला घोट दिया गया। इन सब अत्याचारों की यदि विधि पूर्वक जाँच हो तो उन पर ठीक-ठीक प्रकाश पड सकता है।

यह स्थिति दो दिन तक रही। आखिर एक बडी स्त्री डाडीबाई बागदी राइफलो के बीच से होती हुई जिला मजिस्ट्रेट के पास पहुची और उसने गांव की स्त्रियों की करुण कहानी सुनाई। जिला मजिस्ट्रेट ने कहा कि यह आफत तो गाँव वालो ने स्वय बुलाई है। फिर उसने पुलिस और फौजियो को बुलाकर

स्त्रियों पर अत्याचार करने से मना किया, फिर भी अवस्था अधिक न सुधरी। इसी बीच सरकार ने गांव पर तथा आस-पास के लोगो पर एक लाख रुपया सामूहिक जुर्माना कर दिया। जुर्माने की वसूली बलपूर्वक किंतु आसानी से कर ली गई, क्योकि गाव मे केवल बेचारी स्त्रिया ही शेष रह गई थी। आदमी या तो भाग गए थे या बन्दी बना लिये गए थे।

सात हफ्तो तक चिमूर मे असभ्य तथा उद्दड सिपाहियो का राज्य रहा। इस अर्से में उसका सम्बन्ध बाहरी दुनिया से बिलकुल कट गया था। पहले तो घटनाओ के समाचार ही बाहर नही आने दिये गए और बाद मे पुलिस और फौज के आतक के कारण किसी को वहाँ जाने की हिम्मत न होती थी।

डा० मुन्जे को १७ स्त्रियों ने स्वय आप बीती, बलात्कार तथा अत्याचारों की, कथा सुनाई। उनमे से १३ स्त्रियो के साथ तो एक से अधिक गोरे सिपाहियो ने बलात्कार किया तथा शेष चारो पर भी अत्याचार किये गए। ४००० मनुष्य गिरफ्तार किये गए। बहुत से दारोगा को घूस देने पर छूटे। करीब ७५ व्यक्तियो को सजाए दी गईं। दो जेल मे तथा सात जेल से बाहर मर गए। ३५ को आजन्म देश निकाले, १ को तेरह साल, ७ को सात साल, १८ को पांच साल तथा तीन को तीन साल कैद की सजायें दी गईं। दो दिन के अन्दर १००,००० रुपया सामूहिक जुर्माने के रूप मे बलपूर्वक वसूल किया गया। मोतीचन्द नानकचन्द पर १०,००० रुपया जुर्माना किया गया। उसने गवर्नर को तार दिया कि मेरी तो दूकान ही लूट ली गई है जिसमे १०,००० का सामान था। इस पर उसे उत्तर मिला कि जुर्माना तो वसूल किया ही जायगा। एक मनुष्य की ५०,००० रुपए तथा दूसरे की १,००० रुपये की कुल सम्पत्ति लूट ली गई। नूरा वोहरा पर २,००० रुपया तथा एक मुसलमान पर १,००० जुर्माना हुआ। ३ सितम्बर तक ८५,००० रुपया सामूहिक जुर्माना वसूल कर लिया गया। बाद में गवर्नमेंट की नीति के अनुसार मुसलमानो का जुर्माना वापिस कर दिया गया।

चांदा जिले मे ७८ व्यक्ति नजरबन्द और २४८ दंडित हुए। एक जगह गोली चली, जिससे तीन मरे और १० घायल हुए।

महाकौशल

मध्यप्रान्त के ग्यारह हिन्दी भाषी जिलो को मिलाकर कांग्रेस ने महाकौशल नाम का सूबा बना दिया है। वैसे तो कांग्रेस-नेताओ की गिरफ्तारियो

पर ही यहाँ पर काफी उत्तेजना फैल गई थी तथा जुलूस आदि निकलने शुरू हो गए थे, परन्तु जबलपुर मे गुलाबसिंह की मृत्यु के बाद जनता की रोषपूर्ण भावनाए चरम सीमा तक पहुँच गईं। इस प्रान्त के आन्दोलन का वर्णन जिलेवार नीचे दिया जाता है।

बैतूल—९ अगस्त को जिला कांग्रेस के दफ्तर पर ताला पड़ जाने और श्री बालकृष्ण पटेल तथा बिहारीलाल पटेल की गिरफ्तारियो के बाद जनता और भी क्रुद्ध हो गई और उसने पुलिस पर पत्थर फेंके। उत्तर मे पुलिस ने गोली चलाई, जिससे एक आदमी की मृत्यु हो गई। इसके बाद जनता ने पोस्ट आफिस तथा पटवारखाने के कागजात जला दिए। ऐसी ही घटनाएँ अमरावती, बघौरा तथा गन्नौना मे हुई।

१५ अगस्त को १००० मनुष्यो ने रानीपुर थाने पर आक्रमण करके सामान सहित बिलकुल जला दिया। १६ ता० को धाराखोह रेलवे स्टेशन को २५०० आदमियो ने मिल कर फूंक दिया। १७ ता० को प्राय: इतने ही मनुष्य रेल की पटरियो को उखाड़ने घोराडँगरी पहुँचे, जहाँ पर उनसे २००० मनुष्य और मिल गए। डिप्टी कमिश्नर भी फौजी सिपाहियों सहित वहाँ था। लोगो के लकड़ी की टाल मे आग लगा देने पर उसने सिपाहियो को गोली चलाने की आज्ञा दी। गोली चलने पर एक मनुष्य की मृत्यु हो गई, ६ घायल हो गए तथा बहुत से पकड़ लिये गए।

२४ अगस्त को अमला मे रैवेन्यू इन्स्पेक्टर तथा पटवारखाने के कागजात जला दिये गए। नैया में भी ऐसा ही किया गया। श्री बेला को जो एक प्रमुख कांग्रेस-कार्यकर्त्ता थे, पीटा गया तथा उनके लड़के को गोली से उड़ा दिया गया। किसी मनुष्य ने बैतूल शहर के एग्रिक्लचर कालेज मे आग लगा दी। अभियुक्त का पता न चलने पर २००० रुपया सामूहिक जुर्माना कर दिया गया।

धाराखोह और घोराडूंगरी के बीच इटारसी-नागपुर रेलवे लाइन की पटरियाँ उखाड़ दी गईं। जगह-जगह पर तार काट दिये गए तथा रेल उलटने की कोशिशें की गईं।

इस जिले मे ६४७ व्यक्ति गिरफ्तार और १९७ नजरबन्द किये गए। ४५२ पर मुकद्दमे चले, जिनमे १८ महीने से लेकर २० साल तक की सजाएं दी गईं। ३ जगह गोली-काण्ड हुए, जिनमे १२ मरे और ६ घायल हुए। ६ राजबन्दी जेल मे शहीद हुए, २४००) रु० सामूहिक जुर्माना किया गया।

होशंगाबाद—९ अगस्त को जिले भर मे पूर्ण हड़ताल रही। जुलूस

निकाले गए तथा सभायें की गईं। ११ ता० को इटारसी के पुलिस-स्टेशन को जला डालने की कोशिश की गई। १४ ता० को लोगों ने मिलकर इटारसी के स्टेशन पर लकडी की टाल को जला डालना चाहा। यहाँ पर उनसे पुलिस की मुठभेड हुई। परिणामस्वरूप एक अंग्रेज सारजेन्ट, एक सरकिल इन्पेक्टर तथा दो सिपाही घायल हुए। बाद मे पुलिस ने लोगों के घरो मे जा-जाकर उन्हे पीटा। एक लड़के को तो इतना पीटा गया कि वह अस्पताल में ही मर गया।

होशंगाबाद—शहर मे पूर्ण हडताल रही और शान्ति-पूर्ण प्रदर्शन किये गए। कुछ दिन बाद लोगो ने तार काटने शुरू कर दिये। विद्यार्थियो पर तीन बार लाठी-चार्ज हुआ। ५००० रु० का सामूहिक जुर्माना किया गया।

छिकानी—नरसिंहपुर सब-डिवीजन का एक गाव है। २४ ता० को कुछ राजनैतिक कैदियो को किसी अनजान जगह ले जाये जाने की अफवाह उडने पर जनता ने एक सभा की। जनता के न हटने पर नायब तहसीलदार ने स्वय जनता पर गोली चलानी शुरू कर दी। श्री मन्साराम नामक एक व्यक्ति घटनास्थल पर ही मारा गया। दूसरे दिन इस गोली-काड के विरुद्ध फिर एक सभा की गई। सभा पर लाठी-चार्ज किया गया जिसमें दो आदमी बेहोश हो गए।

शोभापुर—शहर के एक भाग के तार काटे जाने पर ५००० रु० का सामूहिक जुर्माना किया गया। इस जिले में १४० नजरबन्द हुए ३६५ पर मुकद्दमे चले। ४ सरकारी इमारतो पर हमले किये गए। तीन जगह गोलिया चली। २ आदमी शहीद हुए। १५,००० रु० सामूहिक जुर्माना किया गया।

मडला—जिले के कांग्रेस नेताओ की गिरफ्तारियो पर सात दिन की आम हड़ताल घोषित की गई। १५ ता० की फतह दर्वाजे पर एक जन सभा मे भाषण देते हुए एक वक्ता को गिरफ्तार कर लिया गया। एक लडका जो कम्पाउड की दीवार पर खड़ा था, कोडो से पीटा गया। आम लाठी-चार्ज हुआ। जनता ने पुलिस पर पत्थर और ढेले फेंकने शुरू कर दिए। इस पर मि० फौक्स, रिजर्व इन्स्पेक्टर ने गोली चलाने की आज्ञा दे दी। श्री उदयचन्द ने जनता को मार-पीट करने से रोकना चाहा। पुलिस ने उदयचन्द को वहां से हटने को कहा और उनके न हटने और सीना खोलकर खडे हो जाने पर पुलिस उन्हे गोली मार दी। ६ सिपाही उन्हे अस्पताल ले गए जहा वह मर गए। सम्बन्धियो की प्रार्थनाओ को ठुकराकर अधिकारियो ने श्री उदयचन्द के शव को भी उन्हे देने से मना कर दिया।

मंडला शहर से प्रायः तीन मील पर एक पुल तोड़ दिया गया। रेलवे के तार काट दिए, पटरियां उखाड़ दी गईं। बाभा में एक दूसरा पुल नष्ट कर दिया गया। दम्दोक्य मे भी ऐसे ही कामो के फलस्वरूप ११ मनुष्य गिरफ्तार कर लिये गए। पिन्डोर्ग में डाक के बक्स नष्ट कर दिये गए। काजी हाऊस तोड दिया गया। शराब की दूकानो पर धरना दिया गया। ब्रांच पोस्ट आफिस और ग्राम-पचायत के दफ्तर फूंक दिये गए। नायपुर में लाठी-चार्ज में दो लड़के घायल हो गए।

इस जिले में २५ नजरबन्द और ५४ दण्डित हुए। ५ सरकारी इमारतो पर हमले हुए। ३ जगह गोली-कांड हुए। एक व्यक्ति मरा और ५ घायल हुए।

छिन्दवाड़ा—इस जिले मे ८५ व्यक्ति नज़रबन्द किये गए और २५ पर मुकदमे चले। लोधीखेरा, सौन्सार, और पान्डूराना मे जन-सभाये हुई तथा जुलूस निकाले गए। सरकार ने जिला कांग्रेस कमेटी का दफ्तर जला डाला।

बालाघाट—सारे जिले मे पूर्ण हड़ताल रही। १० अगस्त की शाम को गान्धी चौक में एक विराट सभा हुई। बहुत से कार्यकर्त्ता वही गिरफ्तार कर लिये गए। शहर के हाई स्कूल की लाइब्रेरी तथा और स्थानो के शीशे आदि तोड़ डाले गए। इसके बाद बालाघाट और पीपर झटी के बीच-के तार काट दिये गए। कुल १२ गिरफ्तारियाँ हुईं। इस जिले में १७५ नजरबन्द और १७ दण्डित हुए। एक जगह गोली चली। एक आदमी शहीद हुआ।

बारासिवनी—८ से २० अगस्त तक शान्तिपूर्ण प्रदर्शन किये गए। १२ अगस्त को शहर काग्रेस कमेटी के सभापति पकड़ लिये गए। इसके विरुद्ध एक विराट जन-सभा हुई। २० अगस्त को बारा सिवनी मे गोलीकाड हुआ, जिसमें एक मनुष्य मर गया तथा बहुत से घायल हुए। श्री रामलाल शर्मा की दूकान पर जनता में और पुलिस मे मुठभेड़ हो गई। फलस्वरूप श्रीमती काशीबाई तथा कुछ और कांग्रेस-कार्यकर्त्ता गिरफ्तार कर लिये गए। २० अगस्त को काशीबाई कारघटोला ग्राम मे ले जाई गईं। वहां पर वह पीटी गई। उनकी धोती फाड़ दी गई। १० सिपाहियो ने उनका सतीत्व नष्ट किया। उनके गुप्त अगों को क्षत-विक्षत कर दिया और अन्त मे उनका सिर काट दिया। उनके २०७५ रु० के गहने पुलिस नें जब्त कर लिए। इसके उपरान्त काशीबाई के पिता को वहाँ बुलाकर उनको भी अपमानित किया गया। उनको गान्धी टोपी के टुकड़े-टुकड़े कर दिये गए। उसी शाम को जैन मन्दिर के पास एक शाँतिपूर्ण जुलूस पर बिना सूचना के गोली चलाई गई। एक मरा तथा १२ घायल हुए। २१ ता०

बहुत-सी गिरफ्तारिया हुईं। मजदूरों की दिन में तीन बार हाज़री होने लगी। स्त्रियां घर से निकलने पर थाने में बन्द कर दी गईं। कुल १२० गिरफ्तारियाँ हुईं। बारा सिवनी में १० सितम्बर तक पुलिस के सिपाहियों ने जनता पर घोर अत्याचार किये। ३००० रुपया सामूहिक जुर्माना वसूल किया गया।

दुर्ग—इस जिले मे २५० नजरबन्द और ५० दण्डित हुए। बेलोच, कुशुम और रोलट में सरकार विरोधी प्रदर्शन किये गए। १० अगस्त को नेताओ की गिरफ्तारियो के विरोध मे बाज़ार में हड़ताल की गई। भटग में शान्तिपूर्ण जुलूस पर पहले गोली चलाई गई और फिर लाठी-चार्ज हुआ। श्री घासीराम मंडल चोटो से बेहोश होगए। इसी अवस्था मे वह बन्दी बना लिये गए। कुछ दिन बाद अस्पताल में उनकी मृत्यु हो गई।

सागर—यह जिला कांग्रेस का केन्द्र है। गढ़कोठा में शान्तिपूर्ण जुलूस पर गोली चलाई गई। एक मरा तथा १५ पर इसी सम्बन्ध में मुकदमे चले। धारा ३४ के मातहत बहुत से चालान हुए। इस जिले में २०० नजरबन्द और ४०० दण्डित हुए।

जबलपुर—यहाँ अंग्रेज विरोधी प्रदर्शन हुए। ९ अगस्त को स्थानीय नेता गिरफ्तार कर लिये गए। १० अगस्त से शहर के हाईस्कूल के लड़को ने स्कूल जाना बन्द कर दिया। १४ अगस्त को विद्यार्थियों के जुलूस पर गोली चलाई गई। फलस्वरूप श्री गुलाबसिंह ने भारत के शहीदो में नाम लिखवाया। एक पोस्ट आफिस तथा मदन महल रेलवे स्टेशन फूक दिये गए। बिजली के बल्ब फोड़ दिये गए। प्राय: ५५० गिरफ्तारियाँ हुईं। १५० नज़रबन्द रखे गये और ४०० को सजायें दी गईं।

महाकौशल के रायपुर और बिलासपुर जिलों से आन्दोलन के विषय में विस्तार पूर्वक सूचना नहो मिली। केवल इतना ज्ञात हुआ है रायपुर में १०० व्यक्ति नज़रबन्द और ७०० दण्डित हुए। दो सरकारी इमारतो पर हमले हुए। बिलासपुर जिले के नजरबन्दो की सख्या ८५ थी।

विदर्भ

विदर्भ प्रान्त अमरावती, बुलढाना, अकोला और यवतमाल मे विभाजित है।

अमरावती—जिले के अनेक स्थानो में अंग्रेज विरोधी प्रदर्शन किये गए। पोस्ट आफिस लूट लिये गए और रजिस्ट्रेशन कोर्ट जला दिये गए। जगह-जगह तार काट दिये गए तथा थानों और शराब की दूकानो को नष्ट कर दिया गया। मौरसी में तहसीलदार को जुलूस में सम्मिलित किया गया तथा

तहसील पर तिरंगा झंडा लगा दिया गया। वनौरा के थाने पर कुछ गाँवों के लोगों ने आक्रमण कर दिया। पुलिस ने गोली चलाई, जिससे पाँच मनुष्य मारे गये तथा २५ घायल हो गये। इस सम्बन्ध में तीन गाँवों पर सामूहिक जुर्माने किये गए। खानपुर मे रेंजर का दफ्तर जला दिया गया। अमरावती शहर में जनता ने पोस्ट और तार के दफ्तर तथा इम्पीरियल बैंक पर अधिकार जमाना चाहा, परन्तु असफल रही। १५ दिन से विद्यार्थी हडताल पर थे। उन्होंने बिजली के बल्व तोड दिए। पवाली मे तार काट दिये गए। वहाँ के लोगों पर सामूहिक जुर्माना किया गया। परन्तु जुर्माना वसूल करने के लिए जब वहा रेविन्यू इन्स्पेक्टर कुछ सिपाहियो को लेकर पहुंचा तो लोगों ने जुर्माना देने से इन्कार कर दिया। इस पर डिप्टी कमिश्नर स्वयं पुलिस को लेकर वहाँ पहुचा, परन्तु असफल रहा। उसने राष्ट्रीय झडे को नीचे उतारना चाहा। पुलिस और जनता में मुठभेड हो गई। फलस्वरूप ५ मनुष्य वही मर गए तथा २ बाद में मरे। कुछ मनुष्य घायल भी हुए। हाईकोर्ट में कुछ मनुष्यो पर मुकदमे चलाये गए। जज ने पुलिस का कार्यवाही की भर्त्सना की तथा जुर्माने को गैर कानूनी घोषित किया। चांदपुर बाजार में एलिचपुर की ताल्लुका पुलिस ने एक जुलूस पर आक्रमण किया। जुलूस के नेताओ पर पुलिस पर आक्रमण करने के अभियोग में मुकदमा चलाया गया। परन्तु निरपराध घोषित हुए इस पर पुलिस के ऊपर हर्जाने या दीवानी में मुकदमा चलाया गया। मुक-दमे में जनता की जीत हुई।

अमरावती जिले मे ६०० व्यक्ति नजर बन्द और ७५० दण्डित हुए। ७ सरकारी इमारतो पर हमले हुए। ६ जगह गोली-काण्ड हुए। जिनमे १४ मरे और ४० घयल हुए।

अकोला—१९४१ में व्यक्तिगत सत्याग्रहियों के छूट जाने पर भी यहाँ भारत रक्षा कानून के मातहत युद्ध में बाधा डालने के नाम पर मुकदमे चलते रहे। अगस्त १९४२ से पहले चार प्रमुख कांग्रेस-कार्यकर्त्ता जेल में ठूंस दिये गए। गान्धीजी की गिरफ्तारी की सूचना पाकर लोगों ने हड़तालें कर दी। सरकार ने कांग्रेस कमेटियो को गैर कानूनी घोषित कर दिया। गांवों में तरह-तरह के अत्याचार हुए। यहां तक कि बच्चों और बूढों तक को रात के समय पहाड़ी रास्तो में घसीटा गया, लोगो को बुरी तरह पीटा गया, हाथ पैर तोड दिये गए तथा पाखाने के रास्ते पर तेज पाउडर घर दिया गया। कही-कही पीटनें की धमकी तथा रुपये का लालच देकर क्षमा मांगनें को कहा गया। अकोला के नेशनल स्कूल, जिसको बाद मे सरकार ने अपनें कब्जे में ले लिया

और खामगांव की तिलकराष्ट्रीय शाला के विद्यार्थियों नें आन्दोलन में उल्लेख-नीय भाग लिया माता-पिताओं पर जोर दिया गया कि वे अपनें लड़को को राजनीति से अलग रखें। अकोला की सांवतराम मिल में एक महीने तक हड़ताल रही।

२००० के लगभग गिरफ्तारिया हुई। १५० नजरबन्द और ३५० दण्डित किये गए।

मार्च तक सरस्वती मन्दिर और राष्ट्रीय स्कूल पुलिस के अधिकार मे रहे। खिरपुरीके अम्बादास पटेल, श्री दौलतजी, श्रीराम राय पटेल आदि बहुत से कांग्रेस-कार्यकर्त्ता बरगांव लाये गए और पीटे गए। एक महीनें तक बरगांव में फौजें पडी रही, जिन्होंने बहुत अत्याचार किए। ५० से ऊपर आदमी गिर-फ्तार किये गए जिनमें ३० स्त्रिया भी थी। जेल मे कैदियो के साथ बहुत बुरा बर्ताव होता था। खाना बहुत खराब मिलता था। कई कैदी जेल से छूटने के बाद मर गए।

बुलढाना—इस जिले में १०० व्यक्ति नजरबन्द बनाये गए। विरोध में सजायें की गई और जुलूस निकाले गए। दो बच्चों को, जो रेलवे लाइन के पास फिर रहे थे, गोली मार दी गई। एक वही मर गया तथा एक घायल हो गया। ये बच्चे खानदेश के थे।

यवतमाल—इस जिले से भी लगभग १०० व्यक्ति नजरबन्द बनाये गए। लोगो ने शान्ति पूर्व तरीके से सभाओ और जुलूसो के द्वारा अपना विरोध प्रकट किया।

: १३ :

राजधानी में खून की होली

भारत का सदर मुकाम होने के कारण नेताओं की गिरफ्तारी की खबर दिल्ली की जनता को तुरन्त मिल गई और ९ अगस्त को सुबह १० बजे तक समूचे शहर में हड़ताल हो गई। दोपहर में घंटाघर के पास से एक विशाल जुलूस रवाना हुआ, जो सड़को पर घूमता हुआ शाम को करीब ६ बजे गाँधी मैदान मे पहुँचा और एक सभा के रूप मे परिणत होगया। करीब ५० हजार नर-नारियों ने इसमें भाग लिया। दूसरे दिन, १० तारीख को सुबह से ही लोग घंटाघर के पास इकट्ठे होने लगे। लोगो का विचार नई दिल्ली की ओर जाने का था। अधिकारियो ने अजमेरी गेट पर पुलिस और फौजी लारियाँ तैनात करके और काटेदार तार लगा कर अनेक रुकावटे खडी की, फिर भी लोग नई दिल्ली पहुँच ही गये। वहाँ की अधिकाश दुकानें पहले से ही बन्द हो चुकी थी। शेष दूकानें भी लोगों के पहुँचते ही बन्द हो गईं। शाम को पुरानी दिल्ली में एक विशाल सभा की गई जिसमें करीब एक लाख व्यक्तियो ने भाग लिया। ११ तारीख को पुनः प्रातः ८ बजे लोग इकट्ठे हुए। किन्तु अब पुलिसवालो ने एकत्र लोगों पर लाठी-चार्ज प्रारम्भ किया। लोग लाठी खाकर भी तितर-बितर न हुए और एक जुलूस के रूप में कोतवाली की ओर बढ़नें लगे। प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के सदस्य श्री हकीम खलीलुलरहमान, जो जुलूस के नेता थे, गिरफ्तार कर लिये गए। अपने प्रिय नेता की गिरफ्तारी से लोग क्षुब्ध हो उठे और आगे की पंक्ति मे खड़े हुए एक नवयुवक ने सोडावाटर की एक बोतल फेंक दी, जिससे डिप्टी कमिश्नर की आँख पर चोट आई। फिर क्या था? पुलिस एवं फौज वालों को खुलकर खेलने का मौका मिल गया और उन्होंने लोगों पर गोली चलाना प्रारम्भ कर दिया। फलस्वरूप एक व्यक्ति तुरन्त मर गया तथा अनेक घायल हुए।

इस घटना ने लोगों के क्रोध को प्रज्ज्वलित कर दिया। फलतः उन्होंने टेलीग्राफ तथा टेलीफोन के तार काटना शुरू कर दिया। पुलिस वालों ने इस

सम्बन्ध में बहुत से व्यक्तियों को गिरफ्तार कर लिया, किन्तु फिर भी तोड़-फोड़ का काम बन्द नही हुआ। लोगो का एक जत्था म्युनिसिपल आफिस पहुँचा। उसने सेक्रेटरी को दफ्तर बन्द करने के लिए कहा। परन्तु उसने लोगो की बात को ठुकरा दिया। लोग उत्तेजित हो गए और उन्होने आफिस में आग लगा दी। पुलिस घटनास्थल पर आई और गोली चलाने लगी। लोगो ने दो आग बुझाने के इंजिनो और एक आग बुझाने की मोटर-साइकिल को आग लगाकर नष्ट कर दिया।

फतेहपुरी के पास गोरे सैनिको ने जनता पर गोली चलाई, जिससे दो व्यक्ति घटनास्थल पर मारे गए तथा बहुतों के गहरी चोटें आईं। फिर तो समूचे शहर में तोड़-फोड शुरू हो गई। पीली कोठी और क्वीन्स रोड पर उसका विशेष प्रकोप रहा पैट्रोल-पम्प जला दिये गए। शहर के सबसे बड़े रेलवे क्लीयरिंग अकाउन्ट्स आफिस पर भी हमला किया गया और उसे जला-कर नष्ट कर दिया गया। पुलिस इन्सपेक्टर ने एक व्यक्ति पर गोली चलाई। लोग इन्सपेक्टर पर टूट पड़े और उसे वही खत्म कर दिया। इन्कमटैक्स आफिस भी लोगो की क्रोधाग्नि का शिकार हुआ।

पहाडगंज के पास अंग्रेजी फौज के बैरिक पर हमला किया गया। फौजियो ने भागकर अपनी जान बचाई। शाम को पाँच से सात बजे के बीच में करीब १२ सरकारी स्थानों को जला दिया गया। पुलिस एव फौज ने भी स्थान-स्थान पर लोगों पर गोली चलाई। रात को समूचे शहर में पूर्ण अंधकार रहा क्योंकि बिजली के तार काट दिये गए थे और बल्व फोड़ दिये गए थे। दूसरे दिन सारे शहर पर फौज और पुलिस का अधिकार हो गया। स्थान-स्थान पर फौजी एवं पुलिस के सिपाही तैनात कर दिये गए। फिर भी दोपहर में लोगो के एक जत्थे ने पहाड़गंज के पोस्ट आफिस को जला डाला। फौजियों ने उस इलाके में कई बार गोलियाँ चलाईं, जिससे काफी आदमी मारे गए और बहुत से घायल हुए। जनता की रिपोर्ट के अनुसार १३ अगस्त तक करीब १५० व्यक्ति मारे गए जब कि सरकार के कथनानुसार केवल ४४ व्यक्ति मारे गए। घायलों का इरविन अस्पताल में भर्ती किया गया, किन्तु वहाँ के अधिकारियों ने उनके साथ बडा व्यवहार किया। जिन घायलों को खून का इंजेक्शन देना अत्यन्त जरूरी समझा था उनको भी उससे वंचित रखा गया। विद्रोही उचित चिकित्सा के पात्र नही समझे गए।

९ अगस्त से ३० सितम्बर तक की घटनाओ की जो रिपोर्ट हमे मिली है, उसका सार हम यहाँ दे रहे है—

ए० जी० सी० आर० ऑफिस के १२५ क्लर्कों ने सरकारी नौकरी से स्तीफा दे दिया।

२० अगस्त को जनता ने सप्लाई डिपार्टमेन्ट के चेक विभाग को काफी अश तक जला डाला।

दिल्ली क्लाथ मिल के प्रधान कैमिस्ट श्री एम० एम० शाह ने स्तीफा दे दिया। उनके आदर्श को लेकर कुछ नीचे के कर्मचारियों ने भी अपनी नौकरी छोड़ दा।

दिल्ली क्लाथ मिल तथा बिड़ला मिल में पूर्णरूप से हड़ताल रही। अधिकारियो को मिलें बन्द करनी पड़ी।

स्कूल और कालेजो के छात्र-छात्राओ ने आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया। आन्दोलन सम्बन्धी काफी बुलेटिन प्रकाशित किये गए और जनता मे बाँटे गए। लड़कियों ने वाइसराय की कौंसिल के सदस्यो के मकान पर पिकेटिंग की। उन्होने श्री अणे की सायंकालीन पार्टी को विफल बनाया। अतिथियो को मकान के पीछे के दरवाजे से अपने घर लौट जाना पड़ा। सरकारी कर्मचारियों को आफिस जाने से रोका गया। उनके गुलामी के चिह्न टोप एव नकटाई उतरवा लिये गए।

कुछ विद्यार्थियों ने पुलिस को अच्छा चकमा दिया। उन्होने यह अफवाह फैला दी कि नई दिल्ली में एक सभा होगी जिसमें वाइसराय की कौसिल के सदस्य अणे एवं सरकार महोदय के भाषण होगे। अत. पुलिस ने सभा मे लोगो को एकत्र होने से नही रोका। सभा मण्डप में एक विशाल जन-समूह इकट्ठा हो गया। जब सभामण्डप खचाखच भर गया तो एक उत्साही विद्यार्थी हाथ मे एक घंटी लिये हुए प्लेटफार्म पर पहुँचा। उसने अपनी जेब में से तिरंगा झडा निकाल कर सभामण्डप में फहराया। राष्ट्रीय नारे लगाये तथा भाषण देना प्रारम्भ किया। इतने में पुलिस भी वहाँ आ पहुँची और सभा विसर्जित हो गई।

९ सितम्बर को धारा १४४ लगी हुई थी, किंतु फिर भी जनता ने एक जुलूस निकाला जो शहर की गलियों में घूमा। शहर में पूर्ण हड़ताल रही। मुस्लिम भाइयों ने भी इसमे पूरा सहयोग दिया और चांदनी चौक की सभी मुस्लिम दूकाने बन्द रही।

१४ सितम्बर को कुछ छात्राओं ने थोड़े से मजदूरो को साथ लेकर असेम्बली भवन में पिकेटिंग किया। सबके हाथ मे राष्ट्रीय झडे थे। पुलिस ने उन पर लाठी-चार्ज किया, किंतु वे लाठी की मार खाकर भी डटे रहे। २०

व्यक्तियो को गिरफ्तार कर लिया गया। शेष को हटा दिया गया। आठ महिलाए लाठी की बौछार में वही बैठ गईं और उन्होने पुलिसकी आज्ञा मानने से इन्कार कर दिया। शाम को असेम्बली के खत्म होने पर लड़कियो एव स्त्रियों ने 'वेटिंग पुलिस' के सिपाहियो को घेर लिया। इसी दिन पुरानी दिल्ली में ११ गदहो का एक जुलूस निकाला गया। ११ गदहे वाइसराय की कौंसिल के ११ भारतीय मेम्बरो के प्रतीक थे, जिनको अंग्रेज गृह-सदस्य मि० मैक्सवेल, हांक रहे थे। पुलिस ने इस जुलूस पर छापा मारा और प्रदर्शनकर्त्ताओ एवं ११ गदहो को गिरफ्तार कर लिया। लोगों ने तोड़-फ़ोड शुरू की, जिस पर कुछ व्यक्ति और गिरफ्तार कर लिये गए।

इस प्रांत के आन्दोलन की विशेपता यह थी कि उसमें स्त्रियों एवं पढने वाली लड़कियो नें अगुआ भाग लिया। पुलिस वालो की आखो में धूल झोककर तथा प्रेस-कानून को तोड़कर लगातार प्रेसों एव साइक्लोस्टाइल द्वारा बुलेटिन प्रकाशित होते रहे।

पिकेटिंग करते हुए २०० व्यक्ति गिरफ्तार कर लिये गए तथा अन्य तरीको से भी सैकड़ो गिरफ़्तारिया की गईं। जेल में इन व्यक्तियों के साथ बडी सख्ती की गई। ३० सितम्बर को जेल के अन्दर राजनैतिक कैदियो पर सख्त लाठी-चार्ज किया गया। सब राजनैतिक कैदियो को, स्वास्थ्य सामाजिक स्थिति आदि का कुछ खयाल न रख कर, 'सी' क्लास में रखा गया। लाहौर-जेल में स्त्री-वन्दियों तक के साथ दुर्व्यवहार किया गया। उन्हे घसीटा गया और अज्ञात स्थान में बन्द कर दिया गया।

अखबारों पर कठोर सेंसर लगा दिया गया। हिन्दी के दैनिक पत्र 'वीर अर्जुन' तथा उसके प्रेस से ३ हजार रुपये की जमानत मांगी गई। दिल्ली प्रांतीय कांग्रेस कमेटी की संयुक्त मंत्री श्रीमती अरुणा आसफअली एव श्री जुगलकिशोर खन्ना तथा श्री सी० के० नायर को खास आर्डिनेन्स निकाल कर फ़रार घोषित किया गया और उनकी सब सम्पत्ति ज़ब्त कर ली गई।

अक्तूबर और नवम्बर महीनों मे भी प्रभात फेरियो और जुलूसो का निकलना जारी रहा। कई विशेष दिवस मनाये गए। हडतालें की गईं। म्युनिसिपल टाउन हाल, रिजर्वबैंक और विभिन्न कालेजों पर पिकेटिंग की गई। पेपर करेन्सी वितरण की गई। इस प्रकार सरकारी पाबन्दियो को तोड़कर आन्दोलन जारी रखा गया।

सरकार ने भी अपना दमन-चक्र जारी रखा। स्त्रियो के जुलूस पर लाठी-चार्ज किया गया, जिससे २ मर गईं और बहुत-सी घायल हुईं। पुलिस

ने अनेक घरों पर छापे मारे और उनकी तलाशियां ली। लगभग २०० गिरफ्तारियां हुईं, जिनमें स्त्रियों की संख्या भी काफी थी। प्रान्त के प्रसिद्ध कांग्रेस कार्यकर्त्ता श्री नायर भी गिरफ्तार कर लिये गए। कइयों पर मुकदमे चले और विभिन्न सजाएं दी गईं।

तोड़-फोड़—देहातों में भी तार काटे गए। विजवासन और गुडगांव के बीच बी० बी० एण्ड० सी० आई० रेलवे की एक मालगाड़ी गिराई गई। चादनीचौक के सब-पोस्ट आफिस का कुछ हिस्सा तोड़-फोड़ डाला गया। दिल्ली-करनाल लाइन पर एन० डब्ल्यू० रेलवे के बादली स्टेशन पर रात को धावा बोला गया तथा तमाम रेकार्ड जला दिये गए। चाँदनी चौक में रेलवे बुकिंग आफिस के पास एक बम फटा। दिल्ली-रोहतक लाइन पर एन० डब्ल्यू० रेलवे के घेवरा स्टेशन पर हमला किया गया और तमाम रेकार्ड फूक दिये गए। बिड़ला मन्दिर में भी एक विस्फोट हुआ। नई दिल्ली में टेलीग्राफ एव टेलीफोन के काफी तार काट डाले गए, जिससे बहुत-से स्थानो में टेलीग्राफ एवं टेलीफोन का काम बन्द रहा।

: १४ :

अजमेर-मेरवाड़ा

भारत के अन्य प्रान्तो की भाँति अजमेर-मेरवाड़ा ने भी देश की आजादी के इस युद्ध में अपना योग दिया। १ अगस्त को अजमेर-मेरवाड़ा के कांग्रेस-कार्यकर्त्ताओ ने एक सभा की तथा कांग्रेस कार्य समिति द्वारा अपने वर्धा अधिवेशन में पास किये गए 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव को दोहराया। अधिकारी पहले ही सतर्क थे। वे आदोलन को शुरू में ही कुचल डालना चाहते थे।

९ अगस्त को बम्बई मे नेताओ की गिरफ्तारी होते ही उन्होंने तुरन्त अजमेर, व्यावर, केकड़ी आदि स्थानो के दर्जनो खास-खास कार्यकर्त्ताओ को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ने ये गिरफ्तारियाँ करने में बड़ी मनमानी की। चीफ कमिश्नर ने पुलिस को खाली वारण्ट दे दिये थे, जिनमें नाम भरकर गिरफ्तार करना पुलिस के हाथ में छोड़ दिया गया था। नेताओ पर प्रहार करने के बाद पुलिस की दृष्टि कांग्रेस-कमेटियो एव खादी-भडारो की ओर गई। तमाम कांग्रेस-कमेटियाँ गैर-कानूनी घोषित कर दी गईं और उनके कार्यालयों पर पुलिस का कब्जा हो गया। अजमेर और ब्यावर के खादी-भण्डारों, हरमाड़ा के खादी विद्यालय, औषधालय एव पुस्तकालय, अजमेर के ग्रामोद्योग-सघ, हटूंडी के गाधी आश्रम आदि सस्थाओ पर पुलिस ने छापा मार कर अपना अधिकार जमा लिया और उनकी करीब १५ हजार की सम्पत्ति नीलाम कर दी। इस प्रकार पुलिस आतंक का साम्राज्य स्थापित करना चाहती थी, किन्तु स्कूलों एवं कालेजो के विद्यार्थियो ने हड़ताल करवाई तथा जुलूस निकाले। कुछ विद्यार्थी गिरफ्तार कर लिये गए।

राजनैतिक वन्दियो के साथ जेल में तरह-तरह की सख्तिया की गईं। नजरवन्दो को छोटे-खराव बैरको में रखा गया। वन्दियों को न तो अच्छा एव पूर्याप्त भोजन दिया गया, न पहनने-ओढ़ने के लिए पर्याप्त कपड़े। सर्दी वेचारो को ठिठुर-ठिठुर कर वितानी पड़ी। उनका बाहरी जगत से एकदम सम्बन्ध-विच्छेद कर दिया गया। उन्हे न तो पढ़ने के लिए अखबार दिया गया

न अपने सम्बन्धियो से मिलने की इजाजत दी गई और न पत्रही लिखने दिये गए। यही नही, जो व्यक्ति जेल की सख्तियो के कारण बीमार पडगए, उनकी ठीक देखभाल नही की गई और न उनका उचित रूप से इलाज ही करवाया गया। नाजुक स्थिति में भी बन्दियो को पैरोल पर नही छोड़ा गया।

महात्मा गाधी के उपवास की खबर बन्दियों को मिली तो वे क्षुब्ध हो उठे। उन्होने अपने प्रिय नेता के प्रति सहानुभूति प्रदर्शित करने के लिए अनशन किया। अधिकारी लोग इसे भी सहन नही कर सके। भोजन न करने के अपराधमें उन पर मुकद्मे चलाये गए और सख्त कैद की सजाये दी गईं। जुलाई १९४३ मे सरकार ने नजरबन्दो से अगूठे के निशान लेने का हुक्म निकाला। इन्कार करने पर कइयों को मुकद्मे चलाकर सजाए दी गई। बाद में पुलिस वालो ने जबर्दस्ती अगूठे के निशान लिये। जेल सुपरिण्टेण्डेण्ट के अपमानजनक व्यवहार के विरोध मे सुरक्षाबन्दी श्री रमेशचन्द्र व्यास ने तीन सप्ताह तक भूख हडताल की। सुपरिण्टेन्डेण्ट के खेद प्रकट करने पर हडताल खत्म हुई, किन्तु स्थानीय सरकार ने भूखहडताल करने के अभियोग में श्री व्यास पर मुकद्मा चलाया। इसके अलावा श्री मूलचन्द असावा तथा बालकृष्ण कौल को भी उपवास करने के अपराधमें क्रमश. १५ दिन एव दो मास कैद की सजाए दी गईं। उन्होने जेल अधिकारियों की मनमानी का विरोध किया था।

करीब एक वर्ष बाद १९४३ में सरकारने अपनी नीति कुछ बदली और बन्दियों को बिना शर्त छोड़ना आरम्भ कर दिया। हाँ, रिहाई के बाद प्रत्येक व्यक्ति पर कुछ-न-कुछ पाबन्दी अवश्य लगा दी जाती थी। कुछ व्यक्तियो को छूटने के बाद ४८ घटो के अन्दर-अन्दर अजमेर-मेरवाडा से बाहर चले जाने का हुक्म दिया गया। कुछ व्यक्तियो पर पाबन्दी लगाई गई कि वे मोटर इस्तेमाल न करे, रेडियो न रखे, आपस मे न मिले तथा बिना पुलिस की इजाजत के अपने शहर से बाहर न जावे। इन पाबन्दियो के कारण छूटे हुए नजरबन्दो के लिए अपना साधारण काम-काज करना भी कठिन हो गया। कुछ व्यक्तियो ने उन पाबन्दियो की अवहेलना की जिससे उन पर पुनः मुकद्मे चलाये गए और उन्हे कड़ी सजाएँ दी गईं। श्री मूलचन्द असावा और श्री गोकुललाल असावा को अजमेर म्युनिसिपल-क्षेत्र से बाहर न जाने का प्रतिबन्ध तोड़ने के अपराध में चार महीने की सख्त कैद तथा २००) रुपए जुर्माने की सजा दी गई।

: १५ :

सिन्ध प्रान्त

क्षेत्रफल	४८१३६ वर्गमील	जनसख्या	४५३५००८
गिरफ्तारिया	२४०० से अधिक	नजरबन्द	२००
सजायाफ्ता	१४००	बेंत की सजा	१००

सिन्ध एक छोटा-सा प्रान्त है जो सन् १९३६ में बम्बई प्रान्त से अलग हुआ है। इसमें लगभग ७० प्रतिशत मुस्लिम और ३० प्रतिशत हिंदू, ईसाई, सिख तथा अछूत रहते है। हिन्दू जनता अधिकतर बडे-बड़े शहरो में बसी हुई है और मुस्लिम देहातो मे। सिन्ध के मुसलमान सैयद, बलोची, मीर इत्यादि फिरकों में बंटे हुए है और उनमें आपस में काफी चलती रहती है। निस्सन्देह मुस्लिम लीग के बढ़ते हुए प्रभाव ने इन्हें एक झडें के नीचे इकट्ठा होने में काफी मदद की है। स्वभाव से यहा का मुसलमान काफी ब्रिटिश विरोधी है, पर मुस्लिम लीग के बढते हुए प्रभाव के कारण वह खुल कर किसी विरोधी आन्दोलन में नही पड़ता। हूरों का उत्पात ब्रिटिश विरोधी भावना से ही उत्पन्न हुआ है।

सन् १९४० व ४१ के व्यक्तिगत सत्याग्रह मे कांग्रेस हाई कमाड ने सिन्ध की विशेष स्थिति को ध्यान मे रखते हुए वहां के कांग्रेसजनो को व्यक्तिगत सत्याग्रह करने से मुक्त कर दिया था, पर सन् १९४२ के खुले विद्रोह मे कोई ऐसी पाबन्दी असम्भव थी। सिन्ध के आन्दोलन मे विद्यार्थियो का महत्त्वपूर्ण हिस्सा रहा। ९ अगस्त को कांग्रेस-नेताओ की गिरफ्तारी के फलस्वरूप कराची तथा अन्य दूसरे शहरों मे हड़तालें रही, जिनमे विद्यार्थियो ने और विशेष कर छात्राओ ने बहुत सक्रिय भाग लिया। वे बहुत बड़ी सख्या मे स्कूल-कालेजो से निकलकर विरोध प्रदर्शनो मे शामिल हुए। ब्रिटिश नौकरशाही ने इसका उत्तर लाठियों के प्रहारो से दिया। पुलिस ने स्वराज भवन से कांग्रेस का झंडा उतार लिया और दफ्तर पर कब्ज़ा कर लिया। शहर मे कितने ही दिनो तक हड़ताल रही और सारे प्रमुख बाज़ार कराची माल मंडी और रुई के बाजार सहित एक हफ्ते से अधिक दिनो तक बन्द रहे। शहर मे चारों ओर

रोजाना प्रभात फेरियां निकाली गईं और रामबाग और ईदगाह पर कई सामूहिक सभाए की गई। पुलिस ने भयंकर लाठी-चार्ज किया, लेकिन फिर भी काफी तादाद मे लोग इकट्ठे हुए।

कराची—प्रारम्भ के कुछ हफ्तो तक कराची के प्राय: सारे ही स्कूल और कालेज बन्द रहे। १०, ११, १२ अगस्त को विद्यार्थियो तथा जनता के बड़े-बड़े जुलूस निकले। पुलिस ने इन जुलूसो पर लाठी-चार्ज किये जिनके कारण कितने ही आदमी ज़ख्मी हुए। अनेक निर्दोष व्यक्ति भी, जिनका जुलूसे से सम्बन्ध न था, पुलिस के रोष के शिकार बने। पुलिस के सिपाहियो ने विश्रान्ति-गृहों, क्लबो. वाचनालयो इत्यादि जगहों में घुस-घुस कर निर्दोष व्यक्तियो को मारा-पीटा और गिरफ्तार कर लिया। इस पर विद्यार्थियो का रोष और भी बढ़ा। उन्होने उन स्कूलो पर पिकेटिंग किया जो इस समय भी खुले हुए थे। एन० जे० हाई स्कूल और चर्च कालेज पर पिकेटिंग हुआ। क्वीस एलेक्ज़ेंड्रिया कालेज में विद्यार्थियो को केवल इसलिए नही जाने दिया गया कि उन्होने 'भारत छोड़ो' के बिल्ले लगा रखे थे।

सरकारी-दमन तथा पुलिस के प्रहारो से बचने के लिए लोगो ने नवीन तरीके अपनाये। रात को १० बजे के बाद अपने घरोके ऊपर लाग खडे होकर काग्रेस-नारे लगाते थे। साइकिलो पर लोगो ने जुलूस निकाले जिससे पुलिस वालो को उन्हें पकड़ने के लिए काफी तेज भागना पड़ता था। साइकिलो पर चढे हुए यह आजादी के सैनिक राष्ट्रीय गीत गाते और राष्ट्रीय नारे लगाते विराध-प्रदर्शन करते थे। विदेशी कपड़ो की भी कई जगह होली जलाई गई। विद्यार्थी जाने वालो के हैट और टाई माग लेते थे और उन्हे किसी पब्लिक चौराहे पर जा कर जलाते थे। सरकारी अफसरो के पास सरकारी बन्द लिफाफो के ज़रिए काग्रेस बुलेटिन काफी मात्रा में भेजे गए। कितने ही दिनो तक रिज़र्व बैंक पर भी पिकेटिंग किया गया। कराची के प्रमुख व्यापारियो ने अपनी सभाओ में सरकारी नीति की कड़ी आलोचना की।

शहर की बसो और ट्रामो को कई रोज तक रोका गया। एक ट्राम-कार मे तो आग लगा दी गई। कितने ही लोगो ने बसो और ट्रामो पर बिना किराये के सफर किया। टेलीफोन के तारो तथा डाकखानो के लेटर बक्सो को भी कितनी बार क्षति पहुँचाई गई। रेलवे के डिब्बो को भी कितनी बार क्षति पहुचाई गई। रेलवे के डिब्बों को भी क्षति पहुंची और कराची से मतीर स्टेशन

को जाने वाली कई स्पेशल गाडिया, जिनमे फौजी सिपाही थे, रोकी गईं। कराची जिले मे लगभग ३ माह तक किसी-न-किसी रूप मे आन्दोलन चलता रहा।

हैदराबाद—प्रारम्भ मे शहर मे हड़ताल रही। विद्यार्थी स्कूल और कालेजों को छोड़ कर चले आये और मेडिकल कालेज के लगभग ३० विद्यार्थियो को काग्रेस-आन्दोलन मे भाग लेने के फलस्वरूप कालेज से निकाल दिया गया। आन्दोलन का प्रारम्भिक जोश धीमा पड़ जाने के बाद हर महीने दो चार विशेष दिवस मनाये जाते थे। ९ नवम्बर को कौमी झंडे को सलामी देने का प्रयत्न किया गया। पुलिस ने शुरू से ही लोगों को पकड़ना शुरू कर दिया। फिर भी लोगो ने इधर-उधर प्रभात फेरिया निकाली। पुलिस इतनी बौखला गई कि सड़कों पर जो आदमी उसे खादी की टोपी और कुर्ता पहने हुए दिखता था वह उसे पकड़ लेती थी। कितने ही लोगो को सजाए दी गई, उन पर जुर्माने किये गए और कुछ को तो बेंत भी लगाये गए।

हैदराबाद मे दूसरी बार कालेज खुले, तब भी विद्यार्थियो की तादाद बहुत कम थी, हालाकि सरकार ने विद्यार्थियो तथा उनके घर वालो को धमकाने के काफी प्रयत्न किये थे।

२१-११-४२ को आजाद पार्क मे लोगो ने एक बहुत बड़ा काग्रेस जलसा करने का प्रयत्न किया। पुलिस घटनास्थल पर पहुँची और उसने लोगों को तितर-बितर होने की चेतावनी दी। कई लोग पकड़ लिये गए और शेष बिखर गए। पर औरतों ने जाने से बिलकुल इन्कार कर दिया और बराबर काग्रेस के नारे लगाती रही। विद्यार्थियो ने यहा के मेडिकल कालेज पर पिकेटिंग किया। वहा के अध्यापको तथा चपरासियो ने विद्यार्थियो के साथ बुरा व्यवहार किया, जिससे उनमें जोश व रोष की मात्रा फैल गई। इस प्रकार दिसम्बर तक हैदराबाद में किसी-न-किसी रूप में आन्दोलन चलता ही रहा।

शिकारपुर—इस जिले में हड़ताल और विरोध-प्रदर्शन के अतिरिक्त तोड-फोड के काम काफी अधिक हुए। शिकारपुर सिविलकोर्ट मे अग्नि-काण्ड हुआ और सक्खर ज़िले के गरियासीन डाकखाने में आग लगाई गई। नवाब-शाह में मुख्तियारकार के दफ्तर मे आग लगाई गई। इस प्रकार की खबर लरकाना, दादू व जैकोबाबाद से भी आईं।

दमन—अगस्त के पहले दो सप्ताहो में हैदराबाद में लगभग ४०० कार्यकर्त्ता पकड़े गए जिसमे आधे से अधिक औरते थी। सिन्ध पुलिस ने स्त्रियों

के साथ बड़ा ही अमानुषिक व्यवहार किया। उन्हे पकड़ कर आधी रात के करीब बाहर दूर जंगलो मे छोड़ आया जाता था।

दादू शहर मे स्कूल के विद्यार्थियो ने एक प्रभात फेरी निकाली। पुलिस ने प्रारम्भ मे १६ गिरफ्तारिया की। उनमें से १० को एक-एक साल की सजा दी गई। बाकी ६ लडको के बड़ी निर्दयता से कोडे लगाये गए। जब काफी खून बहने लगा और वे मूर्छित होकर गिर पड़े, तब उनको छोड़ा गया।

नवाबशाह में भी इस प्रकार की घटनाए हुई। तीन स्वयसेवक, जो शराब की दूकान पर पिकेटिंग कर रहे थे, पकड़ लिये गए और उनको कोड़े मारने की सजा दी गई। एक हिन्दुस्तानी सिपाही जब उनको कोडे मार रहा था, तो उसी समय एक यूरोपियन फौजी अफसर अपने बगले से निकला और उस सिपाही को हल्के कोड़े लगान के कारण सजा दी। उसने सिपाही के हाथ से कोड़ा छीन कर स्वय मारना शुरू किया और बड़ी निर्दयता के साथ उन स्वयसेवको को पीटा।

सक्खर—प्रारम्भ मे हडताल हुई। गान्धी-जयन्ती के दिन लोगों ने एक जुलूस निकालने का प्रयत्न किया। पुलिस ने शुरू मे ही लगभग ३०० आदमी गिरफ्तार कर लिये, जिन्हे शाम को छोड़ दिया गया। उनमें से कितने ही नौजवानो को पीटने के बाद छोड़ा गया। इससे लोगों का रोष काफी बढ़ गया और कुछ लोगो ने टुकडियो मे विभाजित होकर सक्खर-रोहरी रेलवे लाइन की पटरियाँ उखाड़ दी। पुलिस अधिकारियों ने इस घटना का पता लगाने के लिए लोगो को बड़ी निर्दयता से पीटा और एक को तो बर्फ के साथ बांधा। कितने ही लोगो को पुलिस ने हिरासत में रखकर तरह-तरह की यातनाएं दी। पुलिस की इन ज्यादतियों के फलस्वरूप सक्खर में तोड़-फोड के कार्य हुए। दो सैकिन्ड क्लास के डिब्बों मे आग लगाई गई और मालगोदाम को जलाने का प्रयत्न किया गया। कुछ कपास की गांठें भी जलाई गईं। सक्खर म्युनिसिपल बोर्ड के स्कूल मे भी आग लगा दी गई जिससे उसके सारे कागज जल गए।

शिकारपुर, सक्खर और जैकोबाबाद मे कई बार टेलीफोन के तार काटे गए। सक्कर स्टेशन पर अग्नि-काड के कारण एक लाख से अधिक फौजी सामान की क्षति पहुंची। शिकारपुर मे दो-तीन माह तक कालेज बन्द रहे। और अन्य कालेजो पर पिकेटिंग होती रही। २८ नवम्बर को दो कांग्रेस स्वयंसेवक सिटी मजिस्ट्रेट की अदालत मे घुसे और उन्हे अपनी कुर्सी छोड़ने का आदेश दिया। पुलिस के आने से पहले ही स्वयसेवक बाहर हो गए। दो विद्यार्थियों को कालेज पर पिकेटिंग करने के फलस्वरूप एक साल की सजा हुई।

सिन्ध मे आन्दोलन के अधिक व्यापक और उग्र होने के उपयुक्त कारण मौजूद नही थे। बहुसंख्यक मुसलमानो को आन्दोलन से किसी प्रकार की हमदर्दी न थी। सिन्ध में किसी प्रकार का साम्प्रदायिक झगडा नही हुआ। यह इस बात का सुबूत है कि यहाँ के मुस्लिम ब्रिटिश विरोधी अवश्य है।

सिन्ध मे इस आन्दोलन के सम्बन्ध मे २४०० से अधिक गिरफ्तारिया हुई और १४०० से अधिक को सजाए दी गई। लगभग २०० नजरबन्द किये गए। १०० व्यक्तियो को बेतों की अमानुषिक सजा दी गई।

: १६ :

सीमा प्रान्त

सीमा प्रान्त का भारतीय राजनीति मे एक निराला और महत्त्वपूर्ण स्थान है। ब्रिटिश साम्राज्यशाही, कांग्रेस और मुस्लिम लीग तीनो ही के लिए इस प्रान्त की अपनी अहमियत है और इसी कारण तीनो की इस प्रान्त मे गहरी दिलचस्पी है। सीमाप्रान्त मे ५० प्रतिशत पठान रहते है। इसके उत्तर-पश्चिम और उत्तर पूरब में भी पठानो की ही बस्ती है। इन इलाकों का कबायली इलाको के नाम से पुकारा जाता है। कबायली जातियों में नौकरशाही की गहरी दिलचस्पी है। ब्रिटिश नौकरशाही उनमें काफी तोड़-फोड़ करती रही है। इन इलाको को ब्रिटिश साम्राज्यशाही ने अपने सैनिक खेल व ट्रेनिंग का अखाड़ा बनाकर रखा है। सीमा प्रान्त की सरकार को उनमे दखल देने का अधिकार नही है। अब तक उन पर सीमा प्रान्त के गवर्नर की सीधी देख-रेख थी। किन्तु केन्द्र मे अन्तःकालीन सरकार बन जाने की स्थिति मे परिवर्तन हुआ है। भारत सरकार के जिस विभाग का इन इलाकों से सम्बन्ध था, वह प० जवाहरलाल नेहरू के हाथ में आ गया है। इसके फलस्वरूप ब्रिटिश साम्राज्यशाही ने कबायली लोगो और भारतीय राष्ट्रीयता के बीच जो दीवार खड़ी कर रखी थी, वह टूट गई है। प० जवाहरलाल नेहरू और सीमांत गाँधीजी ने अभी हाल ही मे इन इलाको का दौरा किया था। उनके खिलाफ भी प्रदर्शन हुए, किन्तु उनके पीछे वही साम्राज्यशाही का छिपा हाथ काम कर रहा था।

कांग्रेस की सीमा प्रान्त मे गहरी दिलचस्पी है, क्योकि सारे भारतवर्ष में केवल यही एक ऐसा प्रान्त है जहाँ पर लगभग ९५ प्रतिशत मुसलमान रहते हैं और जो कांग्रेस द्वारा शुरू किये गए भारतीय आजादी के आन्दोलन मे पूर्ण रूप से सम्मिलित हुए हैं। सन् १९३० व ३२ के राष्ट्रीय आन्दोलनो मे सीमाप्रान्त ने एक महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया। सन् १९३० में पेशावर में गोली चली और पठानो ने बड़ी दिलेरी के साथ सीना खोलकर मशीनगनो की गोलियो का मुकाबला किया। अर्थात् पेशावर की भूमि इन देशभक्त पठानो

के खून से रंगी गई। स्वभाव से पठान सीधा और साफ दिल होता है। ज्यादा हेर-फेर की बात नही जानता। वह मित्र भी अच्छा होता है और शत्रु भी। सन् १९३० से सीमा प्रान्त के पठानो ने कांग्रेस-नेतृत्व को स्वीकार किया और तब से बराबर वे कांग्रेस नेतृत्व के अधीन आजादी की हर लड़ाई में शमिल रहे है। नौकरशाही ने इस प्रान्त मे कांग्रेस की बढ़ती हुई शक्ति को नष्ट करने के अनेक प्रयत्न किये पर वह विफल रही। 'खान-बन्धुओ ने जीवन में एक नई स्फूर्ति, नया दृष्टिकोण और नई आकांक्षा पैदा कर दी है। दिलेर पठानों ने कांग्रेस का अहिंसा का पाठ अच्छी तरह सीख लिया है और उसकी आश्चर्यजनक शक्ति को स्वीकार करते है।

पिछले कुछ सालो से मुस्लिम लीग के नेतृत्व ने भी सीमा प्रान्त के मामले मे गहरी दिलचस्पी दिखाई, क्योंकि अपने को मुसलमानो का नुमाइन्दा साबित करने के लिए यह आवश्यक होगया कि वह सीमा प्रान्त के पठानों मे अपना प्रभाव जमाये। सीमा प्रान्त पर कांग्रेस का प्रभाव होना उसके लिए असहनीय था, क्योकि इस अखड सत्य के होते हुए वह अपने दावे को मजबूती से पेश नही कर सकता। इस कार्य में ब्रिटिश नौकरशाही ने उसे काफी मदद भी दी। सन् १९४१ मे होने वाले व्यक्तिगत सत्याग्रह के प्रति ब्रिटिश नौकरशाही की अजीब नीति रही। हजारों पठानो ने व्यक्तिगत सत्याग्रह में भाग लिया। फिर भी सीमा प्रान्त की सरकार ने उन्हे गिरफ्तार नही किया, क्योंकि यहाँ की सरकार को भय था कि दमन के कारण पठान और भी अधिक रुष्ट हो जायगे। सन् १९४२ में भी जब चारो ओर देश मे खून की होली खेली जा रही थी, दमन का साम्राज्य था, सीमा प्रान्त की सरकार ने यकायक दमन नीति को नही अपनाया। सीमा प्रान्त मे कांग्रेस के नेता प्रारम्भ मे नही पकड़े गए। खान अब्दुल गफ्फार खा ने भी इस मौके का लाभ उठाया और लम्बी लड़ाई की तैयारियाँ करते रहे। इस प्रकार उन्होने अपने सगठन को सुव्यवस्थित कर अक्तूबर मास से इस आन्दोलन का प्रारम्भ किया।

सीमा प्रान्त में सबसे पहले जगह-जगह सभाए की गईं और लोगो को अपने को स्वतन्त्र समझने का आदेश दिया गया और मुकम्मल आजादी का एलान किया गया। अनेक जगह इस प्रकार की सभाएं हुईं, पर नौकरशाही ने कोई दखल नही दिया। अक्तूबर मास से खान अब्दुल गफ्फार खा ने आन्दोलन मे नया जीवन डालने के लिए उसके रूप को बदल दिया और शराब की दूकानों पर पिकेटिंग प्रारम्भ किया। खुदाई खिदमतगारों के जत्थे जाते थे और इन दूकानों पर पिकेटिंग करते थे। इसके बाद रफ्ता-रफ्ता यह

जत्थे सरकारी इमारतों पर भी पिकेटिंग करने लगे। फौज की बैरको में भी खुदाई खिदमतगार अपना पैगाम पहुंचाने का प्रयत्न करने लगे। आन्दोलन का यह रूप नौकरशाही के लिए असहनीय था और अब उसको अपनी पुरानी नीति छोड़नी पड़ी। खुदाई खिदमतगार हर जगह जाकर बगावत की घोषणा करते थे। पेशावर तथा बन्नू में लगभग २-३ मास तक हफ्ते में दो-तीन बार जत्थे जाते थे और सरकारी इमारतो पर राष्ट्रीय झंडा लगाने का प्रयत्न करते थे। उन पर नौकरशाही को मजबूर होकर लाठी प्रहार करना पड़ा। लाठी-चार्ज का यह सिलसिला एक अर्से तक जारी रहा। अन्त में ६ अक्तूबर को सरकार ने कांग्रेस नेताओ को गिरफ्तार कर लिया। विरोध-स्वरूप शहर में पूर्ण हड़ताल रही। हड़तालियो पर आतक जमाने के लिए सरकार ने दूकानों को तुड़वा डाला। जनता के बढते हुए जोश को कुचलने के लिए सीमा-प्रान्त का नौकरशाही ने लाठी-प्रहारो का खुलकर काम लिया। उनकी विशेषता यह थी कि लोगों के सरो पर वार नही किया जाता था, बल्कि उनके पेट पर अधिक चोट पहुँचाई जाती थी। अभिप्राय यह था कि लोगों को अन्दरूनी चोट पहुँचाई जाय। १९, २०, २१ अक्तूबर को सीमा प्रान्त में जनता ने पुलिस-स्टेशनो आदि पर राष्ट्रीय झण्डे लगाने के अनेक प्रयत्न किये। पेशावर मे हजारो आदमियो ने इन प्रदर्शनो में हिस्सा लिया। कई सौ आदमी पुलिस के लाठी-प्रहारो के कारण घायल हुए। पेशावर में अक्तूबर मास में लगभग २५ आदमी रोज पकड़े गए और अक्तूबर, नवम्बर तथा दिसम्बर तक आन्दोलन का यही रूप रहा। पेशावर के अतिरिक्त बन्नू, कोहाट, मरदान आदि जगहो में भी आन्दोलन का रूप इसी प्रकार का रहा।

सीमा-प्रान्त में इस आन्दोलन के सम्बन्ध मे २५५८ व्यक्ति गिरफ्तार किये गए और १८८० व्यक्तियो को विभिन्न सजायें दी गईं। इसके अलावा ७०८ व्यक्ति नजरबन्द रखे गए। एक जगह गोली भी चली, लाठी-प्रहारों के फलस्वरूप पांच सौ से एक हजार तक व्यक्ति सख्त घायल हुए। कुछ छोटे बच्चो को कोड़े भी लगाये गए। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि पहले की भांति सन् १९४२ के विद्रोह में भी सीमा-प्रान्त ने शानदार हिस्सा लिया। यहाँ का आन्दोलन अन्त तक अहिंसक रहा। इसका श्रेय बादशाह खान के नेतृत्व को है, जिनका सीमा-प्रान्त के पठानों पर अभूतपूर्व प्रभाव है।

: १७ :

पंजाब में आन्दोलन

पंजाब नदियों का प्रदेश है। भारत की पाँच प्रसिद्ध नदियाँ—जेहलम, चेनाव, रावी, व्यास और सतलज इस प्रान्त की भूमि को उर्वरा बनाती हुई अरब सागर मे जाकर गिरती है। अतएव पाँच नदियों का प्रदेश होने के कारण इसका नाम 'पजाब' पड़ा है।

पंजाब एक प्रकार से भारत की उत्तर-पश्चिमी सीमा बनाता है। केवल जम्मू-काश्मीर रियासत एवं सीमान्त प्रदेश का सँकड़ा भाग बीच में पड़ता है। अत. सैनिक दृष्टि से इसका बहुत महत्त्व है।

पंजाब विभिन्न धर्मो, जातियो एवं दलों का घर है। देश के सभी नये-पुराने, कट्टर एवं 'उदार' धर्म, हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई आदि जातियों तथा कांग्रेस, लीग, हिन्दू महासभा वगैरा राजनैतिक दल यहाँ की भूमि में स्वतन्त्र रूप से फूले फले है। मुख्य धर्मों के अलावा उनके छोटे-छोटे फिरके अलग ही है। अत. प्रान्त के धार्मिक जीवन में सहनशीलता और मेल-मिलाप की भावना का अभाव है। 'आदर्शवादी' धार्मिक आन्दोलन पंजाब की भूमि में काफी सफल हुए है, जिनसे समूचे प्रान्त और विशेषकर शहरी भागो के जीवन में तीव्र क्रान्ति उत्पन्न हो गई है।

धार्मिक जीवन की भाँति प्रान्त की राजनीति भी अव्यवस्थित रूप म है। सामाजिक एव राजनीतिक क्षेत्र में आपसी मेल और सहन-शीलता का नितान्त अभाव रहा है। देहाती पंजाव अभी तक स्वस्थ है और नागरिक पंजाव के वैमनस्य से बचा हुआ है। नागरिक क्षेत्र में धर्म का साम्प्रदायिक स्वार्थों के लिए एवं राजनीति में अपनी शक्ति बढाने के लिए दुरुपयोग किया जाता है। नागरिक एवं देहाती परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए आर्थिक समस्याओं पर शुद्ध अर्थ-शास्त्र की दृष्टि से विचार नही किया जाता। एक साम्प्रदायिक गुट दूसरे साम्प्रदायिक गुट पर धर्म और जाति की ओट में प्रभाव ज़माने की चेष्टा करता रहता है। इस प्रकार की साम्प्रदायिकता-पूर्ण राजनीति

पंजाब की राजनीतिक एवं सामाजिक समस्याओं को सुलझाने में अब तक पूरी तरह असफल रही है।

पंजाबियों ने व्यापारिक क्षेत्र में अच्छी सफलता प्राप्त की है। पंजाबी किसान भी अन्य प्रान्तों के मुकाबले खुशहाल है। यह कहा जा सकता है कि देश के अन्य भागों की तुलना में पंजाबियों की आर्थिक स्थिति अच्छी है। इसके अतिरिक्त, पिछले महायुद्ध से ही यह फौजी-भर्ती का खास अड्डा रहा है और इसी कारण वह अंग्रेजी सरकार की "दाहिना-भुजा" कहलाता है। वास्तव मे पजाब की फौजी परम्परा रही भी है। उसे अतीत में समय-समय पर विदेशी आक्रमणों का सामना करना पड़ा, जिससे सैनिक-वृत्ति पजाबियों के स्वभाव में दाखिल हो गई। अंग्रेजों ने भारतवर्ष मे हमेशा पंजाब प्रान्त को अपने सबसे मजबूत किले के रूप में माना है। उन्होंने पजाबियो को अधिक वेतन वाली नौकरियाँ देकर उनकी देश-प्रेम की भावना को नष्ट कर देने की कोशिश की है। इसी कारण पजाब देश की आजादी की लड़ाई में अधिक हिस्सा नही ले पाया।

पजाब की पिछड़ी हुई राजनीतिक अवस्था के कई कारण हैं। प्रान्त की आबादी में मुसलमानों का बहुमत है, जो मुस्लिम लीग अथवा यूनियनिस्ट पार्टी के प्रभाव में है। इन दोनों पार्टियों ने हमेशा अंग्रेजो का साथ दिया है और ये ब्रिटिश सरक्षण मे ही पली हैं। पश्चिमी हिस्से के देहात, जहाँ मुसलमान बहुमत में है, अधिकतर या तो फौज में भरती रहे हैं अथवा उनमे मुस्लिम लीग द्वारा काग्रेस विरोधी भावना कूट-कूट कर भर दी गई है। हिन्दुओं ने, जिनका हिम ालय प्रदेश में बहुमत है और जहाँ आजीविका के साधन प्राप्त नही है, अपने-आपको या तो व्यापार मे लगाया है अथवा वे ब्रिटिश फौज मे भरती हो गए हैं। सिख भिन्न-भिन्न राजनीतिक दलो मे विभक्त हैं। देहाती जनता में जाट लोग अधिक है, जिन्होंने अब से पहले तक हमेशा प्रतिक्रियावादी यूनियनिस्ट पार्टी का साथ दिया है।

प्रान्त में कांग्रेस का संगठन भी उचित रूप से नही हुआ है। काग्रेस-नेतृत्व आपस की फूट के कारण हमेशा कमजोर रहा है। उसका कार्य ज्यादातर शहरों तक ही सीमित रहा। यही कारण है कि काग्रेस की जड देहातों की आम जनता के भीतर गहरी न पैठ सकी और देश की पुकार पर समूचे प्रान्त का वांछित सहयोग न मिल सका।

फिर भी बम्बई में हुई नेताओ की गिरफ्तारी का समाचार जब पजाब मे पहुचा तो वातावरण में तीव्र क्षोभ उत्पन्न हो गया। जगह-जगह विरोध सभाएँ

हुई तथा व्यापक हड़तालें की गईं। लाहौर और रावलपिंडी के समीप कई स्थानों में क्षुब्ध जनता ने डाक और टेलीफोन के तारों को काट डाला और यातायात को पंगु बनाने की चेष्टाएँ की। उधर सरकार की ओर से भी तुरन्त दमन शुरू हो गया। बहुत से मुखिया आदमी गिरफ्तार कर लिये गए। कांग्रेस के दफ्तरो पर मोहर चपड़ी लगादी गई। पंजाब के भूतपूर्व प्रधान मंत्री सर सिकंदर हयातखाँ ने लोगों को बड़े-बडे इनामो, ऊंची नौकरियो, और जागीरो का प्रलोभन देकर उन्हे आन्दोलन मे सक्रिय भाग लेने से रोका। इन सब कारणों से इस प्रान्त में स्वतन्त्रता का यह आन्दोलन बहुत समय तक न चल सका और न व्यापक रूप ही धारण कर सका। वह बड़े-बड़े शहरो तक ही सीमित रहा, जहाँ कि हिन्दुओ की आबादी अधिक है।

पंजाब में सन् १६४२ के आन्दोलन मे महिलाओं और छात्राओं न उल्लेखनीय हिस्सा लिया। उन्होंने यह अच्छी तरह साबित कर दिया कि आजादी के सिपाहियो के रूप में वे मर्दो से कही बढकर हैं।

श्री जयप्रकाश नारायण के जेल से बच निकलने के बाद पंजाब के नवयुवको ने गुप्तरूप से काम करना शुरू किया और इस प्रकार सन्' ४२ के आन्दोलन में अपना फर्ज अदा किया। किन्तु पजाब ने अब करवट बदली है। सारे देश ने सन्' ४२ मे और उसके बाद देश की आजादी के लिए जो कुर्बानी की हैं, उसका असर पजाब पर भी पड़ा है। कांग्रेस, अधिकाधिक लोकप्रिय हो रही है। प्रान्तीय असेम्बली के पिछले चुनावों में कांग्रेस को जो सफलता मिली यह उसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। यद्यपि पंजाब मे मुस्लिम लीग की शक्ति बढ़ी है, किन्तु आज काँग्रेस अन्य दलों के सहयोग से प्रान्त के शासन का भार सम्हाले हुए है। ऐसे लक्षण दिखाई दे रहे है कि आने वाले दिनों मे पंजाब आजादी की ओर कूच करने मे अन्य प्रान्तों से पीछे न रहेगा।

: १८ :

भारतीय रियासतों का भाग

ब्रिटिश साम्राज्यवाद की भारत में अपनी किलेबन्दी व सुदृढ़ रक्षा-पक्तियां है। हिन्दुस्तानी रियासतें उसका एक मुख्य अग है। वास्तव में ये रियासते प्रतिक्रियावादी शक्तियो की अखीरी आशायें है। अतः भारतीय राष्ट्रवाद के लिए यह परम आवश्यक है कि वह इन विभिन्न किलेबन्दियों को तोड़े, क्योकि इनके टूटने से ही साम्राज्यशाही का ढाँचा अस्त-व्यस्त हो सकता है, वरना इसका अंकुर किसी-न-किसी रूप में बना ही रहेगा। सन् १६१९ से सन् १९४२ तक काग्रेसी नेतृत्व ने साम्राज्यशाही के इस ढाँचे के विरुद्ध कई सामूहिक और व्यक्तिगत प्रहार किये और हर प्रहार में उसके किसी-न-किसी मुख्य अग पर प्रबल वार कर उसकी शक्ति को क्षीण किया। पर रियासतो के सम्बन्ध में काग्रेसी नेताओं की अब तक तटस्थ रहने की नीति ही रही। यद्यपि वे जानते थे कि रियासतों में ब्रिटिश भारत से भी अधिक अन्याय होता है, पुराने दकियानूसी कानूनो द्वारा जनता पर हुकूमत की जाती है और राज्य-व्यवस्था में जनता का कोई हाथ नही हैं, फिर भी काग्रेस-हाई-कमाण्ड ने यह उचित नही समझा कि वह रियासतों के अन्दर सामूहिक आन्दोलन करे। इस नीति के बरतने के अपने ही कारण थे। कांग्रेस-हाई-कमाण्ड एक समय में एक ही मोर्चे पर लड़ना चाहता था। वह कई मोर्चों पर एक साथ लड़कर भारतीय राष्ट्रवाद की शक्ति का अपव्यय करने के हक में न था। उसकी मान्यता थी कि एक बार अंग्रेजो को सीधी राह पर ले आया गया तो राजा अपने आप सीधी राह पर आ जायगे।

पर इसका मतलब यह नही है कि काग्रेसी नेता रियासतो की जनता म राजनीतिक जागृति देखना नही चाहते थे। इसके विपरीत रियासती जनता के आन्दोलन के प्रति उनकी बराबर सहानुभूति रही। उन्होने कई बार घोषणा की कि प्रजातन्त्रवादी भारत और सामन्तशाही रियासते दोनो एक साथ नही रह सकती। उन्होने रियासतो में होने वाले अन्यायो व अत्याचारो की निन्दा

की ओर वहाँ की जनता को अपना संगठन करने तथा अपने नागरिक व राजनीतिक अधिकार खुद प्राप्त करने की सलाह दी। देशीराज्य लोक परिषद् की स्थापना व प्रगति में कांग्रेसी नेताओ का बड़ा हाथ है। पं० नेहरू, डा० पट्टाभिसीतारामैया जैसे प्रसिद्ध कांग्रेसी नेताओं की छत्र-छाया में यह सस्था फलीफूली है।

यूरोपीय तथा एशियाई महायुद्धने उन अस्थायी प्रतिबन्धों को तोड़ दिया। विचारों की बाढ के सामने कोई भौगोलिक अथवा शासन सम्बन्धी दीवारें खड़ी नही रह सकती। महायुद्धने समस्त भौगोलिक व साम्राज्यशाही सीमाओ को अस्त-व्यस्त कर दिया, और रियासतो तथा ब्रिटिश भारत की जनता एक ही प्रकार से सोचने लगी। युद्ध-जनित वातावरण ने लोगो पर एक ही-सा मनोवैज्ञानिक असर डाला। सारे भारत की जनता मे एक ही प्रकार की भावनाए तथा आकाक्षाए पैदा कर दी। इस प्रकार महायुद्ध ने अप्रत्यक्ष रूप से रियासतो में बसी हुई जनता के विचारो में एक आश्चर्यजनक क्रान्ति पैदा कर दी और मार्ग-प्रदर्शन के लिए वह किसी ओर आँखे पसारकर देखने लगी। ९ अगस्त को काग्रेसी नेताओ तथा काग्रेस-संगठन पर ब्रिटिश प्रहार को रियासतों की जनता ने अपने पर प्रहार समझा और इस प्रकार सन् १९४२ के खुले विद्रोह की लपटे भारतीय रियासतो मे पूर्ण रूप से फैल गई। इस तूफान में विभिन्न रियासतो में लाखों की तादाद मे आदमी आशा, उत्साह व आकाक्षाओ को लिये हुए उठे और सैकड़ो की तादाद में नये नेता पैदा हो गए। रियासती नेताओ ने बड़े धैर्य व शान्ति से आन्दोलन का नेतृत्व किया और अपनी कार्य-तत्परता, सलग्नता व सगठन-शक्ति का परिचय दिया। स्वभावत: इस आन्दोलन को रियासतो मे बडी क्रूरता से दबाया गया। भारतीय नरेश कब इस बात को सहत कर सकते थे कि जो 'प्लेग' ब्रिटिश भारत में फैल चुका है, या वह उनके यहाँ भी उग्र रूप में फैल जाय। अत: जनता के बढते हुए जोश को हर जगह गोलियों तथा लाठियों के प्रबल प्रहारों से कुचला गया। रियासतों में आन्दोलन का रूप ठीक वैसा ही था, जैसा ब्रिटिश भारत में। प्रारम्भ मे हडतालें हुईं, विरोधी प्रदर्शन हुए, सभायें हुईं और कही-कही राजसत्ता को छीनने के भी प्रयत्न किये गए। ऐसे प्रयत्न उड़ीसा प्रान्त की रियासतों विशेषकर तालचर, नीलगिरी, नायागढ—में अधिक हुए। कोल्हापुर और इन्दौर में जेल तोड़ने के प्रयत्न भी किये गए।

आन्दोलन की दृष्टि से रियासतो को हम ४ भागो में बाट सकते है।

१. मध्य भारत की रियासतें।
२. राजपूताना की रियासतें ।
३ उड़ीसा की रियासते।
४. बड़ौदा और काठियावाड़की रियासतें।
५ दक्षिण भारत की रियासतें।

मध्यभारत की रियासतें

ग्वालियर—मध्यभारत में यह सबसे बड़ी रियासत है। नेताओं की की गिरफ्तारी के पश्चात् २३ अगस्त सन् १९४२ को ग्वालियर की प्रजा संस्था सार्वजनिक सभा की एक बैठक हुई और उसमें कांग्रेस के' भारत छोड़ो' प्रस्ताव का समर्थन किया गया। सभा की ओर से महाराजा ग्वालियर को एक अल्टीमेटम दिया गया कि ३० अगस्त तक महाराज सरकार बरतानिया से अपना सम्बन्ध तोड़ दे और अपनी रियासत मे उत्तरदायी सरकार की स्थापना करनें की घोषणा कर दें। ग्वालियर सरकार ने इस प्रस्ताव का उत्तर नेताओं की गिरफ्तारी व नजरबन्दी से दिया। ३० तारीख से पहले सारे प्रमुख नेता गिरफ्तार करके नजरबन्द कर दिये गए। सभा के इस फैसले से पहले ही रियासत भर मे कारखानों के मजदूरो व विद्यार्थियो ने हड़तालें करनी शुरू कर दी थी। १३ अगस्त को उज्जैन मे जब विद्यार्थी हडताल करके जुलूस निकाल रहे थे तो वहां के बोहरे मुसलमानो ने उन पर लाठियो से हमला कर दिया। कई छोटे-छोटे लडके जख्मी हुए और शहर में भारी बेचैनी फैल गई। शहर के कारोबार बन्द हो गए और बहुत बडे झगडे की शक्ल पैदा हो गई और कुछ लोगो ने बोहरों की दूकानें लूटनी शुरू कर दी। हुकूमत ने दफा १४४ लगा दी और इस प्रकार बिगड़ती हुई हालत को सम्भाला। बोहरो की इस तरह राजनीतिक तौर से मुखालफत करने की यह पहली घटना थी। जान पड़ता है कि उन्हे पहले से ही तैयार किया गया था। इस झगडे के कारण कई दिन तक दूकानें और कई माह तक स्कूल बन्द रहे।

१६ अगस्त को लश्कर मे, जो राज्य की राजधानी ह, विद्यार्थियो की हडताल हुई और जूलूस निकाले गये। रियासत की पुलिस तथा घुडसवारो ने बड़ी बेरहमी के साथ लाठी तथा घोड़ो की टापो से उन पर हमला किया। कितने ही लड़के घायल हुए। विद्यार्थियों का यह आन्दोलन और भी उग्र रूप से फैलने लगा। ८ सितम्बर को उज्जैन में विद्यार्थी शान्तिपूर्वक एक सभा कर रहे थे कि पुलिस ने अपने पूर्व आश्वासन के विरुद्ध सभा को चारों ओर से घेर लिया और लाठियों व सगीनों से बैठे हुए लोगो पर प्रहार किया। औरतो और लड़कियों को घेरकर पीटा गया। कई औरतो और बच्चो को गहरी

चोटें आईं और कितने ही आदमी घायल होकर सड़कों पर गिर पड़े। जख्मियों की मरहम-पट्टी के लिए जब आदमी उन्हें उठाने गये तो उन पर भी पुलिस ने लाठी प्रहार किया शहर में १४४ दफा लगादी गई। शहर को चारो ओर से दो मील के दायरे में घेर लिया गया और सड़कों व गलियों में चलने वालो को बिना उनकी अवस्था का खयाल किये मोटे-मोटे लट्ठो से जानवरो की तरह बाजारो में खुले आम पीटा गया। सर्राफा बाजार मे, जो कि शहर का खास बाजार है, खुले आम लोगो के बन्द घरों में पुलिस घुसती थी और अन्दर जाकर उन्हें पीटती थी। कितने ही आदमी इन काण्डो से जख्मी हुए।

९ अगस्त को एक स्थान पर, जहां पर एक आदमी सगीन से घायल हुआ था और जहा पर उसका खून गिरा था, लोगों ने फूल चढाये और कुछ लोगो ने भाषण देना शुरू कर किया। देखते-ही-देखते उस जगह को पुलिस ने आ घेरा और अन्य आने वालो को वहा जाने से रोक दिया। १ सितम्बर से ६ सितम्बर तक शहर में मुकम्मिल हडताल रही। अदालत पर पिकेटिंग किया गया, जिससे अदालत भी बन्द हो गई। दो से तीन हजार तक की सख्या में लोग अदालतो पर पिकेटिंग करने के लिए जाते थे। शुरू में तो हुकूमत ने कोई हस्तक्षेप नही किया किन्तु बाद में उसका रुख बदल गया और पुलिस ने भयंकर लाठी-चार्ज किया जिसके विरोध में जनता ने फिर हड़ताल कर दी। ८ सितम्बर से शहर में पुलिस व फौज का पुनः राज्य स्थापित हो गया। इस तरह रियासत में सितम्बर के दूसरे सप्ताह तक तहरीक जोरो से चली। लगभग २५० आदमी गिरफ्तार करके जेलों में रखे गये। अन्त में रियासत और सार्वजनिक सभा के नेताओ में एक समझौता हुआ, जिसके फलस्वरूप मई १९४३ में सब बन्दी रिहा कर दिये गए। ग्वालियर के कुछ कार्यकर्त्ता रियासत के बाहर भी तहरीक में हिस्सा लेते रहे और इस प्रकार वह दूसरे जिलो में गिरफ्तार हुए।

भोपाल—यहां की प्रजा परिषद् ने बम्बई के प्रस्ताव के समर्थन में १८ सितम्बर को एक प्रस्ताव पास किया। यह प्रस्ताव बाहर से छपवाकर मगवाया गया था, परन्तु वह स्टेशन पर पकड़ा गया। स्थान-स्थान पर तलाशिया हुई। खास-खास कार्यकर्त्ताओ के घरो पर और परिषद् के दफ्तर पर पुलिस का पहरा बिठा दिया गया और उसकी कार्य-समिति के सदस्यो को पकड़कर जेल में बन्द कर दिया गया।

स्कूल के लडको को पकड़कर पीटा गया। स्कूलो में १५ दिन की छुट्टी कर दी गई। अहमदाबाद मुहल्ले के विद्यार्थियों को पार्टियां दी गईं और

उन्हें मैच खिलाये गए ताकि वह अन्य विद्यार्थियो के साथ मिलकर आन्दोलन में भाग न लें।

७ कार्यकर्त्ताओं को सजाएं हुईं। शेष कार्यकर्त्ता फरार हो गये। विद्यार्थियो के नेता श्री गोविन्दप्रसाद श्रीवास्तव को भी सजा हुई। उन पर डाकखाना जलाने और ऐसे ही अन्य इलजाम लगाये गए थे।

मि० इलताफ मजदानी, सम्पादक, 'जमहूर' मुकदमे के बीच ही बीमार पड़ गए। हालत नाजुक होने पर उन पर से मुकदमा उठा लिया गया, परन्तु वह बाहर आने के थोड़े समय बाद ही मर गए। प्रजापरिषद् के नेता श्रीशाकिरअली खाँ को २ साल कैद और १०० रुपया जुर्माना की सजा दी गई।

इन्दौर—सन् १९४२ के खुले विद्रोह मे इन्दौर ने सबसे बढ-चढ़ कर भाग लिया। इन्दौर मध्य भारत की एक महत्त्वपूर्ण रियासत है। यहाँ अन्य रियासतो के मुकाबले प्रजामण्डल संगठित रूप में काम कर रहा है और उसका जनता पर काफी प्रभाव है। फलस्वरूप बम्बई में कांग्रेसी नेताओ की गिरफ्तारी के पश्चात् शहर मे हड़ताल हुई, विरोध-प्रदर्शन हुए और थोड़े दिनो पश्चात् यह आन्दोलन कस्बो में भी फैल गया। लगभग ४०० व्यक्ति गिरफ्तार करके जेलो में रखे गए। रियासत में ६, ७ माह तक आन्दोलन चलता रहा। प्रजामडल के नेताओ को मण्डलेश्वर नामक स्थान मे नजरबन्द रखा गया था। उन्होने जेल के पहरेदारो पर काबू पा लिया और जेल से बाहर निकल गए। उन्होंने कस्बे में जाकर भाषण दिये। अन्त में वे पुन. बन्दी बना लिये गए, तोड़-फोड़ के कार्य भी कई जगह हुए। अन्त मे महाराज व प्रजामंडल के नताओ में समझौता हुआ और सब बिना शर्त रिहा कर दिये गए।

मध्य भारत में ग्वालियर, इन्दौर, भोपाल और धार इन चार रियासतो में संगठित तरीके से आन्दोलन चलाने के प्रयत्न किये गए। सब जगह आन्दोलन का रूप अहिंसात्मक था, पर दमन के कारण जब सामूहिक रूप खत्म हो गया तो तोड़-फोड़ के कार्य प्रारम्भ हुए। इन्दौर मे कुछ बम फटने की घटनाएं हुईं, पर उनके कारण किसी को नुकसान नही हुआ। पोलिटिकल डिपार्टमेण्ट ने भी इस आन्दोलन को दबाने में एक-सी नीति बरती।

राजपूताना की रियासतें

कोटा—बम्बई के प्रस्ताव के बाद नेताओ की गिरफ्तारी के हालात मालूम होते ही कोटा में हड़ताल हो गई। विद्यार्थियो ने भी हड़ताल कर दी। प्रजामडल के कार्यकर्त्ता गिरफ्तार कर लिये गए। किन्तु इन गिरफ्तारियो से

और भी जोश फैल गया। जनता ने शहर पनाह के दरवाजे बन्द करके चारों ओर के रास्ते बन्द कर दिए, जिससे विशेष पुलिस, फौज तथा अन्य लोगो का बाहर से आना रुक जाय। कोतवाली पर जनता ने झडा फहराया और वहा जो पुलिस मौजूद थी, उसे बैरिको में बन्द कर दिया। शहर पर पूरी तरह से जनता का कब्जा हो गया और यह हालत बराबर तीन दिन तक रही। इन तीन दिनों में शहर मे पूरे तौर से शान्ति कायम रही। कोई गड़बड़ी नही हुई। वहां के दीवान ने यह कोशिश की कि मिलिटरी शहर मे दरवाजा तोड़कर दाखिल हो जाय और गोली चलाई जाय। किन्तु फौज और महाराज इसके लिए सहमत नही हुए। तीन दिन तक यह कशमकश चलती रही। पोलिटिकल एजेन्ट भी वहा आगए अन्त मे तीसरे दिन भूतपूर्व दीवान ने आगे आकर जनता को यकीन दिलाया कि वह दरवाजा खोल दे, पुलिस इत्यादि को अदर आने दे, रियासत की ओर से कोई जोर-जुल्म की बात नही होगी। इस आश्वासन पर जनता ने दरवाजे खोल दिए और तीसरे दिन बाकायदा सब फौज और पुलिस वालो से झडा सलामी कराकर और अधिकारियो से रसीद लेकर कोतवाली और शहर का चार्ज महाराज की पुलिस को सौपा गया। कुछ दिनो बाद अन्य नेता भी रिहा कर दिये गए। गिरफ्तारी के बीच ही एक डेपुटेशन महाराज से मिला और उन्होने जनता को यकीन दिलाया कि जिम्मेदार सरकार कायम करने के लिए वह शीघ्र ही कोई कदम उठायगे। दीवान को, जो पोलिटिकल डिपार्टमेंट का आदमी था और गोली चलाने मे नाकामयाब रहा था, महाराज ने नौकरी से अलग कर दिया। उसके जाने के अवसर पर भी जनता ने प्रदर्शन किया।

मेवाड़— मेवाड़ राजपूताना की अत्यन्त प्राचीन और प्रमुख रियासत है। इस रियासत के निवासियो ने अपनी स्वतन्त्रता को कायम रखने के लिए भूतकाल में अभूतपूर्व त्याग और बलिदान किया है। अपनी परम्परा के अनुसार वह सन् १९४२ के स्वातन्त्र्य-सग्राम मे भी पीछे नही रहे। 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव पास होने के बाद जब देश की आजादी की लडाई छिड़ गई तो मेवाड़ की जनता की आकाक्षाओ का प्रतिनिधित्व करनेवाली सस्था प्रजामण्डल ने इस लड़ाई में कूद पडने का निश्चय किया। उसकी ओर से मेवाड़ के महाराणा साहब को एक पत्र भेजकर अनुरोध किया गया कि वह अपने को ब्रिटिश शत्ता से अविलम्ब स्वतत्र घोषित कर दें और जनता को हुकूमत मे साझीदार बना कर उसकी शुभनिष्ठा प्राप्त करे। यह पत्र २१ अगस्त १९४२ को भेजा गया और उसी दिन मेवाड़ की राजधानी उदयपुर मे एक

विशाल सार्वजनिक सभा का आयोजन किया गया। सभा तो निर्विघ्न रूप से हो गई, किन्तु उसके बाद राज्य भर में प्रजामण्डल के नेता तथा कार्यकर्त्ता गिरफ्तार कर लिये गए। कुछ विद्यार्थी भी पकड़े गए। गिरफ्तारियो के विरोध में उदयपुर में एक विशाल जुलूस 'अंग्रेजो भारत छोड़ो' के नारे लगाता हुआ निकला। २३ अगस्त से जुलूसो, सभाओ आदि पर पाबन्दी लगा दी गई। कालेज में हडताल हो गई और बाजार भी बन्द हो गए चारों ओर 'भारत छोड़ो' की आवाज गूजने लगी। विद्यार्थियो में अपूर्व जोश था। सरकार ने भी विद्यार्थियो को अन्धाधुन्ध गिरफ्तार करना शुरू कर दिया। एक अग्रेज फौजी अफसर ने राष्ट्रीय झण्डे को पॉवो तले कुचल दिया और एक विद्यार्थी को सीने पर पिस्तौल रखकर धमकाया, किन्तु नौजवान जरा भी भयभीत न हुए आन्दोलन केवल उदयपुर तक ही सीमित नही रहा। वह राज्य के मुख्य-मुख्य कस्बो मे भी फैल गया और अनेक व्यक्तियो ने आन्दोलन मे हिस्सा लिया। अक्तूबर के प्रथम सप्ताह तक गिरफ्तारियाँ होती रही। कुल मिलाकर ५०० गिरफ्तारियाँ हुई, जिनमे ७ महिलायें भी थी। कालेज करीब १५ दिन बन्द रहा। प्रजामण्डल के नेताओं को एक पहाड़ी स्थान में नजरबन्द रखा गया। उनके पास एक राष्ट्रीय झण्डा था, जिसे वह नित्य प्रति सलामी देते थे। जेल और पुलिस वालो ने उसे छीनने की कोशिश की, किन्तु नज़रबन्दो ने सत्याग्रह कर दिया और राष्ट्रीय झण्डा आखिर तक उनके ही अधिकार में रहा। जो बन्दी उदयपुर जेल मे रखे गये, उनके साथ कठोर व्यवहार किया गया उन्हे काल कोठरियो मे बन्द कर दिया गया। कुछ लोगो ने दुर्व्यवहार के प्रति विरोध प्रकट किया तो उन्हे बैंतों से पीटा गया। सरकार ने धीरे-धीरे बन्दियो को छोड़ने की नीति अपनाई। अखीरी जत्था डेढ वर्ष बाद फरवरी सन् १९४४ मे छोड़ा गया। किन्तु इसके बाद भी प्रजामण्डल पर काफी समय तक प्रतिबन्ध लगा रहा।

अन्य रियासतें—राजपूताना की अन्य रियासतो मे भी किसी-न-किसी रूप में आन्दोलन हुए। जोधपुर रियासत मे तो अगस्त आन्दोलन शुरू होने के पहले ही पकड-धकड़ शुरू हो गई थी। लोक परिषद् ने जागीरदारी जुल्मो के विरुद्ध आन्दोलन शुरू कर दिया था। अतः मारवाड़ के प्रमुख नेता और कार्यकर्त्ता लम्बे अर्से तक जेलो में बन्द रहे। जोधपुर में कुछ बम-विस्फोट की घटनाए भी हुई। शाहपुरा रियासत के प्रजामंडल ने भी राजाधिराज को ब्रिटिश सरकार से सम्बन्ध विच्छेद करने का अल्टीमेटम दिया था। इस पर प्रजामडल के तीन प्रमुख नेता गिफ्तार कर लिये गए और उन्हे अजमेर जेल में नजरबन्द रखा गया। डूंगरपुर में भी प्रदर्शन किये गए। राज्य ने वहाँ पकड़-धकड़

तो नहीं की, किन्तु अप्रत्यक्ष रूप से रचनात्मक प्रवृत्तियों का गला घाटने का कोशिश की। जयपुर रियासत में प्रजामण्डल आन्दोलन से अलग रहा, किन्तु कुछ कार्यकर्त्ताओ ने आजाद मोर्चा कायम किया और रियासतो मे युद्ध-प्रयत्न के विरुद्ध प्रचार किया। कुछ व्यक्ति नजरबन्द कर लिये गए। इस प्रकार स्पष्ट है कि राजपूताना की अनेक रियासतो में किसी-न-किसी रूप में आजादी की लडाई मे योग देने की चेष्टायें की गईं और कुछ रियासतोंका हिस्सा काफी उज्ज्वल रहा।

उड़ीसा की रियासतें

उड़ीसा प्रान्त में कितनी ही छोटी-छोटी रियासतें हैं। सन् १९३७ मे जब उड़ीसा मे कांग्रेस मन्त्रिमण्डल स्थापित हुआ तो इन रियासतों में एक व्यापक जागृति फैली। इन रियासतो में बसने वाले लोगों ने अपने कष्ट दूर कराने और राजनीतिक अधिकार प्राप्त करने के लिए जबरदस्त आन्दोलन किया। उड़ीसा प्रान्त के काग्रेसी कार्यकर्त्ताओ ने उसे प्रोत्साहन दिया और कही कही उसका नेतृत्व भी किया। रियासतो की सरकारो के लिए उस समय कठिन स्थिति पैदा हो गई थी। सन् १९४२ में यद्यपि आन्दोलन सन् १९३८ व ३९ जितना उग्र और व्यापक न था, फिर भी जो राजनीतिक जागृति हो चुकी थी और जनता को अपने अधिकारो का भान हो गया था, उसके फल-स्वरूप सन् १९४२ में इन रियासतो मे कई जगह जनता सामूहिक रूप से उठी और कितनी ही जगह राज्य-सत्ता प्राप्त करने के सफल और असफल प्रयत्न हुए। रियासती अधिकारियो ने निहत्थी जनता के आन्दोलन का दमन करने मे अत्यन्त कठोर तरीके अपनाए।

नीलगिरी—प्रजामण्डल के नेता पहले ही गिरफ्तार कर लिये गए। उन पर यह आरोप लगाया गया कि वह एक सामूहिक आन्दोलन की तैयारी कर रहे थे। इन गिरफ्तारियों की यह प्रतिक्रिया हुई कि नीलगिरी की जनता ने सरकारी मुलाज़िमों का सामाजिक बहिष्कार कर दिया और आंशिक हडताल भी की। साथही हफ्ते मे दो बार बाज़ार बन्द रखने का निश्चय किया। लोगो ने दरबार को विश्वास दिलाया कि यदि उनके नेता छोड़ दिये जायं तो वह सरकारी कर्मचारियो का बहिष्कार बन्द कर देंगे। अतः ११ नेता जेल से छोडे गए जिनमें से कुछ ने रियासत में ही रहकर आन्दोलन को पुनः सचालित करने के लिए जनता में कार्य करना शुरू कर दिया और कुछ रियासत से बाहर चले गए।

२९।८।४२ को एक हज़ार आदमियो के समूह ने बरहमपुर थाने पर आक्रमण किया और अपने नेता श्री चिन्तामणि को मुक्त करा लिया । २१ सितम्बर को पुलिस ने पुन: श्री चिन्तामणि को काठपल्ला ग्राम मे पकड़ने की चेष्टा की, पर लगभग ४ हज़ार आदमी तीर-कमान व लाठियो से सुसज्जित होकर इकट्ठे हो गए और उन्हे गिरफ्तार न करने दिया ।

नीलगिरी दरबार ने सौ गावो पर ७५२०४ रुपया जुर्माना किया और पोलिटिकल एजेन्ट ने एक संगठित पुलिस फोर्स के साथ स्वय जाकर इसे वसूल किया । बहरामपुर में २॥ हजार से अधिक लोगो के समूह ने, जो तीर-कमान व बर्छों से सुसज्जित था, इसका विरोध किया । चार पाँच पुलिस के सिपाहियों पर आक्रमण भी किया । इसके फलस्वरूप वहाँ गोली चली ।

तालचर—तालचर एक छोटी-सी रियासत है । इसका क्षेत्रफल ४०० वर्गमील, आबादी ८५,००० और आमदनी २,५०,००० रु० है । पर औद्योगिक दृष्टि से उसका अपना महत्त्व है । यहा पर तीन बड़ी-बड़ी कोयले की खानें है और एक दियासलाई बनाने की फैक्टरी तथा कई अन्य छोटी-छोटी फैक्टरियाँ है । यह राजनीतिक दृष्टि से बहुत जाग्रत है । सन् १९३८ के लगभग ६५ हजार आदमियो ने राजा के विरुद्ध हिजरत की थी और ब्रिटिश इलाके के अगुल सब डिवीजन में आकर बस गए थे । इन लोगो को दबाने के अनेक प्रयत्न किये गए और मामला इतना बढ गया कि महात्मा गांधी तथा वायसराय तक को दिलचस्पी लेनी पड़ी । अन्त मे राजा को हार माननी पड़ी और वह अपने यहाँ कुछ सुधारो की घोषणा करने के लिए मजबूर हुए । इस प्रकार जनता कांग्रेसी झडे को लिये हुए गर्व के साथ स्टेट में वापस आई ।

सन् १९४२ के खुले विद्रोह की प्रचण्ड लपटे तालचर में भी पहुँची । प्रारम्भ में आन्दोलन का कोई सगठित रूप न था पर सितम्बर के पहले पखवाड़े तक उसने उग्र और सामूहिक रूप धारण कर लिया । रियासत में यह खबर फैल गई कि प्रजामण्डल के प्रधान और रियासत के लोकप्रिय नेता पवित्र बाबू कत्ल कर दिये गए । बस फिर क्या था, आग भड़क उठी, जो किसी-न-किसी प्रकार सन् १९४३ के मई माह तक सुलगती रही ।

लोगो ने रियासत के कानूनों को मानने से इन्कार कर दिया । उन्होने अपनी एक केन्द्रीय सरकार कायम की और हर गाव, तहसील, परगना और सब डिवीज़न में उसकी शाखाये खोली गईं । यह सरकार गाँव पचायतो के आधार पर खड़ी की गई थी और उसे मजदूर राज्य के नाम से पुकारा जाता था । गांव के मुखियो, चौकीदारो, स्कूल-मास्टरो, जिला-अफसरो

परगना-हाकिमों, पुलिस-अफसरो तथा लगान के महकमे के अफसरों ने स्वय अपनी-अपनी बन्दूको, पोशाकों, बिल्लों, कागजो, रिकार्डों, यहां तक कि सरकारी नकदी को भी नई बनी हुई पंचायतों को सौंप दिया और इनके प्रति वफादार रहने की शपथ खाई। सबसे उल्लेखनीय बात यह हुई कि इन सरकारी कर्मचारियो ने पोशाको, बिल्लो और कागजातों का अपने हाथों जलाया। आमदो-रफ्त के सारे रास्तो, जैसे सड़कें, पुल, घाट, फेरी बोट, टेलीफोन इत्यादि, पर मजदूर सरकार का कब्जा हो गया। टेलीग्राफ तारो को काट दिया गया और कटक-तालचर रेलवे को कई मील तक अस्त-व्यस्त कर दिया गया, ताकि बाहर से सैनिक शक्ति न बुलाई जा सके। तीन पुलिस-स्टेशनो ने नई सरकार के सामने आत्म-समर्पण कर दिया और कनिया सब डिवीजन का हैडक्वार्टर स्वयं अधिकारियो ने छोड़ दिया। इस प्रकार सारी रियासत के ४७ वर्ग मील के घेरे में एक गज जगह भी ऐसी बाकी न रही थी जहां पर मजदूर राज्य का आधिपत्य कायम न हो गया हो। केवल तालचर नगर ही बाकी बच गया था।

जनता के इस रूप को देखकर रियासत के कुछ वफादार कर्मचारियो ने ब्रिटिश पैदल सेना और हवाई बेड़े की बस्तियो मे जाकर पनाह ली। गोला बारूद की मैगजीन, डाइनामाइट का स्टोर और काफी बन्दूकें जनता के हाथ लगी।

नई सरकार ने अपनी फौज भी बना ली थी। उसकी शाखायें हर गांव में स्थापित हो गई थी। इस तरह पूर्ण सगठन करके जनता का इरादा था कि तालचर शहर पर भी आक्रमण किया जाय, ताकि वहां पर भी अंग्रेजी राज्य-सत्ता का कोई चिन्ह बाकी न बचे और तालचर दरबार से इस बात की प्रार्थना की जाय कि वह अंग्रेजी राज्य से अपना सम्बन्ध तोड़ लें और किसान-मजदूर-राज के वैधानिक प्रमुख बनकर रहे। इसके बाद वह आप-पास की अन्य छोटी-छोटी रियासतो और ब्रिटिश इलाके को भी मुक्त करवाना चाहती थी।

६ सितम्बर सन् १९४२ को जनता की फौज के सैनिक हर गांव से झंडा लिये हुए तालचर की ओर बढ़े। उनके पास पुराने जमाने के सारे हथियार थे। पुरानी बन्दूकें, तलवारें, ढाल, भाले, तीर-कमान, कुल्हाडे, बरछे, हथौड़े इत्यादि हथियार यह लोग अपने साथ लिये थे। इस सब सामान से सुसज्जित होकर उनका इरादा बाकायदा मोर्चा बनाकर आक्रमण करने का था।

जब से पवित्र बाबू के कत्ल की खबर रियासत में फैली तब से 'अंग्रेजो निकल जाओ' का नारा चारो ओर गूंजने लगा सारी रियासत की जनता में घोर बेचैनी व रोष फैल रहा था। दरबार और उनके पुत्र दोनों ने पोलिटिकल

डिपार्टमेंट से मदद की भीख मागी और तालचर-स्थित अग्रेजी हवाई बेड़े तथा रायल मिलिटरी की इन्पेसक्टरी की हिफाजत के खयाल से ब्रिटिश एजेन्ट ने मदद देने का वादा किया। सारी तालचर रियासत पर हवाई जहाज घूमने शुरू हो गए। पर्चे गिराये गए और अश्रु-गैस भी छोड़ी गई। किन्तु जनता भयभीत नही हुई। उसने अपने मोर्चे को जारी रखने का दृढ़ सकल्प कर लिया। आगे-आगे ढोल बज रहे थे और पीछे-पीछे जन-समूह 'करो या मरो' 'भारत छोड़ो' 'हरी बोल' इत्यादि के नारे लगाता हुआ आगे बढ रहा था। अब केवल तीन फर्लांग का फासला ब्रिटिश हवाई अड्डे और इन्फेंट्री के बीच बाकी रह गया था और इस तरह दोनो सेनाए एक दूसरे के समीप आ पहुची थी।

जन-सेना के नेताओ ने राजा से अग्रेजी सेना तथा हवाई अड्डे को हटाने के लिए कहा। पर राजा पहले ही से अपनी एक निश्चित योजना बना चुका था। जनता के नेता, जो राजा से मिलने गए थे, पकड़ लिये गए और उन्हें अपमानित किया गया चारो ओर से ब्रिटिश फौज ने नाकाबन्दी कर ली थी। आगे-पीछे सब तरफ तोपे लग चुकी थी। अब केवल 'करो व मरो' का नारा सुनाई पड़ता था।

अग्रेजी पैदल सेना ने हमला शुरू कर दिया। हवाई जहाजो ने धुआं फेंककर पीछे लौटने के मार्ग बन्द कर दिये। सामने से फायरिंग शुरू थी। कितने ही आदमी वही पर मर गए और सौ से अधिक जख्मी हुए। ७ दिसम्बर को भी सहार जारी रहा। बहुत थोडी ऊचाई से उड़-उड कर हवाई जहाज ऊपर से अश्रु-गैस, बम व मशीनगन द्वारा गोलिया चला रहे थे और जमीन पर खडी हुई फौज दाए बाए गोलिया चला रहा थी। लोग गिर-पड़कर इधर-उधर भागने लगे और जब कुछ लोग बचकर आस-पास के गावो में जाते थे तो सैनिको की टुकड़ियां उनका वहां पर भी पीछा करती थी। ३०० से अधिक लोग इन गावो से पकडे गए।

यह सब करने के बाद सैनिको ने देहातो में प्रवेश किया। ऊपर हवाई जहाज चलते थे और जमीन पर सैनिको की टुकडिया। वे गाँवो को लूटती थी, तबाह करती थी और बाद में आग लगा देती थी। लूट-मार का चौतरफा साम्राज्य था। गांव-के-गांव वीरान हो गये। खाने का सामान, जेवर, बर्तन, कपड़ा, गाय-बैल सभी कुछ लूट लिया गया। लोगो के जानवर बहुत थोड़े दामो में बेच दिये गए। लगभग १० लाख रुपये से अधिक की सम्पत्ति इसी प्रकार लूटी गई। यही नही, बाद मे सामूहिक जुर्माना भी किया गया, जिसे बड़ी निर्दयता के साथ वसूल किया गया।

तालचर में हुए दमन के कुछ आंकड़े इस प्रकार हैं:—

गिरफ्तारियाँ	३५०	नजरबन्द	११
सजाएं	३००	मृत्यु-सख्या	८
घायल	१५०	फांसी की सजा	१
फरार	३०		

नायागढ़—तालचर तथा नीलगिरी रियासतो मे होने वाले आन्दोलन का प्रत्यक्ष रूप से नायागढ रियासत पर भी प्रभाव पड़ा। १६ अगस्त को नायागढ के कुछ गावो मे नेताओं की गिरफ्तारी के विरोध में दरबार के हुक्मो के खिलाफ लोगो ने सभाये की। रियासत के कर्मचारियो के बहुत कोशिश करने पर यह विरोध-प्रदर्शन न रुके। अन्त मे रियासत को ब्रिटिश पुलिस की मदद लेनी पड़ी। ७२ आदमियों को गिरफ्तार किया गया और १९ गांवो पर ८ हजार रुपया सामूहिक जुर्माना किया गया।

९ सितम्बर सन् १९४२ को हरिपुरा गाँव के पास टेलीफोन के तार काटे गए। आन्दोलन प्रजामण्डल के कुछ कार्यकर्त्ताओं को गिरफ्तार करने के कारण और भी उग्र हो गया। १८ सितम्बर को कनाबक मे ग्रामीणो का एक जलसा हुआ जिसमें तीन सौ से अधिक गौंड इकट्ठे हुए। इसमें लोगो ने तय किया कि रियासत की इमारतो पर कब्जा किया जाय और पुलिस अफसरो को नौकरी छोड़ने के लिए कहा जाय। साथ ही राजधानी पर जाकर अपने नेताओ को जेल से मुक्त किया जाय। रियासत के कर्मचारियों ने इस खबर के पाते ही फौरन तैयारी कर ली। कुछ नेता पकड़ लिये गए और सैनिक पुलिस की टुकड़ियाँ बरखोला में इकट्ठी कर दी गईं। अब रियासत मे तोड़-फोड़ के कार्य शुरू होगए और कुदाली बन्दा, नन्दीघर और निकोली स्थानो के टेलीफोन के तार काट दिये गए। १० अक्तूबर की रात को कोन्धा के लोग बरखोला की ओर बढे और वहां के डाकबगले और स्कूल की इमारत मे आग लगा दी और बिहरफोला चौकी पहुचे, जहा पहले से ६ पुलिस के सिपाही तैनात थे। लोगो ने पुलिस की बन्दूके छीन ली।

उन्मादित जनता का यह समूह नौगाँव थाने की ओर बढ़ा और जगलात के बगले और स्कूल मे आग लगा दी। रास्ते मे पड़ने वाले गांवों के लोग जुलूस मे शरीक होते जाते थे। इस प्रकार जब यह जुलूस नौगांव पहुंचा तो इसकी सख्या तीन हजार से भी अधिक हो गई थी। थाने पर सगठित व सफल हमला करने के लिए इन लोगो ने अपने को तीन हिस्सों मे बांट लिया। थानेदार ने जनता को आगे न बढ़ने की धमकी दी और

जब जनता बढती ही गई तो पुलिस ने गोलियां चलाईं। ५ फायर किये गए जिससे पाच-सात आदमी फौरन वही मर गए। जनता ने अपने मरे हुए आदमियों को उठा लिया और उन्हें जुलूस के साथ ले गई। ठीक इसी दिन ११ अक्तूबर को बरखौला की ओर से एक जुलूस सरकारी डाक बगलो, स्कूल की इमारतों जगलात महकमे के दफ्तरो इत्यादि को चलाते हुए और चौकीदारो सिपाहियो तथा तथा जंगलात के कर्मचारियो की वर्दियो को लेता हुआ नौगाव थाने की ओर बढा। महीपुर से यह लोग दो टकडियो मे बट गए और थाने पर पहुचकर इन लोगो ने अपने नेताओ को मुक्त करने की माँग पेश की। पुलिस ने गोलिया चलाकर लोगो को तितर-बितर कर दिया।

धेनकनाल—आस-पास की रियासतो की भाति धेनकनाल में भी आन्दोलन चला। २६ अगस्त को नेताओ की गिरफ्तारी के विरोध मे हडताल व प्रदर्शन हुए। २ सितम्बर को विष्णुचरन पट्टनायक के नेतृत्व मे जनता के एक समूह ने चादपुर थाने और स्कूल पर आक्रमण किया। पुलिस के थाने से चार बन्दूकें और ७५ कारतूस छीनी गई। ४ सितम्बर को जनता के दूसरे समूह ने परजन थाने पर आक्रमण किया। एक दूसरा दस्ता श्री दिवाकर विश्वास के नेतृत्व मे आक्रमण में भाग लेने आ रहा था। पुलिस का पहले से बहुत काफी इन्तजाम था। अत. उसने जन-समूह को आते देखकर गोलिया बरसानी शुरू कर दी, जिसके कारण काफी लोग मरे।

काठियावाड़ की रियासतें

काठियावाड़ हर राष्ट्रीय आन्दोलन के साथ रहा है। यह एक छोटा-सा प्रान्त है और बहुत-सी छोटी-छोटी रियासतो मे बटा हुआ है। कुछ रियासतो का क्षेत्रफल दस-बीस वर्ग मील और आमदनी दो-चार सौ रुपये से अधिक नही है। शासनाधिकार की दृष्टि से ये रियासते अनेक श्रेणियों में विभाजित हैं। महात्मा गाधी का जन्म भी काठियावाड़ की रियासत पोरबन्दर मे हुआ है। इस नाते उनकी काठियावाड़ की रियासतो में विशेष दिलचस्पी रही है। राजकोट में जनता ने अधिकार-प्राप्ति के लिए सरदार पटेल के नेतृत्व मे जोरदार आन्दोलन किया और इस सम्बन्ध मे महात्मा गाधी को अनशन भी करना पडा था। सन् १९४२ का आन्दोलन भावनगर, राजकोट, पोरबन्दर, जामनगर आदि रियासतो मे विशेष रूप से हुआ।

भावनगर रियासत में ३६१ व्यक्ति गिरफ्तार किये गए और ३००

दण्डित किये गए। ६१ व्यक्तियों को नजरबन्द किया गया। इनके अतिरिक्त ५०० अन्य लोग भी पकड़े गए जो बाद में छोड़ दिये गए। भावनगर युद्ध-सामग्री बनाने का केन्द्र था। ज्यो ही सन् १९४२ का आन्दोलन प्रारम्भ हुआ, जनता ने यहा पर हडतालें की और जुलूस निकाले। विद्यार्थियो ने हड़तालों में प्रमुख भाग लिया। कितने ही सामूहिक प्रदर्शन हुए और कुछ विशेष दिनो पर जुलूस व जलसे आदि होते रहे। विद्यार्थियों का एक जुलूस प्रदर्शन करता हुआ रेलवे वर्कशाप व अन्य मिलो में पहुचा और उनसे काम रोकने की प्रार्थना की। जनता ने भी प्रदर्शनकारियो के साथ सहयोग दिया। नेताओ को गिरफ्तार किया गया और उन्हे नजरबन्द कर लिया गया। इन प्रदर्शन पर कितने ही, लाठी-चार्ज हुए। लोगो पर सामूहिक जुर्माना हुआ जो मजदूरो व मध्यमश्रेणी के लोगो से जबरदस्ती वसूल किया गया।

जनता ने अपना विरोध प्रदर्शन करने के लिए राजकोट में कई सभायें की व जुलूस निकाले। पोरबन्दर में जनता के शान्तिमय समूह ने अधिकारियों से इस बात की मांग की कि उनके यहा से माल बाहर न जाय। पर रियासत नें नेताओ को पकड़ लिया। इससे खरवार लोग (समुद्री नाविक) उत्तेजित हो उठे और जब उन्हे सामान बाहर लेजाने पर विवश किया गया तो उन्होंने शक्कर के बोरे समुद्र में फेंक दिए। राज्य कर्मचारियो ने नेताओं को छोड़ दिया और उनसे शान्ति स्थापित करने की प्रार्थना की और जब यह कार्य खत्म हो गया तो उन्हे फिर जेल भेज दिया। जनता का एक विशाल समूह महाराज के पास गया और जब उसके नेताओ के साथ बात हो रही थी तो राज-कर्मचारियो ने बहुत-से अहीर लोगों को बुला लिया और जन-समूह पर भयकर लाठी-चार्ज किया गया। शहर इस प्रकार गुंडो के हाथ में सौप दिया गया, जिन्होने खूब मनमानी की।

काठियावाड की इन रियासतों में आन्दोलन का रूप यद्यपि व्यापक था, परन्तु वह लम्बे अर्से तक न चल सका। कितनी ही जगह लाठी-चार्ज हुए और दमन करने में विभिन्न रियासतों में प्रतिस्पर्धा रही भावनगर में जनता अपना डेपुटेशन महारानी के पास अपनी करुण कहानी सुनाने के लिए ले गई, लेकिन कहानी सुनने की कौन कहे, उस पर भी लाठी-चार्ज किया गया। चार-पांच जगह गोलियां चलाई गईं जिससे सैकडो आदमी घायल हुए। इस पर सरकारी इमारतों को क्षति पहुंचाई गई और तोड-फोड के कार्य भी काफी मात्रा में किये गए। तार काटे गए, डाक के थैले छीने गए और पुलों को भी तोड़ने के प्रयत्न किये गए।

पोरबन्दर में सबसे अधिक सामूहिक जुर्माना हुआ और उसे विचित्र तरीके से वसूल किया गया। महाराजा ने कुछ प्रतिष्ठित नागरिकों को बुलाया और उन पर तगड़ा जुर्माना लगा दिया जो एक लाख २० हजार से अधिक था। इन लोगो से पिस्तौलो की नोक पर यह जुर्माना वसूल किया गया। भावनगर में १७ हजार रुपए का सामूहिक जुर्माना किया गया और अमरौली रियासत में १४ हजार रुपया वसूल किया गया।

बड़ौदा

कांग्रेसी नेताओ की गिरफ्तारी के पश्चात् विरोध प्रदर्शन करने के लिए बड़ौदा मे हड़ताल और सभायें हुईं। विद्यार्थियो ने जुलूस निकाले। बाद में आन्दोलन शहर के बाद गावो में भी फैल गया। इस रियासत के कोरदा ग्राम में हुई घटना का १९४२ के खुले विद्रोह के इतिहास मे खास स्थान है। कांग्रेसी नेताओ की गिरफ्तारी के पश्चात् इस गाव मे अम्बालाल गान्धी ने नेतृत्व में जुलूस निकाले गए और सभाए हुईं। लोगो में प्रजामडल के नेताओ की गिरफ्तारी तथा दो नौजवानो की मृत्यु की खबर फैलते ही काफी उत्तेजना फैल गई। अम्बालाल गान्धी अपने कुछ अन्य साथियो सहित कोरदा से कुराली पहुचे। उन्हे पता चला कि फौज की एक टुकडी रेल द्वारा कोरदा की ओर बढ रही है। इस अभिप्राय से कि यह टुकड़ी कोरदा न पहुच सके जनता ने लगभग २।। मील तक रेल की पटरी बिलकुल उखाड़ दी। अम्बालाल गाधी ने इसका नेतृत्व किया था।

स्पेशल ट्रेन आई और फौजी सिपाहियो ने उतरकर देखा कि लाइन की पटरी उखाड़ दी गई है। उन्होंने अम्बालाल गान्धी को पकड लिया और उन्हे बड़ी निर्दयता से मारा। अम्बालाल गान्धी के नौकर को भी गिरफ्तार कर लिया। गाव में सिपाहियो ने घोर आतक फैलाया। एक खास तरीके से नाकाबन्दी करदी, अत. कोई भी आदमी घर से बाहर नही जा सकता था। ४५,००० रुपया सामूहिक जुर्माना गावो पर किया गया। यह बड़ी निर्दयता से वसूल किया गया। १०० आदमियों से अधिक गिरफ्तार किये गए और बिना किसी सबूत के कितने ही लोगो को घोर यातनाएं दी गईं। गिरफ्तार लोगों को एक सप्ताह तक बराबर एक जगह बन्द रखा गया और सिर्फ दो-तीन बार खाना दिया गया।

मैसूर रियासत

दक्षिणी भारत में कितनी ही बड़ी-बड़ी रियासतें मैसूर, हैदराबाद, कोल्हापुर, ट्रावनकोर इत्यादि हैं। इसके अतिरिक्त छोटी-छोटी रियासतें हैं।

इनमें से आन्दोलन का अधिक जोर मैसूर रियासत में रहा, क्योंकि यहाँ पर जनता में पहले से काफी राजनीतिक जागृति थी। मैसूर स्टेट कांग्रेस के कार्य-कर्त्ताओं का जनता के साथ गहरा सम्पर्क था।

अगस्त-क्रान्ति की चिनगारी मैसूर राज्य में सुलगी, मैसूर स्टेट कांग्रेस की शाखाएं रियासत के कोने-कोने में फैली हुई थी। यहां की कांग्रेस का मजदूरों पर पूरा असर है। मजदूर यूनियन के पदाधिकारी आम तौर पर कांग्रेस के लोग ही है। अत. विरोध-प्रदर्शनो में मजदूरो ने प्रमुख भाग लिया। हिंदुस्तान एयर कैफ्ट एसोसिएशन ने दो रोज तक जुलूस का नेतृत्व किया। इन प्रदर्शनो में स्त्रियां, बच्चे, विद्यार्थी, मजदूर, सरकारी नौकर आदि सभी श्रेणियों के लोग शामिल थे। पुलिस के लाख रोकने पर भी जुलूस निकलते हा रहे। जनता सड़कों पर बैठ जाती थी। इन दिनो जनता के स्वयसेवक भीड़ का संचालन करते थे। सरकार ने आखिर दमन का आसरा लिया। वह मजदूरो व विद्यार्थी नेताओ की गिरफ्तारियां करने लगी। जुलूसों और सभाओं की मनाई कर दी गई। किन्तु जनता बराबर जुलूस निकालती रही। दिन में सभी सगह सड़को पर जनता की भीड लगी रहती थी। सरकार अपनी शान रखने के लिए जनता का खून बहाने लगी। अन्धाधुन्ध गोलिया चलाई जाने लगी। १९ ता० को १०० आदमी मारे गए और अधिक सख्या में घायल हुए। दूसरे दिन १०० व्यक्ति और गोलियो के शिकार हुए। पुलिस ने बगलौर, दावानगर, मैसूर, तुमकुर और हसन मे गोलियां चलाईं। बंगलौर में १५० व्यक्ति और देवनगर में ६ व्यक्ति मरे। बगलौर मे १६ और १७ अगम्त को घंटों जमकर लड़ाई हुई। मरे हुए व्यक्तियों को पुलिस आनन-फानन मे गायब कर देती थी। मरे हुए व्यक्तियो के सम्बन्धियो को भी सूचित नही किया जाता था। किंतु जनता गोलियो से दबने वाली न थी। उसने पोस्ट बॉक्स, बिजली के खम्भे और जो भी सरकारी माल हाथ लगा बरबाद कर दिया। गोलिया चलती रहती थी, लेकिन बिजली के तार काट दिये जाते थे और बिजली के खम्भे सड़को पर काटकर बिछा दिये जाते थे। शहर में पोस्ट आफिसो पर धावा बोलकर उन्हे जला दिया गया। घुडसवार पुलिस और अश्रु-गैस छोडने वाली रेजिमेन्ट का भीड को तितर-बितर करने के लिए उपयोग किया गया। टैंक और सशस्त्र मोटरें भी काम मे लाई गईं। विद्यार्थी अपनी हडताल जारी रखे हुए थे। सभाए और जुलूस पूर्ववत् निकलते रहे। विश्वविद्यालय की ओर से यह सूचना निकाली गई कि जो २८ सितम्बर की परीक्षा में बैठेंगे उनके विरुद्ध कार्रवाई नही की जायगी। सारे मैसूर राज्य में २८ ता० को लम्बे-चौड़े जुलूस निकाले गये।

बंगलौर के हड़ताली मजदूरो ने विश्वविद्यालय में पिकेटिंग शुरू कर दिया। यद्यपि विद्यार्थियों को लाने के लिए मोटरों का इन्तजाम किया गया, लेकिन १० फीसदी विद्यार्थियों से ज्यादा परीक्षा में न बैठे।

"भारत छोड़ो दिवस" मनाने का आयोजन हुआ। जुलूस को शहर के चौक पर रोक लिया गया, किंतु जनता ९ बजे सुबह से ७ बजे शाम तक वही बैठी रही। दो सप्ताह के भीतर ६०० विद्यार्थी गिरफ्तार हुए। ६ अगस्त से लेकर आधे अक्तूबर तक मजदूर बीच-बीच मे हड़ताल करते रहे।

१७ विभिन्न कारखानो के ३२८०० मजदूर दो सप्ताह हडताल पर रहे। भद्रवती आइरन वर्क्स के ४५०० मजदूरो में से ३००० मजदूरो और मैसूर पेपर मिल के ११०० मजदूरों में से ४०० मजदूर एक महीने की हड़ताल पर रहे। जिलो मे तारों का काटना जारी रहा। मैसूर-बंगलोर रेलवे की ओर जनता की पूरी निगाह रही। श्रीरंगपट्टम में एक मालगाडी पटरी से गिरा दी गई, जिससे काफी नुकसान हुआ। बंगलोर-हुबली, बंगलोर-मैसूर और बंगलोर-गुटकल लाइनो की पटरिया हटा दी गईं। १५ दिन तक गुटकल लाइन पर रात को रेलो का आना-जाना बन्द रहा। उपरोक्त अन्य दो लाइनो पर एक महीने तक रेलगाडी ठप रही। देवानगर-बनाकर, होतालकर, हीसदुर्ग, आजूर और सातापुर रेलवे स्टेशन जला दिये गए। १५ दिन तक मजदूर और विद्यार्थी बिना टिकट सफर करते रहे। खतरे की जंजीर खीचकर ट्रेन रोक ली जाती थी। एक हफ्ते तक फौज को दूध और तरकारियां नही मिल सकी। इसके बाद इन गाडियों के साथ सैनिक चलने लगे।

जनता की भीड, जिसम अधिकांश विद्यार्थी होते थे, रेलो को रोक कर उनपर अधिकार कर लेती थी। रेलवे कर्मचारियो को खादी की टोपिया दी जाती थीं जिसे वे लोग पहनते थे। विद्यार्थी खुद गार्ड बन जाते थे। इन गाडियों पर झडे फहराते थे। पाचवें दिन पुलिस इस ट्रेन पर चढ गई और विद्यार्थियों को बुरी तरह पीटा और उनके पास जो कुछ था, छीन लिया और उनको नगा करके अगले स्टेशन पर उतार दिया। विद्यार्थियों ने इसका उत्तर बनामवर स्टेशन को जला कर दिया। चार डिब्बे और बुकिंग आफिस जला दिये गए। तार कांट दिये गए। पुलिस ने गोलियां चलाईं जिसके फलस्वरूप चार मरे और बहुत से घायल हुए। सभाए करने की मनाई कर दी गई, किंतु जनता ने इसको न माना और शहीदो को इज्जत के साथ उठाकर ले गई। मयाकोंदा गाव की जनता ने एक पुलिस स्टेशन पर कब्जा कर लिया। पुलिस वालों को खद्दर पहनाया। गाव उतनी देर तक स्वतंत्र रहा जब तक कि बाहर

से मदद नही आई। बाहर की पुलिस ने आकर जनता को बुरी तरह कुचला।

एक मील तक रेलवे की पटरी उखाड़ दी गई और रेलवे का पुल तोड़ दिया गया, टेलीफोन और टेलीग्राफ के तार काट दिये गए। हुलेलकर, अज्जामपुर और हुसदुर्गापुर की रेलें एक सप्ताह तक बन्द रही। बगलोर और हरिहर, चित्तल दुर्ग व जगलू के बीच के तार कई फर्लांग की दूरी तक काट दिये गए। चित्तल दुर्ग, तातुलकान्से, तुरवानर पुलिस स्टेशन पर राष्ट्रीय झडा महीनों तक फहराता रहा। कई गिरफ्तारियो के बाद जब झडा हटा भी तो विद्यार्थियो ने इकट्ठे होकर अपने इलाको और गाव के अस्पताल पर झडा फहराया। गवर्नमेट इमारतो पर झडे फहराये गए। जुलूस और सभाए की गई। सड़को पर और दिवारो पर नारे लिख दिये गए।

मैसूर सब-जेल में अर्ध रात्रि के समय राजनैतिक बन्दियो पर लाठी-चार्ज किया गया। ८०० के कराब बन्दी घायल हुए। एक विद्यार्थी उसी स्थान पर मर गया। मधुगिरी में ताड़ के पेट काट दिये गए और ताड़ी की दूकानें जला दी गईं। बोशदपुर एक स्वतत्र गाव घोषित कर दिया गया। वहा पटेल का लड़का नेता चुना गया। सरकारी अधिकारी उस गाव की ओर बढ़े, पर पटेल के लडके ने उन्हे गाव मे घुसने नही दिया। वे लौट गये और दूसरी रिजर्व ताकत लेकर आये। पटेल का लडका पुलिस अधिकारियो के हाथ न लगा।

तिपतुर एक रेलवे स्टेशन व व्यापारिक केन्द्र है। वहा की जनता ने गोदामो में आग लगा दी जिससे एक लाख से अधिक का नुकसान हुआ। रिजर्व पुलिस ने गोली चलाई, जिससे तीन व्यक्ति मरे और बहुत से लोग घायल हुए। १५ आदमी गिरफ्तार हुए। तुमजुर मे सरकारी आज्ञाओ का उल्लघन कर जुलूस निकाले गए और सभाए की गईं। गोरीबिन्दुनीर में ताड़ के पेड़ काटे गए और ताड़ी की दूकाने जला दी गईं। टेलीग्राफ के तार काट दिये गए। १५ दिन बाद १५ व्यक्ति गिरफ्तार किये गए, किन्तु पुलिस को उन्हे ले जाने का साधन न मिला, क्योकि जनता ने अपनी बैलगाडिया देने से इन्कार कर दिया। चिका मगलुर तारी केन मे चन्दन के गोदाम मे आग लगा दी गई। ३० गिरफ्तारियां की गईं।

मिलो में हड़ताले जारी थी ही, कोलार की सोने की खानों में मजदूरों ने महगाई की माग को लेकर हडताल कर दी। बगलोर के चार कपडे की मीलों के १३००० मजदूरो ने हडताल जारी रक्खी। थोडी-बहुत हडताले और जगह भी चलती रही। सब मिल कर १५००० विद्यार्थियो और ४००० मजदूरो ने

इन हड़तालों में भाग लिया।

हसन तथा पडोस के जिलो की जनता ने करबन्दी आन्दोलन शुरू कर दिया। शैन्डी अथवा हफ्तेवार बाजार लगते है, इनमें लोगों ने चुंगी तथा टोल देने से इन्कार कर दिया।

इस करबन्दी आन्दोलन की मुख्य बातें निम्नलिखित थी:—

१. दूकानदारों तथा ग्राहकों ने कर देने से इन्कार कर दिया।

२. ठेकेदारों ने अपने ठेके बन्द कर दिये और गवर्नमेंट से अपनी अमानतो की मांग की।

३ जहां के ठेकेदारों ने सहयोग करने से इन्कार किया, जनता ने या ता उस बाजार पर पिकेटिंग किया या उन स्थानो पर इकट्ठा हो गए जहा ठेकेदार को कर लेने का कोई अधिकार न था।

४. पुलिस ने कही-कही जनता को जबरदस्ती शैन्डी की जगहो पर ले जाना चाहा और गिरफ्तारियां भी की, किंतु जनता इन बन्दियों को जाने नही देती थी और छुडा लेती थी।

५ एक जगह पर तो जबरदस्ती बाजार लगवाने के लिए फौज आई पर गाववालो ने फौज के रहते हुए बाजार लगाने से इन्कार कर दिया।

यह सत्याग्रह कई जिलों में अनेक स्थानों पर चला और हजारों आदमियो ने इसमें हिस्सा लिया।

आमतौर पर अर्धरात्रि में बहुत-से घरो तथा छापेखानो की तलाशी ली गई। स्थानीय दैनिक पत्रो के सम्पादको पर भारत-रक्षा-कानून की धाराएं लगाई गईं।

हसन जिले में तो किराये के गुन्डे गांववालो के घरो मे घुस गये, माल लूट लिया, स्त्रियो तथा मर्दों को मारा-पीटा तथा अन्धाधुन्ध तरीके से गिरफ्तारियां की गईं।

मैसूर आइरन वर्क्स के ४८ तथा मैसूर पेपर मिल के २४ मजदूरों को निकाल दिया गया। इनमें के कुछ तो अभी जेल में ही थे। राज्य में कुल २००० गिरफ्तारियां की गईं। १६० व्यक्ति गोलियो के शिकार हुए तथा सैकड़ो ही घायल हुए। १० रेडियो तथा चार टेलीफोन जब्त कर लिये गए। गवर्नमेंट की ओर से भी कई व्यक्ति घायल हुए। १६ अगस्त को एक सवार मारा गया। शिमोगा जिले के इसुर नामक स्थान पर २५ सितम्बर को एक मामलतदार तथा एक दारोगा मार डाले गए। ११ अगस्त को बंगलोर शहर के डी० एस० पी० तथा पुलिस और फौज के ३० व्यक्ति घायल हुए।

बंगलोर जिले के दो गाँवों और शिमोगा जिले के दो गावों पर पांच-पांच सौ अर्थात् कुल दो हजार रुपया सामूहिक जुर्माना किया गया।

मैसूर में बन्दियों को अदालत से बाहर निकाला गया। इन बन्दियो को खाना नही दिया गया था। इस कारण इन लोगो ने माग की कि जब तक खाना नही दिया जायेगा, तब तक जेल में नही घुसेगे। रिजर्व पुलिस को बुलवाकर जबरदस्ती इन्हे जेल के भीतर दाखिल किया गया। रात के १२ बजे रिजर्व पुलिस जेल मे आई और बन्दियों को बुरी तरह पीटा गया। कोई दवा का प्रबन्ध नहीं था। दूसरे दिन २२ व्यक्ति अस्पताल में भरती किये गए। कैलूर शकरप्पा नामक एक हाई स्कूल के विद्यार्थी के मुह से खून निकल आया और वह दो दिन बाद मर गया। डाक्टर ने कहा कि उसको निमोनिया हो गया था, पर वास्तविकता यह थी कि उसकी पसली की हड्डी टूटगई थी। गैर-सरकारी-जेल निरीक्षकों को जेल में जाने की इजाजत न थी।

चिकमंगलोर में बहुत-सी तकलीफों के कारण बन्दियों ने अपनी-अपनी कोठरियो में जाने से इन्कार कर दिया। रिजर्व पुलिस आई और उसनें लाठी-चार्ज किया। बहुत से बन्दी सख्त घायल हुए।

प्रभुदेव नामक मजदूर नेता जो हिरासत में थे, निकल भागे। इनकी गिरफ्तारी के लिए सरकार ने इनाम का एलान किया। मैसूर की हिरासत से रामराव तथा हसन से बौराइया फरार हो गए।

अदामा नामक ३० वर्ष की स्त्री को यशवन्तपुर रेलवे क्रासिंग के पास तीन हिन्दुस्तानी सिपाही उठा ले गये और उसके साथ घृणित व्यवहार किया। वह विक्टोरिया अस्पताल में तीसरे दिन मर गई। दो अंग्रेज अफसर एक बाग में एक युवती को अपमानित करने की गरज से घुस आये। वरप्पा गोडा नाम की वृद्धा स्त्री ने इसका विरोध किया, अतः उसे मारा गया और वह ५ नवम्बर, ४२ को मर गई।

हिन्दुस्तानी अफसरों के लिए रिजर्व सीटों पर यूरोपियन अफसर आकर बैठ गए, जिसके कारण आपस में झगडा हो गया। एक हिन्दुस्तानी सिपाही ने रिवाल्वर निकाल कर एक यूरोपियन अफसर को मार डाला और कुछ घायल हुए। बाकी यूरोपियन अफसर भाग निकले।

हसन जिले के वारिगुर गांव की जनता नजदीक के एक जंगल में एक हजार दो सौ जानवरों को लेकर चराने गई। जगलात विभाग की ओर से लगाये गए हाल के पौधों को नुकसान पहुंचाया गया। रिजर्व पुलिस आई और उसने लोगो को तितर-बितर किया।

लड़ाई के लिए फड इकट्ठा करने को जो तमाशे हो रहे थे, उनपर ७ नवम्बर १९४२ को नीचे लिखे स्थानों पर बम फेंके गए:—

१. मैसूर रायल शो। २ मैनिलेकार निपाल। ३ मिलिटरी-कैन्टिन, बगलोर कन्टोनमेट।

श्री केशबन तथा श्री कुसुम नामक दो कालेज के प्रोफेसरो ने स्तीफा दे दिया। श्री एम० एच० शाह इक्जीक्यूटिव आफिसर तथा हिन्दुस्तान एयर क्रेफ्ट् कम्पनी के इजीनियर श्री मोदी, शिमोगा जिले के १० पटेलो, असेम्बली के कई मेम्बरो, ए० आर० पी० और राष्ट्रीय युद्धमोर्चे के कई सदस्यो ने भी स्तीफे दिये।

श्री एच० आर० गुरुबर्दी, श्री ए० जी० रामचन्द्र राव, श्री के० सुबाराव आदि व्यक्तियो ने अपनी सनदे वापस कर दी और अदालत मे जाना बन्द कर दिया।

अन्य रियासतें

भारत मे ६०० से ऊपर रियासते है। इनमे से यदि हम छोटी-छोटी रियासतो को छोड़ भी दें तो भी ४०–५० रियासतें ऐसी बच जायगी, जिनका राजनीतिक दृष्टि से काफी महत्त्व है। इतनी रियासतो मे से केवल १०–५ का ही वर्णन देखकर शायद पाठको के मन मे यह प्रश्न पैदा होने लगा होगा कि क्या भारत की बाकी रियासतो ने देश की आजादी की इस लड़ाई मे कुछ भाग नही लिया। इसके समाधान के लिए हमारा यह निवेदन है कि जिन रियासतो का वर्णन ऊपर नही हुआ है, वहाँ की जनता ने भी आन्दोलन मे काफी त्याग एव शौर्य का परिचय दिया है; किन्तु बहुत चेष्टा करने पर भी हमे उन स्थानो की मुकम्मिल रिपोर्ट प्राप्त नही हो सकी। अतएव इच्छा होते हुए भी हम उनका वर्णन इस पुस्तक में नही दे सके है। सामग्री-सग्रह का प्रयत्न अभी जारी है। आशा है, अगले सस्करण में इस कमी की पूर्ति की जा सकेगी।

: १९ :

युद्ध और मुख्य राजनीतिक दल

कांग्रेसः—युद्ध प्रारम्भ होने से पहले ही काग्रेस ने फासिस्ट-विरोधी नीति अपना रखी थी। इटली द्वारा अबीसीनिया पर आक्रमण तथा हिटलर द्वारा आस्ट्रिया को हथियाने आदि काडो का काग्रेस ने निन्दा का थी और ब्रिटिश साम्राज्यशाही को पहले से चेतावनी दे रखी थी कि भारत के लोग किसी साम्राज्यशाही युद्ध मे साथ न देंगे। जब ब्रिटिश राजनीतिज्ञ हिटलर और मुसोलिनी के इर्द-गिर्द मडरा रहे थे और इन फासिस्ट तानाशाहो की चापलूसी कर रहे थे, कांग्रेसी नेतृत्व उस समय भी उतना ही फासिस्ट विरोधी था जितना कि युद्ध काल में। जब यूरोपीय युद्ध प्रारम्भ हुआ, तो कांग्रेस के सामने तीन रास्ते थे।

१. युद्ध मे बिना किसी अगर मगर के ब्रिटिश सरकार का साथ देना। ऐसा करना काग्रेस की पूर्व घोषणाओ और नीति के विरुद्ध होता।

२. यदि सम्भव हो तो फासिस्ट देशो को सैनिक सहायता प्राप्त करने की चेष्टा करना और इस प्रकार अग्रेजो के दुश्मनो से सहायता प्राप्त करने की नीति बरतना।

ऐसा करना आत्म-हत्या के समान और अपने सारे पुराने आदर्शो को तिलांजलि देना होता।

३. युद्ध के असली रूप को जानने का प्रयत्न करना और उस समय तक युद्ध की गतिविधि को देखते रहना जब तक कि उसका असली रूप मालूम न हो जाय। युद्ध का भारतीय आकाक्षाओ की प्राप्ति के लिए उपयोग करना, साथ ही दुनिया भर के दबे-पिसे लोगो का साम्राज्यशाही के विरुद्ध सगठित मोर्चा बनाना और इस तरह सफलतापूर्वक इस युद्ध को भारतीय आजादी के युद्ध मे बदलना।

कांग्रेस ने तीसरे रास्ते को अपनाया। प्रारम्भ मे उसने ब्रिटिश सरकार से उसके युद्ध-ध्येय को मालूम किया और ठीक उत्तर न मिलने पर कुछ करने

की नीति को अपनाया। प्रारम्भ म गान्धीजी ने नागरिक स्वतन्त्रता अर्थात् अपने विचारो को स्वतत्र रूप से प्रकट करने के हक की मांग की और इस प्रकार दुनिया के सामने युद्ध के असली रूप को रखने का प्रयत्न किया। व्यक्तिगत सत्याग्रह के रास्ते को अपनाया और उसके द्वारा देश मे चेतना, युद्ध के प्रति अपनी वास्तविक स्थिति जानने की उत्सुकता और हर नागरिक में अपने हक का प्राप्त करने की इच्छा पैदा की। कांग्रेस हाई कमांड का प्रारम्भ से ही यह विश्वास रहा कि युद्ध लम्बा चलने वाला है। अत: उसके लिए आवश्यक था कि वह इस लम्बे काल में एक-सी नीति बरते जिससे एक ओर देश की शक्ति भी क्षीण न हो तथा दूसरी ओर देश में नई स्फूर्ति, जीवन व उत्साह पैदा हो। व्यक्तिगत सत्याग्रह का प्रारम्भ में कितने ही लोगो ने मखौल उड़ाई, पर किसी भी बडे व शक्तिशाली आन्दोलन के लिए यह आधार-शिला थी।

जापान की बढती हुई विजय तथा अंग्रेजी शस्त्रो की हार और आये दिन बढती हुई कठिनाइयों के कारण हिन्दुस्तानी कुछ करने के लिए व्याकुल हो उठे। और समय आया जब काग्रेस नेतृत्व के सामने दो ही रास्ते थे। एक तो यह कि निष्क्रिय होकर देश को युद्ध की लपटो मे झुलसते हुए देखना और अंग्रेज-विरोधी भावना के कारण भारतीयों को जापानियो के सामने अप्रत्यक्ष रूप से आत्म-समर्पण करने देना और इस तरह फासिस्ट ताकतो की विजय कराना। दूसरा रास्ता यह था कि देश के अन्दर फैली हुई बेचैनी, परेशानी व नफरत की शक्ति को क्रियात्मक व रचनात्मक ढंग से सगठित कर साम्राज्य-शाही और फासिस्टशाही दोनों के विरुद्ध जुटा देना और इस प्रकार दुनिया के करोड़ो लोगो की तरह अपने देश के लोगो मे भी अपनी आजादी के लिए मर-मिटने, बलिदान करने की व्यापक शक्ति पैदा करना और अपने देश को युद्ध की तबाही से बचाने के लिए ऐसी नीति बरतना, जिसके कारण एक ओर जापानी देश पर हमला न कर सकें और दूसरी ओर इस हमले का मुकाबला करने के लिए हिन्दुस्तानियों मे वास्तविक शक्ति पैदा हो जाय। इस प्रकार कांग्रेस ने दूसरे मार्ग को अपनाकर अंग्रेजो से भारतीयो को वास्तविक शक्ति सौपने अर्थात् केंद्र में राष्ट्रीय सरकार कायम करने की माग की और उन्हे बताया कि बिना वास्तविक सत्ता के उनके प्रति भारतीयो के क्रोध, नफरत व उत्तेजना को हमदर्दी, मुहब्बत और सहानुभूति में नही बदला जा सकता। लड़ाई में मदद करने के लिए जनता में गहरा मेल और सगठन होना चाहिए और उसे पता होना चाहिए कि वह किस चीज के लिए लड़ रही है,

किस आदर्श के लिए सब कठिनाइयां भुगत रही है। ब्रिटिश नौकरशाही को, जिसे अपनी सैनिक शक्ति पर पूर्ण विश्वास था और जो वास्तव मे साम्राज्य-शाही आदर्शों के मुताबिक जापानियो के अधिक नजदीक थी, यह कभी भी स्वीकार न था कि वह स्वय अपने हाथो भारतीय आकांक्षाओ की पूर्ति करे। इसके विपरीत उसे यह मजूर था कि भले ही दूसरी शक्ति उससे सत्ता छीन ले। अत: उसने काग्रेस की माग व बातो को गलत समझा और अपनी निश्चित योजनानुसार सैनिक-बल द्वारा किसी भी आन्दोलन का दबाने की नीति को अपनाया। ऐसी स्थिति मे सघर्ष अवश्यम्भावी था और वह हुआ भी।

मुस्लिम लीग—भारतीय राजनीति मे आज मिस्टर जिन्ना और उनकी मुस्लिम लीग एक पहेली और न सुलझने वाले प्रश्न बन गए है। उनकी नीति व व्यूह-रचना के विरुद्ध अनेक प्रकार की तीक्ष्ण समालोचनाए होती है। शिक्षित मुसलमानो का एक बहुत बड़ा समुदाय मिस्टर जिन्ना की राजनीतिक सफलता पर, जो उन्होंने इस युद्ध-काल मे प्राप्त की है, बड़ा गर्व करता है और उन्हें एक बडा दूरदर्शी कुशलराजनीतिज्ञ और मुस्लिम हितकारी नेता मानता है। मुसलमानो का विश्वास है कि मुस्लिम लीग ने जो शक्ति व सम्मान पाया है और भारतीय राजनीति मे उसे जो महत्वपूर्ण स्थिति मिली है उस सबका श्रेय मिस्टर जिन्ना की नीति-निपुणता को ही है। उनके विचार से मि० जिन्ना एक धुरन्धर राजनीतिज्ञ है जिन्होंने मुस्लिम जाति को बिना किसी कुर्बानी व त्याग के एक शक्तिशाली जमात के रूप मे संगठित कर दिया है और उन्हे एक नया नारा देकर उच्च ध्येय की ओर जुटा दिया है। इन लोगो के विश्वास के मुताबिक मि० जिन्ना ने कांग्रेस और ब्रिटिश राजनीतिज्ञो दोनो ही को काफी मात दी है। ठीक इसके विरुद्ध ऐसे लोग भी है जो मिस्टर जिन्ना को देशद्रोही तक कहने से नही हिचकते। उनका विश्वास है कि मि० जिन्ना की नीति के कारण भारतीय आजादी का प्रश्न खटाई में पड़ा है। मि० जिन्ना की नीति एवं कार्यो से मुस्लिम जाति की अपेक्षा ब्रिटिश साम्राज्य-शाही को कही अधिक लाभ पहुचा है, अत. यह लोग रोष मे आकर उन्हे ब्रिटिश एजेन्ट तक कह बैठते है। इस प्रकार की दो विरोधी आलोचनाओ के बीच हम वास्तविकता को तभी समझ सकते है जब मि० जिन्ना की नीति, व्यूह-रचना तथा विचार-धारा को जानने का प्रयत्न करें। तभी हमारे लिए यह आसान हो जायगा कि भारतीय राजनीति मे आमतौर पर और युद्ध-काल में खास तौर पर मि० जिन्ना ने किस प्रकार की नीति को बरता है, उनका क्या ध्येय है और उसे प्राप्त करने के उनके कौन-से साधन है। इसमे कोई दो

राय नही है कि मिस्टर जिन्ना शक्ति-सतुलन की कला के प्रकाड पडित और दूरदर्शी राजनीतिक नेता है, जिनका नेतृत्व बड़ी तेजी से फला-फूला है। मिस्टर जिन्ना मेरे निकट कोई विशेष व्यक्ति नही है, बल्कि विशेष स्थितियो के परिणाम है। जिस प्रकार यूरोप में हिटलर और मुसोलिनी पैदा हुए उसी प्रकार भारतीय रगमच पर मि० जिन्ना पैदा हुए है। यूरोप में ब्रिटिश, फ्रासासी व रूसी सघर्ष के कारण हिटलर ने शक्ति पाई। उसने इस सघर्ष का फायदा उठाया और एक नई युद्ध-कला का आविष्कार किया। जर्मन जनता ने हिटलर को देवता के समान समझा और उसका स्वागत किया। हिटलर ने बिना युद्ध और बलिदान के एक विशाल जर्मन साम्राज्य बनाने की बात जर्मनो को बताई, उन्हे जाति-द्वेष का नारा दिया और अपने विरोधियो के प्रति नई नीति बरती। उसका कहना था कि अपने विरोधियो को यह कभी मत बताओ कि तुम क्या चाहते हो। उनके मस्तिष्क पर प्रचार व शक्ति-प्रदर्शन द्वारा बराबर वार करते रहो। उनके आपसी झगड़ो से पूरा फायदा उठाओ और जब कभी वह तुम्हारे पास समझौते के लिए आयं तो उनको दोषी ठहराते हुए उनसे कहो कि तुम यह भी नही जानते कि हम क्या चाहते है। जब वह तुम्हारी थोड़ी-सी बात मानने को तैयार हो तो तिरस्कार से उनकी सुलह-कारी नीति को ठुकराते हुए अपनी माग बढ़ाते जाओ। एक ओर सुलह का दरवाजा खोले रखो, पर जब वह दरवाजे के नजदीक आयं तो दरवाजा बन्द कर उनकी मानसिक शक्ति को क्षीण करते रहो और जनता में अपनी शक्ति बढ़ाते रहो। इस प्रकार हर छोटी-मोटी जीत को एक विशाल रूप देकर अपने अनुयायियो पर अपने नेतृत्व का सिक्का जमाते रहो। इसी नीति को बड़ी सफलता के साथ भारतीय राजनीति में मिस्टर जिन्ना ने बरता और उनके नेतृत्व का जन्म और विकास उसी प्रकार हुआ है जिस प्रकार कि यूरोपीय रगमच पर हिटलर का हुआ। एक दूरदर्शी नेता की तरह मि० जिन्ना ने समझ लिया कि ब्रिटिश साम्राज्यशाही कभी भी राजी-खुशी भारतीयो को शक्ति न देगी। उमड़ता हुआ राष्ट्रीयवाद, जो काग्रेस के नेतृत्व में सगठित है, आजादी पाने के लिए बेकरार हो रहा है। अत. इन दोनो के संघर्ष से फायदा उठाकर अपनी शक्ति का विकास किया जा सकेगा। उन्होने सोचा कि एक शक्ति को दूसरी शक्ति को कमजोर करने के लिए नई शक्ति पर निर्भर रहना होगा। इस विश्वास व विचार-धारा से प्रेरित होकर मि० जिन्ना ने भारतीय मुसलमानो के प्रश्न को आन्दोलन का रूप दिया और जाति-द्वेष का इजेक्शन लगाकर मुस्लिम जनता को नफरत, घृणा व द्वेष के आधार पर हिन्दुओ के

विरुद्ध सगठित किया। उन्होंने मुस्लिम जनता को एक नया ध्येय व नारा दिया और समझाया कि इस ध्येय की प्राप्ति के रास्ते में हिन्दू बाधक हैं और यही हिन्दू काग्रेस में शामिल हैं। अतः काग्रेस हिन्दुओं की जमात है और ऐसी जमात मुस्लिम-आकांक्षाओं की दुश्मन है।

इस प्रकार ब्रिटिश साम्राज्यशाही और हिन्दू काग्रेस हमे दोनो ही से लड़ना है। यह तो उन्होने कहा मुस्लिम जनता से; पर वास्तव मे उनका स्थिति-विश्लेषण यह था कि काग्रेस और नौकरशाही के बीच होने वाले सघर्ष के कारण वह अपना ध्येय बिना किसी बलिदान, त्याग तथा सघर्ष के ही प्राप्त कर सकेगे। अग्रेजो से उन्होने कहा कि 'काग्रेस केवल इसलिए सफल नही हो सकती कि मुसलमान उसमें शामिल नही है, और यदि मुस्लिम-आकाक्षाओ की पूर्ति न की गई और उनकी पाकिस्तान की माग को न माना गया तो वह भी विरोध में शामिल हो सकते हैं। इसलिए अग्रेजो के फायदे मे यही है कि वह पाकिस्तान की माग को मान ले।' काग्रेस से उन्होंने कहा कि 'भारत को आजादी तभी मिल सकती है जब काग्रेस और लीग मिल जाय और मिलकर अग्रेजो पर जोर डालें और लीग काग्रेस से तभी मिल सकती है जब कि कांग्रेस उनके पाकिस्तान के ध्येय को मान ले।' इस प्रकार दोनो ही के सामने उन्होंने अपनी पाकिस्तान की माग को रखा। ब्रिटिश नौकरशाही ने काग्रेस की माग और शक्ति का प्रतिकार करने के लिए उनकी चापलूसी करने और उनकी शक्ति को बढाने की नीति बरती। काग्रेस ने अपने को सच्ची राष्ट्रवादी सस्था साबित करने तथा ब्रिटिश साम्राज्यशाही की पुरानी 'आपस मे लड़ाने और हुकूमत करने' की नीति का प्रतिकार करने के लिए मुस्लिम लीग के प्रति दोस्ती और मेल-मिलाप की नीति अपनाई। दुर्भाग्य से मि० जिन्ना ने इन नीतियों को, जिनका ब्रिटिश साम्राज्यशाही और काग्रेस हाई कमाड ने अपने-अपने हित मे अनुसरण किया था, दोनो की कमजोरी समझा और अपने को शक्तिशाली समझा। किन्तु यह उनकी बड़ी भारी भूल थी।

किसी भी जाति के संगठन एव शक्ति का पता इस बात से चलता है कि उसके नेता ने अपने अनुयायियो के अन्दर कितनी त्याग और बलिदान की शक्ति पैदा की है और अपने सगठन को आक्रमण और बचाव दोनो ही प्रकार की लड़ाई के लिए सुदृढ बना लिया है। युद्ध-काल मे मुस्लिम लीग को जो कूट-नीतिक सफलताएं हुई उसके कारण मुस्लिम जनता चौंधिया गई और उसने इसे अपने नेता की व्यूह-रचना तथा नीति-निपुणता का परिणाम समझा। इस प्रकार नेता का भावी तारतम्य बिगड़ गया। यह निश्चित है कि मुस्लिम लीग

को भविष्य में काफी कड़ुवे अनुभव होगे और असफलताओ का सामना करना पड़ेगा। युद्ध-काल में मिस्टर जिन्ना ने दोहरी नीति बरती। मुस्लिम जनता के ब्रिटिश-विरोधी और युद्ध-विरोधी भावो को ध्यान में रखते हुए उन्होने एक ओर कांग्रेस के पीछे चलने की नीति को अपनाया और दूसरी ओर ब्रिटिश साम्राज्यशाही से छोटे-मोटे लाभ पाने का प्रयत्न किया। एक ओर उन्होने कांग्रेस की भाति तय किया कि मुस्लिम लीग युद्ध-प्रयास में मदद न देगी। दूसरी ओर आसाम, सीमाप्रान्त, बंगाल, आदि मुस्लिम प्रान्तों में ब्रिटिश नौकरशाही की सहायता से अपने मन्त्रिमडल कायम कराये और इस प्रकार ब्रिटिश-साम्राज्यशाही को युद्ध मे मदद दी। साथ ही उन्होने इस काल में काग्रेस की शक्ति को क्षीण करने तथा मुसलमानों मे हिन्दुओ के प्रति विरुद्ध भाव जाग्रत करने की नीति अपनाई। कांग्रेस ने सन् १९४२ मे जब खुले विद्रोह की चर्चा की तो ब्रिटिश नौकरशाही पर अपना प्रभाव डालने के लिए मि० जिन्ना ने गृह-युद्ध के खतरे की धमकी देकर अपनी जमात और जाति के लिए अग्रेज अधिकारियो से सुविधाजनक स्थिति प्राप्त करने की चेष्टा की। उन्होंने यह संकेत भी किया कि केवल उनकी नीति के कारण ही कांग्रेस खुले विद्रोह मे सफल नही हो सकेगी, इसलिए अग्रेजों को चाहिए कि वह उनके साथ समझौता कर लें और भारतीय राज्य-सत्ता उनके हाथ में सौंप दें। युद्ध-काल में मिस्टर जिन्ना की नीति यही रही कि वे काग्रेस और ब्रिटिश साम्राज्यशाही के बढते हुए संघर्ष से अधिक-से-अधिक लाभ उठाएं। इस नीति में वह सफल भी हुए, पर युद्ध के पश्चात् समय पलटा, दुनिया की राजनीति बदली और पुराने विचार व तरीके निकम्मे दीख पड़े। ब्रिटिश नौकरशाही स्वयं अपने परस्पर विरोधी कारणो से टूटने लगी और उसका आर्थिक और सामाजिक ढाचा अस्त-व्यस्त होने लगा। ब्रिटेन की जनता मे स्वय साम्राज्यवाद विरोधी विचार जोर पकड़ने लगे और एक नई नीति व नए समाज की कल्पना की जाने लगी। लेबर गवर्नमेन्ट शक्ति मे आई और मिस्टर जिन्ना के अंग्रेज मित्र मिस्टर एमरी और मिस्टर चर्चिल पस्त हुए। पर मिस्टर जिन्ना ने इन सब घटनाओ से कुछ न सीखा। उन्हे अपने पुराने साथियो और विश्वासो पर गर्व था और बदलती हुई हालत में भी वह अपने उन्ही पुराने पासो से खेलना चाहते थे। समय आया कि ब्रिटिश-सरकार ने अपने आर्थिक व राजनीतिक हित में भारतीय आकांक्षाओं के साथ सुलह और समझौते की नीति बरतना प्रारम्भ किया और कांग्रेस नेतृत्व से समझौता करने के लिए हाथ बढ़ाया। मिस्टर जिन्ना के लिए यह सब असहनीय था। उन्हे कभी भी ऐसी आशा न थी कि ऐसा भी हो

सकता है। इस बदलती हुई स्थिति के लिए उन्होंने अपने मस्तिष्क में कोई गुंजाइश नही छोड़ रखी थी। ब्रिटिश केबिनेट मिशन वहाँ आया। मिस्टर जिन्ना ने अपनी पुरानी नीति के मुताबिक पुराने ही तरीके अपनाये और पुराने ही पाँसे खेले। वे नही समझ सके कि अब ब्रिटिश साम्राज्यशाही के हित मे यह नही है कि वह भारतीय राष्ट्रवाद से संघर्ष करे। उनकी आधार-शिला टूट चुकी थी। अब उस पर कायम रहना मूर्खता थी। दिल्ली और शिमला मे ये राजनीतिक दाव-पेच होते रहे और अन्त में १०० वर्ष के ब्रिटिश शासन के बाद मिस्टर जिन्ना को पता चला कि अंग्रेज लोग झूठ भी बोल सकते है। अपनी पूर्व ट्रेनिंग के अनुसार उन्होने गुर्राने तथा धमकी देने आदि की नीति बरती, पर जमीन उनके नीचे से निकल चुकी थी। ब्रिटिश सरकार को उनकी शक्ति का ज्ञान था। कांग्रेस भी उनकी बाबत काफी जान चुकी थी। क्षोभ व क्रोध से उत्तेजित मिस्टर जिन्ना ने 'गृह-युद्ध' और 'सीधे संघर्ष' इत्यादि के नारे बुलन्द किए। पर जर्मनी और जापान को हराने वाली ब्रिटिश-साम्राज्यशाही तथा कांग्रेस पर इन धमकियो का क्या असर हो सकता था? इन दोनो ने एक दूसरे को पहचाना और दोनो ने मिलकर मिस्टर जिन्ना को पहचाना। इन मिस्टर जिन्ना ने कई घोषणाएं की जो एक दूसरे से बिलकुल उलटी थी। द्वेष और घृणा की गर्जना करने वाले मिस्टर जिन्ना शांति, सुलह व अहिंसात्मक आन्दोलन की चर्चा करने लगे। अस्थायी सरकार मे जाने के प्रस्ताव को तिरस्कार पूर्वक ठुकराने वाले और हिन्दू मुस्लिम समान प्रतिनिधित्व पर एक इंच भी न झुकने वाले मिस्टर जिन्ना आज बिना किसी शर्त के केवल वाइसराय की शुभ प्रेरणा के आधार पर अस्थायी सरकार में शरीक हो गए। यह युग अब मिस्टर जिन्ना के जवाल का युग है जब कि उन्हे यह अनुभव करना होगा कि बलिदान, त्याग, खून, और आँसू के दौर मे न गुजरने वाली जमात को कठोर वास्तविकता के सामने इसी प्रकार झुकना होता है।

कांग्रेस समाजवादी पार्टी—सन् १९३४ मे कांग्रेस के अन्दर इस पार्टी का जन्म हुआ। यह एक उग्र, प्रगतिशील वामपक्षी कांग्रेस-जनो की पार्टी है। उनका विश्वास है कि समाज की रचना समाजवादी उसूलो के आधार पर होनी चाहिए और राष्ट्रीय आन्दोलन की गति-विधि को उग्र बनाने के लिए आवश्यकता पड़ने पर गुप्त, गुरिल्ला युद्ध और संगठित हिंसा को भी अपनाया जा सकता है। यह लोग एक ओर राष्ट्रीय एकता के हितार्थ कांग्रेस हाई कमांड के नेतृत्व मे विश्वास करते है, पर साथ ही इनका गान्धीजी की अहिंसा की नीति एवं साधनो मे पूर्णतः विश्वास नही है। समय पड़ने पर जो शस्त्र उपयोगी

हो, यह उसी का प्रयोग करने मे विश्वास करते है। इन १२ सालो मे इस पार्टी की शक्ति व सम्मान में काफी वृद्धि हुई है। जब यूरोपीय युद्ध प्रारम्भ हुआ तो इस पार्टी का भी यही कहना था कि सामूहिक आन्दोलन किया जाय। वह गान्धीजी द्वारा शुरू किये गए व्यक्तिगत सत्याग्रह से अधिक सन्तुष्ट न थी। सन् १९४२ में जब कांग्रेस ने वर्धा-प्रस्ताव पास किया तो इन लोगों ने उसका बड़ा स्वागत किया और गांधीजी द्वारा प्रयुक्त 'अंग्रेजो भारत छोड़ो' व 'खुला विद्रोह' आदि शब्दो को इन लोगो ने क्रान्तिकारी रूप में जनता के सामने पेश किया। सन् १९४२ में जब ब्रिटिश नौकरशाही ने कांग्रेस पर प्रहार किया और कांग्रेसी नेता चारो ओर पकड़े जाने लगे तो कांग्रेस समाजवादी पार्टी के नेताओ ने खुले विद्रोह के सिलसिले में अपनी नवीन नीति को अपनाया और नये साधनो का प्रयोग किया। इन्होने गान्धी जी के पुराने वक्तव्यों तथा समय-समय पर दिये गए भाषणो को अपने दृष्टिकोण से पेश करके जनता को यह बताने की चेष्टा की कि गान्धीजी वास्तव में 'खुला विद्रोह' चाहते थे, अतः मौजूदा हालत में हमारे लिए आवश्यक है कि इस आन्दोलन की चिनगारी को किसी-न-किसी रूप मे जिन्दा रखें। गान्धीजी ने हर आदमी को आजाद कर दिया है और वह जिस तरह भी हो वह अपने प्रतिरोध की भावना का प्रदर्शन कर सकता है। अतः इन्होंने इस काल में गुप्त संगठन प्रारम्भ किया और 'आजाद हिंद दस्ते' बनाने के प्रयत्न किए। जहाँ सम्भव था वहा जनता का मोर्चा भी स्थापित किया गया। गुरिल्ला लड़ाई के सिद्धान्तों पर भी अमल करने के प्रयत्न किए, इस प्रकार सन् १९४२ के आन्दोलन मे सबसे पहले हमने देखा कि गांधीजी की सामूहिक व प्रत्यक्ष आन्दोलन की कला के विरुद्ध समाजवादी नेताओ ने अपने ही तरीको का प्रयोग किया और इस प्रकार भारतीय राजनीति मे एक नये नेतृत्व का प्रत्यक्ष रूप हमारे सामने आया। जितने समाजवादी नेता अपने को पकड़-धकड से बचा सकते थे, उन्होने अपने को बचाया और गुप्त तरीको से काम लिया। श्री जयप्रकाशनारायण जी के जेल से बाहर आजाने पर इस गुप्त आन्दोलन में नई स्फूर्ति, शक्ति व जीवन आ गया। इस पार्टी के प्रमुख नेता श्रीजयप्रकाश-नारायण, श्री राममनोहर लोहिया, अच्युत पटवर्धन, वी० एस० डाडेकर और श्री मोहनलाल गौतम है। इनमें से अधिकतर अन्त समय तक अपने-अपने तरीकों से अपने-अपने सूबो में कार्य करते रहे। इनका प्रोग्राम नवयुवकों को विशेषकर आकर्षित करता है। इस तरह कांग्रेस समाजवादी पार्टी ने सन् १९-४२ के आन्दोलन में काफी शक्ति प्राप्त की और अपने को एक नए नेतृत्व के रूप में संगठित कर लिया। इस विषय मे हम अन्यत्र काफ़ी प्रकाश डाल चुके हैं।

कम्युनिस्ट पार्टी—भारतीय राजनीति में कम्युनिस्ट पार्टी ने अपने लिए एक विशेष आकर्षण पैदा कर लिया है। कुछ अपनी नीति के कारण और कुछ एक निश्चित विचार-धारा के आधार पर सगठित होने के कारण यह एक बड़ी सुसंगठित पार्टी है जिसमें बड़े जोशीले, उत्साही, फिलासफी-उन्मादित तथा पढे-लिखे नवयुवक शामिल है। भारत में होने वाले राष्ट्रीय आन्दोलन के प्रति इस पार्टी की सदा ही एक निराली नीति रही है और इस युद्ध के प्रति भी उसने जिस नीति को बरता है, उसके कारण इस पार्टी के प्रति सब दलो में भारी शंकाएं पैदा हो चली है और राष्ट्रीय सैनिको और उसके बीच एक गहरी खाई भी पैदा हो गई है जिसे अब किसी मन्तव्य द्वारा पाटा नही जा सकता। कम्युनिस्ट पार्टी की नीति को हम तब तक ठीक नही समझ सकते जब तक कि हम यह न जान लें कि आखिर उसकी नीति की आधार-शिला क्या है। इस मौलिक बात का न जानने के कारण आज देश मे इसके प्रति काफी रोष फैला हुआ है और स्वयं कम्युनिस्ट लोगो ने भी इस मौलिक बात को छिपाने का प्रयत्न किया है। बढते हुए राष्ट्रवाद के प्रभाव को देखकर इन्होंने अपने-आपको भारतीय राष्ट्रीयता का एक अनिवार्य अंग बनाने का प्रयत्न किया और इसी दृष्टि से वह कांग्रेस मे घुसे और उसके भीतर तमाम उग्र तथा उन्नतिशील शक्तियो का नेतृत्व ग्रहण करना चाहा, पर जो नीति इन्होने युद्ध-काल में बरती उससे पता चलता है कि इनकी नीति-संचालन का राष्ट्रीय आकांक्षाओ व भारत मे होने वाली घटनाओ से कोई सम्बन्ध नही है, बल्कि उसका आधार सोवियत् रूस की वैदेशिक नीति ही है। यदि कम्युनिस्ट प्रारम्भ से इस सत्य को बताकर चलते और साफ तौर पर यह कहते कि उनके विश्वास के मुताबिक रूस उन्नतिशील विचारो का केन्द्र है और उस केन्द्र की हिफाजत करना तथा उसके आधार पर अपनी नीति का निर्माण करना हमारा परम कर्त्तव्य है तो ऐसी हालत में कम्युनिस्टों के प्रति कोई गलतफहमी न होती, पर इस नग्न सत्य को उन्होंने भारतीय जनता से छिपाना चाहा और अपने को भारतीय राजनीति का एक अंग बताकर सारी राष्ट्रीय राजनीति तथा आन्दोलन की प्रगति को अपने ही आधार पर चलाने का प्रयत्न करना चाहा। इस दोहरी नीति का भंडा-फोड़ आवश्यक था।

सन् १९३९ में जब युद्ध प्रारम्भ हुआ और हिटलर ने दोनो मोर्चों पर न लड़ने के खयाल से सोवियत् रूस से फैसला कर लिया, तो हमारे इन कम्युनिस्ट साथियो ने सारी दुनिया मे इस युद्ध को साम्राज्यवादी युद्ध करार दिया और ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध शीघ्र ही एक सामूहिक आदोलन करने की

सलाह दी। उस समय यह लोग कांग्रेस हाई कमाड का केवल इसलिए विरोध कर रहे थे कि वह साम्राज्यशाही से युद्ध न करके कुछ छोटा-मोटा फैसला करने की बात कर रहा था। इनके मुताबिक इस नीति का अनुसरण करना देश के साथ विश्वासघात करना था। यही नही, फ्रास के कम्युनिस्ट नेता मिस्टर थोरे उस समय जर्मन रेडियो से निरन्तर इस बात का प्रचार कर रहे थे कि फ्रेंच जनता को इस साम्राज्यवादी युद्ध में अपनी सरकार का साथ नही देना चाहिए और इस प्रकार वह जर्मनी की इस लड़ाई के जीतने मे अप्रत्यक्ष रूप से मदद दे रहे थे।

यकायक सन् १९४१ में जर्मनी ने जब रूस पर आक्रमण कर दिया तो सारी दुनिया के कम्युनिस्टों की नीति बदल गई और उनके विश्वास के मुताबिक इस युद्ध का रूप भी बदल गया। अब यह युद्ध उनके लिए एक साम्राज्यवादी युद्ध नही था, बल्कि जनता की आकांक्षाओ के केन्द्र सोवियत् रूस पर होने वाला यह आक्रमण सारी जनता के ऊपर प्रहार था। अत. इन्होंने उस युद्ध को अब जनता के युद्ध का रूप दिया। इस नीति के अनुसार भारतीय कम्युनिस्टो ने भी अपनी नीति बदली और इन्होने अब काग्रेस हाई कमाड तथा काग्रेस सगठन को भी इस नीति को अपनाने की सलाह दी। इन दिनो भारत म बाह्य घटनाए इस नीति के बिलकुल प्रतिकूल थी। ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध यहां गहरा असन्तोष फैल रहा था और उसके प्रति विद्वेष इतना बढ गया था कि भारतीय जनता कम्युनिस्टो के कथन को केवल साम्राज्यवादी युद्ध का प्रचार समझती थी। कम्युनिस्टो का जन-युद्ध का नारा जनता की आकाक्षाओ, इच्छाओं व मनोवृत्तियों के बिलकुल विपरीत था और इसलिए जब कोई इस युद्ध को जनता का युद्ध बताने की चेष्टा करता था तो साधारण जनता में भी चिढ और झुंझलाहट पैदा होती थी। ठीक इसी समय कम्युनिस्टो ने लोगो के गले से यह कडुवी बात उतारनी चाही। स्वभावत: उसका परिणाम यही हुआ कि इनका सम्बन्ध जनता से टूट गया।

सन् १९४२ में कांग्रेस ने 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव पास किया तो कम्युनिस्टों ने इसका विरोध किया। उन्होने अपने को आन्दोलन से अलग रखकर जहाँ तक सम्भव हुआ इसका विरोध किया। उस समय कम्युनिस्टो का विद्यार्थियो तथा मजदूरों पर काफी प्रभाव था। पर इन दोनो वर्गों ने इनके नारों व तराकों की अवहेलना करके आन्दोलन में पूरा सहयोग दिया। कम्युनिस्टो की इस नीति ने सब लोगो को यह बात बता दी कि उनकी नीति का आधार भारतीय आकाक्षाए तथा भारत में होने वाली घटनाए नही है। राष्ट्रवाद का

नारा उनके लिए केवल एक साधन है, ध्येय नही और इस प्रकार भारतीय जनता उनके नेतृत्व पर कभी भी भारतीय आकांक्षाओ की पूर्ति के लिए विश्वास नही कर सकती।

कम्युनिस्टों का अपना ही एक तर्क है। यह उसी के द्वारा अपनी नीति निर्धारित करते है और उसे अकाट्य समझते है। यदि कोई इससे सहमत नहीं हो पाता तो यह मान बैठते है कि उसमे उस तर्क को समझने की शक्ति नही है। कभी-कभी उनकी मान्यता रोष का रूप भी धारण कर लेती है। सन १९४२ मे जब इन्होंने जनता के युद्ध का नारा लगाया तो साथ ही भारतीय राष्ट्रवाद के सामने एक नया नारा रखा; जो वास्तव में अग्रेजो की नीति से अधिक मेल खाता था। इन्होंने हमें बताया कि भारत मे राष्ट्रीय सरकार की स्थापना होनी चाहिए। राष्ट्रीय सरकार की स्थापना तब तक नही हो सकती जब तक काग्रेस और मुस्लिम लीग में समझौता न हो। अतः कम्युनिस्टो ने कहा कि हम दोनो में समझौता कराने की कोशिश करेंगे। यह ठीक उसी प्रकार का तर्क है जो ब्रिटिश नौकरशाही हमे १०० वर्षो से बता रही है। इस तर्क का-समर्थन करते हुए हमारे इन कम्युनिस्ट साथियो ने इस बात को स्वीकार कर लिया कि अभी तक भारतीय समाज पुरानें दकियानूसी धार्मिक आधार पर ही संगठित है, किन्तु वास्तव में उसे मानना मार्क्सवाद के नियमो की अवहेलना करना है। काग्रेस हाई कमाड और विशेष कर महात्मा गाधी जब हिन्दू-मुस्लिम एकता की बात करते थे तो कम्युनिस्ट उनके दृष्टिकोण को दकियानूसी कहकर मखौल उडाते थे। सन् १९४२ में हिन्दुस्तान के कम्युनिस्ट वही सब बातें कह रहे थे जिनकी अब तक वह कडी समालाचना करते थे। अब उनमें और नरमदल के लोगों के दृष्टिकोण मे कोई फर्क न था। वह केवल राष्ट्रीय सरकार की स्थापना की चर्चा करते थे और जब काग्रेस उसके लिए लडाई का बिगुल बजाना चाहती थी तो वह उस लड़ाई से स्वय बचना चाहते थे और जनता को भी उससे अलग रखना चाहते थे। बात वास्तव में यह थी कि चूंकि उस समय इंग्लैण्ड और रूस मे समझौता था, इसलिए वह रूस की वैदेशिक नीति के अनुसार ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध किसी प्रकार का आन्दोलन करना रूस के युद्ध-प्रयास के लिए घातक समझते थे। अतः उन्होंने जनता को प्रभावित करने तथा अच्छा तर्क ढूंढने के लिए जन-युद्ध का नारा उठाया जनता की उमड़ती हुई राष्ट्रीय भावनाओं को सन्तुष्ट करने के लिए राष्ट्रीय सरकार की स्थापना का नारा भी लगाया। पर इसके लिए इन्होने जिस साधन् को बरता, उसका ध्येय की प्राप्ति से कोई लगाव न था।

हिन्दू महासभा—भारतीय राजनीति मे हिन्दू महासभा का कोई विशेष स्थान नही है। उसके अपने ही कारण है। फिर भी हिन्दू महासभा का सग-ठन कायम है। युद्ध-काल में इस पार्टी के नेताओ ने मुस्लिम लीग की तरह अवसरवादी नीति का ही अनुसरण किया। इन्होने यद्यपि खुले रूप में युद्ध मे अग्रेजो का साथ देने की नीति को नही बरता, पर सरकारी नौकरियों मे मुसलमानो की बढ़ती हुई संख्या का मुकाबला करने के लिए ब्रिटिश साम्राज्य-से अपना नाता बनाए रखने का प्रयत्न किया। एक ओर इसने काग्रेस को हिन्दू-हित-विरोधी सस्था बताकर हिन्दू-जनता से सहानुभूति हासिल करने की नीति बरती और इस प्रकार प्राप्त की हुई शक्ति के आधार पर ब्रिटिश सरकार पर जोर डालकर सरकारी शासन मे हिस्सा पाने की कोशिश की। उनका अभि-प्राय था कि ब्रिटिश-सरकार के हाथ मे राज्य सत्ता है और काग्रेस, जिसमें मुख्यतः हिन्दू है, ब्रिटिश-सरकार से लड़ ही रही है अतः कांग्रेस की शक्ति का प्रतिकार करने के लिए ब्रिटिश-सरकार यह सिद्ध करना चाहेगी कि सारे हिन्दू काग्रेस साथ नही है और इसे सिद्ध करने के लिए उसे किसी हिंदू सस्था की अवश्य आवश्यकता होगी। ऐसी स्थिति मे हम ब्रिटिश-सरकार से हिन्दुओ के नाम पर शासन से कुछ हिस्सा पा सकेगे। अतः इनका कहना था कि वह अंग्रेजो को युद्ध-प्रयास मे मदद देने को तैयार है, बशर्ते कि हुकूमत उन्हे शासन मे साझी-दार बनाए। ब्रिटिश हुकूमत के लिए जहां एक ओर मुस्लिम-लीग की शक्ति को काग्रेस के विरुद्ध प्रोत्साहित करना जरूरी था, वहाँ दूसरी ओर बढ़ती हुई मुस्लिम शक्ति का प्रतिकार करने के लिए यह भी आवश्यक था कि वह हिन्दू महासभा की शक्ति को बिलकुल नज़र अन्दाज न करे। युद्ध-काल में मुस्लिम-लीग और हिन्दू महासभा दोनो ने प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से एक दूसरे का प्रतिकार करने के लिए ब्रिटिश सरकार को मदद दी और ब्रिटिश सरकार ने इस दोनो ही संस्थाओ का यथासमय अच्छा लाभ उठाया।

परिशिष्ट

८ अगस्त १९४२ को अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी द्वारा पास किया प्रस्ताव

"अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी ने कार्यसमिति के १४ जुलाई १९४२ के प्रस्ताव के विषयो पर, जो कार्य समिति द्वारा प्रस्तुत किये गए थे, और बाद की घटनाओ पर, जिनमे युद्ध की घटनावली, ब्रिटिश सरकार के जिम्मेदार वक्ताओ के भाषण और भारत तथा विदेशो मे की गई आलोचनाएं सम्मिलित है, अत्यंत सावधानी के साथ विचार किया है। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी उस प्रस्ताव को स्वीकार करते हुए उसका समर्थन करती है और उसकी राय है कि बाद की घटनाओ ने इसे और भी औचित्य प्रदान कर दिया है और इस बात को स्पष्ट कर दिखाया है कि भारत मे ब्रिटिश शासन का तात्कालिक अत भारत के लिए और मित्रराष्ट्रों के आदर्श की पूर्ति के लिए अत्यन्त आवश्यक है। इस शासन का स्थायित्व भारत की प्रतिष्ठा को घटाता और उसे दुर्बल बनाता है और अपनी रक्षा करने तथा विश्व-स्वातन्त्र्य के आदर्श की पूर्ति में सहयोग देने की उसकी शक्ति में क्रमिक ह्रास उत्पन्न करता है।

"अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी ने रूसी और चीनी मोर्चो पर स्थिति के बिगडने को निराशा के साथ देखा है और वह रूसियो और चीनियो की उस वीरता की भूरि-भूरि प्रशंसा करती है जो उन्होंने अपनी स्वतन्त्रता की रक्षा करने में प्रदर्शित की है। जो लोग स्वतन्त्रता के लिए प्रयत्न कर रहे है और आक्रमण के शिकार हुए व्यक्तियों से सहानुभूति रखते है उन सबको नित्य बढता जाने वाला खतरा उस नीति की परीक्षा करने के लिए बाध्य करता है जिसका मित्र-राष्ट्रों ने अभी तक अवलम्बन किया है और जिसके कारण बारम्बार भीषण असफलताए हुई है। ऐसे उद्देश्यो और प्रणालियों पर आरूढ बने रहने से असफलता सफलता में परिणत नही की जा सकती, क्योकि पिछले अनुभव से प्रकट हो चुका है कि असफलता इन नीतियो में निहित है। ये नीतिया स्वतन्त्रता पर

इतनी आधारित नही की गई है, जितना कि अधीन और औपनिवेशिक देशों पर आधिपत्य बनाए रखने और साम्राज्यवादी परम्पराओं तथा प्रणालियो को अक्षुण्ण बनाए रखने के प्रयत्नो पर। साम्राज्य को अधिकार मे रखना शासन-सत्ता की शक्ति बढ़ाने के बजाय एक भार और शाप बन गया है। आधुनिक साम्राज्यवाद की सर्वोत्कृष्ट क्रीड़ा-भूमि भारत इस प्रश्न की कसौटी बन गया है, क्योंकि भारत की स्वतत्रता से ही ब्रिटेन और मित्रराष्ट्रो की परीक्षा होगी और एशिया तथा अफ्रीका की जातियो मे आशा और उत्साह भर जायगा।

"इस प्रकार इस देश में ब्रिटिश शासन के अंत होने की अतीव और तत्काल ही आवश्यकता है। इसी के ऊपर युद्ध का भविष्य और स्वतंत्रता तथा प्रजातत्र की सफलता निर्भर है। स्वतत्र भारत अपने समस्त विशाल साधनो को स्वतत्रता के पक्ष में और नाज़ीवाद, फासिस्टवाद और साम्राज्यवाद के विरुद्ध लगाकर इस सफलता को सुनिश्चित कर देगा। इससे केवल युद्ध की स्थिति पर ही प्रबल प्रभाव नही पडेगा वरन् समस्त पराधीन और पीड़ित मानव-समाज भी मित्रराष्ट्रो के पक्ष मे हो जायगा और भारत जिन राष्ट्रो का मित्र होगा उनके हाथ मे विश्व की नैतिक और आत्मिक नेतृत्व भी आ जायगा। बधनो मे जकड़ा हुआ भारत ब्रिटिश साम्राज्यवाद का मूर्तिमान स्वरूप बना रहेगा और उस साम्राज्यवाद का कलंक समस्त मित्रराष्ट्रो के सौभाग्य को दूषित करता रहेगा।

"इसलिए आज के खतरे को देखते हुए भारत को स्वतंत्र कर देने और ब्रिटिश आधिपत्य को समाप्त कर देने की आवश्यकता है। भविष्य के लिए किसी भी प्रकार की प्रतिज्ञाओ और गारटियो से वर्त्तमान परिस्थिति मे सुधार नही हो सकता और न उसका मुकाबला किया जा सकता है। इनसे जन-समुदाय के मस्तिष्क पर वह मनोवैज्ञानिक प्रभाव नही पड़ सकता जिसकी आज आवश्यकता है। केवल स्वतत्रता की दीप्ति से ही करोड़ों व्यक्तियो का वह बल और उत्साह प्राप्त किया जा सकता है जो तत्काल ही युद्ध के रूप को बदल देगा।

"इसलिए अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी पूरे आग्रह के साथ भारत से ब्रिटिश शासन को हटा लेने की मांग को दुहराती है। भारत की स्वतत्रता की घोषणा हो जाने पर एक अस्थायी सरकार स्थापित कर दी जायगी और स्वतत्र भारत मित्रराष्ट्रों का मित्र बन जायगा और स्वातंत्र्य-सग्राम के सम्मिलित प्रयत्न की परीक्षाओं और दुःख-सुख में हाथ बंटायेगा। अस्थायी सरकार देश के मुख्य दलो और वर्गों के सहयोग से ही बनाई जा सकती है। इस प्रकार यह एक मिली-जुली सरकार होगी जिसमें भारतीयो के समस्त महत्त्वपूर्ण वर्गो का प्रतिनिधित्व

होगा। उसका प्रथम कर्त्तव्य अपनी समस्त सशस्त्र तथा अहिंसात्मक शक्तियो द्वारा मित्रराष्ट्रो से मिलकर भारत की रक्षा करना, आक्रमण का विरोध करना, और खेतो, कारखानो तथा अन्य स्थानो के काम करने वाले उन श्रमजीवियो का कल्याण और उन्नति करना होगा जो निश्चय ही समस्त शक्ति और अधिकार के वास्तविक पात्र है। अस्थायी सरकार एक विधान-निर्मातृ परिषद् की योजना बनायेगी और यह परिषद् भारत सरकार के लिए एक ऐसा विधान तैयार करेगी जो जनता के समस्त वर्गों को स्वीकार होगा। काग्रेस के मत से यह विधान सघ विषयक होना चाहिए जिसके अन्तर्गत सघ मे सम्मिलित होने वाले प्रातो को शासन के अधिकतर अधिकार प्राप्त होगे। अवशिष्ट अधिकार भी इन प्रातो को प्राप्त होगे। भारत और मित्रराष्ट्रो के भावी सम्बन्ध इन समस्त स्वतत्र देशो के प्रतिनिधियो द्वारा निश्चित कर दिये जाएगे जो अपने पारस्परिक लाभ तथा आक्रमण का प्रतिरोध करने के सामान्य कार्य में सहयोग देने के लिए परस्पर वार्तालाप करेगे। स्वतत्रता भारत को अपनी जनता की सम्मिलित इच्छा और शक्ति के बल पर आक्रमण का कारगर ढग से विरोध करने में समर्थ बना देगी।

"भारत की स्वतंत्रता विदेशी आधिपत्य से अन्य एशियाई राष्ट्रो की मुक्ति का प्रतीक और प्रारभ होगी। बर्मा, मलाया, हिन्द-चीन, डच द्वीप समूह, ईरान, और ईराक को भी पूर्ण स्वतत्रता मिलनी चाहिए। यह स्पष्ट रूप से समझ लेना चाहिए कि इस समय जापानी नियत्रण मे जो देश है उन्हे बाद को किसी औपनिवेशिक सत्ता के अधीन नही रखा जायगा।

"इस सकट काल मे यद्यपि अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी को प्रधानत भारत की स्वाधीनता और रक्षा से सम्बन्ध रखना चाहिए तथापि कमेटी का मत है कि ससार की भावी शान्ति, सुरक्षा, और व्यवस्थित उन्नति के लिए स्वतत्र राष्ट्रो का एक विश्वसघ बनाने की आवश्यकना है। अन्य किसी बात को आधार बनाकर आधुनिक ससार की समस्याए नही सुलझाई जा सकती। इस प्रकार के विश्व-सघ से उसमे सम्मिलित होने वाले राष्ट्रो की स्वतन्त्रता एक राष्ट्र द्वारा दूसरे राष्ट्र पर आक्रमण और शोषण को रोकना, राष्ट्रीय अल्पसख्यको का सरक्षण, पिछडे हुए समस्त क्षेत्रो और लोगो की उन्नति और सबके सामान्य हित के लिए विश्व-साधनो का एकत्रीकरण किया जाना निश्चित हो जायगा। इस प्रकार का विश्व-सघ स्थापित हो जाने पर समस्त देशो मे नि शस्त्रीकरण हो सकेगा, राष्ट्रीय सेनाओ, नौसेनाओं और वायु-सेनाओ की कोई आवश्यकता नही रहेगी और विश्व-सघ-रक्षक सेना विश्व में शाति रखेगी

और आक्रमण को रोकेगी।

"स्वतन्त्र भारत ऐसे विश्व-सघ में प्रसन्नता पूर्वक सम्मिलित होगा और अन्तर्राष्ट्रीय समस्याएं सुलझाने में अन्य देशों के साथ समान अधिकार पर सहयोग देगा।

"ऐसे संघ का द्वार उसके आधारभूत सिद्धातो का पालन करने वाले समस्त राष्ट्रो के लिए खुला रहना चाहिए। युद्ध के कारण यह सघ आरम्भ में केवल मित्र राष्ट्रों तक ही सीमित रहेगा। यदि यह कार्य अभी प्रारम्भ कर दिया जाय तो युद्ध पर, धुरी राष्ट्रो की जनता पर और आगामी शाति पर इसका बहुत जोरदार प्रभाव पडेगा।

"परंतु कमेटी खेदपूर्वक अनुभव करती है कि युद्ध की दुःखद और व्याकुल कर देने वाली शिक्षाएं प्राप्त कर लेने के पश्चात् और विश्व पर संकट के बादलों के घिरे होने पर भी कुछ ही देशो की सरकारें विश्व-सघ बनाने की ओर कदम उठाने को तैयार है। ब्रिटिश सरकार की प्रतिक्रिया और विदेशी पत्रों की भ्रमपूर्ण आलोचनाओ से स्पष्ट हो गया है कि भारतीय स्वतत्रता की स्पष्ट मांग का भी विरोध किया जा रहा है, यद्यपि यह वर्तमान खतरे का सामना करने और अपनी रक्षा तथा इस आवश्यक घडी में चीन और रूस की सहायता कर सकने के लिए की गई है। चीन और रूस स्वतत्रता की बड़ी मूल्यवान् निधि है और उसकी रक्षा होनी चाहिए, इसलिए कमेटी इस बात के लिए बड़ी उत्सुक है कि उसमें किसी प्रकार की बाधा न पड़े और मित्रराष्ट्रों की रक्षा करने की शक्ति मे कोई विघ्न न होने पावे। परन्तु भारत और इन राष्ट्रो के लिए खतरा नित्य बढता ही जा रहा है। और इस समय विदेशी शासन-प्रणाली के आगे सिर झुकाने से भारत का पतन होता जा रहा है और स्वय आत्म-रक्षा करने तथा आक्रमण का विरोध करने की उसकी शक्ति घटती जा रही है। इस दशा में न तो नित्य बढते जाने वाले खतरे का कोई प्रतिकार ही किया जा सकता है और न मित्रराष्ट्रो की जनता की कोई सेवा ही की जा सकती है। कार्य समिति ने ब्रिटेन और मित्रराष्ट्रो से जो सच्ची अपील की थी उसका अभी तक कोई उत्तर नही मिला है। बहुत से विदेशी क्षेत्रो मे की गई आलोचनाओ से प्रकट होगया है कि भारत और विश्व की आवश्यकताओ के विषय मे अज्ञानता फैली हुई है। कभी-कभी तो आधिपत्य बनाये रखने की भावना और जातिगत ऊंच-नीच का प्रतीक वह विरोध भी दिखाया गया है जिसे अपनी शक्ति और अपने उद्देश्य के औचित्य का ज्ञान रखने वाली कोई भी अभिमानी जाति सहन नही कर सकती।

"इस अन्तिम क्षण में विश्व-स्वातंत्र्य का ध्यान रखते हुए अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी फिर ब्रिटेन और मित्रराष्ट्रों से अपील करना चाहती है। परन्तु वह यह भी अनुभव करती है कि उसे अब राष्ट्र को एक ऐसी साम्राज्यवादी और शासन-प्रिय सरकार के विरुद्ध अपनी इच्छा प्रदर्शित करने से रोकने का कोई अधिकार नही है जो उस पर आधिपत्य जमाती है और जो उसे अपने तथा मानव-समाज के हित का ध्यान रखते हुए काम करने से रोकती है। इसलिए कमेटी भारत के स्वतन्त्रता और स्वाधीनता के अविच्छेद अधिकार का समर्थन करने के उद्देश्य से अहिंसात्मक प्रणाली से और अधिक-से-अधिक विस्तृत परिणाम पर एक विशाल सग्राम चालू करने की स्वीकृति देने का निश्चय करती है, जिससे देश गत २२ वर्षो के शातिपूर्ण सग्राम में संचित का गई समस्त अहिंसात्मक शक्ति का प्रयोग कर सके। यह सग्राम निश्चय ही गाधीजी के नेतृत्व मे होगा और कमेटी उनसे नेतृत्व करने और प्रस्तावित कार्यवाहियो में राष्ट्र का पथ-प्रदर्शन करने का निवेदन करती है।

"कमेटी भारतीयो से उन खतरो और कठिनाइयो का, जो उन पर आयगे, साहस और दृढतापूर्वक सामना करने तथा गाधीजी के नेतृत्व मे एक बने रहकर भारतीय स्वतन्त्रता के अनुशासित सैनिको के समान उनके निर्देशो का पालन करने की अपील करती है। उन्हे यह अवश्य याद रखना चाहिए कि अहिंसा इस आन्दोलन का आधार है। ऐसा समय आ सकता है जब निर्देश देना अथवा निर्देशो का हमारी जनता तक पहुचना सम्भव न होगा और जब काग्रेस समितिया काम नही कर सकेंगी। ऐसा होने पर इस आन्दोलन में भाग लेने वाले प्रत्येक नर-नारी को सामान्य निर्देशो की सीमा मे रहते हुए अपने आप काम करना चाहिए। स्वतत्रता की कामना और उसके लिए प्रयत्न करने वाले प्रत्येक भारतीय को स्वय अपना पथ-प्रदर्शक बनकर उस कठिन मार्ग पर अग्रसर होते जाना चाहिए जहा विश्राम का कोई स्थान नही है और जो अत में भारत की स्वतत्रता और मुक्ति पर जाकर समाप्त होता है।

"अत में यह बताना है कि यद्यपि अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी ने स्वतन्त्र भारत की भावी सरकार के विषय में अपना विचार प्रकट कर दिया है, तथापि कमेटी समस्त सम्बद्ध लोगो के लिए यह बिलकुल स्पष्ट कर देना चाहती है कि विशाल सग्राम आरम्भ करके वह काग्रेस के लिए कोई सत्ता प्राप्त करने की इच्छुक नही है। सत्ता जब मिलेगी तो उस पर समस्त भारतीयो का अधिकार होगा।"

निर्देशिका

इससे आगे उन प्रान्तो के नक्शे दिये जा रहे है, जिनमें अगस्त-विद्रोह जोरदार रूप में रहा। हमारा इरादा तो यह था कि नक्शे पुस्तक के अदर हर प्रांत का विवरण शुरू होने से पहले दिये जाते। पर कोशिश करने पर भी यह समय पर तैयार नही हो पाये। इस कारण इनको यहां देना पड़ रहा है।

इनका क्रम वही रखा गया है जो पुस्तक में प्रांतो का है। नक्शो में

निशान वाले वह स्थान है जहा आदोलन तीव्रता से हुआ है। और

निशान वाले वह स्थान है जहां आंदोलन साधारण अवस्था में रहा। पजाब प्रात में आदोलन बिलकुल नही हुआ इस कारण वहा अग्रेजी झडा लगा दिया गया है।
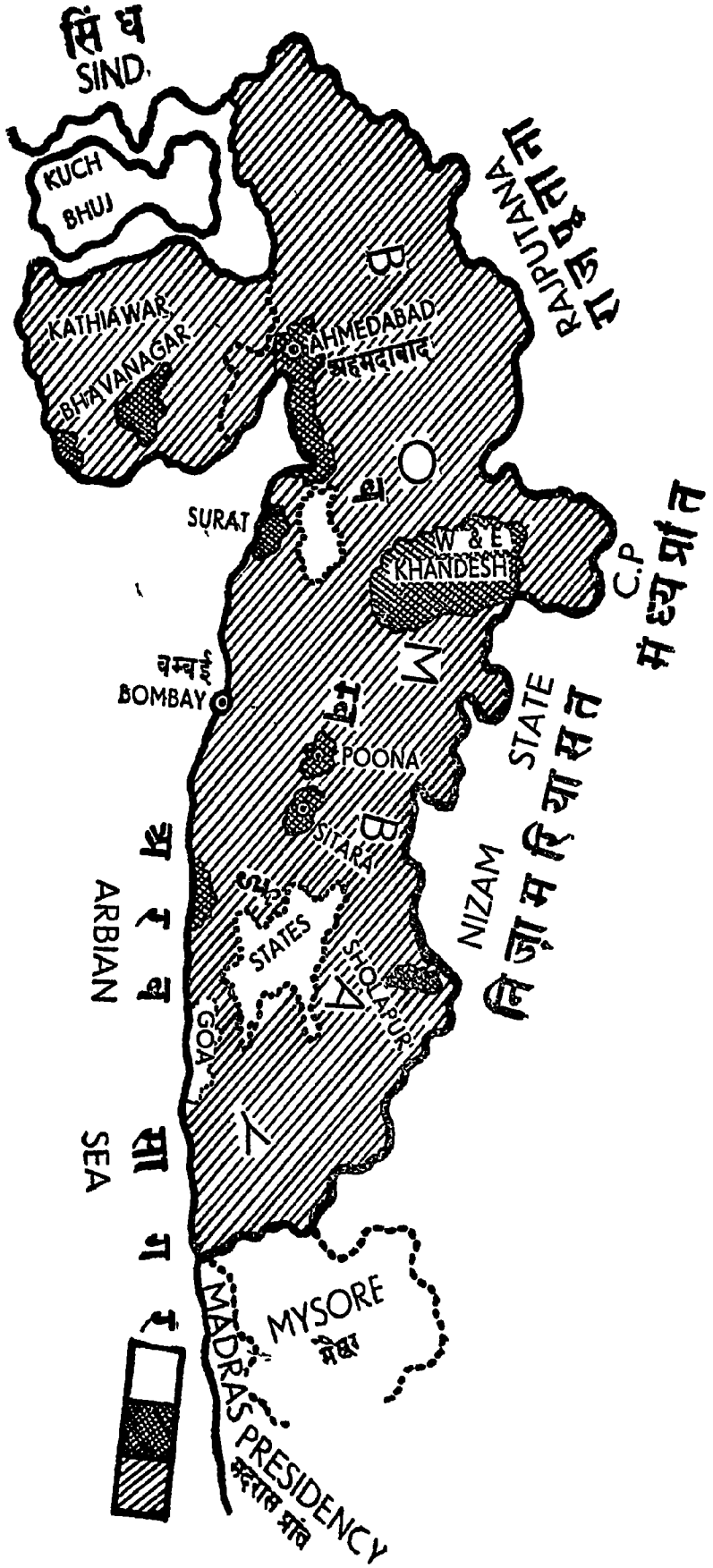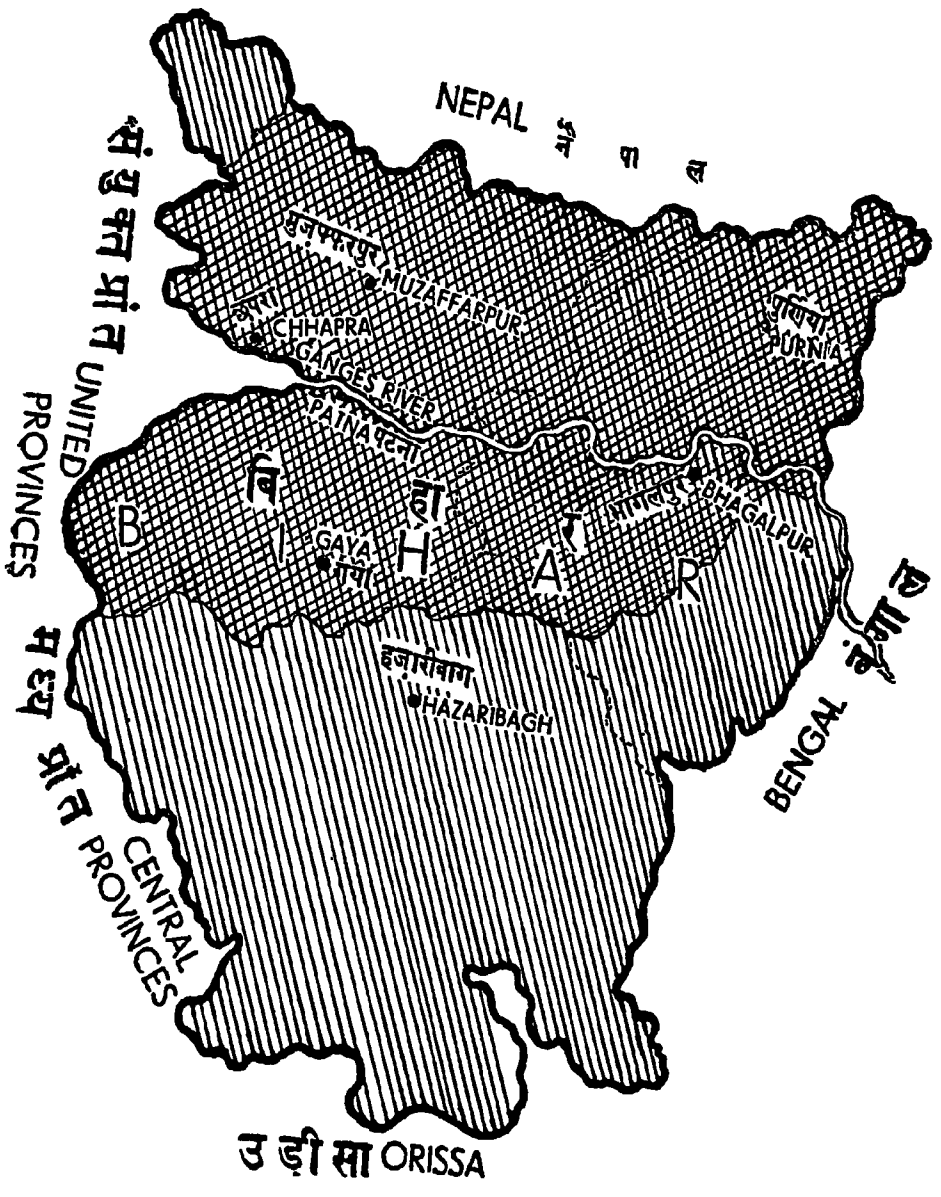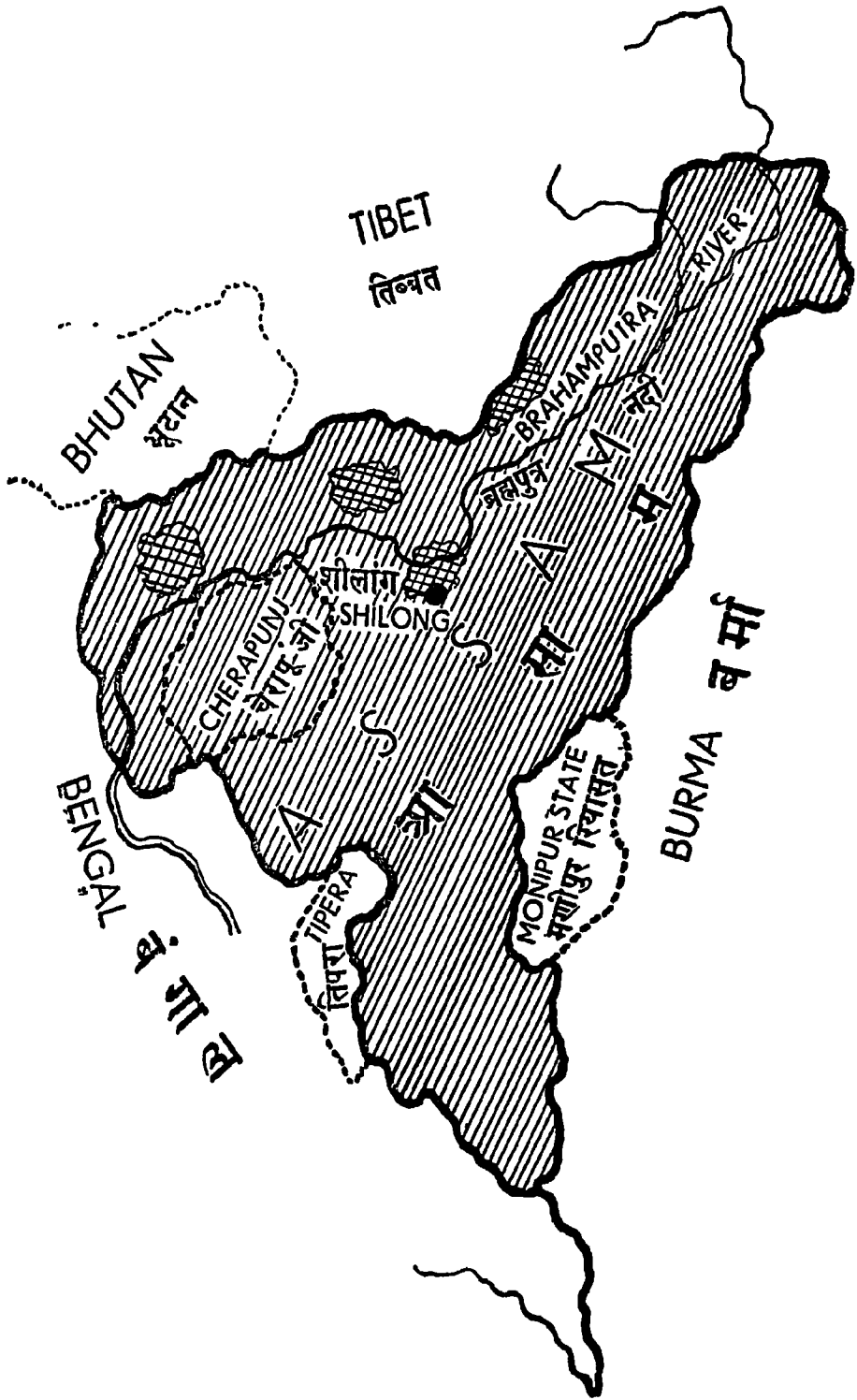
BHUTAN
भूटान
TIBET
तिब्बत
BENGAL
ASSAM
CHERAPUNJ
SHILONG
BRAHAMPUTRA
RIVER
TIPERA
तिपरा
MONIPUR STATE
मणीपुर रियासत
BURMA
बर्मा

NEPAL
CHHAPRA
छपरा
GORAKHPUR
AZAMGARH
GHAZIPUR
BENARES
MIRZAPUR
ARRAH
आरा
GHAGRA
घघरा
GANGES RIVER
JAMMUNA RIVER
GARHWAL
गढ़वाल
PUNJAB पंजाब
राजपूताना RAJPUTANA

BIHAR
ASSAM
B E N G A L
बं गा ल
मिद्नापुर
MEDNIPUR
CALCUTTA
TIPERAH STATE
तिपरा रियासत
ORISA
BURMA
BAY OF BENGAL
बंगाल की खाड़ी

पंजाब
PUNJAB
SHIKARPUR
SUKKER
HURS RISING
BULUCHISTAN
बलूचिस्तान
FARKANA
INDUS RIVER
S I N D
सिंध
RAJPUTANA
राजपूताना
HYDEPABAD
THARPARKAR
KARACHI
ARABIAN SEA
अरब सागर

KASHMIR
काशमीर
N W F P
सीमा प्रांत
LAHORE
लाहौर
P U N J A B
पं जा ब
शिमला की रियासतें
SIMLA STATES
BALOCHISTAN
बलूचिस्तान
PATIALA
पटियाला
UNITED PROVINCES
संयुक्त प्रांत
राजपूताना
RAJPUTANA
SIND
सिंध